हिन्दी भाषा और साहित्य
को
पुणे का योगदान

डॉ. सिराज शेख

आर.के.पब्लिकेशन
मुम्बई

ISBN: 978-93-86579-73-3

प्रथम संस्करण : 2019

© डॉ. सिराज शेख

प्रकाशक :

आर.के.पब्लिकेशन

1/12 पारस दुबे सोसायटी, ओवरी पाढ़ा
एस.वी.रोड, दहिसर (पूर्व) मुम्बई-400068
Phone: 9022521190, 9821251190
E-mail: publicationrk@gmail.com

अक्षर संयोजन : **प्रखर कम्प्यूटर**
Email- abhishakojha00@gmail.com

आवरण : **सुनील निम्बरे**

मूल्य : ₹ 550 /-

Hindi Bhasha Aur Sahitya Ko Pune Ka Yogdan by Dr.Shiraj Shekh

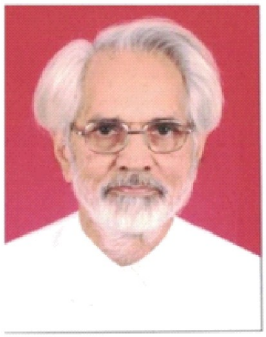

समर्पण

ऊर्जा एवं उत्साहवर्धक व्यक्तित्व के धनी तथा राष्ट्र और राष्ट्रभाषा के अनन्य भक्त परम आदरणीय गुरूवर्य डॉ. केशव प्रथमवीर जी को, जिनकी प्रेरणा और प्रोत्साहन से यह शोध कार्य मैं पूरा कर सका।

तथा

पुणे के उन तमाम हिंदी प्रचारकों, साहित्यकारों, अनुवादकों, हिंदी आलोचकों, अध्यापकों और चिंतकों को जिनके सद्प्रयासों के बिना यह कार्य पूरा नहीं हो सकता था। उन सभी के प्रति विनम्र सम्मान के साथ ...

भूमिका

हिंदी सदियों से भारत की संपर्क भाषा रही है। भारतवर्ष के सभी प्रांतों में इसी हिंदी के कारण एकत्व का निर्वाह हुआ है। इसी कारण अनेकता में एकता भारतवर्ष की खास विशेषता है। भाषा प्रसार के ऐतिहासिक अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि इस एकता की संवाहिका हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने में हिंदीतर भाषियों तथा हिंदीतर प्रांतों का बड़ा योगदान रहा है। हिंदीतर प्रांतों के हिंदी प्रेम, हिंदी प्रचार-प्रसार में उनका सहयोग और उनके साहित्यिक योगदान पर आज तक कम पैमाने पर सोचा गया है। जिस प्रकार समाज सुधार की लहर बंगाल और महाराष्ट्र में पहले पनपी और बाद में अन्य प्रांतों में उसका प्रचार-प्रसार हुआ, वैसे ही हिंदी के प्रचार-प्रसार की पहल इन्हीं प्रातों से हुई हैं। हिंदी का पहला समाचार पत्र 'उदंत मार्तंड' (सन् 1826 ई) का प्रारंभ बंगाल के प्रसिद्ध शहर कलकत्ता में हुआ है। हिंदी का संस्थागत् प्रचार भी फोर्ट विलियम कॉलेज (सन् 1800 ई.) कलकत्ता की स्थापना से माना जाता है। इसी तरह महाराष्ट्र भारतवर्ष का केंद्रीय प्रदेश होने के कारण इस प्रांत ने हिंदी की अमूल्य सेवा की है। इस प्रदेश के हिंदी योगदान के संदर्भ में हिंदी साहित्य के इतिहास ग्रंथों में कम उल्लेख मिलता है। डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त के इतिहास ग्रंथ– हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास में तथा उसके परवर्ती आचार्य विद्वानों, लेखकों के साहित्य में उक्त विषय के संदर्भ में पर्याप्त मात्रा में लेखन पाया जाता है। आ. विनयमोहन शर्मा द्वारा लिखित शोध प्रबंध 'हिंदी को मराठी संतों की देन', डॉ. अशोक कामत लिखित 'हिंदी और महाराष्ट्र का स्नेहबंध', प्रोफेसर सी. एल्. प्रभात द्वारा संपादित 'हिंदी के विकास में महाराष्ट्र का योगदान', डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे की पुस्तक 'आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास', श्रीकांत जोशी द्वारा प्रस्तुत और पुणे विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत अप्रकाशित शोध प्रबंध 'आदिकालीन हिंदी के विकास में महाराष्ट्र का योगदान', डॉ. विजया वधवा का शोध प्रबंध

'स्वातंत्र्योत्तर हिंदी के विकास में महाराष्ट्र की भूमिका' डॉ. रणजीत जाधव का शोध ग्रंथ 'हिंदी साहित्य तथा भाषा को महाराष्ट्र की देन (मराठवाडा के विशेष संदर्भ में)', डॉ. मधु खराटे की पुस्तक 'हिंदी को मराठी लेखकों का योगदान', डॉ. शैलजा माहेश्वरी द्वारा लिखित 'सीमांत प्रदेश का हिंदी को प्रदेय' और डॉ. विलास गुप्ते द्वारा प्रस्तुत शोध प्रबंध 'हिंदी को अहिंदी लेखकों का योगदान' आदि ग्रंथ इसके प्रमाण है। महाराष्ट्र के केंद्रवर्ती शहर पुणे का हिंदी साहित्य और भाषा के प्रचार-प्रसार में बड़े पैमाने पर योगदान रहा है। संस्कृति और विद्या की संवाहिका इस पुण्यनगरी के निवासी समाज सुधार और हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं। हिंदी को आश्रय देने वाले छत्रपति शिवाजी महाराज, छत्रपति संभाजी महाराज, नानासाहब पेशवा आदि राजा-महाराजाओं का संबंध पुणे से था। पुणे के लोकमान्य तिलक, केशव वामन पेठे, पंडित ग. र. वैशंपायन, काशिनाथ वैशंपायन, शंकरराव देव, दत्तो वामन पोद्दार, काकासाहब गाडगीळ, एस. एम. जोशी, मोहन धारिया आदि ने हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने के लिए अनेक संस्थाओं के माध्यम से हिंदी का प्रचार-प्रसार किया।

हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ पुणे में हिंदी की लगभग सभी साहित्यिक विधाओं (काव्य, कथा साहित्य, कथेतर साहित्य) का लेखन प्रचुर मात्रा में हुआ है। इन साहित्यिक विधाओं के अतिरिक्त अनुवाद, अनुसंधान, आलोचना और अन्य ज्ञानात्मक साहित्य के क्षेत्र में भी इस शहर के निवासी लेखकों का अमूल्य योगदान है। इतने बड़े पैमाने पर हुए इस कार्य का उल्लेख कहीं न कहीं होना चाहिए।इस दृष्टि से पुणे के प्रसिद्ध आलोचक, संपादक और अनुसंधाता डॉ. केशव प्रथमवीर जी ने मुझे इस शोध कार्य को करने के लिए प्रोत्साहित किया और मेरे शोध निर्देशक डॉ. वी. एन भालेराव जी ने अनुमति प्रदान करते हुए उचित मार्गदर्शन भी किया।

इस शोध प्रबंध को पूर्ण करने के लिए प्राथमिक और दुय्यम स्रोतों से सामग्री इकट्ठी की गई है। इसके लिए पुणे के कतिपय विद्वानों से साक्षात्कार करने पड़े हैं, अतः उनसे प्राप्त मौखिक सामग्री और पुणे में बसे साहित्यकारों, अनुवादकों, अनुसंधाताओं और आलोचकों की विविधांगी पुस्तकों के आधार पर इस प्रबंध में कतिपय निष्कर्षों को स्थापित किया गया है। अर्थात् इसमें - सर्वेक्षणात्मक पद्धति, साक्षात्कार एवं भेंटवार्ता प्रणाली और विवेचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का अवलंब किया गया है।

शोध कार्य की परिसीमा

प्रस्तुत शोध प्रबंध में स्थानगत सीमा की दृष्टि से मात्र पुणे शहर (पिंपरी चिंचवड तथा हडपसर उपनगर) के क्रमशः हिंदी रचनाकारों, हिंदी प्रचारकों, हिंदी अनुवादकों, हिंदी अनुसंधाताओं तथा हिंदी प्रचारक संस्थाओं और हिंदी की पत्रिकाओं का विवेचन विवेच्य शोध विषय की परिधि में रखा गया है। काल सीमा की दृष्टि से स्वतंत्रता पूर्व काल से शोध प्रबंध के प्रस्तुतिकरण तक प्राप्त साहित्य को इस काल की परिधि में समाहित किया गया है। इस प्रकार विषय सीमा की दृष्टि से हिंदी साहित्य की सभी विधाओं में पुणे शहर के योगदान की प्रामाणिक पडताल इस प्रबंध में की गई है। एक छोटे से शहर में घटित राष्ट्रीय ऐक्य की संवाहिका हिंदी के प्रचार-प्रसार की भूमिका को यहाँ विवेचित करने का प्रयास किया गया है।

अध्याय विभाजन

प्रस्तुतिकरण की दृष्टि से इस प्रबंध को निम्नांकित आठ अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय- 'हिंदीतर प्रदेशों में हिंदी की प्रदीर्घ परंपरा' में हिंदी और हिंदीतर प्रदेशों में हिंदी की स्थिति और गति का जायजा लिया गया है। इसमें दस हिंदी भाषी राज्यों तथा अन्य हिंदीतर भाषी प्रांतों और सात केंद्रशासित प्रदेशों में हिंदी की स्थिति को प्रस्तुत किया गया है। इसी अध्याय में महाराष्ट्र के हिंदी साहित्य के इतिहास की संक्षिप्त भूमिका को विवेचित किया गया है। यह अध्याय पूर्वपीठिका के रूप में लिया गया है।

द्वितीय अध्याय-'हिंदी के संस्थागत प्रचार-प्रसार में पुणे की भूमिका' में पुणे शहर की ऐतिहासिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक और भाषिक स्थितियों पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही इन परिस्थितियों का पुणे के हिंदी प्रचार-प्रसार कार्य पर पड़े प्रभाव को अंकित किया गया है। इसी अध्याय में हिंदी के प्रचार-प्रसार की भूमिका को दृष्टिगत रखते हुए पुणे की प्रमुख हिंदी प्रचार संस्थाओं के कार्यों का विवरणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

तृतीय अध्याय-'पुणे की अन्य हिंदी प्रचारक संस्थाएँ' में पुणे की शैक्षिक, साहित्यिक, कार्यालयीन, सरकारी, गैरसरकारी और निजी तौर पर हिंदी का प्रचार-प्रसार करने वाली संस्थाओं के क्रियाकलापों का विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

चतुर्थ अध्याय-'हिंदी पत्रकारिता को पुणे की देन' में पुणे की हिंदी पत्रकारिता के इतिहास को अवलोकित किया गया है। इस में दैनिक अखबार, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, द्वैमासिक, त्रैमासिक, अर्धवार्षिक और वार्षिक आदि का परिचय प्रस्तुत किया गया है।

पंचम् अध्याय-'हिंदी साहित्य को पुणे की देन' में पुणे के हिंदी साहित्यकारों का परिचय उनकी साहित्यिक रचनाओं के साथ दिया गया है। इस अध्याय में विश्लेषित साहित्यिक सामग्री विविध विधाओं से संबंधित है। इसमें काव्य, कथा-साहित्य, नाटक, एकांकी, निबंध, संस्मरण, यात्रा साहित्य, जीवनी, रेखाचित्र आदि सभी विधाओं का विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

षष्ठ अध्याय-'हिंदी अनुवाद साहित्य को पुणे की देन' में पुणे के हिंदी अनुवादकों और उनके अनूदित साहित्य का सामान्य परिचय दिया गया है। यह परिचय उनकी वरिष्ठता के कालक्रमानुसार दिया गया है।

सप्तम् अध्याय-'हिंदी अनुसंधान, आलोचना और अन्य ज्ञानात्मक साहित्य को पुणे की देन' में पुणे के हिंदी अनुसंधान और आलोचना कार्य को रेखांकित किया गया है। यह रेखांकन हिंदी अनुसंधाताओं और आलोचकों के कार्य पर प्रकाश डालता है, न कि उनकी पुस्तकों का विस्तृत रेखांकन। इसमें अनुसंधान और आलोचना कार्य के अतिरिक्त कुछ ऐसी किताबों का परिचय भी दिया गया है, जो न शुद्ध रूप से आलोचना की है और न ही अनुसंधान की। इन्हें अन्य उपशीर्षक में समाहित करके देखा गया है। इसमें भाषाविज्ञान, काव्यशास्त्र, कोश ग्रंथ, सिनेमा, स्त्री विमर्श विषयक पुस्तकें आदि की चर्चा की गई है।

अष्टम् अध्याय-'पुणे का हिंदी साहित्यः भाषिक अध्ययन' में पुणे में निर्मित काव्य और गद्य की विविध विधाओं का भाषिक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। इसमें समाहित की हुई रचनाओं में केवल काव्य संग्रह, उपन्यास, कहानी तथा कथेतर साहित्य प्रमुख है। पुणे के सर्जनशील लेखकों में कतिपय मराठी भाषी और कतिपय हिंदी भाषी है। अतः इन लेखकों के लेखन में अपनी-अपनी मातृभाषा का प्रभाव है। अधिकांश की शैली पर स्थानीय प्रभाव भी नजर आता है। मराठी के कतिपय शब्दों का प्रभाव भी इनकी भाषा में पाया जाता है। अतः पुणे के इन लेखकों की मौलिक रचनाओं की भाषा का अध्ययन इस अध्याय में किया गया है।

उपसंहार - उपरोक्त सातों अध्यायों का सिंहावलोकन करते हुए हिंदी के विकास में पुणे की भूमिका पर प्रकाश डाला गया है साथ ही शोध प्रबंध की

उपलब्धियों को रेखांकित करते हुए शोध संभावनाओं पर प्रकाश डाला गया है।

अंत में सन्दर्भ ग्रन्थ सूची दी गई है इस सूची में प्रकाशित, अप्रकाशित शोध प्रबन्ध पत्र-पत्रिकाएँ और कोश ग्रन्थ आदि का समावेश किया गया है।

यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि पुणे निवासी हिंदी भाषी और अहिंदी भाषी हिंदी सेवियों ने हिंदी की अमूल्य सेवा की है। यह सेवा राष्ट्रभाषा के प्रचार-प्रसार से लेकर हिंदी साहित्य की विविध विधाओं में लेखन समृद्धि, अनुवाद, अनुसंधान, आलोचना और आम बोलचाल में प्रयुक्ति तथा राजभाषा के तहत उसका प्रयोग आदि विविध स्तरों पर दिखाई देती है। यह परंपरा आदिकाल से आधुनिक काल के समृद्ध साहित्य तक अबाधित है। इतना संस्मरणीय योगदान होने के बावजूद पुणे के निवासी हिंदी साहित्यकार, अनुसंधाता, अनुवादक और हिंदी प्रचारक प्रकाश में नहीं आ पाए। पुणे के प्रमुख कथाकार डॉ. दामोदर खड़से जी ने सन् 2004 ई. में 'वागर्थ' पत्रिका में एक खोज परख लेख 'हिंदीमय पुणे' लिखकर इस अभाव की पूर्ति की। आगे चलकर डॉ केशव प्रथमवीर जी ने दै लोकमत समाचार में ''हिंदी के प्रचार-प्रसार में पुणे की भूमिका'' को प्रस्तुत कर पुणे के हिंदीमय वातावरण की यथार्थ स्थिति का अंकन किया। इन दोनों के लेखों के अलावा आज तक पुणे में हुए हिंदी प्रचार कार्य पर, हिंदी लेखकों और उनके साहित्य पर तथा पुणे के हिंदी वातावरण पर ऐसा सांगोपांग विवेचन अन्यत्र कहीं नहीं हुआ है।

आशा करता हूँ पुणे के साहित्यिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्य को जानने-समझने के लिए एवं पुस्तक अत्यंत उपयोगी साबित होगी।

-डॉ. सिराज शेख

आभार

यह संपूर्ण कार्य परम आदरणीय गुरुवर्य डॉ.केशव प्रथमवीर जी के कुशल मार्गदर्शन का ही सुफल है। उनका ऋण शब्दों में नहीं व्यक्त किया जा सकता।

पुणे विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्ष एवं प्रोफेसर और मेरे इस शोध प्रबंध के मार्गदर्शक डॉ. वी. एन. भालेराव जी ने शुरू से ही मेरी अनेक शोध समस्याओं का हल अपने कुशल मार्गदर्शन से निकाला है। उनके कुशल मार्गदर्शन में कार्य करने का मौका पाकर मैं धन्य हुआ हूँ। हिंदी विभाग के वर्तमान अध्यक्ष डॉ.सदानंद भोसले, विभाग की सहयोगी प्राध्यापिका डॉ. शशिकला राय, और डॉ. महेश दवंगे आदि का भी मैं आभारी हूँ।

पुणे के मूर्धन्य तीन विद्वान डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित जी, डॉ. अशोक कामत जी और डॉ. दामोदर खड़से जी की ओर से अनुसंधान की विविध पुरानी सामग्री के स्रोतमार्गों का पता चला। अतः मैं उनका हृदय से आभारी हूँ। डॉ. सुभाष तळेकर और उनकी सुविद्य पत्नी सौ. कांचन तळेकर जी का मैं दिल से आभारी हूँ। मेरा शोध कार्य फील्ड वर्क पद्धति पर आधारित होने के कारण मुझे पुणे शहर के लेखकों तथा साहित्यकारों का प्रत्यक्ष साक्षात्कार लेना पड़ा है। इन सभी साहित्यकारों ने मुझे अपना कीमती समय देकर मेरे लिए आवश्यक सामग्री प्रदान की। उन सब साहित्यकारों का नामोल्लेख यहाँ मैं चाहते हुए भी नहीं कर पाऊँगा क्योंकि यह बड़ी लंबी सूची है। इस प्रबंध में उनकी जानकारी उपलब्ध है। मैं उन सबके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

पुणे के तीन सृजनधर्मी लेखक डॉ. सुनील देवधर (सेवानिवृत्त, आकाशवाणी), डॉ. राजेंद्र श्रीवास्तव (उपमहाप्रबंधक, मुख्य कार्यालय, बैंक ऑफ महाराष्ट्र) और हिंदी आंदोलन संस्था के संस्थापक अध्यक्ष श्री संजय भारद्वाज का दिल से ऋण व्यक्त करता हूँ। इनके सहयोग से मुझे पुणे की साहित्यिक गतिविधियों से परिचित होने में आसानी हुई। पुणे के प्रमुख सरकारी, गैर सरकारी कार्यालयों के हिंदी अधिकारियों ने भी अपने-अपने कार्यालयों में परिचालित हिंदी की

स्थितियों से अवगत कराके प्रबंध को अद्ययावत बनाने में सहायता की, अतः इन हिंदी अधिकारियों का मैं ऋणी हूँ।

इस शोध कार्य के लिए जयकर ग्रंथालय, हिंदी विभाग का विभागीय ग्रंथालय, राष्ट्र सेवा दल का साने गुरुजी ग्रंथालय, केसरीबाडा का सार्वजनिक ग्रंथालय, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे का ग्रंथालय, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पुणे का ग्रंथालय और एस.एन.डी.टी विश्वविद्यालय का ग्रंथालय, आदि से मुझे दुर्लभ ग्रंथ उपलब्ध हुए हैं। खासकर महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे के अध्यक्ष श्री. उल्लासदादा पवार, पूर्व अध्यक्ष श्री. सु.मो.शाह जी, कार्याध्यक्षा डॉ. वीणा मनचंदा जी और ग्रंथपाल श्री जोशी जी और राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के संचालक श्री. ज.ग.फगरे जी का विशेष आभारी हूँ। व्याकरणिक कोटियों की सफल जाँच करने वाले मेरे आत्मीय मित्र प्रा. विश्वनाथ सुतार और डॉ. मंजूषा पाटील आदि के प्रति कृतज्ञ हूँ। प्रा. अमोलकुमार रासकर ने इस प्रबंध में पुणे शहर के नक्शे को जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य किया है। अतः मैं उनका भी दिल से आभारी हूँ। इस काम के लिए मुझे खंडाळा विभाग शिक्षा समिति के समन्वय समिति के अध्यक्ष आदरणीय शंकरराव जी गाढ़वे सर तथा राजेंद्र महाविद्यालय के प्रशासकीय अधिकारी डॉ. विजय खांडेकर सर का सदैव स्नेह, सम्मान और प्रोत्साहन मिलता रहा है। अतः मैं उनका दिल से आभारी हूँ।

इस कार्य में मेरे पिता श्री हसन शेख, माँ सौ. मिनाज शेख, मेरी सौभाग्यवती पत्नी रूकैया और मेरी नन्हीं प्यारी बेटी स्वालेहा ने कभी भी मुझे पारिवारिक समस्याओं में उलझाकर नहीं रखा। बड़ी बहन सौ. शकिला, बड़े जीजा ईस्माईल, भांजा अशरफ, भांजी तब्बसुम, छोटी बहन रुबिना, छोटे जीजा ताज्जुद्दीन, उनका बेटा अय्याज और बेटी परी इन सब का मैं क्षमाप्रार्थी हूँ क्योंकि उन्हें मैं अपना समय और दुलार न दे पाया।

आर.के.पब्लिकेशन के निदेशक रामकुमार जी एवं संपादक श्री गंगाशरण जी के प्रयासों से यह पुस्तक रूप में आपके समक्ष है। इसके लिए मैं उन्हें धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ।

अंत में मैं उस असीम निराकार ईश्वर के प्रति नतमस्तक होना चाहता हूँ, उसी के आशीर्वाद से मैं यह कार्य पूरा कर सका।

''ईश्वर, अल्लाह तेरो नाम
सबको सन्मति दे भगवान''

अनुक्रम

प्रथम अध्याय

हिंदीतर प्रदेशों में हिंदी की प्रदीर्घ परंपरा 17-32

- हिंदीतर प्रदेशों में हिंदी की स्थिति का मूल्यांकन
- महाराष्ट्र में हिंदी की स्थिति का मूल्यांकन

द्वितीय अध्याय

पुणे में हिंदी का प्रचार-प्रसार 33-49

- पुणे का ऐतिहासिक महत्व और हिंदी
- पुणे का सांस्कृतिक परिवेश और हिंदी
- पुणे में राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी के प्रचार-प्रसार का प्रारंभ
- पुणे में हिंदी का संस्थागत प्रचार-प्रसार

तृतीय अध्याय

पुणे की अन्य हिंदी प्रचारक संस्थाएँ 50-82

- राष्ट्र सेवा दल
- पुणे के प्रमुख महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में हिंदी
- व्यक्तिगत स्तर पर कार्य करने वाली साहित्यिक संस्थाएँ
- संगठित साहित्यिक संस्थाएँ
- पुणे की प्रमुख कार्यालयीन संस्थाओं में हिंदी

चतुर्थ अध्याय

हिंदी पत्रकारिता को पुणे की देन 83-101

- पुणे की हिंदी पत्रिकाएँ
- पुणे के हिन्दी समाचार पत्र

पंचम् अध्याय

हिंदी साहित्य को पुणे की देन 102-161

- हिंदी काव्य को पुणे की देन
- हिंदी कथा साहित्य को पुणे की देन
- पुणे का हिंदी नाट्य साहित्य और नाट्य लेखक
- पुणे के जीवनीकार और जीवनी साहित्य
- पुणे के लेखकों का यात्रा वर्णन, भेटवार्ताएँ एवं साक्षात्कार लेखन
- पुणे के लेखकों का संस्मरण साहित्य और संस्मरणकार
- पुणे के लेखकों का आत्मकथात्मक साहित्य

षष्ठ अध्याय

हिंदी अनुवाद साहित्य को पुणे की देन 167-203

- अनुवाद की प्रासंगिकता एवं पुणे में हिंदी अनुवाद की परंपरा
- पुणे के हिंदी अनुवादकों का परिचय

सप्तम् अध्याय

हिंदी अनुसंधान, आलोचना तथा ज्ञानात्मक साहित्य को पुणे की देन 204-228

- पुणे में हिंदी अनुसंधान कार्य
- पुणे में हिंदी आलोचना कार्य
- पुणे में हिन्दी के अन्य कार्य (भाषा, कोश एवं व्याकरण, फिल्म पत्रकारिता,स्त्री विमर्श, इलेक्ट्रानिक मीडिया आदि में हिंदी सृजन)

अष्टम् अध्याय

पुणे के हिंदी साहित्य का भाषिक अध्ययन 229-257

- शिल्पगत वैविध्य
- शैली वैविध्य

उपसंहार 258-266

संदर्भ ग्रंथ सूची 259-275

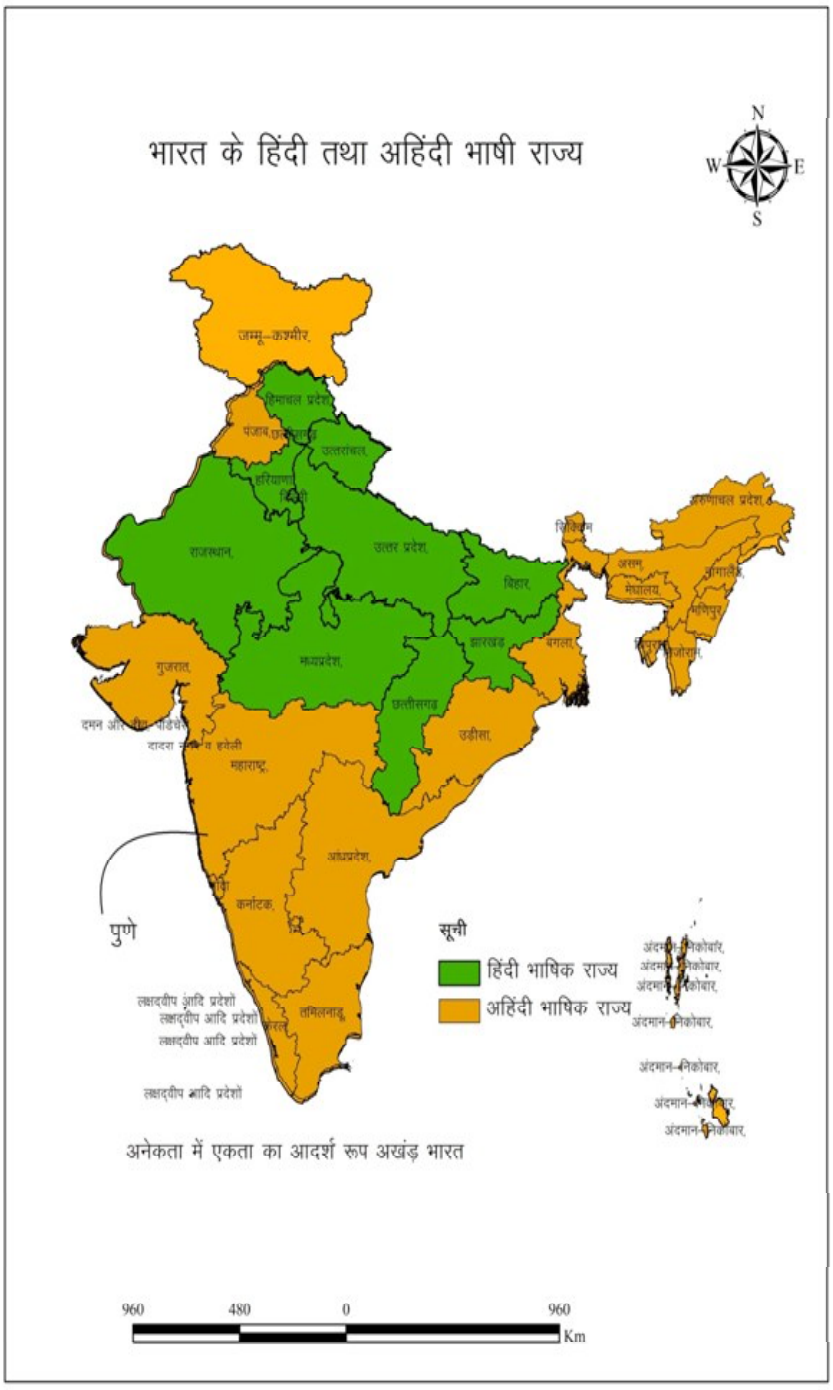

भारत के हिंदी तथा अहिंदी भाषी राज्य

प्रथम अध्याय

हिंदीतर प्रदेशों में हिंदी की प्रदीर्घ परंपरा (महाराष्ट्र के विशेष संदर्भ में)

प्रस्तावना

हिंदी भारत की बहुप्रचलित भाषा है। वर्तमान समय में भारतवर्ष में कुल 29 राज्य तथा 7 केंद्रशासित प्रदेश हैं। इनमें से 10 राज्य हिंदी भाषी क्षेत्र में आते हैं। इन प्रमुख प्रदेशों में हरियाणा, राजस्थान, मध्यप्रदेश, दिल्ली (केंद्रशासित प्रदेश और राजधानी केंद्र), हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, बिहार, उत्तरांचल, छत्तीसगढ़ और झारखंड आदि प्रमुख हैं। इनकी मातृभाषा हिंदी है।

इनके अतिरिक्त बचे हुए राज्य हिंदीतर भाषी क्षेत्र है। इनमें असम्, उड़ीसा, बंगाल, मेघालय, नागालैंड, मणिपुर, त्रिपुरा, अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम, सिक्किम, जम्मू-कश्मीर, गुजरात, पंजाब, महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल, गोवा आदि का समावेश होता हैं। इनके अतिरिक्त केंद्रशासित प्रदेशों के अंतर्गत अंदमान-निकोबार, चंड़ीगढ, दमन और दीव, पॉडिचेरी, दादरा व नगर हवेली, लक्षद्वीप आदि प्रदेशों का भी हिंदीतर प्रदेशों में समावेश होता है। इनकी मातृभाषाएँ अपने-अपने प्रांत की भाषाएँ है।

इन सभी हिंदी भाषी तथा अहिंदी भाषी क्षेत्रों में हिंदी का प्रयोग संपर्क-भाषा अथवा राष्ट्रभाषा के रूप में सदियों से होता रहा है। अतः हिंदीतर प्रदेशों में हिंदी की स्थिति का मूल्यांकन निम्न बिंदुओं में प्रस्तुत किया जा रहा है।

हिंदीतर प्रदेशों में हिंदी की स्थिति का मूल्यांकन

भारतवर्ष के अहिंदी प्रदेशों में हिंदी की परंपरा भी हिंदी प्रदेशों की भाँति उज्ज्वल एवं समुन्नत दिखाई देती है, जो इस प्रकार है-

असम

असम, भारत के पूर्वोत्तर प्रदेशों में से एक है। हिंदी के आदिकाल से ही असम प्रदेश हिंदी से संबंधित रहा है। ''आदिकालीन हिंदी और असमी, दोनों के

आरंभिक उदाहरण 'चर्यागीतों' में प्राप्त होते हैं। बौद्ध, सिद्धों की रचनाएँ दोनों की सम्मिलित निधियाँ-सी प्रतीत होती हैं।''[1] असम के शंकरदेव ने ब्रजबुलि में अनेक कविताएँ लिखी है। हिंदी के प्रचार-प्रसार में बाबा राघवदास, भुवनचंद्र गगै, स्व. गोपीनाथ जी बरदलै, डॉ. हरिकृष्णदास, श्री जीतेंद्रचंद्र चौधरी आदि का स्थान महत्वपूर्ण है।

उड़ीसा

उड़ीसा पूर्वोत्तर भारत का एक सांस्कृतिक प्रदेश है। उड़ीसा की प्रमुख भाषा उड़िया है। उड़िया मागधी अपभ्रंश से निर्माण हुई है। उड़ीसा में हिंदी का प्रचलन रहा है। फकीर मोहन सेनापती (सन् 1813-1917) के उपन्यास उर्दू मिश्रित हिंदी में है। हिंदी के प्रचार-कार्य में रामानंद शर्मा, श्री हरेकृष्ण मेहताब, श्री लींगराज मिश्र आदि का प्रदेय महत्वपूर्ण माना जा सकता है।

पश्चिम बंगाल

सदियों से बंगलाभाषी साहित्य क्षेत्र में अग्रणी दिखाई देते है। 'ब्रजबुलि' में बंगलाभाषी कवियों ने बहुत लिखा है। हिंदी के प्राचीन कवियों में विद्यापति, जयदेव आदि प्रसिद्ध रचनाकार रहे हैं। आधुनिक हिंदी के बंगलाभाषी लेखकों में भरतचंद्रराय गुणाकर, बंकिमचंद्र चटर्जी, अरविंद घोष, श्री सान्याल, डॉ सुनितिकुमार चटर्जी, आदि प्रमुख हैं। हिंदी पत्रकारिता की शुरुआत बंगाल के जुगल किशोर ने सन् 1826 ई. में 'उदंत मार्तंड' नामक पत्र की शुरुआत से की थी। हिंदी का संस्थागत प्रचार-प्रसार भी इसी प्रदेश से सन् 1800 ई. में फोर्ट विल्यम कॉलेज के हिंदी विभाग की शुरुआत से हुआ। हिंदी के प्रचार-प्रसार में पश्चिमी बंग राष्ट्रभाषा प्रचार सभा 24 परगना, कोलकाता का महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

मेघालय

12 जनवरी,1972 को 'मेघालय' को संघराज्य का दर्जा दिया गया। मेघालय में हिंदी और असमिया संपर्क भाषा के रूप में प्रयुक्त होती है।

नागालैंड

नागालैंड के दिमापुर में बाजारु हिंदी के नमूने प्राप्त होते हैं। सन् 1954 से राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के माध्यम से यहाँ पर हिंदी प्रचार-प्रसार का कार्य चल रहा है। संपर्क भाषा के रूप में जिस 'नागमिज' भाषा का प्रयोग यहाँ होता रहता है, वह नागा और असमिया का सम्मिलित रूप है। इसमें 75 प्रतिशत

हिंदी के शब्द होते हैं। डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे के अनुसार-पूर्वांचल के अन्य प्रदेशों की तुलना में यहाँ हिंदी का प्रचार-प्रसार अधिक हुआ है।[2]

मणिपुर

मणिपुर में मणिपुरी बोली जाती है तथा कुछ मात्रा में हिंदी का प्रयोग होने लगा है। डॉ. विजयपाल रेड्डी के अनुसार ''अपने धार्मिक संपर्क से मैदानी लोग (मीतै लोग) देश की सांस्कृतिक धारा से जुडे हुए हैं। इस कारण से भी यहाँ हिंदी की तीन स्वैच्छिक संस्थाएँ बहुत पहले से काम करती आ रही हैं। स्कूलों में बहुत पहले से हिंदी के अध्ययन की व्यवस्था की गई है। इसलिए नई पीढ़ी के पढ़ें-लिखें लोगों में अधिकांश हिंदी से परिचित हैं। 'इंफाल' शहर में काफी हद तक हिंदी से काम चलाया जाता है।''[3] मणिपुर राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, इंफाल यहाँ हिंदी के प्रचार-प्रसार में कार्यरत है।

त्रिपुरा

त्रिपुरा में बहुसंख्यक जन-जातियाँ अलग-अलग बोलियों का प्रयोग करती हैं। इनमें चकमा, बोड़ो, त्रिपुरी एवं रियाड़ आदि प्रमुख है। त्रिपुरा में सीमित रूप से हिंदी का प्रयोग किया जाता है। हिंदी के प्रचार-प्रसार में कुछ साहित्यिक संस्थाएँ यहाँ कार्यरत दिखाई देती है।

अरुणाचल प्रदेश

अरुणाचल, पूर्वी भारत का छोटा प्रदेश है। सन् 1972 ई. तक यहाँ देवनागरी लिपि का शिक्षा क्षेत्र में प्रयोग होता रहा तद्नंतर स्कूलों में अंग्रेजी को स्थान प्राप्त हुआ और द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग होने लगा है। हिंदी के प्रचार-प्रसार में वर्धा समिति के अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में यहाँ के छात्र अध्ययनरत हैं।

मिजोरम

मिजोरम पूर्वी प्रदेशों में से एक छोटा राज्य है। यहाँ की प्रमुख जनजातियों की बोलियों में मिजो, हमार, बोड़ो और चकमा प्रमुख है। यहाँ की प्रमुख भाषा मिजो है, शिक्षाध्ययन की भाषा भी यही है। कुछ मात्रा में यहाँ हिंदी का प्रयोग होता हुआ दिखाई देता है।

सिक्किम

सिक्किम भारत के पूर्वी अंचल का पहाड़ी राज्य है। इस राज्य में लेपचा, भोटिया, और लिंबू आदि प्रचलित भाषाएँ बोली जाती है। इन प्रचलित भाषाओं के साथ प्रमुख भाषा के रूप में नेपाली और हिंदी का प्रयोग किया जाता है।

जम्मू-कश्मीर

जम्मू-कश्मीर भारत का उत्तरवर्ती प्रदेश है इस प्रदेश की प्रमुख भाषा उर्दू है। इसके अलावा-''कश्मिरी, डोंगरी, बाल्ती, दरदी, पंजाबी, पहाड़ी तथा लद्दाखी आदि को जम्मू कश्मीर के संविधान की छठी सूची में क्षेत्रीय भाषाओं के रूप में मान्यता दी गई हैं।''[4] कश्मीर के शिवस्वामी, मखंक, बिल्हन, कल्हन, प्रवरसेन, भामह, उद्भट, रुद्रठ, अभिनव गुप्त, क्षेमेंद्र आदि संस्कृत के महान पंडित थे। कश्मीर में ब्रजभाषा में कविता लिखने वालों में कवि 'दत्त' का नाम उल्लेखनीय कहा जा सकता है। हिंदी के प्रचार-प्रसार में हरमुकूंद शास्त्री, श्री दौलतरामजी, श्रीमती कमला परिमू और राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा की उत्तर भारत की प्रांतीय शाखा जम्मू-कश्मीर राष्ट्रभाषा प्रचार समिति कार्यरत है।

गुजरात

भारत के पश्चिमी किनारे पर स्थित गुजरात ने सदियों से हिंदी की सेवा की है। डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त ने अपने 'हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास' में गुर्जर भूमि को हिंदी साहित्य के प्रवर्तन का श्रेय दिया है-''प्रमाणों के आधार पर सर्वप्रथम अहिंदी भाषी कवि सिद्ध होते हैं-चक्रधर। इसप्रकार हिंदी को सर्वप्रथम अहिंदी भाषी साहित्यकार गुजरात ने प्रदान किया।''[5] दादू दयाल, कृष्णदास, लल्लूलाल और स्वामी दयानंद सरस्वती गुजरातवासी थे। इन्होंने हिंदी प्रदेशों में बसकर हिंदी की सेवा की; तो नरसी मेहता, भालन, दयाराम, दलपतराय ने गुजरात में रहकर हिंदी की सेवा की। आधुनिक काल में लल्लुलाल, गोविंद गिल्लाभाई, जनार्धनराय नागर, मनहर चौहान, अंबाशकर नागर आदि ने हिंदी में विपुल कार्य किया है।

पंजाब

पंजाब की हिंदी परंपरा में गुरुनानक एवं सिख संप्रदाय का कार्य महत्वपूर्ण है। इन गुरुओं की परंपरा में गुरु अंगद, गुरु अमरदास, गुरु रामदास, गुरु अर्जुनदेव, गुरु तेगबहादूर सिंह आदि महत्वपूर्ण नाम लिए जा सकते हैं।

आधुनिक काल के पंजाबी लेखकों में श्रद्धाराम फुल्लौरी, उपेंद्रनाथ अश्क, यशपाल जैन, चंद्रगुप्त विद्यालंकार, इंद्रनाथ मदान, अमृता प्रीतम आदि हिंदी में रचनारत हैं। पंजाब में संपर्क भाषा के रूप में हिंदी को अपनाया गया है।

आंध्र प्रदेश

आंध्र प्रदेश की प्रधान भाषा तेलुगु है तथा यहाँ पर उर्दू को द्वितीय भाषा के रूप में स्वीकार किया गया है। "आंध्र के साथ हिंदी का संबंध पंद्रहवीं शताब्दी से ही जोड़ा जा सकता है जब वहाँ दक्खिनी हिंदी का रूप विकसित होने लगा था, कुछ विद्वान तो इसी कारण आंध्र प्रदेश को आधुनिक हिंदी की जन्मभूमि मानते हैं।"[6] पद्माकर, शिवन्न शास्त्री, पि.वि. सुब्बराव, नादेल्ल पुरुषोत्तम, वैचिपडगलु, नारायणराव आदि तेलुगु भाषी हिंदी लेखक कहे जा सकते हैं। हिंदी प्रचार सभा,हैदराबाद यहाँ हिंदी के प्रचार-प्रसार में सन् 1935 ई. से ही कार्यरत रही है।

तेलंगाना

18 फरवरी, सन् 2014 को आंध्र प्रदेश से विभक्त किया गया 29 वाँ राज्य तेलंगाना है। दक्खिनी हिंदी का यहाँ प्रभाव रहा है। तेलुगु और उर्दू इस राज्य की प्रमुख भाषाएँ हैं। हिंदी का प्रयोग भी यहाँ के लोग प्रचुर मात्रा में करते हैं।

कर्नाटक

कर्नाटक दक्षिणी पश्चिमी तट पर बसा हुआ प्रदेश है। कर्नाटक की प्रमुख भाषा कन्नड द्रविड़ परिवार की है। टीपु सुल्तान के शासन के कारण कर्नाटक में दक्खिनी हिंदी का प्रचलन रहा है। बीजापुर के आदिलशाह के दरबार में महिपति, शिशुनाथ शरीफ, जैसे हिंदी लेखक विद्यमान थे। हिंदी के भक्ति साहित्य के मूल में कर्नाटक वाणी का प्रभाव देखा जा सकता है। दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास की प्रेरणा से आधुनिक काल में यहाँ हिंदी के प्रचार-प्रसार का कार्य होता रहा है। वर्तमान में हिंदी के लेखकों में श्री चंद्रकांत कुसनूर, श्री केशव महागांवकर, डॉ. सरगु कृष्णमूर्ति, डॉ. विष्णु हेब्बार, डॉ. प्रभाशंकर,श्री सिद्धलिंग पट्टनशेट्टी, एम.एस. कृष्णमूर्ति,सनदा केशवमूर्ति, गीताराव आदि प्रमुख हैं। यहाँ के स्कूल, कॉलेजों,विश्वविद्यालयों में हिंदी अध्ययन-अध्यापन तथा हिंदी शोधकार्य जारी है।

तमिलनाडु

तमिलनाडु में राजभाषा के पद पर तमिल (मलयालम) भाषा को स्थान प्राप्त है, द्वितीय भाषा के रूप में यहाँ अंग्रेजी को अपनाया गया है। तमिल के 'कंब' नामक लेखक की 'प्रपन्न परिजात' धार्मिक एवं साहित्यिक कृति है। तमिल भाषी हिंदी लेखकों में डॉ.शेषन, रांगेय राघव, डॉ. बालसुब्रमण्यम, प्रो. गोपिचंद

नारंग विशेष ख्याति प्राप्त है। तमिल के हिंदी शोध कर्ताओं में-डॉ.शंकरराजु नायडू, डॉ.जयरामन, श्रीमती तुलसी जयरामन, श्री क.स. निवासाचार्य, डॉ. बिलिनाथन, श्री उमाचंद्रन, श्री जमदग्नि, डॉ. मलिक मोहम्मद, डॉ. एन. राजगोपालन, डॉ.एस.एन.गणेशन आदि के नाम ख्याति प्राप्त हैं।

केरल

भारत के दक्षिण में 'केरल' बसा हुआ है। बंगाल, गुजरात, मुंबई, आदि बंदरगाहों की तरह केरल एक प्रमुख सांस्कृतिक केंद्र रहा है। तिरविंताकूर के राजा गर्भश्रीमान स्वाती तिरूनाल श्री रायवर्मा, त्यागराज, पुराने जमाने के हिंदी कवि हैं। आज केरल में अनेक विद्वान तथा हिंदी प्रचारक संस्थाएँ हिंदी के विकास में अपना प्रदेय दे रही हैं।

गोवा

गोवा दक्षिण प्रदेशीय पश्चिमी समुद्री तट पर बसा हुआ एक छोटा भारत संघ का 25 वाँ राज्य है। गोवा राज्य की भाषा मुख्य रूप से कोंकणी और मराठी है। कोंकणी और मराठी की लिपि देवनागरी है। यहाँ के लोग हिंदी समझते और बोलते हैं।

केंद्रशासित प्रदेशों में हिंदी की स्थिति

भारत के केंद्रशासित प्रदेशों में हिंदी का प्रयोग होता हुआ दिखाई देता है। अंदमान-निकोबार द्वीप समूहों में बंगाली, हिंदी, निकोबारी, तमिल, तेलुगु, मलयालम आदि भाषाएँ बोली जाती हैं। विशेष रूप से हिंदी का प्रयोग संपर्क भाषा के रूप में होता है। चंडीगढ़ में पंजाबी और हिंदी का प्रचलन रहा है। दमण और दीव में गुजराती, मराठी और संपर्क भाषा हिंदी व्यवहृत होती है। पांडिचेरी में तमिल, तेलुगु, मल्यालम, अंग्रेजी और फ्रेंच के साथ हिंदी बोली जाती है। लक्षद्वीप की प्रमुख भाषा मलयालम है और हिंदी का प्रयोग भी काफी मात्रा में होता है।

इस तरह उड़िया, बंगला, असमियाँ, जम्मू-कश्मीर, गुजरात, पंजाब, आंध्रप्रदेश, केरल, कर्नाटक आदि प्रदेशों का हिंदी से पुराना संबंध रहा हैं और मेघालय, नागालैंड, मणिपुर, त्रिपुरा, अरुणाचल प्रदेश, मिजोरम, तमिलनाडु, गोवा तथा केंद्रशासित प्रदेशों में हिंदी की परंपरा न के बराबर है। आम बोलचाल के रूप में यहाँ हिंदी का प्रयोग होता हुआ दिखाई देता है।

उपरोक्त अहिंदी भाषी प्रांतों की तरह महाराष्ट्र भी हिंदी भाषा और साहित्य के विकास में अग्रणी है। महाराष्ट्र में हिंदी के विकास की स्थिति को थोड़ा-अधिक विस्तार के साथ प्रस्तुत किया जा रहा है-

महाराष्ट्र

महाराष्ट्र, भारत के केंद्र में पश्चिमी तट पर बसा हुआ बृहत् आकारमान वाला प्रदेश है। प्राचीन काल में इसे 'दक्षिणापथ' अर्थात् दक्षिण की ओर जाने वाला मार्ग कहा जाता था। महाराष्ट्र शब्द की व्युत्पत्ति के संदर्भ में डॉ. भांडारकर जी का मत है-''रटठ्' और 'महारटठ्' के जनवाची शब्दों के आधार पर इसे महाराष्ट्र कहा जाने लगा।''[7] महाराष्ट्र उत्तर भारत एवं दक्षिण भारत को जोडने वाला सेतुबंध रहा है इस कारण भारत वर्ष की जनप्रचलित भाषा हिंदी का महाराष्ट्र से संबंध रहा है। महाराष्ट्र में हिंदी की प्रदीर्घ परंपरा पर प्रकाश डालने के पूर्व महाराष्ट्र की भौगालिक सीमाओं का परिचय प्राप्त करना आवश्यक है क्योंकि भाषा विकास पर भौगोलिक सीमाओं का प्रभाव पड़ता है।

महाराष्ट्र के प्रमुख प्रादेशिक विभागों में हिंदी

महाराष्ट्र के पश्चिम में अरब महासागर, पश्चिमोत्तर में गुजरात, उत्तर में मध्यप्रदेश, दक्षिण पूर्व में आंध्रप्रदेश तथा दक्षिण में कर्नाटक राज्य की सीमाएँ लगी हुई है। अतः इन राज्यों के संपर्क में महाराष्ट्र सदैव रहा है।

महाराष्ट्र के पाँच प्रमुख प्रादेशिक विभाग हैं। विदर्भ, मराठवाड़ा, कोंकण, पश्चिम महाराष्ट्र और खानदेश। विदर्भ प्रांत में नागपुर, भंडारा, गड़चिरोली, चंद्रपुर, वर्धा, गोंदिया, अमरावती, बुलढ़ाणा, अकोला, यवतमाळ, वाशिम आदि जिलों का समावेश है। विदर्भ हिंदी प्रदेशों के संपर्क में हमेशा से रहा है। आज भी यहाँ नागपुरी हिंदी प्रचलित है।

मराठवाडा के अंतर्गत प्रमुखतः औरंगाबाद, नांदेड़, बीड़, जालना, परभणी, हिंगोली, लातूर, उस्मानाबाद आदि जिलों का समावेश है। मराठवाड़ा पर मुस्लिम शासन (निजामशाही) का आधिपत्य होने के कारण यहाँ पर दक्खिनी हिंदी का प्रचलन अल्लाउद्दीन के शासन काल से ही रहा है।

कोंकण में ठाणे, रत्नागिरी, सिंधुदुर्ग, रायगढ़ तथा मुंबई प्रदेश आदि का समावेश किया जाता है। यहाँ पर सूफी संतों का प्रभाव सातवीं शदी से उपलब्ध होता है। आ. विनयमोहन शर्मा ने लिखा है-इतिहास से ज्ञात होता है कि अरबों

ने खलीफा उमर के शासन में ईसा की 7 वीं शताब्दी में भारत के पश्चिमी समुद्री किनारे पर कई आक्रमण किए। कोंकण के ठाणा जिले पर भी छापे मारे, पर वे सफल नहीं हो सके, यों अरबों का भारतीय पश्चिमी प्रांतों के साथ व्यावसायिक संबंध बहुत पुराना रहा है।[8] इस उद्धरण के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है कि इन प्रदेशों में भी हिंदुस्तानी का प्रचलन पुराना रहा है।

पश्चिम महाराष्ट्र के अंतर्गत पुणे, सातारा, सांगली, सोलापुर, कोल्हापुर आदि प्रमुख जिलों का समावेश किया जाता है। पश्चिम महाराष्ट्र, हिंदी स्वराज्य संस्थापक छत्रपति शिवाजी महाराज तथा शाहू महाराज की जन्मभूमि है। इन शासकों का उत्तर भारतीयों से पुराना संबंध रहा है। इस कारण इन प्रदेशों में भी हिंदी फलती और फूलती रही है।

नाशिक, धूलिया, नंदुरबार, जलगांव, अहमदनगर, भुसावळ इत्यादि प्रदेश खानदेश में गिने जाते हैं। खानदेश में हिंदी का प्रचलन रहा है। वर्तमान में महाराष्ट्र के विश्वविद्यालयों में स्थित प्राध्यापकगण हिंदी की अमूल्य सेवा कर रहे हैं। स्पष्ट है कि महाराष्ट्र के सभी प्रादेशिक विभागों में हिंदी फलती और फूलती रही है।

महाराष्ट्र में हिंदी की प्रदीर्घ परंपरा

महाराष्ट्र का हिंदी से संबंध अपभ्रंश काल से दिखाई देता है। अपभ्रंश के कवि पुष्पदंत, स्वयंभू, हेमचंद्र तथा मुनि कनकामर महाराष्ट्र से संबंधित रहे हैं। 'पुष्पदंत' राष्ट्रकूट राजा तीसरे कृष्ण के शासनकाल में विद्यमान थे। महाराष्ट्री अपभ्रंश से संबंधित जैन कवि कनकामर की 'करकण्डुचरिऊ' महाराष्ट्री अपभ्रंश का खंडकाव्य है।

नाथ साहित्य का संबंध संपूर्ण भारतवर्ष के सभी प्रान्तीय साहित्य में उपलब्ध होता है। भारत के अलग-अलग प्रांतों में अलग-अलग नाथ सूचियाँ दिखाई देती हैं। यादवकालीन मराठी ग्रंथ 'लीळाचरित्र' में अनेक नाथों का गौरवपूर्ण उल्लेख प्राप्त होता है। सरहपा ने महामुद्रा की साधना महाराष्ट्र में ही संपन्न की थी। नाथ संप्रदाय की परंपरा भी पुणे से संबद्ध थी। गोरखनाथ के शिष्य सक्करनाथ ने अपना केंद्र पुणे में ही स्थापित किया था।[9] आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी ने 'नाथ संप्रदाय' नामक पुस्तक में भारतवर्ष में स्थित नाथमठों की सूची दी है जिनमें गंभीरमठ (पूना), त्र्यंबक मठ (नाशिक), पाण्डुधुनी (मुंबई), बत्तीस सराला (सातारा) आदि का उल्लेख किया है। महाराष्ट्र में हिंदी की प्रदीर्घ परंपरा को निम्नलिखित बिंदुओं में देख सकते हैं।

आदिकालीन महाराष्ट्र में हिंदी

हिंदी साहित्य के आदिकाल की समय सीमा आ. रामचंद्र शुक्ल ने वि. सं. 1050 से वि. सं. 1375 तक मानी है। मराठी साहित्य में यह समय-सीमा 1100 से 1350 तक स्वीकृत है। अतः दोनों साहित्य के आदिकाल की समय सीमा समानरूप से प्रवाहित होती हुई दिखाई देती है। महाराष्ट्र में नाथसंप्रदाय, महानुभाव संप्रदाय, वारकरी संप्रदाय, दत्त संप्रदाय और समर्थ संप्रदाय का धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान है। इन्हीं संप्रदायों के संत कवियों ने हिंदी में भी पद रचना की हुई दिखाई देती है। महाराष्ट्र के शासन-कर्ताओं ने भी हिंदी की सेवा की हैं। दक्षिण महाराष्ट्र के चालुक्य राजा सोमेश्वर का वि. सं. 1184 का एक ज्ञानकोश 'अभिलषितार्थ-चिंतामणि' प्रकाश में आया है, जिसमें राग-रागिनियों के उदाहरण है। इन उदाहरणों में हिंदी का एक उदाहरण है-'नन्द गोकुल जायो कान्हजो गोवी जने पड़िहेली रे।''[10]

महाराष्ट्र के आदिकालीन संत कवियों में क्रमशः आद्य कवि मुकुंदराज का नाम प्रथम स्थान पर लिया जा सकता है। मराठी के आद्य कवि मुकुंदराज का एक हिंदी पद उपलब्ध होता है, जिसे यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है-

''मुंकुदराज मन को सिखावत पलक पलक मों बात रे।
सद्गुरु शब्द को याद करके श्रीराम नाम तू बोल रे।।''[11]

इस पद से यह समझ में आता है कि उत्तर भारतीय संत परंपरा के बीज महाराष्ट्र के आद्य संत कवियों के काव्य में पाए जाते हैं। इसी क्रम में दूसरे स्थान पर चक्रधर स्वामी का नाम लिया जा सकता है। यह गुजरातवासी थे पर महाराष्ट्र में महानुभाव पंथ का प्रवर्तन इन्होंने ही किया था।

डॉ. अशोक कामत ने दामोदर पंड़ित नामक मराठी कवि को आद्य हिंदी कवि के रूप में घोषित किया है। प्रायः 60 चौपदियों की उन्होंने हिंदी में रचना की है।

स्वामी चक्रधर की शिष्या 'महदायिसा' हिंदी की प्रथम महिला कवयित्री है। इस संदर्भ में डॉ. विलास गुप्ते ने लिखा है- ''हिंदी को केवल अहिंदी भाषी पुरुष साहित्यकारों का ही सहयोग नहीं रहा है अपितु अहिंदी भाषी महिलाएँ भी हिंदी में काव्य रचना करती आयी हैं। हिंदी की सर्वप्रथम अहिंदी भाषी महिला साहित्यकार है महाराष्ट्र की उमांबा।''[12] यह उमांबा अन्य कोई न होकर महदायिसा का ही दूसरा नाम है।

संत ज्ञानदेव (1275-1296 ई.), मुक्ताबाई (1279-1297 ई.) आदि के हिंदी पद प्राप्त होते हैं। संत नामदेव (1270-1350 ई.) के पदों को 'गुरुग्रंथसाहिब' में स्थान प्राप्त हुआ है।

मध्यकालीन महाराष्ट्र में हिंदी

हिंदी साहित्य के इतिहास में वि. सं. 1375 से 1700 तक का काल पूर्वमध्यकाल (भक्तिकाल) और वि.सं. 1700 से 1900 तक का उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल) माना गया है। इसी कालावधि में महाराष्ट्र में बहमनी राज्य के 11 सुल्तानों का और निजामशाही, आदिलशाही आदि मुस्लिम सत्ताओं का अधिपत्य रहा। इस कारण महाराष्ट्र में दक्खिनी हिंदी साहित्य का बोलबाला रहा। तदुपरांत छत्रपति शिवाजी महाराज का राज्य सामान्यतः (1600 से 1700) तक रहा। 1700 से 1800 तक पेशवाओं ने मराठा शासन की बागडोर संभाली। मराठा शासन कर्ताओं के कार्यकाल में भी हिंदी को आश्रय मिलता रहा है। अल्लाउद्दीन से लेकर निजामशाह, आदिलशाह, कुतुबशाह आदि के राजकाज में लगभग 1296 से 1600 तक यह प्रयुक्त होती रही।

दक्खनी साहित्य के प्रारंभिक साहित्यकारों में ख्वाजा बंदेनवाज गेसूदराज, सय्यद मोहमद अकबर 'हुसेनी', 'निजामी' आदि प्रमुख हैं। मुल्ला वजही, मुल्ला गवासी, जुनैदी, इब्न निशानी, तबई आदि भी दक्खनी हिंदी के प्रमुख कवि रहे हैं। इन मुस्लिम फकिरों के साथ संत एकनाथ, रामदास, नामदेव, जनाबाई, शिवाजी महाराज तथा अन्य अनेक हिंदी सेवियों पर दक्खनी हिंदी का प्रभाव देखा जा सकता है। महाराष्ट्र के वली औरंगाबादी, शाह अब्दुल्ला 'आशिक' मिर्जा दाऊद, सिराज औरंगाबादी, मुंशी लक्ष्मीनारायण 'शफीक' आदि भी दक्खनी हिंदी की सेवा करते रहे हैं। कुरेशी, दरियाखान, इस्माईल पठान आदि का महाराष्ट्र की सूफी परंपरा के हिंदी कवियों में विशेष स्थान रहा है।

मराठा शासक शहाजी राजे भोसले, शिवाजी महाराज, संभाजी महाराज, शाहू महाराज ने हिंदी को आश्रय प्रदान किया। शिवाजी महाराज की हिंदी में लिखी पंचपदी इस प्रकार है-

''जय हो महाराज, गरीब निवाज
बंदा कमीना कहलाता हूँ, साहिब तेरी लाज
मैं सेवक बहु सेवा माँगू, इतना सब है काज।
छत्रपति तुम सेंकदार शिव, इतना हमारा अर्ज।''[13]

शहाजी महाराज के दरबार में जयराम पिण्डे, चिंतामणि, शंकर सुकवि, रघुनाथ व्यास, ठाकूर, लछिराम, श्याम गुसाईं, शिवदास, नारायण भट्ट, केहरी, सुधाकर कवि, द्वारकादास, बलभद्र, सुखलाल, रघुनंद, लालमणि, घनश्याम आदि कवि थे।

शिवाजी महाराज के दरबार में कवि भूषण, श्री गोविंद, गंगेश, रत्नकवि, सोनकवि, कविराज सुखदेव, अज्ञानदास, पाला कवि, गौतम कवि, मतिराम आदि को आश्रय एवं सम्मान प्राप्त था।

शाहू महाराज के दरबार में भूषण, निरंजन माधव, ठाकूरसी महाराज, भावसिंह आदि सम्मानित थे।

मराठा शासन कर्ताओं में महादजी शिंदे और दौलतराव शिंदे हिंदी के अनन्य सेवक रहे हैं। ''इन प्रमुख हिंदी कवियों के अतिरिक्त छ. शाहू महाराज द्वितीय, छ. प्रतापसिंह भोसले, बाजीराव प्रथम, सवाई माधवराव तथा बाजीराव द्वितीय पेशवाओं के दरबार में प्रसंगवश आने वाले कवियों में महिपति, ठाकूरदास, तथा होनाजी, राम जोशी, सगनभाऊ, प्रभाकर, अनंतफंदी आदि लोककवि शाहिरों के उल्लेख प्राप्त होते हैं।''[14] अर्थात मध्यकालीन लगभग सभी मराठा शासनकर्ताओं ने हिंदी के विकास में योग दिया है।

महाराष्ट्र में संतों ने मराठी के साथ हिंदी का सहारा लिया। मध्यकाल के संतों में संत एकनाथ, संत तुकाराम और समर्थ रामदास प्रमुख हैं। इन्होंने हिंदी को अपनाकर प्रांतवाद को मिटाया है और देश की अखंडता को दृढ़ता प्रदान की है। संत एकनाथ (1533-1599) ने हिंदी प्रेमी भारूडों की रचना की थी।

संत तुकाराम (1608-1650) हिंदी प्रेमी कवि थे। उनके हिंदी पदों का आधार 'तुकारामाची गाथा' अर्थात तुकाराम की समग्र रचना में संकलित हिंदी पदों को देखा जा सकता है।

समर्थ रामदास (1608-1681) को छत्रपति शिवाजी महाराज के गुरू के रूप में देखा जाता है। महाराष्ट्र में इनसे प्रभावित समर्थ-संप्रदाय आज भी विद्यमान है। "श्री समर्थ गाथा में इनके हिंदी भाषा में लिखित 78 पद संकलित हैं।''[15]

रामदास के शिष्यों में कान्होबा, रंगनाथ स्वामी, वामन पंडित, दासोपंथ, जनार्धन स्वामी, मानसिंह, बहिनाबाई, बयाबाई, हरिहर, केशवस्वामी, गोपालनाथ आदि ने हिंदी पदों की रचना की हैं। इसी समय मराठवाडा के निपट निरंजन, श्री शेख महंमद बाबा श्रीगोंदेकर, अमृतराय, मध्वमुनीश्वर, तोताराम महाराज, चक्रपानी येलम्बकर, मानपुरी बाबा हिंदी में लिखते रहे हैं।

आधुनिक महाराष्ट्र में हिंदी :

ब्रिटिश आधिपत्य के कारण आधुनिक युग के प्रारंभ से ही हिंदी और मराठी साहित्य पर अंग्रेजी का प्रभाव पडने लगा था। अंग्रेजी शिक्षित वर्ग तक सीमित थी और हिंदी जन प्रचलित भाषा थी। इस कारण ईसाई मिशनरियों ने अपने धर्म प्रसार हेतु हिंदी को माध्यम बनाया। पुणे के लोकमान्य तिलक हिंदी के पक्षधर थे। हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सभी जाति-धर्मों के लोगों ने संपर्क-भाषा हिंदी को दृढ़ता से अपनाया। हिंदी की लगभग सभी विधाओं में महाराष्ट्र के साहित्यकारों ने लिखा है।

मुंबई प्रांत में मल्लारी आबाजी की लावणी को आधुनिक काल की प्रथम हिंदी कविता के रूप में देखा जा सकता है। यह कविता 'मुंबईचे वर्णन' नामक ग्रंथ में 1863 ई. में प्रकाशित की गई है। ''प्रस्तुत कविता काल की दृष्टि से ही नहीं, भाव-बोध और भाषा की तीनों दृष्टियों से नए युग की अधिक कड़ी सिद्ध होती है।''[16]

आधुनिक काल के हिंदी संत कवियों में संत तुकडोजी और अडकोजी के नाम ख्यातिप्राप्त माने जाते हैं। महाराष्ट्र में हिंदी कविता के माध्यम से संत तुकडोजी ने राष्ट्रीय ऐक्य निर्माण का कार्य किया है। ''संत तुकडोजी आधुनिक युग के पहले संत हैं, जिन्होंने अहिंदी भाषी क्षेत्र के ग्रामीण जन-जीवन में हिंदी के प्रति गहरी आस्था निर्माण की। संत तुकड़ोजी की लगभग पच्चीस रचनाएँ उपलब्ध हैं, जिनमें काव्य, आत्मवृत्त, यात्रा-वर्णन, निबंध, भाषण आदि वैचारिक साहित्य का अंतर्भाव हैं।''[17] तुकड़ोजी के साथ ही साथ केशवराव फनसे, सिद्धनाथ आगरकर, आत्माराम देवकर आदि के नाम भी इस क्षेत्र में उल्लेखनीय कहे जा सकते हैं।

छायावादी युग के प्रमुख महाराष्ट्रीयन कवियों में प्रभाकर माचवे, गजानन माधव 'मुक्तिबोध', हरिनारायण व्यास, आदि के नाम ख्याति प्राप्त रहे हैं।

आज महाराष्ट्र में हिंदी कविता के क्षेत्र में कार्य करने वालों में एकानेक कवियों के नाम गिनाएँ जा सकते हैं, उनमें-मनोज सोनकर, दिनकर सोनवलकर, डॉ.दामोदर खडसे, डॉ.काझी 'जर्रा', डॉ.बलभीमराज गोरे, डॉ.नामदेव उतकर, डॉ.हनुमंत रणखांब, डॉ. पद्मा पाटील, डॉ.हनुमंत पाटील, डॉ.सरदार मुजावर, डॉ.रु.गो.चौधरी, प्रा.रमेशकुमार लाहोटी, देवकीनंदन सारस्वत, डॉ.दंगल झाल्टे, अजीज अन्सारी, अरूण पाटील, ज्योति गजभिए, किशोर गिरड़कर, विनोदकुमार,

दामोदर मोरे, ज्ञानराज गायकवाड, माया गोविंद, विद्या चिटको, वर्षा लोखंडे, शिवप्रसाद बागडी, शिवाजी नाळे, राजेश, छगन पंजे, कमला सेतपाल, धृति बेडेकर, शैलजा करोडे, गरिमा पाटील, अरुण पवार, शीतल नागपुरी, राम दलाल इत्यादि प्रमुख हैं। पुणे में आज के दौर में अनेक कवि लेखन में कार्यरत हैं, जिनका उल्लेख अलग अध्याय में किया जा रहा है।

हिंदी की प्रथम कहानी माधवराव सप्रे की 'एक टोकरी भर मिट्टी' मराठी लेखक की प्रथम हिंदी कहानी है, जो सन् 1901 ई. में 'छत्तीसगढ़ मित्र' में प्रकाशित हुई थी। बाबा आत्माराम देवकर, श्री अनंत गोपाल शेवडे, डॉ. प्रभाकर माचवे, श्री.गजानन माधव 'मुक्तिबोध', डॉ.र.श. केलकर, गोपाळ नेने, मुरलीधर जगताप, श्रीमती मालती परुलकर, मालती जोशी, श्रीपाद जोशी, भृंग तुपकरी, श्रीमती यमुना शेवड़े, ज्योत्स्ना देवधर, द.मा.मिरासदार, श्री.पु.भा.भावे, श्रीनिवास जोशी, सौ. निर्मला कुलकर्णी, डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे आदि महाराष्ट्र के वह साहित्यकार हैं, जिन्होंने हिंदी की कविता, कहानी, उपन्यास और आलोचना आदि क्षेत्रों में अपनी लेखनी चलाई हैं।

महाराष्ट्र में हिंदी नाट्य साहित्य के लेखन में भी पहल बरकरार है। इस संदर्भ में यह उद्धरण दृष्टव्य है- ''हिंदी साहित्य की विविध विधाओं में महाराष्ट्र ने उल्लेखनीय योगदान दिया है। जहाँ तक हिंदी रंगमंच का संबंध है, महाराष्ट्र ने इसे समृद्ध ही नहीं किया, जन्म भी दिया है। इनके जन्मदाता श्री विष्णुदास अमृत भावे सांगलीकर है। इन्होंने हिंदी ड्रामेटिक कोर या सांगलीकर मंडली के माध्यम से शनिवार दि. 26 नवंबर, 1853 ई को 'राजा गोपीचंद और जालंधर' हिंदुस्तानी भाषा में 'ग्रँट रोड थिएटर' बम्बई में मंचित करके हिंदी रंगमंच की स्थापना की। इसी नाटक कंपनी को हिंदी रंगमंच की जननी होने का गौरव प्राप्त है।[18] विशेषतः पश्चिम महाराष्ट्र की अनेक नाटक कंपनियों ने इस क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है।

हिंदी आलोचना तथा शोध कार्य के संबंध में महाराष्ट्र के सभी विश्वविद्यालय अग्रणी दिखाई देते हैं। महाराष्ट्र में पुणे विश्वविद्यालय, तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ, मुंबई विश्वविद्यालय, नागपुर विश्वविद्यालय, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड, डॉ. बाबासाहेब आंबेड़कर मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद, संत तुकड़ोजी महाराज विश्वविद्यालय, अमरावती, सोलापुर विश्वविद्यालय, उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय जलगांव,

तथा इन विश्वविद्यालयों से संलग्नित अनुसंधान केंद्रों और मुंबई हिंदी विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा आदि में स्थित प्राध्यापक गण, शोध-छात्र और अनुसंधाता मराठी और हिंदी के तुलनात्मक दृष्टिकोण को लेकर हिंदी की हर विधा में शोध कार्य कर रहे हैं।

महाराष्ट्र में हिंदी से मराठी, मराठी से हिंदी तथा अन्य भाषाओं से हिंदी में अनुवाद की लंबी परंपरा रही है। प्राचीन साहित्य में 'ज्ञानेश्वरी', मध्ययुगीन साहित्य में 'गीता-रहस्य' जैसे ग्रंथों के अनुवाद हुए हैं। इन अनुवादकों में वामन चोरघड़े, प्रभाकर माचवे, वसंत देव, पद्माकर जोशी, श्रीपाद जोशी आदि अग्रणी रहे हैं। मामा वरेरकर, मुक्ताबाई दीक्षित, मो.ग.रांगणेकर के नाटकों के हिंदी में अनुवाद मिलते हैं।

महाराष्ट्र के काकासाहेब कालेलकर, अनंत गोपाल शेवड़े हिंदी यात्रा साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर माने जा सकते हैं। हिंदी के संस्मरण लेखकों में गोपाळ परशुराम नेने, गजानन माधव 'मुक्तिबोध', डॉ.चंद्रकांत बांदिवड़ेकर आदि के नाम उल्लेखनीय कहे जा सकते हैं। हिंदी की रेखाचित्र विधा में सिद्धनाथ माधव आगरकर, पंड़ित सातवलेकर, सरदार माधवराव किबे, कमलाताई किबे, अनंत सदाशिव अलतेकर, श्रीधर व्यंकटेश पुणतांबेकर, ग.रा.वैशंपायन, न.चि.जोगलेकर, रा.र.खाडीलकर व भास्कर रामचंद्र भालेराव आदि लेखकों के नाम उल्लेखनीय कहे जा सकते हैं। इन सभी लेखकों ने हिंदी की विविध विधाओं में अपनी लेखनी चलाई हैं।

हिंदी के प्रचार-प्रसार में महाराष्ट्र अग्रणी रहा है। महात्मा गांधी की प्रेरणा से महाराष्ट्र के अनेकों विद्वानों ने हिंदी के प्रचार-प्रसार में योगदान प्रदान किया हैं। हिंदी का प्रचार-प्रसार करने वाले प्रमुख प्रचारकों में विनोबा भावे, काकासाहब कालेलकर, साने गुरुजी, दादासाहेब धर्माधिकारी, प्रभाकर दिवान, श्रीपाद जोशी(पुणे), यदुनाथ थत्ते(पुणे), गो.प.नेने(पुणे), विश्वनाथ वैशंपायन, भालचंद्र आपटे, राहुल बारपुते, सीताराम करमरकर, ग.वा.करमरकर, नारायण रामराव चितांबरे, विजय बापट, मधुकरराव चौधरी, गंगाधर हुदुरकर, इंद्र पवार, अनिलकुमार विश्वनाथ पुराणिक, डॉ.कृष्ण दिवाकर, दिवेकर, बाबूराव कुमठेकर, डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे, डॉ.भगवानदास तिवारी, डॉ.अनंतराम त्रिपाठी, डॉ. रामजी तिवारी आदि के नाम गिनाए जा सकते हैं।

महाराष्ट्र में हिंदी के प्रचार-प्रसार में हिंदी सेवी संस्थाओं के कार्यकर्ता, विश्वविद्यालयों तथा शिक्षा क्षेत्र से संबंधित प्राध्यापकगण, शोधकर्ता, अनुवादक,

साहित्यकार, प्रचारक आदि का योगदान रहा है। इन्होंने समाजसुधार, समाज उद्‌बोधन, राष्ट्रीयता, राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रभाषा प्रेम को साहित्य में उद्‌घाटित करने का सशक्त प्रयास किया है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि हिंदी भाषा तथा साहित्य की समृद्धि में आदिकाल से लेकर विद्यमान युग तक भारतवर्ष के सभी प्रदेशों का योगदान रहा हैं। भारत के सभी प्रांतों में व्याप्त हिंदी भाषा और साहित्य की यह प्रदीर्घ परंपरा देश को एकता के सूत्र में बाँधने में सक्षम है। स्वतंत्रता के उपरांत हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने हेतु हिंदीतर प्रदेशों ने उल्लेखनीय कार्य किया हैं। महाराष्ट्र में स्थापित हिंदी सेवी संस्थाएँ, हिंदी प्रचारक, हिंदी की विभिन्न विधाओं में लेखन करनेवाले साहित्यकार, हिंदी चिंतक आदि का हिंदी को लक्षणीय प्रदेय रहा है। महाराष्ट्र में स्थित 'पुणे' जैसे केंद्रीय नगर की भी इस दिशा में महति भूमिका मानी जा सकती है। इसे क्रमशः आगामी अध्याय में रेखांकित किया जा रहा है।

संदर्भ :

1. हिंदी साहित्य को हिंदीतर प्रदेशों की देन - सं.डॉ.मलिक मोहमद, पृ.166
2. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ.सूर्यनारायण रणसुभे, पृ.308
3. 'भाषा'- प्रो. विजयराव रेड्डी के आलेख से, - पृ.20
4. हिंदी साहित्य तथा भाषा को महाराष्ट्र की देन - डॉ.रणजीत जाधव, पृ.23
5. आधुनिक हिंदी साहित्य को अहिंदी लेखकों का योगदान - डॉ.विलास गुप्ते, पृ.39
6. प्रदेशों में हिंदी (हिंदी वार्षिकी,1970) - पृ.203
7. भारतीय हिंदी परिषद (स्मरणिका),पुणे विश्वविद्यालय 1970 - पृ.17
8. आदिकालीन हिंदी के विकास में महाराष्ट्र का योगदान - श्रीकांत मधुकर जोशी, पृ.148
9. हिंदी के विकास में महाराष्ट्र का योगदान - सं. सी. एल्. प्रभात,पृ.1,2.
10. हिंदी साहित्य को विदर्भ की देन - पं.प्रयागदत्त शुक्ल, पृ.17
11. आदिकालीन हिंदी के विकास में महाराष्ट्र का योगदान - श्रीकांत मधुकर जोशी, पृ.96
12. आधुनिक हिंदी साहित्य को अहिंदी लेखकों का योगदान - डॉ. विलास गुप्ते, पृ.34,35
13. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य के संवर्धन में महाराष्ट्र की भूमिका - डॉ. विजया वधवा, पृ.37
14. हिंदी के विकास में महाराष्ट्र का योगदान - सं. सी. एल्. प्रभात, पृ. 61
15. हिंदी और महाराष्ट्र का स्नेहबंध - डॉ.अशोक कामत, पृ.42

16. हिंदी के विकास में महाराष्ट्र का योगदान - सं. सी. एल्. प्रभात, पृ.136
17. 'राष्ट्रवाणी' द्वैमासिक मई, जून, 2008. में डॉ. रमेशचंद्र परदेशी का शोधालेख महाराष्ट्र के राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज का योगदान - पृ.24
18. हिंदी के विकास में महाराष्ट्र का योगदान - सं. सी. एल्. प्रभात, पृ. 120.

पुणे की प्रमुख हिंदी प्रचार संस्थाएँ

द्वितीय अध्याय

पुणे में हिंदी का प्रचार-प्रसार (प्रमुख संस्थाएँ)

प्रस्तावना

पूर्व अध्याय में महाराष्ट्र सहित हिंदीतर प्रदेशों में हिंदी की प्रदीर्घ परंपरा को उद्घाटित किया गया है। महाराष्ट्र के केंद्रवर्ती शहर पुणे में हिंदी सदियों से प्रयुक्त होती रही है। इसके लिए पुणे निवासी (हिंदी भाषी और अहिंदी भाषी) दोनों जिम्मेदार दिखाई देते हैं। पुणे शहर की भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, व्यापारिक और शैक्षिक पार्श्वभूमि को देखने पर यह बात और अधिक स्पष्ट हो जाती है। इसलिए यहाँ पर पुणे की इस पार्श्वभूमि को संक्षेप में देखने का प्रयास करेंगे-

पुणे का भाषिक भूगोल और हिंदी

पुणे महाराष्ट्र का प्रमुख ऐतिहासिक, व्यापारिक एवं शिक्षा क्षेत्र से संबंधित प्रमुख शहर माना जाता है। इसे महाराष्ट्र की सांस्कृतिक राजधानी तथा विद्या का मायका भी माना जाता है। इसका भौगोलिक क्षेत्रविस्तार लगभग 710 किमी^{2} है। सन् 2014 ई. की जनगणना के अनुसार 8,242,142 आबादी यहाँ बसी हुई है। पुणे की साक्षरता का औसत 81 प्रतिशत रहा है। यहाँ की आबोहवा इतनी अच्छी और लुभावनी है कि भारतवर्ष के तमाम लोगों को यहाँ पर दिन गुजारने की ख्वाहिश होती है। ऐसे तमाम कारणों एवं भौगोलिक वातावरण के कारण दिन-प्रतिदिन शहर की आबादी बढ़ती हुई दिखाई देती है।

आमतौर पर पुणे को मराठी भाषिक शहर माना जाता है। यहाँ की मराठी मानक भाषा (Standard Language) मानी जाती है। मुख्यतः यह ब्राह्मणी सभ्यता का शहर माना जाता है अपितु यहाँ पर हिंदु-71.0 प्रतिशत, मुस्लिम-12.0 प्रतिशत, बौद्ध-10.0 प्रतिशत, जैन-2.0 प्रतिशत और अन्य- 5 प्रतिशत लोग निवास करते हैं और अंतरप्रांतीय व्यवहार के लिए ये लोग प्रायः हिंदी और

अंग्रेजी भाषाओं का प्रयोग करते हैं। अंग्रेजी का प्रयोग कम मात्रा में केवल उच्च शिक्षित लोगों द्वारा किया जाता है परंतु 'हिंदुस्तानी' या 'हिंदी' का प्रयोग मराठी के बाद सर्वाधिक मात्रा में होता है। पुणे के इतिहास पर नजर डालने से यह बात स्पष्ट होती है कि पुणे के विविधांगी इतिहास के साथ-साथ हिंदी का इतिहास भी चलता है। अतएव पुणे की ऐतिहासिक पार्श्वभूमि को देखना यहाँ जरुरी है। पुणे की ऐतिहासिक पार्श्वभूमि कुछ इस प्रकार है-

पुणे का ऐतिहासिक महत्व और हिंदी भाषा

पुणे एक अति प्राचीन नगर है। पुणे का उल्लेख राष्ट्रकूट नरेश कृष्ण के ताम्रदान पत्र में (सन् 758 ई.) 'पुण्य' के नाम से प्राप्त होता है। कालांतर में 'पुणक' शब्द परिवर्तित होकर 'पुणवड़ी' में परिवर्तित होते-होते पुणे का रूप धारण किया।''[1] पुणे पर अनेक राज्यकर्ताओं के राज्य करने के उल्लेख प्राप्त होते हैं- ''इतिहास से ज्ञात होता है कि सन् 1213 ई. के लगभग अल्लाउद्दीन खिलजी द्वारा यह शहर लूटा गया। इसके बाद सन् 1590 ई. के आसपास इस शहर की समृद्धि हुई। 17 वीं सदी में हिंदी-प्रेमी शहाजी राजे भोसलें की जागीर में पुणे शहर का समावेश था। सन् 1642 ई. में यह शहर तथा आसपास के 36 ग्राम शहाजी राजा ने अपने सुपुत्र शिवाजी को सौंप दिए। मराठा साम्राज्य की राजधानी सन् 1735 ई. में सातारा से पुणे स्थानांतरित हुई।''[2] शिवाजी महाराज के उपरांत मराठा शासन की बागडोर पेशवाओं के हाथ में चली गई। इन सभी ऐतिहासिक महापुरूषों के कार्यकाल में हिंदी को विशेष सम्मान मिलता रहा है। पेशवाओं के उपरांत अंग्रेजी शासन का आधिपत्य रहा। इसी समय पुणे के उग्रवादी नेता लोकमान्य तिलक ने इसी शहर से अंग्रेजों का विरोध किया तथा 'देश की एक भाषा हिंदी हो' इस बात का समर्थन किया। इस तरह स्वतंत्रता के उपरांत भी पुणे में हिंदी फलती और फूलती रही है। पुणे में आज भी अनेक साहित्यकार, आलोचक, प्रचारक, अनुवादक, और अनुसंधाता हिंदी के विकास में योगदान प्रदान करते नजर आते हैं।

पुणे के ऐतिहासिक सत्य की अभिव्यक्ति में सजग अनेक ऐतिहासिक स्थल यहाँ विद्यमान हैं। इनमें शनिवारवाडा, लालमहल, महादजी सिंधिया का स्मारक, मस्तानी तालाब, पातालेश्वर गुफा, पर्णकुटी, पूज्य कस्तूरबा समाधि, आगाखान पॅलेस, केसरीवाड़ा, भांड़ारकर इन्स्टीटयूट आदि प्रमुख है।

पुणे को संस्कृति का धरोहर शहर भी माना जाता है। इसी सांस्कृतिक एकता के कारण हिंदी का प्राबल्य यहाँ दिखाई देता है। पुणे के सांस्कृतिक परिवेश का निरूपण निम्नलिखित रूप में किया जा रहा है।

पुणे का सांस्कृतिक परिवेश और हिंदी

जिस प्रकार मुंबई महाराष्ट्र की आर्थिक राजधानी मानी जाती है; उसी प्रकार पुणे महाराष्ट्र की सांस्कृतिक राजधानी मानी जाती है। इस नगर की महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि संपूर्ण साल भर यहाँ सांस्कृतिक उपक्रमों का आयोजन होता रहता है। इन सांस्कृतिक कार्यक्रमों में एक है-गणेशोत्सव। सन् 1894 ई. में लोकमान्य तिलक ने इस उत्सव की शुरूआत की। इन दिनों पुणे में-संगीत, नृत्य, मैफल, नाटक आदि उत्साहवर्धक कार्यक्रम होते रहते हैं। यहाँ के प्रमुख गणेश मंदिरों में -'कसबा गणपति' (पुणे के ग्राम देवता), तांबडी जोगेश्वरी, गुरूजी तालीम, तुलशीबाग, केसरीवाडा, श्रीमंत दगडू शेठ हलवाई आदि है।

प्रतिवर्ष पुणे में दिसंबर महीने में संगीत महफिल कार्यक्रम (सवाई गंधर्व कार्यक्रम) आयोजित किया जाता है। इस कार्यक्रम में संपूर्ण भारतवर्ष तथा पाकिस्तान आदि देशों के गायक और संगीतज्ञ भाग लेते हैं। पुणे में तिलक स्मारक मंदिर, बालगंधर्व रंगमंदिर, भरतनाट्य मंदिर, यशवंतराव चव्हाण नाट्यगृह, आन्नाभाऊ साठे सांस्कृतिक भवन, महात्मा फुले सांस्कृतिक भवन तथा बाबासाहेब आंबेड़कर सांस्कृतिक भवन स्थित है। इन नाट्यगृहों में मराठी, हिंदी नाटकों का सफल आयोजन किया जाता है। पुणे के प्रमुख सिनेमा गृहों में मराठी, हिंदी फिल्में दिखाई जाती है।

पुणे का आध्यात्मिक एवं धार्मिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण स्थान रहा है। चतुश्रृंगी मंदिर, पर्वती मंदिर, सुदर्शन (शनिवार पेठ), आळंदी (संत ज्ञानेश्वर समाधि स्थल), देहू (संत् तुकाराम का निवासस्थल), सिनेनॉग (ज्यू प्रार्थना स्थल), पुणे मेहरबाबा का जन्मस्थल, रजनीश आश्रम, प्राचीन सोमेश्वर मंदिर, रामटेकड़ी पर उदासीन संप्रदाय का मठ, जैन मंदिर, मुस्लिम मस्जिदें तथा अनेक धार्मिक स्थल विद्यमान है और महत्वपूर्ण बात यह है कि इन स्थलों पर प्रायः अनेक धार्मिक उत्सव, प्रवचन, समाजसुधार के कार्यक्रम, समाज प्रबोधन के उपक्रम हिंदी के माध्यम से होते रहते हैं।

पुणे की संस्कृति-विज्ञान, शिक्षा जगत् और अनुसंधान में भी अग्रणी दिखाई देती है। इस दृष्टि से 'भारत इतिहास संशोधन मंडल', 'भांडारकर

ओरिएण्टल रिसर्च इन्स्टिटयूट', 'नेशनल केमिकल लॅबोरेटरी', 'राजा केळकर संग्रहालय','गणेश कला क्रीड़ा मंदिर', 'डेक्कन भाषाशास्त्र कॉलेज', 'खगोलशास्त्र शोध-संस्थान', 'राजीव गांधी प्राणी संग्रहालय', 'जोशी रेल प्रतिकृति संग्रहालय', क्रिड़ानगरी (बालेवाड़ी), एन.डी.ए, आयुका आदि जगहों पर हिंदी का प्रयोग राजभाषा एवं संपर्क भाषा के रूप में होता है।

पुणे एक व्यापारी संस्कृति का केंद्र भी रहा है। यहाँ पर विभिन्न प्रांतीय व्यापारियों का निवास स्थान है। यहाँ पर प्रमुखतः 'म. फुले मंडई', 'शिवाजी मार्केट (पुणे कैंप), गुलटेकड़ी आदि मंड़ी केंद्रों पर हिंदी का ही प्रचलन अधिक मात्रा में दिखाई देता है क्योंकि यहाँ गुजराती, कन्नड, तमिल, तेलगु तथा मलयालम भाषी व्यापारियों का बड़े पैमाने पर आवागमन होने से संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का ही प्रयोग करना पड़ता है।

देश की प्रमुख भाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में इस शहर ने स्वतंत्रता पूर्व काल से ही पहल की है। यहाँ दक्षिणी कमान-सदर्न कमांड (दक्षिणी सेना विभाग का मुख्य कार्यालय)-पुणे भारतीय सैनिक दल का मुख्यालय है। भारत के विभिन्न प्रदेशों से आए हुए नौदल, वायुदल और भूदल के अफसर, कर्मचारी और प्रशिक्षणार्थी यहाँ पर आपस में वार्तालाप करते समय हिंदी का प्रयोग करते दिखाई देते हैं। इस कारण पुणे में हिंदीमय वातावरण के प्रसार में इस मुख्यालय का प्रमुख प्रदेय रहा है। इन अफसरों, कर्मचारियों और प्रशिक्षणार्थियों के बच्चों की पढ़ाई का प्रबंध केंद्रीय विद्यालय दक्षिणी कमान द्वारा होता है जिसकी स्थापना सन् 1967 से की गई है। विविध विषयों के अध्यापन के साथ प्रमुख भाषा के रूप में हिंदी का अध्यापन इन स्कूलों में किया जाता है। ये प्रमुख स्कूल है-केंद्रीय विद्यालय नं 1, देहू रोड, पुणे, केंद्रीय विद्यालय नं 2, देहू रोड, पुणे,केंद्रीय विद्यालय बी.ई.जी, पुणे, केंद्रीय विद्यालय एन.डी.ए. पुणे, केंद्रीय विद्यालय गणेश खिंड, पुणे, केंद्रीय विद्यालय रेंजहील्स, पुणे, केंद्रीय विद्यालय सदर्न कमान, खडकी, केंद्रीय विद्यालय 9 बी.आर.डी, पुणे,केंद्रीय विद्यालय सी.एम.ई, पुणे, केंद्रीय विद्यालय एयर फोर्स, पुणे,केंद्रीय विद्यालय आर्मी एरिया, केंद्रीय विद्यालय डाएट गिरीनगर, पुणे आदि।

उपर्युक्त विवेचन से पुणे की मिश्रित संस्कृति और उसमें हिंदी की महत्ता स्पष्ट होती है। इस क्षेत्र में दक्षिणी कमान का योगदान केवल शिक्षाई स्तर पर न होकर प्रमुख रूप से बोलचाल के स्तर पर दिखाई देता है।

पुणे में अनेक जाति-धर्मों के लोग निवास करते हैं, ये लोग अपने घरों में चाहे अपनी-अपनी भाषाओं का प्रयोग करते हों पर बाहर संपर्क भाषा के रुप में हिंदी को ही अपनाते हैं।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि पुणे में सदियों से (शैक्षिक, राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक) दृष्टि से हिंदीमय वातावरण रहा है।

पुणे में राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी के प्रचार-प्रसार का प्रारंभ

स्वतंत्रता पूर्व काल में हिंदी को राष्ट्रभाषा साबित करने का प्रथम प्रयास पुणे के केशव वामन पेठे ने, सन् 1893 ई. में पूना वक्तृत्वोत्तेजक सभा द्वारा आयोजित 'वसंत' व्याख्यानमाला में 'सारे हिंदुस्तान की एक भाषा करना' विषय पर निबंध लिखकर किया था। सन् 1894 में इस निबंध पर मराठी में 'राष्ट्रभाषा' नामक पुस्तक प्रकाश में आयी। महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा के पूर्व संचालक श्री गो.प.नेने की पुस्तक 'राष्ट्रभाषा आंदोलन' में श्री पेठे कृत राष्ट्रभाषा के अंश इस प्रकार से है-''पुणेकरांची राष्ट्रहिताच्या गोष्ठी करण्यात पुढाकार घेणारे म्हणून ख्याति आहे. यास्तव त्यांनी वक्तृत्व सभेत दरवर्णीसाल हिंदी विषयास एक बक्षीस ठेवावे व त्या सभेचा कित्ता इतर सभांनी राष्ट्रहीत बुद्धीने घ्यावा..... कॉलेजे, हाईस्कूलें व शाळा यांत व देशी शाळांत हिंदी शिकून पुष्कळ हिंदी शिकवू लागले, म्हणजे हिंदी मोठया जोराने वाढू लागेल व्यावहारिक भाषेपुरती हिंदी ची 2/3 पुस्तके शिकल्याने सहज कळेल. मुलगे व मुली हिंदी भाषा शिकली म्हणजे आई बाप हिंदी बोलु लागतील व पुढे.कालांतराने या गोष्ठीस फार काल नको हिंदी एक भाषा होईल।''[3] इस अंश का हिंदी अनुवाद यह है- ''राष्ट्रहित की बात करने वालों में पुणे वासियों की प्रसिद्धि है। इसके अतिरिक्त वे वक्तृत्व सभा में प्रतिवर्ष सम्मान चिह्न का आयोजन करें और इसका जिम्मा सभाओं ने राष्ट्रहित की दृष्टि से लेना चाहिए। ....कॉलेजों, माध्यमिक स्कूलों और देशी स्कूलों में अनेक जन, हिंदी का अध्यापन कार्य करने लगेंगे, तो हिंदी का व्यापक प्रयोग होने लगेगा। हिंदी की 2, 3 किताबों को पढ़ने से हिंदी सहज सीखी जाएगी इसके कारण बच्चे, बूढे.और कुछ ही अवधि में हिंदी एक समृद्ध भाषा बनेगी।'' श्री पेठे का यह वक्तव्य पुणे जैसे अहिंदी भाषी शहर में किए गए उनके हिंदी प्रचार-प्रसार की भूमिका को ठोस निर्देशित करता है।

पेठे के अतिरिक्त रामसेठ साकरे, गोपाळ नरहरी देशपांड़े, लोकमान्य तिलक, महादेव गोविंद रानाडे, महर्षि धोंडो केशव कर्वे आदि ने पुणे में हिंदी को प्रोत्साहन देने का कार्य किया। इन महानुभावों के प्रयत्नों से आगे चलकर पुणे

में हिंदी प्रचार संस्थाओं का निर्माण हुआ है। पुणे की संस्थागत प्रचार-प्रसार की भूमिका निम्नवत है।

पुणे में हिंदी का संस्थागत प्रचार-प्रसार

हिंदी को देश की राष्ट्रभाषा बनाने के लिए उसके प्रचार-प्रसार की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए महाराष्ट्र के कुछ विद्वानों ने जगह-जगह पर हिंदी वर्ग चलाए। आगे चलकर हिंदी सेवी संस्थाओं ने हिंदी के प्रचार को अधिक दृढ़ता प्रदान की। पुणे में संस्थागत रूप में हिंदी का प्रचार-प्रसार सन् 1934 ई. से शुरू होता है। 1934 के पूर्व भी यहाँ हिंदी के वर्ग चलाए जाते थें। डॉ. केशव प्रथमवीर ने इस संदर्भ में लिखा है– ''पुणे में सन् 1928 से एक निज़ी विद्यालय में कुछ टूटी-फूटी हिंदी पढ़ाई जाती थी, सन् 1932 में पुणे के नूतन मराठी विद्यालय को तत्कालीन अंग्रेजी सरकार द्वारा पहले तीन कक्षाओं को हिंदी पढ़ाने की अनुमति दे दी गई लेकिन पुणे के एक प्रबुद्ध देशभक्त पं. ग.र.वैशंपायन पुणे में हिंदी की स्थिति से प्रसन्न नहीं थे। वे चाहते थे कि यहाँ व्यवस्थित तथा व्यावहारिक रुप से राष्ट्रीयता से संबंधित हिंदी का अध्ययन-अध्यापन होना चाहिए।''[4] इसी उद्देश्य से आगे चलकर उन्होंने पुणे में हिंदी प्रचार की प्रथम संस्था 'हिंदी प्रचार संघ' की स्थापना की।'हिंदी प्रचार संघ', 'महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पुणे' और 'महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे' आदि तीन संस्थाओं ने यहाँ हिंदी के प्रचार-प्रसार की ठोस पृष्ठभूमि तैयार की। इन संस्थाओं के प्रचारकों ने देश की सेवा और राष्ट्रभाषा हिंदी की सेवा निःस्वार्थ एवं निर्वेतन पद्धति से की है। अतः इन प्रमुख संस्थाओं का परिचय प्राप्त करना यहाँ आवश्यक प्रतीत होता है।

पुणे में हिंदी के संस्थागत प्रचार-प्रसार को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है-1. प्रमुख संस्थाओं के द्वारा किया गया हिंदी प्रचार-प्रसार कार्य और 2. हिंदी प्रचार-प्रसार में सहायक अन्य संस्थाओं द्वारा किया गया कार्य। इन अन्य संस्थाओं में शैक्षिक, व्यक्तिगत स्तर की, साहित्यिक गोष्ठियों से संबंधित और सरकारी कार्यालयों में कार्यरत संस्थाएँ आदि का समावेश किया जा सकता है। अध्याय विस्तार के भय से इस अध्याय में केवल प्रमुख संस्थाओं के कार्यों का विवेचन किया गया है और अन्य संस्थाओं की जानकारी तीसरे अध्याय में दी गई है।

पुणे में संस्थागत हिंदी प्रचार-प्रसार करने वाली संस्थाओं में प्रमुख रूप से

'हिंदी प्रचार संघ', 'महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पुणे' तथा 'महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे' - ये ऐसी तीन प्रमुख संस्थाएँ हैं, जिन्होंने न सिर्फ पुणे में बल्कि समूचे महाराष्ट्र में पर्याप्त रूप से हिंदी का प्रसार किया है। उनका यह कार्य वांछनीय है। अतः इन संस्थाओं के कार्यों का विवरण निम्न बिंदुओं में देखा जा सकता है-

हिंदी प्रचार संघ (आद्य हिंदी प्रचार संस्था)

21 जून, सन् 1934 को पुणे के तिलक स्मारक मंदिर में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी के कर कमलों से 'हिंदी प्रचार संघ' की स्थापना हुई। संस्था प्रारंभ में 'दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास' की परीक्षाओं का आयोजन करती थी। यह संस्था सन् 1937 से 'राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा' और 'हिंदी साहित्य संम्मेलन, प्रयाग' की परीक्षाओं का आयोजन करने लगी।

परीक्षा आयोजन, चर्चासत्र, ग्रंथालय, पुस्तक बिक्री आदि के माध्यमों से संस्था का प्रचार कार्य होता रहा है। प्रारंभ में संस्था ने पुणे के विभिन्न स्थानों पर हिंदी वर्ग चलाए। इनमें 'तिलक स्मारक मंदिर', 'डॉ.न.वि.गाडगीळ का घर', 'डॉ.मा.पु.जोशी का घर', 'महिला स्नेहवर्धक मंडल', 'केसरी कार्यालय', 'महानगरपालिका पाठशाला क्र. 4 और 5.', 'श्री वैशंपायन का घर', एग्रीकल्चर कॉलेज', 'रास्ता पेठ हाईस्कूल', 'भारत हाईस्कूल-बुधवार पेठ', 'अनाथ विद्यार्थी गृह-सेवासदन', 'हुजूरपागा', 'आगरकर हाईस्कूल', 'गांधी ट्रेनिंग कॉलेज', 'नूतन मराठी विद्यालय', 'हिंदी प्रचार संघ कार्यालय' (लक्ष्मी रास्ता और नारायण पेठ) आदि प्रमुख स्थल हैं। विविध स्थानों पर हिंदी वर्ग चलाने के कारण पुणे शहर में हिंदीमय वातावरण होने लगा। संघ से जुड़े प्रचारक निःस्वार्थ भाव से एवं निर्वेतन हिंदी प्रचार कार्य करते थे। इन प्रचारकों को प्रोत्साहन और धैर्य देने का काम संस्था के निर्माता पं. गजानन वैशंपायन, प्रा. शरद चितळे, श्री. शान्तिभाई जोबनपुत्रा, प्रा. प्रभुदास भुपटकर और पंढरीनाथ डांगरे जैसे व्यक्ति करते थे। इन महानुभावों के कार्यवृत्त को नहीं भुलाया जा सकता। 'हिंदी प्रचार संघ' के हिंदी प्रचार-प्रसार के महत्व को 'जयभारती' पत्रिका के अप्रैल-मई 1951 ई. के अंक में इस प्रकार निरूपित किया है- ''महाराष्ट्र की दृष्टि से ही नहीं बल्कि भारत की दृष्टि से भी हिंदी और देवनागरी को अपने इष्ट स्थान पर अधिष्ठित करने में 'हिंदी प्रचार संघ' का महत्व बहुत ही बड़ा है।''[5] 'हिंदी प्रचार संघ' यह महाराष्ट्र में हिंदी का प्रचार-प्रसार करने वाली मातृसंस्था है।

'हिंदी प्रचार संघ' के कार्यवृत्त को डॉ. केशव प्रथमवीर ने इन शब्दों में उद्‌घाटित किया है-''हिंदी अध्ययन-अध्यापन के लिए इस संस्था ने पुणे में एक अपूर्व उत्साहवर्धक वातावरण तैयार किया। इसने हजारों व्यक्तियों को हिंदी सिखाई जिनमें बहुत से प्रामाणिक प्रचारक बने।''[6] इससे स्पष्ट होता है कि 'हिंदी प्रचार संघ', पुणे की प्रथम हिंदी प्रचारक संस्था है जिसने प्रथम बार महाराष्ट्र में हिंदी प्रचार-प्रसार की दृढ़ नींव रखी।

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पुणे

सन् 1936 ई. में महाराष्ट्र में वर्धा समिति की स्थापना हुई। काकासाहेब कालेलकर और शंकरराव देव ने राष्ट्रभाषा के प्रचारार्थ महाराष्ट्र का परिभ्रमण किया और 'अखिल महाराष्ट्र हिंदी प्रचार समिति, पुणे' की स्थापना की। इसके प्रथम अध्यक्ष शंकरराव देव थे और मंत्री संचालक के रुप में नानासाहब धर्माधिकारी की नियुक्ति हुई। सन् 1940 ई. में संस्था का नाम 'महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पुणे' रखा गया। सन् 1945 ई. में संगठन विषयक मतभेदों के कारण कुछ पदाधिकारियों ने वर्धा समिति से अपना संबंध तोड़कर स्वतंत्र रूप से कार्य करने की घोषणा की और एक स्वतंत्र संस्था के रूप में 'महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे' की स्थापना हुई। इस पर वर्धा समिति के मंत्री भदंत आनंद कौसल्यायन ने 8 नवंबर, 1945 को समिति का पुनर्गठन किया और तब से आज तक समिति, वर्धा समिति के अंतर्गत कार्य करती है। यह समिति वर्धा समिति की सबसे पहली प्रचार संस्था है। महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पुणे के उद्देश्य इस प्रकार हैं-

उद्देश्य

1. भारतीय संविधान की धारा 343 और 351 के अनुसार भारतीय गणराज्य द्वारा स्वीकृत राष्ट्रलिपि देवनागरी में लिखी जाने वाली राष्ट्रभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार करना, साथ ही राष्ट्रीय एकात्मता बढ़ाने के लिए अन्य उपक्रमों का संयोजन करना।
2. हिंदी भाषा के साथ अन्य भारतीय भाषाओं के संबंधों को विकसित करने का विविधांगी प्रयास करना।
3. हिंदी भाषा एवं साहित्य की अभिवृद्धि के लिए यथासंभव प्रयास करना।
4. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के परीक्षा केंद्रों, प्रचारकों तथा परीक्षार्थियों की संख्या में वृद्धि करने का निरंतर प्रयत्न करना और परीक्षाओं के लिए

अध्ययन-अध्यापन की कक्षाओं का प्रबंध करना और कराना।
5. साक्षरता और प्रौढ़ शिक्षा का प्रबंध करना।[7]

कार्यक्षेत्र

महाराष्ट्र के प्रमुख तेरह जिलों में समिति की जिला समितियाँ कार्यरत हैं; जिनमें-1.जलगांव 2. धूलिया 3. नंदूरबार 4. नासिक 5. अहमदनगर 6. पुणे 7. सातारा 8. सांगली 9.सोलापुर 10. कोल्हापुर 11. सिंधूदुर्ग 12. रत्नागिरी 13. रायगड आदि प्रमुख हैं।

कार्य प्रवृत्तियाँ

समिति शुरू से ही हिंदी के प्रचार-प्रसार में सहायक कार्यक्रमों का संचालन करती रही है। इन कार्य प्रवृत्तियों को निम्नानुसार देखा जा सकता हैं-

परीक्षा आयोजन

समिति निरंतर रूप से सन् 1937 से वर्धा समिति के अधीन रहकर हिंदी परीक्षाओं का आयोजन और संयोजन करती है, इन परीक्षाओं में-1. शुद्ध हिंदी सुलेखन परीक्षा 2. राष्ट्रभाषा प्राथमिक परीक्षा 3. राष्ट्रभाषा प्रारंभिक परीक्षा 4. राष्ट्रभाषा प्रवेश परीक्षा 5. राष्ट्रभाषा परिचय परीक्षा 6. राष्ट्रभाषा कोविद परीक्षा 7. राष्ट्रभाषा रत्न परीक्षा 8. राष्ट्रभाषा आचार्य परीक्षा आदि प्रमुख है।

इन परीक्षाओं में 'परिचय' को 'एस.एस.सी', कोविद को 'इंटरमीडिएट' और रत्न को 'बी.ए' के समकक्ष मान्यता प्राप्त है। (शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार, सूचना व प्रसारण मंत्रालय तथा उच्च व तंत्र शिक्षण विभाग महाराष्ट्र शासन)

शिक्षक प्रचारकों की नियुक्ति करने हेतु समिति द्वारा सन् 1947 ई. से 'शिक्षक सनद पाठ्यक्रम' चलाया गया था। यह बी. एड़ के समकक्ष था। महाराष्ट्र के दूरवर्ती प्रदेशों के कई छात्रों ने इस पाठ्यक्रम में प्रवेश लिया और पाठ्यक्रम पूरा करके महाराष्ट्र के कई इलाकों में हिंदी सिखाने का कार्य कर हिंदी के प्रचार-प्रसार में सहायता प्रदान की। समिति के 'तुलसी महाविद्यालय' में समिति की परीक्षाओं का संचालन होता था। समिति में अध्ययन कक्ष की सुविधा उपलब्ध है, इसी विभाग में सांस्कृतिक विभाग भी कार्यरत है। सांस्कृतिक विभाग द्वारा नाटक, एकांकी, निबंध, काव्यवाचन और समूहगीत गायन आदि कार्यक्रमों का प्रस्तुतिकरण होता रहता है। समिति के नाट्याभिनय विभाग द्वारा-'अमावस की रात', 'रिर्पोटर', 'मीना कहाँ है', 'भोर का तारा', 'देवता',

'शारदिया' आदि नाटक खेले गए हैं। इसी सांस्कृतिक विभाग में महापुरुषों, साहित्यकारों की जयंतियाँ एवं पुण्यतिथियाँ मनाई जाती है। गणेशोत्सव, दीपावली, मकरसंक्रांति आदि उत्सव तथा स्नेह-मिलन, प्रचार शिविर, साहित्यिक गोष्ठियाँ, हिंदी सम्मेलन, हिंदी-अहिंदी साहित्यकारों के सत्कार, पुस्तक लोकार्पण समारोह आदि का आयोजन होता रहता है। समिति के विभिन्न कार्यकलापों में अविस्मरणीय समारोह के रूप में 'अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचार सम्मेलन का तीसरा अधिवेशन' को देखा जा सकता है।

अखिल भारतीय प्रचार सम्मेलन का तीसरा अधिवेशन

'महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पुणे' के प्रयासों से अखिल भारतीय प्रचार सम्मेलन का तीसरा अधिवेशन पुणे में सन् 1951 ई. में संपन्न हुआ था। भारत सरकार के तत्कालीन मंत्री श्री न.वि.काकासाहब गाडगीळ उद्घाटक थे और अध्यक्ष स्थान पर हिंदी के प्रसिद्ध आलोचक श्री. वियोगी हरि थे। इस अधिवेशन में आ. क्षितिमोहन सेन को 1501 रु का 'म. गांधी पुरस्कार' एवं ताम्रपट देकर सम्मानित किया गया। सम्मेलन में पुस्तक प्रदर्शनी भी लगाई गई थी।

प्रकाशन

समिति ने शुरू से ही अनेक पुस्तकों, स्मरणिकाओं, पत्रिकाओं का प्रकाशन किया है। समिति के पूर्व संचालक पंढरीनाथ डांगरे के कार्यकाल में 'बातचीत', 'बापू की बाते', 'अमावस की रात', आदि पुस्तकों का प्रकाशन हुआ है। समिति की ओर से 'अमावस की रात' (महाराष्ट्र राज्य सरकार द्वारा मराठी नाटक 'अशीच एक रात्र येते') का हिंदी अनुवाद हुआ है। इन्हीं के कार्यकाल में महाराष्ट्र राज्य के स्कूलों के लिए 'जयभारती पाठशाला' पुस्तक संपादित की गई थी। पंढरीनाथ डांगरे हिंदी 'जयभारती' पत्रिका निकालते थे। धनाभाव के कारण यह पत्रिका बंद हुई और वर्तमान संचालक श्री जयराम फगरे के संपादकत्व में सन् 2010 से 'समिति संवाद' नाम से यह पत्रिका निरंतर रूप से निकलती है। इस प्रकार समिति द्वारा प्रकाशित हिंदी पुस्तकों का हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिखाई देता है।

आनंद वाचनालय

समिति में 'आनंद वाचनालय' स्थित है। इसमें हिंदी और मराठी की साहित्यिक व समीक्षात्मक पत्र-पत्रिकाएँ नियमित रूप से आती रहती है। इनमें

मराठी के दैनिक अखबारों में सकाळ, पुण्यनगरी, संध्यानंद, सामना, प्रभात, पुढारी और लोकमत तथा हिंदी के दैनिक अखबारों में प्रातःकाल, यशोभूमि, आज का आनंद, नवभारत, हड़पसर एक्सप्रेस, क्रांति समाचार और केसरी आदि प्रमुख हैं।

इन दैनिक अखबारों के अतिरिक्त कुछ मासिक पत्रिकाएँ समिति में नियमित आती हैं। जो निम्न है-

मासिक

1.राष्ट्रभाषा संदेश	13.मैत्री	25.विश्व हिंदी समाचार
2.हिंदी प्रचारक	14.हिंदुस्तानी जबान	26.अनुवाद
3.राष्ट्रभाषा	15.कथन	27.नागरी संगम
4.खनन भारती	16.मधुमती	28.समकालीन भारतीय साहित्य
5.गुर्जर राष्ट्रवीणा	17.भाषा	29.नूतन सवेरा
6.जयभारती	18.चकमक	30.ज्ञान-विज्ञान
7.भारतवीणा	19.विचार दृष्टि	31.पुष्पक
8.मंथन	20.आलेख संवाद	32.बालवाणी
9.योजना	21.गांधी मार्ग	33.अनुरागी
10.राष्ट्रवीणा	22.हंस	34.सुलभ इंडिया
11.समकालीन साहित्य समाचार	23.जनभाषा	35.वागर्थ
12.समीक्षा	24.तुलिका	36.वाङ्मय

समिति में एक समृद्ध ग्रंथालय है। "केंद्रीय सरकार के अनुदान-योजना के अंतर्गत इस ग्रंथालय की स्थापना सन् 1961 में की गई है।"[8] इसे 'राष्ट्रभाषा ग्रंथालय' और 'पुरुषोत्तम ग्रंथालय' के नाम से जाना जाता है। हिंदी अध्ययनार्थी, अध्यापक वर्ग और शोधार्थी इससे लाभान्वित होते हैं। इसमें दुर्मिल ग्रंथ, शोध-प्रबंध, उपन्यास, कहानी, निबंध, नाटक, एकांकी, आलोचना, कविता, यात्रा साहित्य, संस्मरण, रेखाचित्र, धार्मिक ग्रंथ आत्मकथा और जीवनी आदि विविध विधाओं की हिंदी, मराठी और अंग्रेजी माध्यम की पुस्तकें संगृहीत की गई है। आज कुल मिलाकर इस ग्रंथालय में 6586 किताबें उपलब्ध हैं।

निष्कर्ष

समिति की विभिन्न कार्य प्रवृत्तियों और कार्य विस्तार को देखते हुए यह ज्ञात होता है कि स्वतंत्रता पूर्व काल से कार्यरत इस संस्था का हिंदी के प्रचार-प्रसार में सराहनीय प्रदेय रहा है। प्रस्तुत संस्था की तरह ही 'महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे' हिंदी के प्रचार-प्रसार में अग्रणी भूमिका अदा करती रही है, इसका कार्य विवरण निम्नलिखित रूप में दिया गया है।

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे

22 मई,सन् 1937 ई. को महाराष्ट्र में 'अखिल महाराष्ट्र हिंदी प्रचार समिति' की स्थापना की गई। इसी संस्था के शंकरराव देव, दत्तो वामन पोत्दार एवं गो.प.नेने आदि ने 'महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा' पुणे की स्थापना की। 'महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे' गांधी जी की भाषा नीति के अनुसार कार्य करने वाली प्रमुख संस्था है।

पुणे में हिंदी का प्रचार-प्रसार

सन् 1945 से 'महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे' हिंदी के प्रचार-प्रसार में सक्रिय भूमिका निभा रही है। एस.एम.जोशी और मोहन धारिया जैसे दिग्गज सभा के अध्यक्ष रह चुके हैं। हिंदी के प्रचार-प्रसार की दृष्टि से इस संस्था ने शुरू से ही अपने उद्देश्य, नीति एवं प्रेरणा आदि को स्पष्ट नियमावली में निम्नानुसार आबद्ध किया है-

उद्देश्य

क) राष्ट्रभाषा हिंदी का प्रचार करना तथा भारतीय संविधान के 17 वें भाग में निर्णीत राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी के प्रसार और विकास में सहायता करना।

ख) उक्त राजभाषा हिंदी की पढ़ाई का प्रबंध करना।

ग) भारत की प्रचलित सभी भाषाओं, विशेषकर मराठी भाषा के द्वारा हिंदी के विकास में सहायता करने हेतु प्रयत्न करना, मराठी तथा भारत में प्रचलित सभी भाषाओं की पढ़ाई का प्रबंध करना, उनके माध्यम से सभी पोषक प्रवृत्तियों को चलाना तथा राष्ट्रीय एकात्मता को पुष्ट करना।[9]

उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु सभा ने अपनी नीति निर्धारित की है, जिसके तहत महाराष्ट्र में हिंदी के प्रचार-प्रसार का कार्य होता रहता है।

नीति

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे ने महाराष्ट्र में हिंदी के प्रचार-प्रसार के कार्य को दृढ़ता प्रदान करने हेतु अपने नीति निर्देश स्थापित किए हैं, जो निम्नानुसार है।

1.प्रदेशों में प्रादेशिक भाषाओं का स्थान और मान बढ़ा रहे। आंतरप्रांतीय व्यवहार के लिए राष्ट्रभाषा हिंदी का प्रयोग हो।

2.राष्ट्रभाषा प्रचार; राष्ट्र के नवनिर्माण, राष्ट्रीय तथा सांस्कृतिक एकता के संवर्धन का एक रचनात्मक कार्य है।

3.राष्ट्रभाषा का स्वरूप सर्वसंग्राहक हो।

4.राष्ट्रभाषा का विकास देश के प्रादेशिक भाषाओं के संपर्क और उनके विकास के साथ संपन्न होता रहे।

5. राष्ट्रभाषा के द्वारा राष्ट्रीय एकात्मता निर्माण हो।

उपर्युक्त नीति-निर्देशों का पालन करते हुए सभा, महाराष्ट्र में हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं संवर्धन में अपनी विशेष भूमिका अदा करती रही है। इस दृष्टि से सभा द्वारा निम्नवत् कार्य-प्रवृत्तियों का आयोजन किया जाता रहा है-

हिंदी प्रचार शिक्षण

महाराष्ट्र में हिंदी प्रचार कार्य को गति देने के लिए और हिंदी प्रचारकों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए सभा द्वारा 'हिंदी शिक्षक सनद' पाठ्यक्रम चलाया गया। अनेक शिक्षक प्रचारकों की नियुक्ति की गई और इन प्रचारकों के माध्यम से पुणे, दादर, घाटकोपर, धूलिया, म्हापसा आदि जगहों पर हिंदी प्रचार विद्यालय खोले गए। सभा द्वारा हिंदी की अनेक परीक्षाओं का आयोजन होता रहा है, जिनमें- 1.राष्ट्रभाषा बालबोधिनी 2.राष्ट्रभाषा प्राथमिक 3.राष्ट्रभाषा प्रवेशिका 4.राष्ट्रभाषा सुबोध 5.राष्ट्रभाषा प्रबोध 6.राष्ट्रभाषा प्रवीण 7.राष्ट्रभाषा पंडित 8.राष्ट्रभाषा पद्म 9.नागरी लिपि परिचय 10.उर्दू लिपि परिचय (पहली) 11.उर्दू लिपि परिचय (दूसरी) 12.राष्ट्रभाषा संभाषण योग्यता 13.राष्ट्रभाषा व्याख्यान योग्यता 14.अनुवाद पंडित (लिखित) 15.अनुवाद पंडित (मौखिक) 16.राष्ट्रभाषा व्यवहार योग्यता आदि प्रमुख है।

सभा द्वारा प्रकाशित कार्य विवरण वार्षिकी (1 अप्रैल, 2011 से 31 मार्च, 2012) के अनुसार इन परीक्षाओं में बैठने वाले परिक्षार्थियों की संख्या लगभग 82,198 है। इन परीक्षाओं के अतिरिक्त सभा द्वारा संस्कार परीक्षाओं का भी

आयोजन किया जाता हैं। छात्रों को महापुरूषों की जीवनियों से परिचित कराना, प्रेरणा देकर संस्कारी नागरिक बनाना, इन परीक्षाओं के उद्देश्य रहे हैं।

इन परीक्षाओं के अतिरिक्त पुणे में हिंदी की दृढ़ नींव रखने हेतु पुणे कैंप में 10 जून 1955 से 'सुनील राठोड़ पूर्व प्राथमिक विद्यालय', 'सरस्वति निकेतन हिंदी प्राथमिक विद्यालय' और 'एस.एम.जोशी हिंदी माध्यमिक विद्यालय' चलाए जाते हैं। इन तीनों शालाओं के एकत्रित रूप को 'राष्ट्रभाषा विद्या संकुल' के नाम से जाना जाता है। इस विद्यासंकुल के वर्तमान अध्यक्ष डॉ. अशोक कामत हैं। राष्ट्रीय एकात्मता और हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं संस्कार की दृष्टि से इस विद्या संकुल का महत्वपूर्ण स्थान है। विद्यासंकुल की गतिविधियों को देखकर जिन महानुभावों ने विद्यालय के बारे में अभिप्राय दिए हैं, उनमें युनेस्को प्रतिनिधि श्री. टेरेंस लॉसन का कथन दृष्टव्य है- ''भावात्मक और राष्ट्रीय एकता के संबंध में आपके प्रकल्प से परिचित हुआ। मुझे लगता है कि आप जो कार्य कर रहे हैं, वह निश्चित ही अत्यंत महत्वपूर्ण है- मात्र भारत के लिए ही नहीं बल्कि समूचे विश्व के लिए भी।''[11] इस वक्तव्य से सभा के हिंदी विषयक कार्य कर्तृत्व का पता सहज ही लग जाता है।

सभा के केंद्रवर्ती कार्यालय में 'राष्ट्रभाषा महाविद्यालय' स्थित है। यहाँ पर सभा द्वारा आयोजित परीक्षाओं के वर्ग चलाए जाते थे। सभा द्वारा प्रतिवर्ष कुछ पुरस्कारों का वितरण किया जाता है। सभा द्वारा अलग-अलग परीक्षाओं हेतु सालभर में कुल 37 पुरस्कार दिए जाते हैं। पुणे में हिंदी साहित्य के वातावरण की निर्मिति में सहायक 'ज्ञानदा' नामक विशेष संगोष्ठी बैठक सन् 1964 ई. से यहाँ कार्यरत दिखाई देती है। 'ज्ञानदा' साहित्य एवं कला मंच इस विशेष प्रवृत्ति की स्थापना के पीछे डॉ. भगीरथ मिश्र, डॉ. प्रभुदास भुपटकर, हरिनारायण व्यास, सभा के तत्कालीन ग्रंथपाल श्री. प्रभाकर स्वामी और डॉ. अशोक कामत का विशेष सहयोग रहा है। लगभग 40 वर्षों से कार्यरत 'ज्ञानदा' के अंतर्गत 500 के करीब अलग-अलग कार्यक्रमों का संयोजन किया गया है। इसके आज तक के प्रमुख संयोजकों में- प्रभाकर स्वामी, विप्रदास, प्रा.शैलजा मांडके, प्रा.नीला महाडिक, डॉ.नीलिमा परदेशी और डॉ. नीला बोर्वणकर के नाम अग्रणी कहे जा सकते हैं। इस प्रमुख प्रवृत्ति के संचालक डॉ. प्रभुदास भुपटकर थे और उनके बाद प्रा. सुमतिलाल शाह अनेक वर्षों से संचालक रहे हैं। सभा के वर्तमान अध्यक्ष उल्लासदादा पवार और कार्याध्यक्ष डॉ. वीणा मनचंदा सभा की कार्य-प्रवृत्तियों का संचालन करते हैं।

सभा द्वारा हिंदी प्रचार-प्रसार की दृष्टि से अनेक प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन होता रहा है। सन् 1962 ई. से 'अंतर्राज्यीय वक्तृत्व प्रतियोगिता', सन् 1963 ई. से 'पश्चिम भारत हिंदी निबंध प्रतियोगिता' और सन् 1967 ई. से 'हिंदी एकांकी प्रतियोगिता' का आयोजन होता रहा है। सभा का एक समृद्ध ग्रंथालय है, जिसे 'केंद्रीय राष्ट्रभाषा ग्रंथालय' के नाम से जाना जाता है। सभा द्वारा प्रकाशित मार्च 2012 के कार्य विवरण पत्रिका में उल्लेखित संदर्भ के अनुसार कुल 43,786 विविध विधाओं की शोधपरक और स्पर्धात्मक परीक्षाओं की पुस्तकें इस ग्रंथालय में संगृहीत है। ग्रंथालय से जुड़े वाचनालय में हिंदी की लगभग 50 पत्रिकाएँ निरंतर रूप से आती रहती है। इस ग्रंथालय से विश्वविद्यालयीन शोध-छात्र तथा हिंदी प्रेमी लाभान्वित होते हैं। वर्तमान में ग्रंथपाल श्री प्रदीप जोशी अध्येता एवं शोधार्थियों की सेवा में कार्यरत है। केंद्रीय ग्रंथालय के अतिरिक्त महाराष्ट्र के विभिन्न प्रांतों में हिंदी ग्रंथालयों की सुविधा को उपलब्ध कराया गया है। इनमें 'स्वामी रामानंद तीर्थ हिंदी, मराठी ग्रंथालय (सेलु)', साने गुरूजी बाल ग्रंथालय (धूलिया), तथा मुंबई, नागपुर, औरंगाबाद, अहमदनगर, नांदेड़, कोल्हापुर आदि प्रमुख शहरों में सभा के विभागीय ग्रंथालय विद्यमान हैं।

सभा द्वारा संचालित 'पुस्तक भंडार' लक्ष्मीपथ पर विद्यमान है। इसमें अनेक किताबें उपलब्ध है। महाराष्ट्र के अनेक हिंदी प्रेमियों तथा शोध-कर्ताओं को शोध-सामग्री उपलब्ध कराने में इससे आसानी होती है।

सभा का 'प्रकाशन विभाग' भी हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। सभा ने इस प्रकाशन विभाग द्वारा लगभग 350 पुस्तकों का प्रकाशन किया है। इन पुस्तकों के अलावा सभा द्वारा साहित्यिक एवं समीक्षात्मक मुखपत्रिका 'राष्ट्रवाणी'(द्वैमासिक) तथा 'हमारी बात' नामक मासिक पत्रिका का निरंतर रूप से प्रकाशन होता है।

इस प्रकार महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे का उसकी स्थापना से लेकर आज तक हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपूर्व प्रदेय रहा है। इसकी पुष्टि सभा के पुराने प्रचारक प्रा.सु.मो.शाह के इस उद्धरण से की जा सकती है- ''पचास वर्ष पूर्व लगाए गए 'सभा' के इस छोटे से पौधे ने आँधी-तूफान, गर्मी-बाढ़, सभी प्रकार के आघात सहते हुए अपनी आंतरिक शक्ति, जिजीविषा, विकसित होने की प्रबल इच्छा के बल पर आज एक विशाल वृक्ष का रूप धारण किया है।''[12]

स्वाधीनता तथा स्वराज्य के आंदोलन में सभा ने जिस प्रकार महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है उसी प्रकार सुराज्य एवं स्वभाषा के प्रचार-प्रसार में भी

विवेच्य सभा का कार्य उल्लेखनीय है। सभा द्वारा संचालित बालबोधिनी से लेकर रत्न परीक्षा तक अब तक कितने ही छात्रों ने हिंदी को आत्मसात किया हुआ है। इसी प्रकार सभा ने प्राथमिक कक्षा से लेकर विश्वविद्यालयीन स्तर तक हजारों अध्यापक गढ़े हैं। सभा द्वारा प्रशिक्षित छात्र आज सरकारी, अर्धसरकारी और निजी क्षेत्रों में अनुवादक, हिंदी अधिकारी, आदि पदों पर सम्मान के साथ कार्यरत दिखाई देते हैं। सभा ने हिंदी के प्रचार-प्रसार और हिंदी साहित्य के विकास में अद्वितीय भूमिका निभाई है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त प्रमुख तीनों संस्थाओं ने संपूर्ण महाराष्ट्र में हिंदी प्रचार-प्रसार के कार्य में अपूर्व योगदान दिया है। इन संस्थाओं का अलग से अन्यत्र मूल्यांकन होना आवश्यक है, ताकि आने वाली पीढ़ी इस इतिहास को न भूल सके। इन संस्थाओं ने न सिर्फ हिंदी का प्रचार-प्रसार किया बल्कि इनकी गतिविधियों से हिंदी भाषा और साहित्य का विकास होता रहा है और इन संस्थाओं ने अहिंदी भाषी नए हिंदी साहित्यकार भी निर्माण किए हैं। इन संस्थाओं के अतिरिक्त पुणे में कुछ अन्य संस्थाएँ भी हिंदी के प्रचार-प्रसार में अप्रत्यक्ष रूप से सहभागी रही हैं। अगले अध्याय में पुणे के हिंदी प्रचार-प्रसार और हिंदीमय वातावरण की निर्मिति में जिन अन्य (सहायक) संस्थाओं का योगदान है, उनका परिचय दिया गया है।

संदर्भ

1. अमृतकुंभ - महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पुणे (स्मरणिका) जून 2011, पृ.36
2. भारतीय हिंदी परीषद - पुणे विश्वविद्यालय, पुणे (स्मारीका) पृ.23
3. राष्ट्रभाषा आंदोलन - गो.प.नेने, पृ.2
4. महाराष्ट्र में हिंदी - संपादक. डॉ.रामजी तिवारी और डॉ.त्रिभुवन राय, पृ.200
5. जयभारती - संपादक. पंढरीनाथ डांगरे, अप्रैल-मई, 1951 पृ. 256
6. महाराष्ट्र में हिंदी - डॉ.रामजी तिवारी और डॉ. त्रिभुवन राय, पृ. 201
7. अमृतकुंभ - संपादक. जयराम फगरे, जून, 2011, पृ.6
8. राष्ट्रभाषा विचार संग्रह - संपादकडॉ. न. चि. जागळेकर, डॉ. भगवानदास तिवारी और श्री. शान्तिभाई जोबनपुत्रा, पृ.271
9. महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे (परिचय पत्रिका), पृ.9
10. वही-पृ.10
11. राष्ट्रवाणी -महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे (स्मारिका, 1980) - पृ.9
12. वही, पृ.1 (अपनी ओर से)

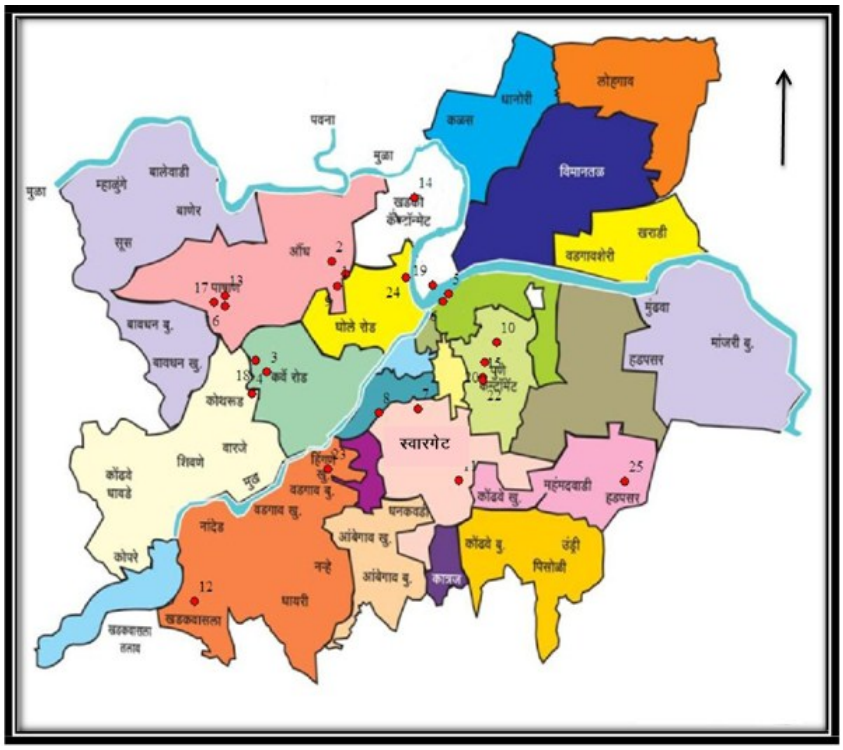

अ.नु.	प्रमुख हिंदी केंद्र	अ. नु.	प्रमुख हिंदी केंद्र
1	सवित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय का हिंदी विभाग	14	हिंदी आंदोलन (खडकी)
2	पुणे आकाशवाणी केंद्र, शिवाजी नगर	15	कबीर विद्यापीठ (नाना पेठ)
3	फिल्म ॲन्ड टेलिविजन इन्स्टिटयूट का हिंदी विभाग	16	भारतीय उष्णदेशीय मौसम अनुसंधान केंद्र का हिंदी कक्ष
4	श्रीमती नाथीबाई दामोदर ठाकरसी विश्वविद्यालय का हिंदी विभाग	17	उच्च उर्जा पदार्थ अनुसंधान केंद्र का हिंदी कक्ष (सुतारवाड़ी)
5	महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिती (शुक्रवार पेठ)	18	गुरुकुल प्रमिष्ठान (कर्वे रोड़)
6	महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार सभा (नारायण पेठ)	19	ऐक्यभारती प्रतिष्ठान
7	आबासाहेब गरवारे महाविद्यालय का हिंदी विभाग (डेक्कन)	20	मंडल रेल प्रबंधक का कार्यालय
8	सर परशुराम भाऊ महाविद्यालय का हिंदी विभाग (टिळक रोड़)	21	आज का आनंद (शिवाजी नगर)
9	फर्ग्युसन महाविद्यालय का हिंदी विभाग (तुकाराम पादुका चौक)	22	मेरा भारत टाईम्स (पुणे कैम्प)
10	वाड़िया महाविद्यालय का हिंदी विभाग (बंड गार्डन)	23	राष्ट्रसेवा दल (सिंहगड़ रोड़)
11	टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ का हिंदी विभाग	24	शहर आंचलिक कार्यालय, बैंक ऑफ महाराष्ट्र (लोकमंगल) शिवाजी नगर
12	राष्ट्रीय रक्षा अकादमी का हिंदी विभाग (खडकवासला)	25	उदासिन संप्रदाय, रामटेकड़ी (हडपसर)
13	राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला का हिंदी विभाग (पाषाण रोड़)		

तृतीय अध्याय

पुणे की अन्य हिंदी प्रचारक संस्थाएँ

प्रस्तावना

पूर्व अध्याय में पुणे में हिंदी की स्थिति एवं गति का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है। इसके अंतर्गत पुणे में प्रचलित हिंदी की ऐतिहासिक, भौगोलिक और सांस्कृतिक पार्श्वभूमि को उद्‌घाटित करते हुए हिंदी के प्रचार-प्रसार में सहायक प्रमुख हिंदी सेवी संस्थाओं का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया गया है। पुणे में अप्रत्यक्ष रूप से हिंदी का प्रचार-प्रसार करने वाली कुछ अन्य संस्थाएँ भी कार्यरत है। इनका मुख्य कार्य हिंदी का प्रचार-प्रसार करना नहीं है अपितु ये संस्थाएँ किसी अन्य उद्देश्य की पूर्ति हेतु निर्माण हुई है लेकिन इन संस्थाओं के क्रिया-कलापों का हिंदी के प्रचार-प्रसार में अप्रत्यक्ष रूप से संबंध है। अतः यहाँ केवल उन्हीं संस्थाओं के कार्य विवरण को दिया गया है। इनके योगदान को निम्न क्रम के अनुसार देखा जा सकता है-

राष्ट्र सेवा दल

'राष्ट्र सेवा दल' इस समाजवादी संगठन की स्थापना सन् 1941 ई. को पुणे में हुई। संस्था का प्रधान कार्यालय-साने गुरूजी स्मारक, सिंहगढ़ रोड़, पुणे-30 पर स्थित है। श्री. शिरूभाऊ लिमये, श्री. नानासाहेब गोरे, डॉ. वि. म. हर्डीकर, रा. नि. आंबिके, नाना डेंगळे, मांडव गणे, चिं. तु. करंदीकर, आ. केळकर, दाबके गुरूजी, एस. एम. जोशी, श्री. त्र्यं. र. देवगिरिकर, वसंत बापट, वासू देशपांडे, ग. प्र. प्रधान, डॉ. श्रीराम लागू, साने गुरूजी, राजा मंगळवेढेकर, राघु आण्णा लिमये, भालचंद्र माड़गुळकर, यदुनाथ थत्ते, सदाविजय आर्य, डॉ. पितांबर सरोदे, डॉ. मु. ब. शहा, शबाना आजमी, डॉ. नरेंद्र दाभोलकर आदि सिद्धहस्त व्यक्ति संगठन के निष्ठावान कार्यकर्ता रहे है। सेवा दल पाँच मूल्यों पर आधारित कार्य करता है-राष्ट्रीयता, समाजवाद, लोकशाही, धर्मनिरपेक्षता तथा विज्ञाननिष्ठा।

'सेवा दल' गांधी के केंद्रीभूत सिद्धांतों सत्य, अहिंसा और बलिदान के अनुरूप कार्य करता है। सेवा दल के सैनिक एकत्रित होकर सामाजिक व सार्वजनिक कार्य करते हैं और एकता की साधक हिंदी का बोलचाल में प्रयोग करते हैं। संपूर्ण देश की एक भाषा हिंदी हो इस विचार से संस्था के कार्यकर्ताओं ने 'आंतरभारती' की स्थापना की। गांधीवादी विचारक विनोबा भावे के शिष्य साने गुरूजी दल के प्रमुख व्यक्ति थे। जब देश की भाषावार प्रांत रचना की गई तब उन्होंने 'आंतरभारती' की संकल्पना समाज के सामने रखी। सभी प्रांतों को एकसूत्र, एक भाषा के साथ जोड़ने का नाम 'आंतरभारती' है। गुरूजी के इस विचार को यथार्थ रूप में अवलंबित किया उनके शिष्य यदुनाथ थत्ते (पुणे) ने। डॉ. मु. ब. शहा ने अपनी पुस्तक 'राष्ट्र सेवा दल स्वरूप और इतिहास' में लिखा है-''भाषा-भगिनियों का एक दूसरी से सहयोग और सद्भाव ही अंतरभारती की नींव है। भाषाओं के माध्यम से लोग एक-दूसरे के साथ भावात्मक स्तर पर तुरंत जुड़ जाते हैं। इसी बात को ध्यान में रखकर श्री. यदुनाथ थत्ते ने अपने अध्यक्षीय कार्य काल में सेवा दल का सारा कारोबार हिंदी में ही चलाने का आग्रह रखा था। उस काल में सेवा दल पत्रिका में उन्होंने जो लेख लिखें; वे भी हिंदी में हैं।''[1] संस्था की हिंदी पत्रिका 'अंतरभारती' यह है, जिसका विश्लेषण चतुर्थ अध्याय में किया गया है। राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से बहुभाषाओं के गीतों का संकलन संस्था ने प्रकाशित किया है। संस्था द्वारा अनेक पुस्तकें हिंदी में अनूदित करवाई गई है। संस्था हिंदी के माध्यम से सामाजिक एकता निर्माण का कार्य कर रही है।

शैक्षिक संस्थाएँ

स्वतंत्रता पूर्व काल से ही पुणे के 'नूतन मराठी विद्यालय' में हिंदी पाठ्यक्रम की व्यवस्था कुछ वर्गों में चलाई जाती थी। संभवतः शैक्षिक संस्थाओं में हिंदी के समावेश का यह प्रथम प्रयास हो सकता है। तत्कालीन शिक्षाविदों एवं समाज सुधारकों का यह आग्रह था कि शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो। इनमें लार्ड कर्झन, डॉ. मुदालियार, डॉ. हेडगेवार, महात्मा गांधी, स्वामी दयानंद सरस्वती, लोकमान्य तिलक, महादेव गोविंद रानाडे, महर्षि कर्वे, वि. दा. सावरकर आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। देश में विद्वत जनों की मंडलियाँ स्थापित की गईं। केंद्रीय शिक्षा सलाहकार मंडल ने सुझाव दिया-माध्यमिक विद्यालय के प्रत्येक को अधोरेखित तीन भाषायें अनिवार्य रूप से पढ़नी होगी-

1.मातृभाषा या प्रादेशिक भाषा

2.हिंदी (अहिंदी क्षेत्रों के लिए) अथवा एक आधुनिक भारतीय भाषा (हिंदी क्षेत्रों के लिए)

3.आंग्ल''[2]

इसी पैटर्न के तहत महाराष्ट्र में माध्यमिक, उच्च माध्यमिक पाठशालाओं में हिंदी की पढ़ाई अनिवार्य रूप से होने लगी। आज पुणे में करीबन 90 माध्यमिक, 40 उच्च माध्यमिक और 11 हिंदी माध्यम के विद्यालयों में हिंदी को अनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाया जाता है। पुणे में स्थित हिंदी माध्यम के प्रमुख विद्यालयों में-'मिलिटरी फार्म स्कूल खड़की', 'गुरूनानक हाईस्कूल, गणेशपेठ', 'बि. टी. शाहनी नवीन हिंदी विद्यालय, भवानी पेठ', राष्ट्रभाषा विद्यासंकुल, पुणे कैम्प', 'एस. टी जुडे हाईस्कूल', 'बन्शीलाल रमानाथ अग्रवाल हिंदी हाईस्कूल रविवार पेठ', 'अरूणा चौधरी विद्यालय, खडकवासला', 'गरीसन चिल्ड्रन हाईस्कूल, खड़की', 'स्वतंत्र सेनानी हकीम अजमल खान हाईस्कूल, येरवड़ा' और 'ज्ञान प्रबोधिनी' आदि प्रमुख है। इन विद्यालयों में छात्रावस्था से ही हिंदी के प्रति रुचि पैदा की जाती है। पुणे का यह सौभाग्य है कि प्राथमिक अवस्था से ही यहाँ पर हिंदी की पढ़ाई का प्रबंध है। इस तरह पुणे के प्राथमिक स्कूलों से लेकर महाविद्यालयीन कक्षाओं तक हिंदी शिक्षा की व्यवस्था पाई जाती है। अतः निम्न बिंदुओं में पुणे के प्रमुख महाविद्यालयों में हिंदी की शिक्षा व्यवस्था पर संक्षेप में प्रकाश डाला गया है।

पुणे के प्रमुख महाविद्यालयों में हिंदी

स्वतंत्रता पूर्व काल में राष्ट्रीय एकात्मता के लिए हिंदी के विकास की आवश्यकता थी। महात्मा गांधी के नेतृत्व में भारतवर्ष के लगभग सभी प्रांतों में राष्ट्रीय स्तर के विश्वविद्यालय स्थापित किए गए। 'मुस्लिम विद्यापीठ, अलीगढ़', 'गुजरात विद्यापीठ', 'बिहार विद्यापीठ', 'बंगाल राष्ट्रीय विश्वविद्यालय', पुणे में 'तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ' तथा 'कर्वे युनिवर्सिटी' आदि प्रमुख विद्यापीठों की स्थापना इसी उद्देश्य से की गई। इन सभी विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षा की व्यवस्था की गई थी।

पहले उल्लेख किया जा चुका है कि पुणे के 'नूतन मराठी विद्यालय' में हिंदी की पढ़ाई होती थी। इसी जगह पर आगे चलकर लोकमान्य तिलक के सहयोग से 14 जून, सन् 1916 ई को 'न्यू पूना कॉलेज' की स्थापना की गई।

लोकमान्य तिलक की प्रेरणा से जमखंडी के श्री. जगन्नाथ महाराज पंडित ने 25 एकड़ जमीन संस्था को दी। सन् 1928 में श्री. शंकरराव पटवर्धन जी ने अपने पिता की स्मृति में 2 लाख रुपयों की राशि संस्था को अर्पित की और 'न्यू पूना कॉलेज' का नाम परिवर्तित होकर 'सर परशुराम भाऊ महाविद्यालय' रखा गया। इसी का संक्षिप्त रूप 'स.प.महाविद्यालय' है। यह महाविद्यालय हिंदी विभाग का प्रथम महाविद्यालय है इसलिए प्रथमतः स.प.महाविद्यालय के हिंदी विभाग की संक्षिप्त जानकारी को निम्नवत् दिया है।

सर परशुराम भाऊ महाविद्यालय का हिंदी विभाग

स.प.महाविद्यालय के तत्कालीन प्राचार्य प्रो. सोनोपंत दांडेकर के प्रयत्नों से सन् 1936 ई को महाविद्यालय में हिंदी विभाग की स्थापना हुई। यहाँ पर बी.ए. हिंदी का संपूर्ण पाठ्यक्रम चलाया जाने लगा। सन् 1991 ई. से प्रयोजनमूलक हिंदी के वर्ग चलाए जाने लगे। आज पुणे के प्रमुख महाविद्यालयों में इस महाविद्यालय का नाम प्रमुख है।

प्रस्तुत महाविद्यालय के प्रथम हिंदी विभागाध्यक्ष हिंदी के प्रचारक, निबंधकार एवं आलोचक डॉ. प्रभुदास भुपटकर (सन् 1946 ई से सन् 1972 ई तक) रहे। उसके बाद डॉ. सज्जनराम केणी (सन् 1972 ई से 1980 ई तक), डॉ. हनुमंत साने (सन् 1981 से सन् 2000 ई तक) और डॉ. पद्मजा घोरपडे (सन् 2000 से) कार्यरत है। इन महानुभावों ने हिंदी विभाग में नित नवीन कार्यक्रमों का आयोजन करते हुए शहर तथा इसके आसपास के छात्रों को हिंदी के प्रति आकर्षित करने का महत् कार्य किया है। स्थापना से लेकर वर्तमान समय तक हिंदी विभाग में अनेक मान्यवरों के अतिथि व्याख्यानों का आयोजन किया गया है। इन प्रमुख व्याख्याताओं में- डॉ. प्रभाकर माचवे, डॉ. जगदीश गुप्त, विनयमोहन शर्मा, डॉ. हरदेव बाहरी, डॉ. शिवकुमार मिश्र, डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित, डॉ. सुरेंद्र बारलिंगे, कविवर हरिनारायण व्यास, डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर, डॉ. रामजी तिवारी, डॉ. उमाशंकर उपाध्याय, डॉ. वशिष्ठ झा, श्रीमती ज्योत्स्ना देवधर, यदुनाथ थत्ते, गोपाल परशुराम नेने, डॉ. केशव प्रथमवीर, डॉ. अंबादास 'सुमन', डॉ. रविंद्रकुमार शर्मा, डॉ. मुरलीधर जगताप, डॉ. ग. न. साठे आदि प्रमुख हैं।

स. प. महाविद्यालय के अनेक छात्र आज हिंदी के प्राध्यापक, आलोचक और हिंदी के प्रचार कार्य में कार्यरत दिखाई देते हैं। आज भी हिंदी के अध्ययन-अध्यापन में यह विभाग अग्रणी दिखाई देता है।

आबासाहेब गरवारे महाविद्यालय का हिंदी विभाग

महाराष्ट्र एज्युकेशन सोसायटी द्वारा संचालित 'आबासाहेब गरवारे महाविद्यालय' की स्थापना सन् 1945 ई. को हुई। महाविद्यालय में हिंदी में 11 वीं कक्षा से लेकर पी-एच.डी. तक के पाठ्यक्रम की सुविधा उपलब्ध है। शुरू से ही महाविद्यालय में अन्य विषयों के साथ हिंदी पाठयक्रम का प्रांरभ हो चुका था। सही अर्थों में सन् 1960 ई. में बी.ए. (पदवी) हिंदी स्पेशल की प्रथम बैच शुरू की गई। सन् 1973 ई. में एम.ए. हिंदी (संपूर्ण) पाठयक्रम शुरू किया गया। हिंदी अध्ययन और अध्यापन के साथ-साथ हिंदी अनुसंधान को प्रोत्साहन देने हेतु सन् 2005 ई. से एम.फिल. पाठ्यक्रम और सन् 2012 ई से पीएच-डी अनुसंधान केंद्र की स्थापना की गई। अन्य महाविद्यालयों की तुलना में हिंदी के विकास में इस महाविद्यालय का विशेष योगदान रहा है।

महाविद्यालय में हिंदी को प्रोत्साहन देने वाले प्राध्यापकों की लंबी परंपरा रही है। डॉ. म. के गाड़गीळ विभाग के प्रथम विभागाध्यक्ष थे। उनके उपरांत डॉ. दि. का. कुलकर्णी, डॉ. ज. म. कोठारी, डॉ. शैलजा मांडके, डॉ. नीला बोर्वणकर और डॉ. ओमप्रकाश शर्मा आदि ने हिंदी विभागाध्यक्ष पद पर कार्य किया है। इन प्रमुख प्राध्यापकों के अतिरिक्त प्रा. सुमतिलाल शाह, डॉ. सिंधु भिंगारकर, प्रा. नीला महाडिक, डॉ. इंद्रजीत राठोड़, डॉ. सुरिंदर कौर गौड़ आदि ने हिंदी में सराहनीय कार्य किया है।

फर्ग्युसन महाविद्यालय का हिंदी विभाग

फर्ग्युसन महाविद्यालय की स्थापना सन् 1885 ई. में हुई। महाविद्यालय के प्रथम अध्यक्ष थे- शाहू महाराज और संस्थापक सदस्यों में गोपाळ गणेश आगरकर, लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, विष्णुशास्त्री चिपळुणकर, माधव नाम जोशी और वामन शिवराम आपटे आदि प्रमुख थे। महाविद्यालय में सन् 1952 ई. को हिंदी विभाग की स्थापना की गई। प्रो. बी. डी. वर्मा, प्रो. राजवाडे, डॉ. स. म. परळीकर, प्रा. वा. ह. जोशी, डॉ. अरुण पुजारी, डॉ. रजनी रणपिसे और प्रा. संतोष धोत्रे आदि ने हिंदी विभाग का कार्यभार सँभाला है। विभाग की स्थापना से ही यहाँ हिंदी के अनेक कार्यक्रमों का आयोजन होता रहा है। इनमें-कवि सम्मेलन, वक्तृत्व प्रतियोगिता, गीत-संगीत प्रतियोगिता, हिंदी दिवस, साहित्य सौरभ, निबंध लेखन प्रतियोगिता, विज्ञापन लेखन प्रतियोगिता, हिंदी मानक लेखन प्रतियोगिता आदि प्रमुख है।

छात्रगण हिंदी भाषा एवं साहित्य के माध्यम से रोजगार के अवसरों से जुड़े इस दृष्टि से हिंदी विभाग सदैव प्रयत्नशील दिखाई देता है।

वाड़िया महाविद्यालय का हिंदी विभाग

नौरोसजी वाडिया कॉलेज की स्थापना सन् 1932 ई. को हुई। यह महाविद्यालय भारतीय भाषाओं के अध्यापन के लिए समर्पित था। महाविद्यालय की स्थापना से ही यहाँ संस्कृत, पर्शियन, उर्दू, गुजराती, हिंदी, अंग्रेजी, मराठी आदि भाषाओं के अध्ययन और अध्यापन की सुविधा उपलब्ध कराई गई थी। इन सभी भाषाओं के अध्ययन-अध्यापन की सुविधा के कारण इस महाविद्यालय को भाषाओं के अध्ययन का गढ़ कहा जाता था। कॉमर्स और साइन्स के लिए यहाँ ऐच्छिक विषय के रूप में हिंदी पढ़ाई जाती है। यहाँ कार्य करने वाले पूर्व प्राध्यापकों में डॉ. सिंधु भिंगारकर, डॉ. इब्राहीम फैज, डॉ. मंजू चोपड़ा और डॉ. कांति लोधी आदि प्रमुख है। शुरूआती दौर में भाषिक अध्ययन करने वाला यह प्रमुख महाविद्यालय होने के कारण इसका संक्षिप्त विवेचन यहाँ किया गया है। इनके अतिरिक्त कतिपय महाविद्यालयों में हिंदी का अध्ययन और अध्यापन किया जाता है, जिनकी नामावली निम्नवत् है

अन्य महाविद्यालयों के हिंदी विभाग

पुणे में उपर्युक्त प्रमुख महाविद्यालयों के हिंदी विभागों के अतिरिक्त कुछ अन्य महाविद्यालय भी स्थित है जिनमें हिंदी के अध्ययन एवं अध्यापन की व्यवस्था पदवी एवं पदव्युत्तर स्तर पर की जाती है जिनमें 'आण्णासाहेब मगर महाविद्यालय, हडपसर', 'मामासाहेब मोहोळ कॉलेज', 'आर्टस कॉमर्स ॲन्ड साइन्स कॉलेज, निगड़ी', 'मॉडर्न कॉलेज', 'टिकाराम जगन्नाथ कॉलेज, खड़की', 'सिमबायोसिस सोसायटीज् कॉलेज ऑफ आर्टस ॲन्ड कॉमर्स', 'पूना कॉलेज', 'एच.वी.देसाई सीनियर कॉलेज', 'डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर कॉमर्स कॉलेज, 'महर्षि विटठ्ल रामजी शिंदे आर्टस कॉलेज, आहिल्याश्रम', 'समाज भूषण आप्पासाहेब जेधे आर्टस ॲन्ड कॉमर्स कॉलेज', 'डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर कॉलेज ऑफ आर्टस ॲहन्ड कॉमर्स, येरवडा', 'श्रीमती चंद्रकला किशोरीलाल गोयल आर्टस, साइन्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज, दापोड़ी', 'डॉ.डी.वाय.पाटील कॉलेज, पिंपरी', 'महात्मा फुले महाविद्यालय, हडपसर', 'भारतीय जैन संघटना का आर्टस्, साइन्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज, वाघोली', 'संघवी केसरी कॉलेज, चिंचवड',

बाबूरावजी घोलप महाविद्यालय, सांगवी', 'आबेदा इनामदार सीनियर कॉलेज, पुणे कैंप', 'एस.टी.मीरास् कॉलेज फॉर गर्ल्स, कोरेगाव पार्क', 'आर्टस्, साइन्स ॲन्ड कॉमर्स कॉलेज, आकुर्डी' आदि प्रमुख हैं। इन सभी महाविद्यालयों में हिंदी का अध्ययन अध्यापन किया जाता है।

विश्वविद्यालय

पुणे में 'तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ', 'श्रीमती नाथीबाई दामोदर ठाकरसी विद्यापीठ' और 'सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय' स्थित है। इन तीनों विश्वविद्यालयों में हिंदी के अध्ययन, अध्यापन और अनुसंधान की व्यवस्था विद्यमान है। इनका संक्षेप में विवेचन इस प्रकार है-

तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ का हिंदी विभाग

महाराष्ट्र के प्रसिद्ध उग्रवादी नेता लोकमान्य तिलक ने सन् 1921 ई. में 'तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ' की स्थापना पुणे में की। पुणे में 'न्यू इंग्लिश स्कूल', 'न्यू पूना कॉलेज', 'डेक्कन एज्युकेशन सोसायटी' और फर्ग्युसन कॉलेज की स्थापना में तिलक का योगदान रहा है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान चतुःसुत्री राष्ट्रीय शिक्षा, स्वराज प्राप्ति, स्वदेशी का पुरस्कार और विदेशियों का बहिष्कार का सूत्रपात भी इन्होंने किया था। राष्ट्रीय शिक्षा की दृष्टि से लोकमान्य तिलक ने प्रस्तुत विद्यापीठ की स्थापना की थी।

महाराष्ट्र में हिंदी प्रचार-प्रसार की अग्रणी संस्था 'महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पुणे' को शुरू में इसी विद्यापीठ द्वारा संरक्षण मिला था। इस संदर्भ में श्री शांतिभाई जोबनपुत्रा ने लिखा है- ''सन् 1940 में 'अखिल महाराष्ट्र हिंदी प्रचार समिति' का नाम बदलकर 'महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पुणे' रखा गया। लगभग तीन साल तक 'महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पुणे' तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ के अंतर्गत कार्य करती रही।''[3] आजकल दूरशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत अन्य विषयों के साथ हिंदी का अध्ययन, अध्यापन और अनुसंधान विद्यापीठ में किया जाता है। सन् 2012 से हिंदी पी-एच.डी. अनुसंधान केंद्र की व्यवस्था हिंदी विभाग में की गई है।

श्रीमती नाथीबाई दामोदर ठाकरसी विश्वविद्यालय का हिंदी विभाग :

हिंदी के संवर्धन में कर्वे यूनिवर्सिटी का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इसकी स्थापना महर्षि धोंडो केशव कर्वे ने सन् 1916 ई. में पुणे (हिंगणे) में की थी। वर्तमान में इसका मुख्यालय मुंबई (चर्चगेट) पर स्थित है। इस विश्वविद्यालय

की दो शाखाएँ जुहू एवं पुणे में स्थित है। पुणे शाखा में ज्युनियर कॉलेज के स्तर पर द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी की पढ़ाई का प्रबंध है। सन् 1950 ई. से पदवी स्तर पर हिंदी की पढ़ाई का यहाँ प्रबंध है। इस विद्यालय के हिंदी विभाग द्वारा महिलाओं में हिंदी पाठयक्रम के प्रति रुचि बढ़ाने हेतु गुरू पूर्णिमा, हिंदी दिवस, हिंदी विद्वानों के व्याख्यान तथा अन्य अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इस विभाग के अतिरिक्त इस विश्वविद्यालय में पदव्युत्तर पाठ्यक्रम व अनुसंधान केंद्र भी स्थित है। इस केंद्र पर एम.ए., एम. फिल. और पी-एच.डी. हिंदी के पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं। आज तक इस केंद्र पर डॉ. कृष्णाजी भिंगारकर, डॉ. कृष्ण दिवाकर, डॉ. निशा ढवळे, डॉ. सत्यदेव त्रिपाठी, डॉ. चंद्रकांत मिसाल (वर्तमान) आदि हिंदी विद्वानों ने कार्य किया है। यहाँ से आज तक लगभग 20 महिला शोध-कर्ताओं ने पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की है। विभाग में स्वतंत्र रूप से विभागीय ग्रंथालय विद्यमान है। इस ग्रंथालय में करीबन 25 पत्रिकाएँ नियमित रूप से आती रहती हैं। हिंदी के शोध-प्रबंध और विविध विधाओं की पुस्तकें इस ग्रंथालय में संगृहीत हैं। हिंदी के विकास में इस विश्वविद्यालय का विशेष योगदान है।

पुणे विश्वविद्यालय का हिंदी विभाग

पुणे विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग की स्थापना सन् 1960 ई. में हुई। इसके पूर्व सर परशुराम भाऊ महाविद्यालय में हिंदी की पढ़ाई का प्रबंध हो चुका था। विश्वविद्यालयीन स्तर पर हिंदी विभाग की स्थापना के कारण पुणे के महाविद्यालय, जो पहले मुंबई विश्वविद्यालय से संलग्नित थे, अब पुणे विश्वविद्यालय से संलग्नित हो गए। डॉ. प्रभुदास भुपटकर, इन विश्वविद्यालय से संलग्नित महाविद्यालयों के हिंदी पाठ्यक्रम व परीक्षाओं का संयोजन करते थे। पुणे विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के प्रथम प्रोफेसर एवं अध्यक्ष के रूप में डॉ. भगीरथ मिश्र की नियुक्ति हुई। वे सन् 1960 ई. से 1966 ई. तक पुणे में रहे। उन्होंने पुणे में हिंदी गतिविधियों की नींव रखी। ''महामहोपाध्याय दत्तो वामन पोद्दार के कुलगुरू कार्यकाल में यू.जी.सी. द्वारा प्राप्त अनुदान से तत्कालीन अध्यक्ष डॉ. भगीरथ मिश्र के द्वारा लगभग 350 हस्तलिखित ग्रंथ विद्यापीठ के ग्रंथालय में संगृहीत है।''[4] डॉ. केशव प्रथमवीर ने डॉ. भगीरथ मिश्र के कार्यकर्तृत्व को इस प्रकार निरूपित किया है- ''डॉ. मिश्र अत्यंत मिलनसार व्यक्ति थे। उन्होंने पुणे विश्वविद्यालय में एक 'हिंदी अनुसंधान मंडल' की स्थापना की। इस

मंडल की नियमित मासिक बैठकों में हिंदी अध्यापकों के अतिरिक्त पुणे शहर के साहित्य प्रेमी आया करते थे। उनके प्रभाव से 'महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा' तथा 'महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति' इन दो संस्थाओं में भी साहित्यिक गोष्ठियाँ होने लगी। इस तरह पुणे शहर और उसके आसपास हिंदी भाषा और साहित्य तथा उसकी समीक्षा एवं शोध के प्रति अनुकूल वातावरण बनने लगा।''[5]

सन् 1966 ई. में डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित हिंदी विभाग के अध्यक्ष बने। स्नातकोत्तर हिंदी विभाग के साथ प्रयोजनमूलक हिंदी पाठयक्रम की डॉ. दीक्षित ने शुरूआत की। उनके आने के बाद प्राध्यापकों की संख्या 4 से बढ़कर 8 हो गई। इन्होंने पुणे के प्राध्यापकों का अनुसंधान की ओर ध्यान आकर्षित किया और अनेक प्राचीन ग्रंथों का संपादन किया। 'श्री संत नामदेव की हिंदी पदावली', 'कविकुल कण्ठाभरण', 'रुक्मिणी मंगल', 'गीतार्थसार संग्रह', 'संत एकनाथ और उनकी हिंदी पदावली', 'सुरतिमिश्र संग्रह', डॉ. कृष्ण दिवाकर कृत संपादित 'कविंद्राचार्य सरस्वती की हिंदी रचनाएँ' व प्राचीन हिंदी भाषा का अध्ययन आदि ग्रंथों का विद्यापीठ द्वारा प्रकाशन करवाया। डॉ. दीक्षित के कार्यकाल में प्राध्यापक विनिमय योजना जैसे उपक्रम भी होते थे। उनके प्रयत्न से 'भारतीय हिंदी परिषद' का 24 वाँ अधिवेशन 23, 24 और 25 अक्टूबर 1970 को पुणे में संपन्न हुआ। भारतीय हिंदी परिषद, विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों के हिंदी प्राध्यापकों, विद्वानों और साहित्यकारों की एकमात्र अखिल भारतीय संस्था है। संपूर्ण भारतवर्ष में हिंदी की दृढ़ नींव रखने का प्रयास इस संस्था ने किया है। अधिवेशन में सहभागी विद्वतजनों में- डॉ. कुंवर प्रकाश, मधुकरराव चौधरी, श्री बाळासाहेब भारदे, डॉ. धीरेंद्र वर्मा, डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, दत्तो वामन पोद्दार, आ. विनयमोहन शर्मा, डॉ. रामनिरंजन पांडेय, प्रो. कल्याणमल लोढ़ा, डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय और प्रो. देवेन्द्रनाथ शर्मा आदि उपस्थित थे।

डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित के उपरांत डॉ. दुर्गा दीक्षित (सन् 1985 ई. से सन् 1988 ई. तक), डॉ. श्रीरंग संगोराम (सन् 1988 ई. से सन् 1988 ई. तक), डॉ. अशोक कामत (सन् 1988 ई. से सन् 1988 ई. तक), डॉ. केशव प्रथमवीर (सन् 1988 ई. से सन् 1989 ई. तक) पुनश्च डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित (सन् 1989 ई. से सन् 1990 ई. तक) डॉ. मोहनराव हापसे (सन् 1990 ई. से सन् 1991 ई. तक), डॉ. उमाशंकर उपाध्याय (सन् 1991 ई. से सन् 2005 ई. तक), डॉ. तुकाराम पाटील (सन् 2005 ई. से सन् 2008 ई. तक),

डॉ. वी.एन.भालेराव (सन् 2008 ई. से सन् 2011 ई. तक), पुनश्च डॉ. तुकाराम पाटील (सन् 2011 ई. से सन् 2013 ई. तक), डॉ. वी.एन.भालेराव (सन् 2013 ई. से सन् 2016 ई.) और डॉ. सदानंद भोसले (सन् 2016 ई. से...) हिंदी विभागाध्यक्ष के पद पर कार्यरत रहे हैं। ये सभी महानुभाव अपने अलग-अलग विषयों के ज्ञाता रहे हैं। इन महानुभावों के अतिरिक्त-डॉ. राजनारायण मौर्य, डॉ. कृष्ण दिवाकर, श्री रूपकिशोर शर्मा, डॉ. चंद्रकांत बांदिवड़ेकर, डॉ. रामजी तिवारी, डॉ. दयानंद शर्मा, डॉ. गजानन चव्हाण, डॉ. जया परांजपे, डॉ. सुरेखा झाडे, डॉ. शशिकला राय, प्रा. महेश दवंगे, डॉ. विजयकुमार रोड़े, डॉ. नितिन, राजू घोडे आदि प्राध्यापक मनीषियों का हिंदी विभाग को समय-समय पर मार्गदर्शन मिलता रहा है।

हिंदी विभाग के विभागीय ग्रंथालय में 225 शोध प्रबंध और हिंदी साहित्य की विविध विधाओं की करीबन 5000 पुस्तकें संगृहीत है। शोधार्थियों और छात्रों को बैठकर अध्ययन करने की सुविधा यहाँ उपलब्ध है। हिंदी अध्ययन, अध्यापन और अनुसंधान कार्य में यह ग्रंथ भंडार सहायक दिखाई देता है।

इस तरह पुणे विश्वविद्यालय का हिंदी विभाग और विभाग में कार्यरत आज तक के प्राध्यापकगण हिंदी के विकास में अपना प्रदेय देते हुए नजर आते हैं।

संत नामदेव अध्यासन केंद्र में हिंदी

पुणे विश्वविद्यालय में स्थित संत नामदेव अध्यासन केंद्र की स्थापना सन् 1885 ई. में हुई। तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. ज्ञानी जैल सिंह ने पदवी प्रदान समारोह में संत साहित्य विषयक अध्ययन व अनुसंधान को प्रेरणा देने हेतु अनुसंधान केंद्र के स्थापना की घोषणा की। महाराष्ट्र के नेता वसंतदादा पाटील और सुशीलकुमार शिंदे के प्रयत्नों से केंद्र शासन एवं राज्य शासन की ओर से निधि उपलब्ध करायी गयी और प्रस्तुत केंद्र की स्थापना की गई। अध्यासन केंद्र प्रमुख के रूप में डॉ. अशोक कामत की नियुक्ति हुई। डॉ. कामत संत साहित्य के ज्ञानियों में से एक तथा मराठी एवं हिंदी विषयों के पी-एच.डी. धारक हैं। इसी केंद्र के ग्रंथालयीन सहायता से उन्होंने मराठी और हिंदी के 17 विद्यार्थियों को संतसाहित्य विषयक संदर्भों में पी-एच.डी. उपाधि हेतु मार्गदर्शन किया। इनमें 'हिंदी के आदिकालीन साहित्य में महाराष्ट्र का योगदान', 'महाराष्ट्र के संतों का हिंदी काव्य', 'हिंदी मराठी में चरितपरक बालसाहित्य', 'संत तुकाराम की हिंदी कविता', 'मीरा विषयक हिंदी-मराठी ललित साहित्य-एक अध्ययन', 'संत

नामदेव के हिंदी काव्य में भक्तिभावना', 'संत बहिनाबाई और उनकी हिंदी कविता', 'शंकराचार्य विरचित विवेकचूड़ामणि' आदि महत्वपूर्ण शोध प्रबंधो के नाम लिए जा सकते हैं।

डॉ. अशोक कामत के उपरांत अध्यासन केंद्र प्रमुख के रूप में डॉ. वीणा मनचंदा थीं। आपने संत साहित्य विषयक कार्यशालाओं तथा संगोष्ठियों का आयोजन करके हिंदी संत साहित्य विषयक अनुसंधान कार्य को गति दी। आजकल मराठी के प्राध्यापक डॉ. अविनाश आवलगांवकर केंद्र प्रमुख हैं। डॉ. ओमशीश दत्तोपासक शुरू से ही संशोधन सहायक पद पर कार्यरत है। इन्होंने 40 संतसाहित्य विषयक रिसर्च प्रोजेक्ट प्रकाशित किए हैं। प्रस्तुत केंद्र के पुस्तकालय में हिंदी, मराठी, अंग्रेजी और संस्कृत की करीबन 1 लाख पुस्तकें उपलब्ध हैं। इसमें शोध प्रबंध, संतसाहित्य विषयक समीक्षा एवं धार्मिक पोथियों का समावेश है। हिंदी संत साहित्य के अनुसंधान कार्य में इस केंद्र की अहम भूमिका दिखाई देती है।

निष्कर्ष

इस तरह पुणे शहर में अवस्थित विविध विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में हिंदी के विकास का कार्य होता रहा है। कभी भाषाई दृष्टिकोण से तो कभी साहित्यिक दृष्टिकोण से अध्ययन, अध्यापन और अनुसंधान हुआ है। पुणे की इन प्रमुख शैक्षिक संस्थाओं की तरह यहाँ व्यक्तिगत स्तर की संस्थाएँ भी हिंदी के लिए अप्रत्यक्षतः कार्यरत है। इन संस्थाओं के हिंदी से संबंधित क्रिया-कलापों का परिचय यहाँ किया जा रहा है।

व्यक्तिगत स्तर पर कार्य करने वाली साहित्यिक संस्थाएँ

पुणे में कुछ व्यक्तिगत स्तर पर हिंदी के प्रचार-प्रसार में योग देने वाली संस्थाएँ दिखाई देती हैं। डॉ. केशव प्रथमवीर ने इन संस्थाओं के संदर्भ में लिखा है- ''इस लेखक के अल्प से जीवन में ही, देखते-देखते हिंदी की अनेक संस्थाओं का जन्म हुआ किन्तु कोई कुछ दिनों तक, कोई कुछ महीनों और कोई कुछ वर्षों तक जीवित रहीं और काल के प्रवाह में विलीन हो गई।''[6] आगे एक जगह पर उन्होंने लिखा है- ''लेकिन कुछ संस्थाएँ ऐसी भी है जो अनेक वर्षों से भले ही धीमी गति से क्यों न हों, मजबूती के साथ आगे बढ़ रही है।''[7] इन संस्थाओं के संस्थापक हिंदी के समर्थक एवं प्रचारक है और हिंदी के विकास में उनका कार्य सराहनीय है। ऐसी कुछ प्रमुख संस्थाओं का क्रमागत अध्ययन यहाँ दिया जा रहा है-

हिंदी निकेतन

'हिंदी निकेतन' की स्थापना श्री. विजयकुमार चोकशे ने स. प. महाविद्यालय के सामने तिलक पथ, पुणे-30 इस स्थान पर की थी। तत्कालीन समय में वे इस स्थान पर हिंदी वर्ग चलाते थे। पुणे के अनेक हिंदी अध्येताओं ने यहाँ से हिंदी सीखी और आगे चलकर हिंदी के अच्छे प्राध्यापक बने। चोकशे एक अच्छे अनुवादक थे। कवि गोष्ठियों का आयोजन करते थे। उन्होंने हरिवंशराय बच्चन की 'मधुशाला' का मराठी में अनुवाद किया था। डॉ. प्रभाकर माचवे ने इस संदर्भ में लिखा है- ''श्री. विजयकुमार चोकशे यांनी हिंदी व उर्दू कवींच्या श्रेष्ठ कवितांचे मराठा सुरस अनुवाद करून खुपच उत्तम कामगिरी बजावली आहे. कबीर पासून बच्चन पर्यंत जसे त्यांनी मराठीत सेतु निर्माण केले, तसेच हिंदीत देखील केशवसुत, यशंवत तांबे, विं. दा. करंदीकर, अनुराधा पोद्दार इत्यादींच्या निवडक कवितांचे अत्यंत प्रासादिक व उत्तम संप्रेषणीय काव्यानुवाद त्यांनी केले आहेत. ते मराठी व हिंदी भाषांतील कवितांच्या आदान-प्रदानांचे एक मजबूत व नयनाभिराम सेतु निर्माते होते, यात संशय नाही. साने गरूजींच्या 'आंतरभारती' चे स्वप्न त्यांनी आपल्या परीने साकार केले आहे.''[8] इस उद्धरण का हिंदी अनुवाद देखिए -''श्री. विजयकुमार चोकशे जी ने हिंदी और उर्दू के श्रेष्ठ कवियों के काव्य का रसपूर्ण अनुवाद करके बड़ा कार्य किया है। कबीर से लेकर बच्चन तक उन्होंने मराठी में सेतु निर्माण का कार्य किया है। वैसे ही मराठी के केशवसुत, यशवंत तांबे, विं. दा. करंदीकर, अनुराधा पोद्दार आदि कवियों की चुनिंदा कविताओं के आपने सुरस काव्यानुवाद किए हैं। वे हिंदी और मराठी भाषाओं की कविताओं का आदान-प्रदान करने वाले सेतु निर्माता थे, इसमें कोई आशंका नहीं। साने गुरूजी का सपना 'आंतरभारती' को उन्होंने अपनी ओर से पूर्ण किया।''

आज यह संस्था विद्यमान नहीं है और न ही इसका कोई नामोनिशान। किंतु संस्था द्वारा प्रकाशित 'मधुशाला' पुस्तक 'महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पुणे' के ग्रंथालय में संगृहीत है जो संस्था की ताजा याद दिलाती है।

गुरुकुल प्रतिष्ठान

पुणे विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के पूर्व अध्यक्ष तथा 'संत नामदेव अध्यासन केंद्र' के प्रथम संचालक डॉ. अशोक कामत ने अपना संपूर्ण जीवन संत साहित्य विषयक अनुसंधान कार्यों में बिताया है। वे आदर्श हिंदी प्रचारक तथा 'महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे' जैसी हिंदी प्रचारक संस्था के प्रमुख

कार्यकर्ता हैं। सेवानिवृत्ति के उपरांत उन्होंने 'गुरुकुल प्रतिष्ठान' नामक संस्था की स्थापना की। इसका प्रधान कार्यालय 'सौ. सुशीला कृष्ण मोडक स्मृति' नामक भवन में कर्वे रोड पर स्थित है। मराठी और हिंदी में संत-साहित्य विषयक अनुसंधान कार्य करने वाले प्राध्यापकगण तथा शोधार्थियों को पंद्रह वर्ष से यह संस्था लाभान्वित करती आई है। डॉ. कामत जी के साथ-डॉ. सतीश बडवे, डॉ. रेखा देशपांडे, डॉ. श्यामा घोणसे, डॉ. केतकी मोडक, डॉ. कापरे, आदि संत साहित्य से संबंधित शोध-कार्य में सहयोग देते रहे हैं।

प्रतिष्ठान में एक समृद्ध ग्रंथालय है। हिंदी, मराठी में संत साहित्य विषयक संदर्भ ग्रंथ प्रायः बड़े पैमाने पर यहाँ उपलब्ध हैं। गुरुकुल द्वारा प्रकाशित प्रमुख पुस्तकों में-'श्री ज्ञानेश्वरी चरित्र', 'श्री. तुकाराम गाथा', 'दासबोध' (अनूदित), 'मराठी संतों की हिंदी वाणी' आदि प्रमुख है। इनके अतिरिक्त लगभग 31 पुस्तकों का प्रकाशन संस्था द्वारा किया गया है।

संस्था द्वारा कई पुरस्कारों का वितरण प्रतिवर्ष किया जाता है। इन पुरस्कारों में-

1. डॉ. केशव प्रथमवीर निधि से 'आंतरभारती पुरस्कार'
2. सौ. राधाबाई नारायणी एवं अमेंबल गोपाळकृष्ण कामत निधि से 'आदर्श गृहीनी पुरस्कार'
3. डॉ. सौ.पद्मावती क्षोत्रिय स्मृति में 'ललित लेखन पुरस्कार'
4. श्री कृष्ण मोडक स्मृति में 'आदर्श क्रीड़ा शिक्षक पुरस्कार'
5. श्री. महादेव रामचंद्र हेरेकर की स्मृति में 'ललित लेखन पुरस्कार'
6. श्री. सुशीला कृष्ण मोडक की स्मृति में 'आदर्श सहधर्मिनी पुरस्कार'
7. घनश्याम दत्तात्रय धोंड़ की स्मृति में 'मुद्रांजली पुरस्कार'
8. पं.माधवराव सप्रे की हिंदी सेवा स्मृति में 'लोकमान्य पुरस्कार'
9. श्री. देवदत्त चंड़कर प्रणीत 'कृतज्ञता पुरस्कार'
10. श्रीकृष्ण जयराम अष्टेकर प्रणीत 'आदर्श माऊली पुरस्कार'

आदि पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं। प्रस्तुत पुरस्कारों के वितरण का प्रयोजन सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, तथा राष्ट्रीय एकता निर्माण में सहायता प्रदान करना है।

'गुरुकुल प्रतिष्ठान' यह संस्था एक प्रकार से पुणे में हिंदी साहित्य की समृद्धि में सहायक वातावरण की निर्मिति करती हुई नजर आती है। प्रमुख रूप

से मराठी एवं हिंदी संत साहित्य विषयक अनुसंधान और प्रबोधन करने वाली पुणे की यह प्रमुख संस्था है।

ऐक्यभारती प्रतिष्ठान

पुणे विश्वविद्यालय की भूतपूर्व हिंदी विभागाध्यक्षा डॉ. दुर्गा दीक्षित ने सेवानिवृत्ति के उपरांत 'ऐक्यभारती प्रतिष्ठान' संस्था की स्थापना सन् 1990 ई. में की। संस्था भारतीय भाषाओं और संस्कृतियों के अनुसंधान कार्य से संबंधित है। संस्था से संबंधित जानकारी प्राप्त कराने के लिए सांस्कृतिक, ऐतिहासिक व सामाजिक विवेचन वाली पत्रिका 'ऐक्यभारती' एक उत्कृष्ट साधन है। इसमें संस्था के उद्देश्य इस प्रकार लिखे गए हैं-

1. बहुभाषा एवं बहु संस्कृति का संशोधन करना।
2. विविध भारतीय भाषाओं में लिखित रामायण का साहित्यिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से तुलनात्मक अनुसंधान करना।
3. मराठी, हिंदी, गुजराती एवं उर्दू के शिक्षकों के भाषा विषयक गुणवत्ता के लिए विकास प्रकल्पों का आयोजन करना।
4. विविध प्रांतीय संस्कृति के अध्ययन के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक शोध-प्रकल्पों का आयोजन करना।
5. राज्यस्तरीय एवं राष्ट्रीय कार्यशालाओं का आयोजन करना एवं पुणे में साहित्यिक वातावरण की निर्मिति करना।
6. बहुभाषा शिक्षण का आदान-प्रदान करना।
7. विविध भारतीय भाषा शिक्षण के वर्गों का संचालन करके भारतीय भाषाओं का अध्ययन, अध्यापन और अनुसंधान करना।
8. ग़ैर मराठी अधिकारी वर्ग के लिए मराठी भाषा शिक्षण का आयोजन करना।
9. 'वेलकम इंडिया' परदेशी व्यक्तियों के लिए भारतीय भाषा एवं संस्कृति का परिचय कराना।
10. राजभाषा हिंदी व मराठी अनुवाद पदविका अभ्यासक्रम निर्मिति व संयोजन तथा संचालन करना।
11. भारतीय संस्कृति के विविध आयामों को उद्घाटित करने हेतु सांस्कृतिक प्रकाशन 'प्रादेशिक संस्कृति दर्शन' व प्रकाशन मराठी, हिंदी तथा अन्य प्रांतीय भाषाओं द्वारा करना।

12. नैतिक एवं राष्ट्रीय चारित्र्य संवर्धन हेतु राष्ट्रीय व्यक्ति विशेष की जयंतियों का आयोजन करना।
13. आधुनिक युगीन आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विदेशी भाषाओं में पारस्परिक अनुवाद, टाइपसेटिंग तथा संगणकीकरण सेवा उपलब्ध कराना।
14. विविध भाषा एवं संस्कृति से संबंधित अनुवाद प्रकल्प, मराठी संत गाथा आदि का हिंदी संस्करण करना।
15. अनुवाद को प्रोत्साहन देने हेतु अनुवाद पदविका प्रशिक्षण अभ्यासक्रम का आयोजन करना।[9]

उपर्युक्त सभी उद्देश्यों की सफलता हेतु संस्था कटिबद्ध तरीके से कार्यरत दिखाई देती है। लगभग 25 संगोष्ठियों का आयोजन संस्था ने किया है। भाषाई एकता का असाधारण प्रयास संस्था के माध्यम से होता है।

भारतीय भाषा न्यास

हिंदी के सुप्रतिष्ठित आचार्य, डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित ने सन् 2000 ई. में अपनी आयु के अमृत महोत्सव के सुअवसर पर प्रस्तुत संस्था की स्थापना की। 7 जनवरी, 2002 को संस्था का नाम 'भारतीय भाषा न्यास' रखा गया। विश्वस्त न्यासी के रूप में अपनी पुत्री डॉ. मधुरिमा दीक्षित और श्री. सदानंद महाजन संस्था से जुड़े रहे। संस्था के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार है-

1. भारतीय भाषाओं को अध्यापन के लिए केंद्र बनाना या फिर ऐसे केंद्रों की मदद करना।
2. हिंदी भाषा और अन्य भारतीय भाषाओं में शोध के लिए छात्रवृत्ति प्रदान करना।
3. भारतीय भाषाओं और साहित्य पर व्याख्यान एवं संगोष्ठियाँ आयोजित करना, संचालित करना या उनकी मदद करना।
4. हिंदी की साहित्यिक पत्रिका प्रकाशित करना तथा 'न्यास' के लक्ष्यों एवं उद्देश्यों के अनुरूप चुनिंदा कृतियों की व्यवस्था करना।
5. भारतीय भाषाओं और साहित्य का पुस्तकालय स्थापित करना।
6. शोध-संस्थान स्थापित करना।
7. शिक्षा देकर संगोष्ठियाँ आयोजित करके, व्याख्यान आयोजित करके तथा कृतियों को अंतिम रूप देने या उनके प्रकाशन हेतु वित्तीय सहायता प्रदान करके निम्नलिखित का संवर्धन करना।

8. अन्य भाषाओं से हिंदी में तथा हिंदी से अन्य भाषाओं में अनुवाद तुलनात्मक अध्ययन एवं पाठ संपादन
9. इन उद्देश्यों को पूरा करने के लिए अन्य सहायक गतिविधियाँ चलाना।

संस्था केवल हिंदी की गतिविधियों तक सीमित न होकर मराठी, अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू, सिंधी और गुजराती आदि भाषाओं की गतिविधियों से संबंधित है। लगभग दस वर्षों तक इस संस्था ने भाषा साहित्य और संस्कृति को बढ़ावा देकर पुणे में हिंदी भाषा को बढ़ाने में सहायता की है।

अक्षरभारती अनुवाद अकादमी :

पुणे विश्वविद्यालय से सेवानिवृत्त प्राध्यापक डॉ. गजानन चव्हाण ने प्रस्तुत संस्था की स्थापना सन् 2006 ई में की। अनुवाद साहित्य से संबंधित विविध प्रक्रिया पर चिंतन-मनन करना संस्था का प्रमुख उद्देश्य है। स्थापना से लेकर अब तक संस्था के मातहत लगभग 4 संगोष्ठियों का आयोजन हुआ है जिनमें साहित्यिक अनुवाद के विविध पक्षों पर विचार हुआ है। इन गोष्ठियों में 'कन्नड से मराठी में अनुवाद की समस्याएँ', 'अंग्रेजी से मराठी में अनुवाद की समस्याएँ', 'हिंदी से मराठी में अनुवाद की समस्याएँ' आदि विषयों के साथ-'हिंदी कादंबर्यांची मराठी भाषांतरे', 'मराठी दलित साहित्य के हिंदी अनुवाद', 'मराठी संत साहित्य के हिंदी अनुवाद' आदि विषयों पर चिंतन हुआ है। इन बातों से स्पष्ट होता है कि संस्था अनूदित साहित्य की संपूर्ण प्रक्रिया पर आधारित है और अनूदित साहित्य को केंद्र में रखकर कार्य करती है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष यह है कि उपरोक्त संस्थाएँ पुणे में हिंदी गतिविधियों को तेज करती आई है। आए दिन इन संस्थाओं में नितनवीन उपक्रमों का आयोजन और संयोजन किया जाता है। अतः हिंदी वातावरण की निर्मिति में इनका विशेष योगदान रहा है।

संगठन रूपी साहित्यिक संस्थाएँ

उपर्युक्त संस्थाओं के अतिरिक्त कुछ ऐसी संस्थाएँ भी पुणे में कार्यरत दिखाई देती हैं जो केवल साहित्यिक गोष्ठियों का आयोजन प्रतिमाह करती है। इन संस्थाओं से जड़े अनेक नामी साहित्यकार आज पुणे में साहित्य सृजनरत दिखाई देते हैं। इन साहित्यकारों का परिचय अलग से पंचम् अध्याय में दिया गया है। तत्पूर्व में इन संस्थाओं का सामान्य परिचय निम्नवत् दिया गया है।

प्लस, मायनस, झीरो

वरिष्ठ लेखिका डॉ. मालती शर्मा ने प्रस्तुत संस्था की स्थापना की थी। उनसे लिए हुए साक्षात्कार में स्वयं उन्होंने कहा- ''मैंने खुद यहाँ पर तीन संस्थाएँ चलाई थीं-'संवाद', 'संस्कृतिलोक' और 'प्लस, मायनस, झीरो'। अंतिम संस्था काफी चली। जिसमें संगोष्ठियों का आयोजन होता था। इसमें बड़े साहित्यकार भी शामिल होते थे।''[11] इस संस्था का नामकरण उनके पति गणित के प्रोफेसर डॉ. के. सी. शर्मा ने किया था। इस संस्था से डॉ. केशव प्रथमवीर, किशोर वासवाणी, डॉ. केशव फाळके, गोवर्धन शर्मा 'घायल', श्रीमती रजनी पाथरे राजदान, इंदिरा शर्मा, शरदकुमार व्यास जैसे नामी साहित्यकार जुड़े हुए थे। हरिनारायण व्यास और डॉ. भगीरथ मिश्र भी इस संस्था की गोष्ठियों में सहभागी होते थे। संस्था करीबन तीन साल तक चली।

सर्जना

'सर्जना' साहित्य एवं कला मंच की स्थापना पुणे के स.प.महाविद्यालय की प्रोफेसर डॉ. पद्मजा घोरपडे और वाडिया कॉलेज के प्रोफेसर डॉ. इब्राहीम फैज ने तत्कालीन आकाशवाणी के कार्यक्रम अधिकारी शैलेंद्र की सहायता से निराला जयंती के सुअवसर पर सन् 1986 ई. में की थी। डॉ. पद्मजा घोरपडे के क्रियाशील उत्साह से यह संस्था मराठी, हिंदी, सिंधी और अन्य भाषाओं में कवि गोष्ठियों का आयोजन करती थी। उक्त संस्था की स्थापना के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार थे-

1. हिंदी प्रेमियों को एकजूट करना।
2. नवोदित प्रतिभाओं को मंच देना।
3. बाहर के प्रतिष्ठित रचनाकारों को सुनना और उन्हें स्थानीय प्रतिभाओं से परिचित कराना।
4. दूसरी अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य की प्रवृत्तियों से स्थानीय लोगों को परिचित कराना।
5. साहित्य सृजन को प्रेरणा देना।[12]

संस्था के कार्यक्रमों में हिंदी, मराठी के नवोदित और प्रतिभावान साहित्यकारों को निमंत्रित किया जाता था। हिंदी और मराठी के जिन प्रतिष्ठित और चर्चित हस्ताक्षरों को 'सर्जना' ने अपने मंच पर उपस्थित किया है, उनमें-विद्यानिवास मिश्र, गोविंद मिश्र, चित्रा मुद्गल, योगेंद्र चौधरी, हरिनारायण व्यास, धमेंद्र गुप्त, डॉ. भवानीप्रसाद निदारिया, डॉ. महावीर सिंह, अनंत ओक, डॉ. आनंदप्रकाश

दीक्षित, डॉ. केशव प्रथमवीर, डॉ. रामजी तिवारी, डॉ. उमाशंकर उपाध्याय और डॉ .म. ना. अदवंत आदि प्रमुख हैं।

संस्था की गतिविधियाँ

संस्था द्वारा पुणे में प्रतिमाह काव्य-गोष्ठियाँ, कहानी पाठ, कथा-कथन, संगीत, गीत, प्रगीत आदि को मंच प्रदान किया जाता रहा। सन् 1986 ई. से सन् 1997 ई. तक प्रतिमाह कार्यक्रम होते रहे। संस्था द्वारा लगभग 100 से अधिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। पुणे के अनेक नवोदित लेखकों को सर्जन एवं प्रकाशन हेतु संस्था द्वारा मंच मिला। डॉ. पद्मजा घोरपडे ने कहा- मराठी के अनेक कवियों को हिंदी में लिखने की प्रेरणा 'सर्जना' मंच के माध्यम से मिली जिनमें आसावरी काकडे, संजीवनी बोकिल प्रमुख रही हैं।[13] संस्था के कार्यक्रमों में डॉ. केशव प्रथमवीर, डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित, डॉ. श्रीरंग संगोराम, डॉ. हनमंत साने, डॉ. निशा ढवळे, डॉ. सिंधु भिंगारकर, डॉ. तुकाराम पाटील, डॉ. कांतिदेवी लोधी, प्रा. सु. मो. शाह आदि प्राध्यापक गणों का सहयोग मिलता रहा। अतः कहा जा सकता है कि भले ही कुछ कारणवश यह संस्था सन् 1998 ई. में बंद हुई हो किंतु लगभग 12 वर्षों तक संस्था ने साहित्यिक गतिविधियों के संचालन में भरसक पहल जरूर की थी।

हिंदी आंदोलन

'हिंदी आंदोलन' संस्था की स्थापना श्री संजय भारद्वाज ने सन् 1995 ई. में की। संस्था साहित्यिक परिचर्चाओं, कवि गोष्ठियों का आयोजन प्रतिमाह करती है। संस्था द्वारा संचालित सांस्कृतिक, सामाजिक व साहित्यिक उपक्रमों की माध्यम-भाषा हिंदी है। सभी भारतीयों को एक भाषा सूत्र हिंदी से जोड़ने के महान उद्देश्य से संस्था का नाम 'हिंदी आंदोलन' रखा गया है। संस्था का बोधवाक्य डॉ. इकबाल के गीत 'हिंदी है हम' को बनाया गया है।

उद्देश्य

1. भारतीय भाषाओं को रोटी से जोड़ने के लिए प्रयत्न करना।
2. भारतीय साहित्य, लोकसंस्कृति एवं लोककलाओं का प्रचार करना।
3. भारत के सामाजिक, साहित्यिक, शैक्षिक ढांचागत विकास में सक्रिय योगदान करना।
4. भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों और तार्किक परंपराओं का प्रचार-प्रसार करना।
5. राष्ट्रीय एकता, सामाजिक सौहार्द और विश्वबंधुत्व के लिए कार्य करना।
6. विकास से वंचित सामाजिक घटकों, विशेषकर बच्चों, असहाय महिलाओं

और वृद्धों के लिए कार्य करना।

7. पर्यावरण की रक्षा और संवर्धन के लिए कार्य करना।
8. काल-पत्र-परिस्थिति अनुरूप राष्ट्र और समाज के हित के प्रकल्प कार्यान्वित करना।[14]

इस संस्था द्वारा आज तक 'लोकनृत्य महोत्सव', 'परिसंवाद', 'कवि-सम्मेलन', 'पर्यावरण सजगता कार्यक्रम', समाजसेवी उपक्रम जैसे-अबला, असहाय, वृद्ध, बालकों, कैदियों में जन-जागरण इत्यादि विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं। आंदोलन की ओर से पुणे के हिंदी और अहिंदी भाषी हिंदी साहित्यकारों को मंच प्रदान किया जाता है। हिंदी के विकास में किसी-न-किसी प्रकार से योग देने वाले महानुभावों को संस्था द्वारा प्रतिवर्ष 'हिंदी भूषण' और 'हिंदीश्री' नामक पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं। पुणे के कई महानुभाव इन सम्मानों से पुरस्कृत हुए हैं।संस्था का कार्य हिंदी भाषा, हिंदी समाज और हिंदी संस्कृति को समर्पित है। प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. दामोदर खड़से ने इस संदर्भ में लिखा है -''पिछले सोलह वर्षों से हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के लिए कार्यरत 'हिंदी आंदोलन' शहर से खड़ा हुआ सकारात्मक और रचनात्मक आंदोलन है।''[15]

उपरोक्त जानकारी के आधार पर कहा जा सकता है कि पुणे की इस संस्था का हिंदी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

चिंतनमंच

पुणे के उद्योगपति और साहित्यप्रेमी श्री. भगवान हरानी ने 'चिंतनमंच' नामक संस्था की स्थापना पुणे में की। पुणे के शायर, कवि, चिंतक आदि श्री. भगवान हरानी के घर उपस्थित होकर किसी प्रासंगिक विषय पर चिंतन करते हैं। स्वयं हरानी जी के साक्षात्कार में उन्होंने कहा- ''किसी एक साहित्यिक एवं सामाजिक विषय पर चिंतन करना जो मानवोपयोगी सिद्ध हो, हमारी संस्था का मुख्य उद्देश्य है।''[16] संस्था के आज तक करीबन 50 के ऊपर कार्यक्रम संपन्न हो गए है। संस्था के रजत जयंती समारोह के अवसर पर संस्था द्वारा 'चिंतन मंच के शायर' और 'केसर की महक' नामक पुस्तकों का लोकार्पण किया गया। यह संस्था लगभग 20 सालों से पुणे में हिंदी मुशायरों का आयोजन करके हिंदी को अपना प्रदेय देती रही है।

रसिक मित्र मंडल

पुणे के गुजराती श्री. सुरेशचंद्र सुरतवाला ने 'रसिक मित्र मंडल' नामक

संस्था की स्थापना 11 सितंबर, सन् 1984 ई. में की। सुरतवाला मानवीय संवेदनाओं से जुड़े सहृदय व्यक्ति है और अनेक भाषाओं के साहित्य में रुचि रखते हैं। साहित्य मानवीय संवेदनाओं से जुड़ा हुआ होता है, यह संवेदना अधिकतर काव्य विधा में पाई जाती है। इसी परिप्रेक्ष्य में संस्था द्वारा विभिन्न भाषाओं में कवि गोष्ठियों का आयोजन होता रहता है। सन् 2013-14 ई. में संस्था द्वारा प्रतिमाह 'एक कवि एक पुष्प' नामक कार्यक्रम संपूर्ण वर्षभर की अवधि में संपन्न किया गया जिसमें भारत के प्रमुख कवियों के स्मृति में व्याख्यान आयोजित किए गए। 'रसिक मित्र मंडल' और सुरतवाला के संदर्भ में डॉ. केशव प्रथमवीर ने लिखा है- ''सुरेशचंद्र सुरतवाला एक गुजराती भाषी व्यावसायिक हैं, किन्तु वे हृदय से राष्ट्रीय भावना और भाषाई समन्वय के पोषक हैं। उनके द्वारा संचालित 'रसिक मित्र मंडल' जैसी बहुभाषिक संस्था भी हिंदी, उर्दू, मराठी, और गुजराती आदि भाषाओं के सम्मिलित कार्यक्रमों का आयोजन करती है। भारतीय भाषाओं के बीच यह संस्था समन्वय करने की भूमिका अदा करती है।''[17] इस तरह स्पष्ट किया जा सकता है कि भाषाई एकता का प्रतिवहन करने वाली इस संस्था ने हिंदी भाषा को अपनाया है और अनेक हिंदी कार्यक्रमों का आयोजन भी किया है।

प्रयास

'प्रयास' हिंदी उर्दू साहित्य अकादमी पुणे की नवोदित साहित्यिक संस्था है। इसकी स्थापना 7 अप्रैल, सन् 2009 ई. को हुई है। श्रीमती प्रभा माथुर (लेखिका), उद्धव महाजन 'बिस्मिल' (गजलकार), डॉ. नजीर फतेहपुरी (गजलकार), शमशाद जलील शाद (कहानीकार), डॉ. मोहम्मद शाकीर (हिंदी प्राध्यापक), सय्यद जे आर काझी (उर्दू गजलकार), मुनव्वर पीरभाई (शिक्षा तज्ञ), श्रीमती दीप्ति गुप्ता (समीक्षक), डॉ. कांतिदेवी लोधी (कवयित्री) आदि संस्था से जुड़े महानुभाव हैं। संस्था के उद्देश्य राष्ट्रीय एकात्मता से जुड़े दिखाई देते हैं। जैसे-

1. हिंदी, उर्दू साहित्य का विकास करना।
2. हिंदी, उर्दू साहित्य के विकास के लिए विविध उपक्रमों का आयोजन करना।
3. नवोदित रचनाकारों को प्रोत्साहित करना।
4. हिंदी, उर्दू साहित्य की परिचर्चाओं का आयोजन करना, तथा विविध आयामों को खोजना।
5. रचनाकारों को जागतिक हिंदी, उर्दू गतिविधियों से अवगत कराना।

6. इंटरनेट के माध्यम से साहित्य का प्रचार एवं प्रसार करना।
7. हिंदी, उर्दू स्कूलों के माध्यम से साहित्य का प्रचार एवं प्रसार करना।
8. हिंदी, उर्दू साहित्य को बढ़ावा देने के लिए विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन करना।
9. रचनाकारों के टैलेंट (बौद्धिक क्षमता) की खोज करके साहित्य सृजन के लिए उन्हें प्रेरित करना।
10. राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के लिए विविध उपक्रमों का आयोजन करना।[18]

प्रस्तुत उद्देश्यों के तहत् 'प्रयास' संस्था-समन्वय भावना, राष्ट्रीय भावना, सामाजिक एकता को समर्पित दिखाई देती है।

निष्कर्ष

उपरोक्त संस्थाएँ भाषा समन्वय की भूमिका बखूबी निभाती हैं। इनकी वजह से पुणे के सभी अहिंदी भाषी लोग हिंदी के माध्यम से एक हो जाते हैं। इनका आपसी रिश्ता प्रांतवाद और भाषावाद को दूर रखता है। इसी समन्वय की भावना के कारण पुणे में पता ही नहीं चलता कि कौन किस प्रांत का है।

पुणे के प्रमुख कार्यालयों में हिंदी :

पुणे में कुछ सरकारी कार्यालय, सरकारी संस्थान, विविध क्षेत्रों से संबंधित सरकारी अनुसंधान केंद्र और प्रसारण केंद्र विद्यमान हैं, जिनमें राजभाषा हिंदी का अनिवार्यतः प्रशिक्षण दिया जाता है और प्रयोग भी किया जाता है। यहाँ प्रतिनिधि तौर पर सीडॉक 'पुणे आकाशवाणी केंद्र', 'एफ टी आय', 'बैंक विभाग', 'मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय', 'राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला', 'भारतीय उष्णदेशीय मौसम अनुसंधान केंद्र', 'राष्ट्रीय रक्षा अकादमी' आदि संस्थाओं के हिंदी विषयक कार्यों का जायजा लिया गया है।

सी-डैक

प्रगत संगठन विकास केंद्र (center for development of Advanced Computing) अथवा सी-डैक भारत की अर्धसरकारी सॉफ्टवेयर कंपनी है। इसकी स्थापना सन १९८८ को महाराष्ट्र के मुख्य शहर पुणे में हुई। सी-डैक का आरंभिक उद्देश्य स्वदेशी महासंगणक बनाना था। वर्तमान में यह सॉफ्टवेयर एवं इलैक्ट्रॉनिक्स के क्षेत्र में एक नामी कम्पनी है। हिन्दीजगत में यह मुख्य रूप से भाषाई कम्प्यूटिंग सम्बंधी विकास कार्यों के लिये जानी जाती है। सी-डैक ने

इनस्क्रिप्ट भारतीय भाषी लिपियों का मानक की बोर्ड तैयार किया है। यह देवनागरी, बंगाली, गुजराती, गुरूमुखी और कन्नड आदि भाषाओं के लिए उपयुक्त है। सी-डैक ने सेतु सॉफ्टवेयर तैयार किया है। इसके माध्यम से अंग्रेजी दस्तावेजों का हिंदीकरण किया जाता है। सी-डैक द्वारा निर्मित 'मंत्रा' नामक सॉफ्टवेयर स्वचलित अंग्रेजी से हिंदी मशीनी अनुवाद का सिस्टम है। सी-डैक दवारा बनाए गए श्रृतलेखन सॉफटवेयर के माध्यम से हिंदी में बोली गई ध्वनि को टेक्स्ट रूप में बदला जाता है। इस सॉफ्टवेयर के द्वारा शुद्ध हिंदी के शब्दों का लिप्यांतरण किया जाता है। मशीनी अनुवाद का यह उत्तम उदाहरण है। हिंदी की प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें जैसे बोला जाता है, वैसे ही लिखा जाता है। इसलिए यह सॉफ्टवेयर हिंदी के लिए अत्यधिक कारगर है।

इस प्रकार सी-डैक ने स्थापना से ही हिंदी के विकास में विशेष भूमिका का निर्वाह किया है। कंम्प्यूटर में अंग्रेजी के साथ हिंदी के महत्व को बढाने में इस संस्थान का विशेष महत्व है। सी-डैक के सहायक निदेशक राजेंद्र प्रसाद वर्मा का हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान है। ये मीडिया से जुड़े व्यक्ति होने के कारण पुणे स्थित सरकारी कार्यालयों, निगमों, बैंकों आदि के अधिकारियों और कर्मचारियों को युनिकोड में शब्द संसाधन, फाईल फॉट कन्वर्टर सॉफ्टवेयर्स तथा सूचना प्रौद्योगिकी की जानकारी का प्रशिक्षण देते हैं। वे सी-डैक द्वारा विकसित किए गए सॉफ्टवेयर्स के प्रयुक्ति का मार्गदर्शन करके हिंदी के विकास में योगदान देते रहे हैं।

इस तरह पुणे स्थित सी-डैक की हिंदी के विकास में अहम भूमिका रही है।

पुणे आकाशवाणी केंद्र

पुणे आकाशवाणी केंद्र की स्थापना 2 अक्टूबर,सन् 1953 ई. को शिवाजीनगर (पुणे) में हुई। समाज को सूचना, समाचार, मनोरंजन प्रदान करना, राष्ट्रीय एकता एवं धर्मनिरपेक्षता को प्रोत्साहित करना आदि आकाशवाणी केंद्र के प्रमुख उद्देश्य रहे है। आकाशवाणी द्वारा नव-नवीन समाचार (वाणिज्य विषयक, राजनीति विषयक, क्रीड़ा संबंधी, वैश्विक स्तर के) समाज को प्रदान किए जाते है और जनता को सशक्त बनाने का प्रयास किया जाता है। आकाशवाणी समाजोपयोगी कार्यक्रमों के प्रस्तुतिकरण के लिए कटिबद्ध है।

प्रस्तुत केंद्र के प्रथम कार्यक्रम अधिकारी श्रीमती ज्योत्स्ना देवधर थी। इन्होंने सन् 1985 ई. से सन् 1995 ई. तक की अवधि में अनेक हिंदी कार्यक्रमों का प्रस्तुतिकरण किया। महाराष्ट्र की जनता में दैनंदिन एवं व्यावहारिक हिंदी

का प्रयोग बढ़ाने के उद्देश्य से 'हिंदी बातचीत' कार्यक्रम इन्हीं के कार्यकाल में होता था। इनके उपरांत प्रोड्यूसर के रूप में शैलेंद्र की नियुक्ति हुई। वे एक अच्छे गीतकार थे। उन्होंने अनेक नामी हिंदी साहित्यकारों के साक्षात्कार प्रसारित किए। शैलेंद्र के उपरांत कवि हरिनारायण व्यास इस केंद्र पर कार्यरत थे। ज्योत्स्ना देवधर, शैलेंद्र और हरिनारायण व्यास का पुणे में हिंदी साहित्यिक वातावरण की निर्मिति में विशेष योगदान रहा है।

सन् 2004 ई. में डॉ. सुनील देवधर और कौशल पाण्डेय जैसे अधिकारी पुणे आकाशवाणी केंद्र में नियुक्त हुए। सुनील देवधर ने 'कलश' नामक साहित्यिक रेडियो पत्रिका का संपादन किया और विविध विषयों पर लगभग 70 परिचर्चाओं का संकलन किया। उन्होंने अनेक सिद्धहस्त मनीषियों के साक्षात्कार भी प्रसारित किए। इनमें-रमेशभाई ओझा (मानसमर्मज्ञ), तरूणसागर जी (जैन मुनि), शरद ठकार (आर्ट ऑफ लिव्हिंग के कार्यकर्ता), निदा फाजली (शायर), चित्रा मुद्गल (हिंदी कथा लेखिका), डॉ. दामोदर खड़से (प्रसिद्ध लेखक), डॉ. गोविंदस्वरूप (वैज्ञानिक) राष्ट्रीय प्रसारण, डॉ. उषादेवी कोल्हटकर (अनिवासी भारतीय कथाकार), नारायणभाई देसाई (गांधीदर्शन के प्रचारक), डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित (वरिष्ठ हिंदी समीक्षक), सिंधुताई सकपाक (थोर समाजसेविका), निनाद बेडकर (इतिहासविद्), डॉ. जयंत नारळीकर (प्रसिद्ध वैज्ञानिक), बालकवि बैरागी (कवि, राजनेता), सत्यपाल सिंह (पुलिस कमिश्नर), हरिनारायण व्यास (वरिष्ठ हिंदी कवि), डॉ. यु. म. पठान (अभ्यासक संतसाहित्य), मनीषा साठे, शंकर अभ्यंकर (प्रवचनकार) आदि प्रमुख है। इसके अतिरिक्त पुणे के अनेक नवोदित तथा प्रतिष्ठित लेखकों को इस केंद्र से मंच मिलता रहा है। डॉ. सुनील देवधर के अनुसार-"हिंदी भाषा एवं साहित्य को पुणे आकाशवाणी केंद्र का योगदान यह है कि पुणे के प्रतिष्ठित साहित्यकार इस केंद्र से जुड़े रहे हैं और उन्हें हिंदी साहित्य की सृजन प्रकिया में इस केंद्र से हमेशा सहयोग मिलता रहा है।"[19] आकाशवाणी के हिंदी कार्यक्रम संपूर्ण महाराष्ट्र में प्रसारित होते हैं।

एफ.टी.आय, (पुणे)

'फिल्म एण्ड टेलिविजन संस्थान, पुणे' की स्थापना सन् 1960 ई. में हुई। फिल्मों ने हिंदी के प्रचार-प्रसार में अहम भूमिका निभाई है। प्रस्तुत संस्थान में फिल्म निर्माण की विभिन्न शाखाओं का तकनीकी प्रशिक्षण दिया जाता है साथ ही विभिन्न पाठ्यक्रम जैसे-फिल्म निर्देशन, संपादन, पटकथा लेखन, फिल्म

छायांकन, ध्वनि मुद्रण, ध्वनि अभियांत्रिकी अभिनय आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है। दृष्टव्य बात यह कि संस्थान का अधिकांश कार्य हिंदी में होता है।

संस्थान की महत्वपूर्ण उपलब्धि यह है कि 'राष्ट्रीय फिल्म संग्रहालय, पुणे' के सहयोग से ग्रीष्मकालीन छुट्टियों में 'फिल्म सराहना' पाठ्यक्रम यहाँ संचालित किया जाता है जिसमें विश्वविद्यालयीन प्राध्यापकों, पत्रकारों, फिल्म सोसायटी के संचालकों तथा अनुसंधानकर्ताओं को प्रवेश दिया जाता है और फिल्म निर्माण की प्रक्रिया के विभिन्न पहलुओं की जानकारी दी जाती है।

हिंदी के प्रसिद्ध सिनेकलाकार शबाना आजमी, जया बच्चन, रेहाना सुल्तान, जरीना बहाव, शत्रुघ्न सिन्हा, मिथुन चक्रवर्ती, नसरूद्दीन शाह, ओम पुरी, राकेश बेदी, नवीन निश्चल, कवलजीत पेंटल, असरानी, गुलशन ग्रोवर, सुरेश ओबेरॉय, डैनी डेंग्जोप्पा इसी संस्थान के छात्र रहे है।

संस्थान में राजभाषा हिंदी का प्रशिक्षण हिंदी कक्ष में दिया जाता है। संस्थान में स्थित वाचनालय में देशी-विदेशी साहित्यिक पत्रिकाओं के साथ फिल्म क्षेत्र से संबंधित पत्रिकाएँ आती हैं। संस्थान के ग्रंथालय में हिंदी भाषा, साहित्य और फिल्म से संबंधित पुस्तकें संग्रहीत की गई हैं। संस्थान में वीडियो लाइब्रेरी भी है जहाँ भारतीय एवं विदेशी फिल्में, लघु फिल्में तथा संस्थान के छात्रों की पदविका फिल्में संग्रहीत की गई हैं। इस तरह इस संस्थान में हिंदी फलती-फूलती रही है। यहाँ का संपूर्ण वातावरण हिंदीमय है।

बैंकों में हिंदी

भारतीय संविधान में हिंदी को राजभाषा का अधिकार प्राप्त है। पुणे के सभी राष्ट्रीय बैंकों में प्रादेशिक भाषा के साथ-साथ राजभाषा हिंदी का प्रयोग होता है। इनमें-कैनरा बैंक, इलाहाबाद बैंक, बैंक ऑफ इंडिया, देना बैंक, विजया बैंक, आंध्रा बैंक, इंडियन बैंक, भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक, सिंडिकेट बैंक, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, इंडियन ओवरसीज बैंक, पंजाब नैशनल बैंक, कार्पोरेशन बैंक, स्टेट बैंक ऑफ हैदराबाद, यूको बैंक, स्टेट बैंक ऑफ निकोबार एण्ड जयपुर, ओरियण्टल बैंक ऑफ कॉमर्स, राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक, भारतीय स्टेट बैंक, आय. डी. बी. आय बैंक, स्टेट बैंक ऑफ त्रावणकोर, भारतीय निर्यात-आयात बैंक, स्टेट बैंक ऑफ मैसूर, स्टेट बैंक ऑफ पटियाला, बैंक ऑफ महाराष्ट्र, बैंक ऑफ बड़ौदा आदि प्रमुख बैंकों

की पुणे शाखाओं में राजभाषा हिंदी का प्रयोग होता है।

इन प्रमुख बैंकों में राजभाषा कार्यान्वयन की जाँच हेतु नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, पुणे (संयोजक बैंक ऑफ महाराष्ट्र) स्थित है। सरकारी बैंकों में राजभाषा कार्यान्वित करने का प्रबंध यह समिति करती है। बैंकों में कार्यरत कर्मचारियों के हिंदी ज्ञान एवं हिंदी प्रयोग की जानकारी समिति द्वारा प्राप्त की जाती है। इस लिए समिति हर छह महीने में कार्यान्वयन बैठक बुलाती है। इस बैठक में-हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर्मचारियों की संख्या, हिंदी में प्रवीणता प्राप्त कर्मचारियों की संख्या, जिन्हें हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान नहीं है, जो प्रशिक्षणाधीन है आदि तथा हिंदी में टंकण करने वाले कर्मचारियों की संख्या, द्विभाषिक शब्दसंसाधनों की संख्या आदि की पर्याप्त जानकारी प्राप्त की जाती है। कार्यालयीन लिखित सामग्री जिसमें-हिंदी में प्रयुक्त वाउचर, पासबुक, लेजर और चेक, भुगतान पर्ची, कार्यालयीन आदेश, मांग-ड्राफ्ट, जमा रसीदें, हिंदी में जावक पत्रों की संख्या, प्राप्त हिंदी के उत्तर, हिंदी में भेजे गए तार, हिंदी में रबड़ की मुहरें, टोकन और सील, बोर्ड और नाम पट्टिकायें, रजिस्टर फाइल के शीर्ष, आयोजित हिंदी कार्यालयों की संख्या, हिंदी में संपुट पाठ्यक्रम, राजभाषा अधिनियम 1976 के 10 (4) के अधीन अधिसूचित शाखाओं और कार्यक्रमों की संख्या, हिंदी के प्रयोग से संबंधित गतिविधियाँ आदि से संबंधित जानकारी प्राप्त करती है। इसके उपरांत समिति द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं प्रयोग में बढ़ोत्तरी के लिए अनुदेश दिए जाते हैं।

वर्तमान समय में पुणे की इन सभी बैंकों में कार्यालयीन प्रयोग हिंदी में होते है। बैंकों में पासबुक, डी. डी, आवेदन, चेक तथा अन्य कार्यालयीन पत्राचार हिंदी में होता है। सभी बैंकों के कम्प्यूटरों में यूनिकोड प्रणाली सक्रिय है।

नगर कार्यान्वयन समिति, द्वारा समय-समय पर हिंदी संगोष्ठियाँ, कार्यशालाओं का आयोजन होता रहता है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि पुणे के इन बैंकों में राजभाषा हिंदी के तहत कार्य किया जाता है जिसका दायित्व नगर कार्यान्वयन समिति को दिया जा सकता है।

मंडल रेल प्रबंधक का कार्यालय, पुणे

पुणे मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय केंद्र सरकार का प्रशासनिक कार्यालय है। इसके अंतर्गत मळवली स्टेशन से कोल्हापुर, पुणे से पाटस, दौंड से बारामती

आदि के मध्य आने वाले सभी स्टेशन अधीन हैं। इस कार्यक्षेत्र में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन हेतु एक वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी, छः कनिष्ठ अनुवादक और एक वरिष्ठ आशुलिपिक कार्यरत है। दृष्टव्य बात यह है कि संस्थान में कार्यरत 5057 कर्मचारी हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखते हैं। संस्थान के सभी कम्प्यूटरों का हिंदीकरण किया जा चुका है जिनमें युनिकोड प्रणाली सक्रिय है। भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अनुदेशों के अनुसार तिमाही में एक बार राजभाषा कार्यान्वयन की बैठक होती है। इसमें हिंदी कार्यशाला, कंप्यूटर में हिंदीकरण कार्यशाला और अधिकारी वर्ग के लिए डिक्टेशन कार्यशाला आदि का आयोजन किया जाता है। दैनिक कार्य के लिए हिंदी कार्यान्वयन में अगर कोई दिक्कत पैदा होती है तो उसे सुचारु रूप देने के लिए छः अनुवादक प्रत्यक्षतः कार्य करते हैं। हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु संस्थान में छः पुस्तकालय स्थित हैं जिसमें हिंदी साहित्य और कार्यालयीन हिंदी से संबंधित पुस्तकें संग्रहीत है। इन पुस्तकालयों के नाम हिंदी के प्रसिद्ध साहित्यकारों के नाम पर हैं-1. आ. महावीरप्रसाद द्विवेदी पुस्तकालय 2. रामधारीसिंह दिनकर पुस्तकालय 3. कविवर हरिवंशराय बच्चन पुस्तकालय 4. माखनलाल चतुर्वेदी पुस्तकालय 5. उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद पुस्तकालय 6. महादेवी वर्मा पुस्तकालय।

संस्थान द्वारा 'ई' पत्रिका 'कोयना' त्रैमासिक और 'इंद्रायणी' वार्षिकांक का प्रकाशन होता है। इन पत्रिकाओं में कार्यालयीन हिंदी के प्रयोग की जानकारी दी जाती है। संस्थान में राजभाषा अधिकारियों की उत्कृष्ट परंपरा रही है- सत्येंद्र सिंह और श्री विपिन पवार ऐसे अधिकारी रहे हैं जो हिंदी क्रियाकलापों के प्रति दक्ष रहे है। मंडल के कार्यालय में कर्मचारी वर्ग की सहायता के लिए सभी मानक मसौदे कम्प्यूटरों में फिट किए हुए हैं। संस्थान की महत्वपूर्ण उपलब्धि यह है कि संपूर्ण पुणे मंडल के कार्यक्षेत्र में आने वाले जनसंपर्क जगहों पर त्रिभाषा सूत्र का प्रयोग होता है। सभी नामपट्टिकाएँ, रबड़ स्टैंप, मुहरें हिंदी में हैं। विशेष अवसरों पर स्टेशनों पर राजभाषा प्रदर्शनी का अयोजन किया जाता है। इन सभी क्रियाकलापों पर निगरानी, नेतृत्व, मार्गदर्शन, वार्षिक कार्यक्रमों का आयोजन, व्याख्यान, प्रगति-रिपोर्ट आदि की जानकारी राजभाषा अधिकारियों द्वारा उपलब्ध कराई जाती है। इस सतर्कता के कारण नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, पुणे शहर द्वारा 114 सरकारी कार्यालयों की श्रेणी में प्रस्तुत संस्थान को लगातार तीन साल प्रथम पुरस्कार प्राप्त हो चुका

है। इन सभी उपलब्धियों के अतिरिक्त-

1.तकनीकी कार्यों में राजभाषा का प्रयोग।

2.स्टेशन संचालन के सभी नियम हिंदी में।

3.इंजन विफलता रिपोर्ट हिंदी में।

4.इंजन का इतिहास हिंदी में।

5.स्टेशन मास्टर की डायरी हिंदी में।

6.तकनीकी रिपोर्टें हिंदी में उपलब्ध है।

अर्थात् मंडल कार्यालय के लगभग सभी कार्य राजभाषा में किए जाते हैं। संस्थान की यह महत्वपूर्ण उपलब्धि कही जाएगी कि 'ख' क्षेत्र में आने वाले प्रस्तुत कार्यालय के सभी कार्य हिंदी में होते हैं।

राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला (NCL), पुणे

राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला (एन.सी.एल) पुणे की स्थापना सन् 1950 ई. में हुई। यह रसायन विज्ञान एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद की संगठक प्रयोगशाला है और रासायनिक अभियांत्रिकी में वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए विश्वविख्यात है। यहाँ पर कार्यरत कर्मचारी वर्ग (अनुसंधाता, वैज्ञानिक तथा अधिकारी) अपना कार्य राजभाषा हिंदी के तहत करते हैं। संस्थान में राजभाषा हिंदी की संवैधानिक नीति के अनुपालन के प्रयास हर स्तर पर किए जाते हैं। संस्थान में कार्यरत 550 कर्मचारी हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान रखते हैं। वर्तमान में उमेश गुप्ता वरिष्ठ हिंदी अधिकारी और श्रीमती स्वाती चड्ढा हिंदी अधिकारी के रूप में नियुक्त है, इनके द्वारा समय-समय पर हिंदी कक्ष (अनुभाग) में हिंदी कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। प्रत्येक तिमाही में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की नियमित बैठक निदेशक महोदय की अध्यक्षतः में आयोजित की जाती है। इन बैठकों में राजभाषा के प्रगामी प्रयोग तथा राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी प्रयासों की समीक्षा की जाती है। कर्मचारियों के हिंदी प्रशिक्षण हेतु हिंदी शिक्षण योजना की सहायक निदेशक बाहरी प्रेक्षक के रूप में उपस्थित किया जाता है। संस्थान में प्रयुक्त सभी नाम पट्टिकाएँ प्रायः अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी में उपलब्ध है।

संस्थान में हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन होता रहता है। इनमें वैज्ञानिक अनुसंधाता अपने आलेख हिंदी में प्रस्तुत करते हैं। दि. 24 फरवरी, सन् 2013 ई. को आयोजित संगोष्ठी 'राजभाषा हिंदी : एक उद्योग' विषय पर चिंतन और मनन किया गया। ऐसे एकानेक कार्यक्रम संस्थान की ओर से किए जाते हैं।

संस्थान की ओर से सन् 1987 ई. से 'आलोक' नामक हिंदी राजभाषा 'वार्षिकी' का प्रकाशन होता है, जो आई. एस. एस. एन नंबर प्राप्त है।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि इस संस्थान में राजभाषा हिंदी का अनुपालन, राजभाषा हिंदी की संवैधानिक नीति के अनुरूप किया जाता है।

भारतीय उष्णदेशीय मौसम विज्ञान अनुसंधान संस्थान, पुणे

17 नवंबर,सन् 1962 ई. को भारतीय उष्णदेशीय मौसम विज्ञान अनुसंधान संस्थान (IIIM) की स्थापना प्रशासनिक नियंत्रण में पुणे में हुई। अन्य प्रशासनिक कार्यालयों की भाँति प्रस्तुत संस्थान में राजभाषा के अधीन रहकर सभी कार्य किए जाते हैं। संस्थान में हिंदी अनुभाग, एक हिंदी अधिकारी, एक हिंदी अनुवादक, एक हिंदी टाइपिस्ट कार्यरत है। हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत प्रत्येक छमाही में हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन होता है। प्रत्येक तिमाही में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। संस्थान के सभी वैज्ञानिक पदाधिकारी व कर्मचारीवृंद को हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के अंतर्गत प्रदान किया जाता है। संस्थान में वर्तमान हिंदी अधिकारी डॉ. ओमकारनाथ शुक्ल, निदेशक प्रो. बी. एन. गोस्वामी, प्रवर श्रेणी लिपिक श्रीमती संगीता ओतारी राजभाषा हिंदी के समर्थक और हिंदी कार्यान्वयन के प्रति सजग दिखाई देते हैं। संस्थान द्वारा राजभाषा पत्रिका 'इंद्रधनुष' का प्रतिवर्ष प्रकाशन किया जाता है। इसमें संस्थान के वैज्ञानिकों के आलेख हिंदी में प्रकाशित होते हैं। संस्थान में लगाए हुए सभी बोर्ड, अधिकारी वर्ग की नाम पट्टिकाएँ, रबड़ की मुहरें हिंदी में है। संस्थान में जगह-जगह पर म. गांधी, राजर्षि टंड़न, मदनमोहन मालवीय तथा पं. नेहरू की चित्र छवियों के साथ उनके राष्ट्रभाषा विषयक विचारों की छवियाँ लगी हुई है। अतः संस्थान राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में सजग दिखाई देता है।

राष्ट्रीय रक्षा अकादमी (NDA), खडकवासला

राष्ट्रीय रक्षा अकादमी की स्थापना सन् 1956 ई. को खडकवासला, पुणे में हुई। इस संस्थान में सेना विभाग के विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान की जाती है। थलसेना, नौसेना तथा वायुसेना के अधिकारी वर्ग को एकत्रित रूप से शिक्षा का आयोजन संस्थान में किया जाता है। संस्थान द्वारा संचालित महाविद्यालय के अधीनस्थ हिंदी विभाग में कुल मिलाकर 5 प्राध्यापक और एक अनुवादक नियुक्त हैं। इनकी नियुक्ति यू. पी. एस. सी आयोग द्वारा की जाती है। प्रस्तुत संस्थान के अतिरिक्त पुणे में सेना विभाग के अन्य स्कूल भी विद्यमान है जिनमें

सदर्न कमांड का स्कूल, आर्मी पब्लिक स्कूल, खड़की आर्मी इन्स्टिट्यूट ऑफ टेक्नॉलॉजी दिघी, सी. एम. ई दापोड़ी आदि प्रमुख है। इन स्कूलों एवं संस्थानों की विशेषता यह रही है कि सेना विभाग के अधिकारी प्रायः भिन्न-भिन्न प्रांतों के होने के कारण आपस में वार्तालाप हिंदी के माध्यम से करते हैं। यथासंभव पुणे में हिंदीमय वातावरण की निर्मिति में इन विभागों एवं अधिकारी वर्ग का महत्वपूर्ण स्थान दिखाई देता है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि पुणे के जितने भी सरकारी, गैरसरकारी कार्यालय है उनमें हिंदी माध्यम से संपूर्ण कार्यकलापों को किया जाता है। उपर्युक्त संस्थाओं के क्रियाकलापों का विवेचन और विश्लेषण प्रातिनिधिक तौर पर किया गया है। इससे पुणे के इन संस्थानों में राजभाषा हिंदी की प्रयुक्तिपरकता के अध्ययन का अंदाजा लगाया जा सकता है। इन संस्थाओं के अतिरिक्त पुणे में-'उच्च ऊर्जा पदार्थ अनुसंधान प्रयोगशाला, सुतारवाडी', 'हिंदी शिक्षण योजना, पुणे', 'केंद्रीय जल और विद्युत अनुसंधान प्रयोगशाला, खडकवासला', 'भारतीय विमान पत्तन प्राधिकरण, पुणे', 'मुख्य आयकर आयुक्त का कार्यालय' आदि सभी सरकारी कार्यालयों में हिंदी क्रियान्वयन समितियाँ हिंदी के प्रचार-प्रसार में सम्मिलित दिखाई देती है।

धार्मिक संस्थाएँ

पुणे में प्राचीन काल से ही अनेक धार्मिक व आध्यात्मिक मठ, संस्थाएँ विद्यमान है। इन सभी स्थलों के रोजमर्रा के कार्यक्रम, प्रवचन आदि प्रायः हिंदी में होते हैं। पुणे के संत ज्ञानदेव महाराज नाथ संप्रदाय से संलग्नित थे। पुणे में आज भी नाथ संप्रदाय के मठ स्थित है। डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी ने 'नाथ-संप्रदाय' नामक पुस्तक में लिखा है- ''गोरखनाथ के एक शिष्य सक्करनाथ थे जिन्हें उनके रसोइये ने स्वाद जानने के लिए पहले ही चखकर बनाई हुई दाल दी थी। इसी अपराध के कारण चार वर्ष तक उसे गले में हांडी बांधकर भीख मांगने का दंड दिया था। बाद में सिद्धि प्राप्त करने के कारण इन्होंने अपना अलग पंथ चलाया। जिसका मुख्य स्थान पुणे में है।''[20] संभवतः यह स्थान पुणे जिले के लोणावला नामक स्थान पर कानिफनाथ गुफा में रहा होगा।

पुणे के नजदीक हडपसर के पास 'रामटेकड़ी' पर 'उदासीन संप्रदाय' का मठ है। प्रस्तुत संप्रदाय के महंत महीने में दो बार भंडारा लेते हैं। साथ ही अनेक

साधुओं के प्रवचन समय-समय पर होते रहते हैं। इन सभी कार्यक्रमों की माध्यम भाषा प्रायः हिंदी ही होती है। संप्रदाय के सभी संन्यासी हिंदी दोहों का नित्य पाठ करते हैं।

इनके अतिरिक्त पुणे में जैन मंदिरों, बौद्ध मठों, मुस्लिम मस्जिदों तथा अन्य समाज के धार्मिक स्थलों पर हिंदी का बोलबाला दिखाई देता है। पुणे में एक कबीर पंथी मठ विद्यमान है जिसका हिंदी भाषा और साहित्य के विकास में अपना अलग महत्व रहा है।

संत कबीर के साहित्यिक एवं सामाजिक विचारों की प्रेरणा से भारतवर्ष के अनेक स्थानों पर कबीर मठों की स्थापना हुई। पुणे का कबीर मठ उन्हीं में से एक है। इसका मुख्य कार्यालय 358, नाना पेठ, कबीर भवन, संत कबीर चौक, पुणे-02 पर विद्यमान है। इसी स्थान पर महंत श्री जे.बी.पंडित ने कबीर विद्यापीठ की स्थापना सन् 1968 ई. में की। विद्यापीठ स्थापना के उद्देश्य इस प्रकार है-

1. भारतीय संतों, भक्तों के जीवन और अनेक साहित्य का अध्ययन-अनुसंधान।
2. भारतीय संतों, भक्तों द्वारा प्रदत्त अमृत आलोक का प्रसार व प्रचार।
3. कबीर साहित्य को मराठी में अनुवादित करके प्रकाशित करना।
4. कबीर पंथ व विचारधारा का प्रचार-प्रसार करना।

विद्यापीठ द्वारा सन् 1968 ई. से सन् 1983 ई. तक अनेक हिंदी साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन होता रहा। जिनमें कबीर जयंती, कबीर दोहों का प्रतिपादन, उर्दू मुशायरा तथा कवि गोष्ठियों का आयोजन होता रहा है। कबीर के विचारों के प्रचार-प्रसार हेतु महंत श्री जे. बी. पंडित ने 'संत संदेश' नामक पत्रिका निकाली थी।

कबीर विद्यापीठ का अपना प्रकाशन है जिसे कबीर प्रिंटिंग प्रेस द्वारा मुद्रित किया जाता है। विद्यापीठ से जुड़े महानुभावों में-डॉ. केशव प्रथमवीर, डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित, डॉ. दुर्गा दीक्षित, डॉ. मालती शर्मा प्रमुख हैं। महंत की शारीरिक अस्वस्थता के कारण 1983 से हिंदी कार्यक्रमों में गति न रह सकी। इस संस्था के वर्तमान अध्यक्ष गुरु माँ श्रीमती हंसाबेन जे. पंडित है और उनके साथ सुधा पंडित विद्यापीठ के क्रियाकलापों को देखती है। भविष्य में पुनः सुचारु रूप से हिंदी का प्रचार-प्रसार एवं कबीर पंथी विचारों का प्रवर्तन करने का सुधा पंडित का मानस है। निश्चित तौर पर कहा जा सकता है कि भले ही इस संस्था

के कार्य आज धीमी गति से चल रहे हो पर किसी समय इस संस्था ने संत विषयक विचार हिंदी में प्रकट किए हैं।

उपर्युक्त धार्मिक संस्थानों के अतिरिक्त 'ओशो ध्यान केंद्र' कोरेगांव पार्क में स्थित है। यहाँ संपूर्ण क्रियाकलाप हिंदी में होते रहते हैं। पुणे में इस केंद्र पर समय-समय पर होने वाले आध्यात्मिक एवं धार्मिक व्याख्यान हिंदी में होते हैं।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्याय में विश्लेषित हिंदी की शैक्षिक, व्यक्तिगत, साहित्यिक, सरकारी और धार्मिक संस्थाओं के हिंदी प्रचार-प्रसार के योगदान को देखने से स्पष्ट होता है कि पुणे में राष्ट्रभाषा, राजभाषा और संपर्कभाषा हिंदी का प्रयोग सदियों से होता आ रहा है। इतिहास के परिप्रेक्ष्य में संतों, राजनेताओं और इतिहास पुरुषों ने इस पुण्यभूमि को हिंदीमय बना दिया है। आज की तारीख में यहाँ पर बसे अन्य प्रांतीय लोग तथा मराठी भाषी विद्वतजन हिंदी में रचनाएँ करते हुए दिखाई देते हैं। यहाँ का सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक व व्यापारिक परिदृश्य हिंदीमय बना हुआ है। इस कार्य में शुरू से ही अधिक दृढ़ता प्रदान करने का श्रेय इन संस्थाओं को जाता हैं। हिंदी प्रचारक संस्थाओं की भाँति पुणे के प्रमुख हिंदी पत्र-पत्रिकाओं के योगदान को नहीं भुलाया जा सकता। अतः अगले अध्याय में इन पत्र-पत्रिकाओं के योगदान पर चर्चा करेंगे।

संदर्भ :

1. राष्ट्रसेवा दल स्वरूप और इतिहास - डॉ.पितांबर सरोदे, पृ. 157
2. हिंदी भाषा शिक्षण - भाई योगेंद्रजीत, पृ. 171
3. राष्ट्रभाषा विचार संग्रह - संपादक श्री. शांतिभाई जाबनपुत्रा, पृ. 269
4. भारतीय हिंदी परीषद - पुणे विश्वविदयालय, पुणे (स्मारीका), पृ. 49
5. महाराष्ट्र में हिंदी - डॉ.रामजी तिवारी और डॉ.त्रिभुवन राय, पृ. 206
6. वही, पृ. 208, 209
7. वही, पृ. 209
8. मधुशाला - श्री. विजयकुमार चोकशे, हिंदी निकेतन, पृ. 5
9. ऐक्यभारती - सं. डॉ.दुर्गा दीक्षित, जुलाई, अगस्त 1999, पृ. 1
10. भारतीय भाषा न्यास पत्रिका के मुख पत्र से, वर्ष-2002
11. 'लोकयज्ञ' त्रैमासिक अक्टूबर, नवंबर, दिसंबर, 2012-पृ. 10
12. जनसत्ता, बंबई, मंगलवार, 27 सितंबर, 1994
13. डॉ.पद्मजा घोरपडे से प्रत्यक्ष साक्षात्कार।
14. हम लोग हिंदी आंदोलन, पुणे का वार्षिकांक-2014, पृ. 6

15. वही, पृ.7
16. चिंतनमंच संस्था के संस्थापक श्री. भगवान हरानी से प्रत्यक्ष साक्षात्कार से
17. महाराष्ट्र में हिंदी - डॉ.रामजी तिवारी, डॉ. त्रिभूवन राय, पृ. 210।
18. 'प्रयास' संस्था के हस्तलिखित नियमावली से।
19. प्रत्यक्ष डॉ.सुनील देवधर जी से दि.23/02/2013 के साक्षात्कार से
20. नाथसंप्रदाय - डॉ.हजारीप्रसाद द्विवेदी, प्र.संस्करण 1950 पृ. 13

चतुर्थ अध्याय

हिंदी पत्रकारिता को पुणे की देन

पूर्व अध्याय में हिंदी भाषा तथा साहित्य के विकास में पुणे की हिंदी सेवी संस्थाओं के योगदान पर चर्चा की गई है। इन संस्थाओं ने हिंदी प्रचार-प्रसार हेतु जिन माध्यमों का उपयोग किया है, उनमें हिंदी पत्रकारिता एक सशक्त माध्यम रहा है। इन पत्रिकाओं का हिंदी के विकास में अमूल्य प्रदेय रहा है। संस्थाओं द्वारा संचालित पत्रिकाओं के अतिरिक्त पुणे में अनेक प्रकार की (वार्षिक, द्वैमासिक, मासिक, पाक्षिक, साप्ताहिक और दैनिक अखबार) आदि पत्र-पत्रिकाएँ हिंदी में प्रकाशित होती रही है। इन सभी पत्रिकाओं का ऐतिहासिक दस्तावेज प्रस्तुत अध्याय होगा। प्रस्तुत अध्याय में पुणे के इन हिंदी पत्र-पत्रिकाओं को वर्गीकृत करके निम्नांकित रूप में देखने का प्रयास करेंगे।

पुणे की प्रारंभिक अल्पकालीन हिंदी पत्रिकाएँ

पुणे में मराठी पत्रकारिता की परंपरा स्वतंत्रता पूर्व काल से ही रही है। इस क्षेत्र की प्रारंभिक पत्रिकाओं में महात्मा फुले के मित्र कृष्णराव भालेकर द्वारा संपादित 'दीनबंधु' (1877), लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का 'केसरी' (4 जनवरी, 1881), गोपाळ गणेश आगरकर का 'सुधारक' (15 अक्टूबर, 1888), अच्युत चिंतामण भट्ट द्वारा संपादित 'केरल कोकिल' (1889), हरि नारायण आपटे द्वारा संपादित 'करमणूक' (1890), भोपटकर बंधुओं द्वारा संपादित 'भाला' (1905), वासुदेव गोविंद आपटे द्वारा संपादित सचित्र मासिक 'आनंद' (15 अगस्त, 1906), साप्ताहिक 'मराठी वंदे मातरम' (6 जनवरी, 1908) आदि प्रमुख है। इनकी तुलना में हिंदी पत्रिकाओं की संख्या इस काल में न के बराबर है। महाराष्ट्र की सामाजिक, सांस्कृतिक और खासतौर से राजनैतिक परिस्थितियों को संपूर्ण भारतवर्ष में फैलाने की चाह लोकमान्य तिलक रखते थे। इन्हीं की प्रेरणा से माधवराव सप्रे ने सन् 1903 ई. में नागपुर से हिंदी 'केसरी' पत्र

निकाला था। प्रस्तुत पत्र मराठी 'केसरी' का ही दूसरा हिंदी प्रतिरूप होता था। मिर्जापुर की 'आनंद-कादम्बिनी' पत्रिका में इस संदर्भ में लिखा है- ''हर्ष का विषय है कि आज सप्रे जी की दया और उद्यांग से प्रशंसित पत्र मराठी के हिंदी प्रतिरूप का दर्शन हमारे हर्ष का हेतु हुआ है।''[1] स्पष्ट होता है कि केसरी का हिंदी संस्करण क्यों न नागपुर से प्रकाशित हुआ हो, परंतु इसकी नींव पुणे से ही लगानी पड़ती है। इसमें प्रसारित विचार पुणे के नेता लोकमान्य तिलक और उनके अनुयायियों के होते थे। अतः पुणे की हिंदी पत्रकारिता के इतिहास में हिंदी केसरी का स्मरण करना यहाँ औचित्यपूर्ण है। पुणे से निकलने वाली प्रथम हिंदी पत्रिका कौनसी है ? इस कुतुहल को आगे यहाँ अवलोकित किया गया है।

पुणे की प्रथम हिंदी पत्रिका 'चित्रमय जगत' (अल्पकालीन)

हिंदी पत्रकारिता का पुणे में प्रारंभ कब हुआ यह निश्चित रूप से कहना कठिन कार्य है। स्वतंत्रता पूर्व काल में जनवरी सन् 1910 ई. को सचित्र मराठी मासिक पत्र 'चित्रमय जगत' का प्रकाशन चित्रशाला स्टीम प्रेस पुणे से त्र्यं.र.देवगिरीकर के संपादकत्व में हुआ। इस पत्रिका में साहित्यिक, सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, आध्यात्मिक आदि विविध विषयों पर गवेषणापूर्ण लेख, टिप्पणियाँ और समीक्षाएँ प्रकाशित होती थीं। प्रसंगानुसार चित्रों और कार्टूनों का प्रयोग किया जाता था। 'चित्रमय जगत्' का आकार 35 गुणित 23 सें. मी. था। दिसंबर, सन् 1993 ई. के 'राष्ट्रवाणी' के अंक में इस संदर्भ में लिखा है कि-''चित्रमय जगत् पत्रिका के संपादक कविवर हरिनारायण व्यास जी के मामा प्रसिद्ध लेखक व अनुवादक गोपीवल्लभ उपाध्याय थे।''[2] इस संदर्भ में भारतीय पत्रकारिता कोश के द्वितीय खंड में लिखा है- ''पंडित माधवराव सप्रे और लक्ष्मीधर वाजपेयी के प्रेरणा-प्रोत्साहन से 'चित्रमय जगत' का हिंदी संस्करण प्रकाशित हुआ। जून 1913 में वाजपेयी आगरा के 'आर्यमित्र' के संपादक हो गए, तब संपादन का प्रभार भास्कर रामचंद्र भालेराव को सौंपा गया। हिंदी 'चित्रमय जगत' उच्च कोटि का पत्र था।''[3] भालेराव के बाद इस पत्रिका के संपादन का भार उपाध्याय ने स्वीकारा जिनके बारे में उपलब्ध जानकारी का पीछे उल्लेख किया जा चुका है। यह पत्रिका कब और किस कारण से बंद हुई इसके संबंध में कोई जानकारी शोध के दौरान उपलब्ध न हुई। मराठी पत्रिका के हिंदी संस्करण के रूप में प्रकाशित होने वाली इस पत्रिका का पुणे की हिंदी पत्रिकाओं के इतिहास में प्रथम स्थान माना जा सकता है।

हिंदी शक्ति (हस्तलिखित पत्रिका)

पुणे की आद्य हिंदी प्रचारक संस्था 'हिंदी प्रचार संघ' की 'हिंदी शक्ति' यह प्रांरभिक हस्तलिखित मासिक पत्रिका थी। प्रस्तुत पत्रिका में तत्कालीन महाराष्ट्र में होनेवाले प्रचार कार्य की स्थिति का विवरण दिया जाता था। इस पत्रिका के संदर्भ में 'हिंदी प्रचार संघ' की सन् 1975 ई. की स्मरणिका में ज. ग. फगरे ने लिखा है- ''हिंदी शक्ति' हिंदी प्रचार संघ की अपनी हस्तलिखित पत्रिका है। पिछले दिनों में इसका प्रकाशन बराबर होता रहा। संघ के विद्यार्थियों तथा कार्यकर्ताओं की लेखन शक्ति बढ़ाने में इस पत्रिका का बड़ा हाथ रहा है। फरवरी 1939 में अनाथ विद्यार्थी- गृह, पुणे में हुई महाराष्ट्र की सभी हस्तलिखित मासिक पत्रिकाओं के प्रदर्शनी में हमारी 'हिंदी शक्ति' को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ था। इस पत्रिका के विशेषांक भी निकलते रहें।''[4] प्रस्तुत जानकारी के अनुसार कह सकते हैं कि 'हिंदी शक्ति' का हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

इस प्रकार पुणे की प्रथम हिंदी पत्रिकाओं में 'चित्रमय जगत' और 'हिंदी शक्ति' प्रमुख है। ये पत्रिकाएँ अधिक दिनों तक न चली, पर पुणे के पत्रकारिता के इतिहास में इनका नाम प्रथम स्थान पर आता है।

अन्य प्रारंभिक अल्पकालीन पत्रिकाएँ

उपरोक्त प्रारंभिक पत्रिकाओं के अतिरिक्त पुणे से प्रकाशित होने वाली पुरानी पत्रिकाओं में 'छपाई कला'[5], 'भारत स्नेह वर्धिनी'[6] और 'जैन-जगत'[7] आदि के उल्लेख प्राप्त होते हैं। इन पत्रिकाओं के साथ ही 'महाराष्ट्र ध्वनि' यह अखबार भी पुणे से सन् 1968 ई के दरमियान में निकलता था। इसके संपादक सत्यनारायण दवे नामक व्यक्ति थे। ये पत्रिकाएँ कब तक चली इस संदर्भ में कोई अता-पता नहीं मिल सका, पर इनका संदर्भ पुस्तकों में अवश्य मिलता है।

तूफान टाईम्स

मेरे शोध सर्वेक्षण के दरमियान गुरूवर्य डॉ. केशव प्रथमवीर सर से मुझे 'तूफान टाईम्स' इस साप्ताहिक का एक पृष्ठ मिला। उपलब्ध पृष्ठ के अनुसार प्रस्तुत पत्र की स्थापना जनवरी सन् 1968 ई. को हुई थी। इस पत्रिका के संपादक प्रमानन्द लेखराज किशनानी थे। इसका मुद्रण 802 भवानी पेठ, पूना-2 से किया जाता था। 35 सें. मी ऊँचाई और 25 सें. मी चौड़ाई वाले इस पत्र में पुणे के साप्ताहिक समाचार दिए जाते थे। पुणे के साहित्यकार, राजनेता और

समाजसेवक आदि की जीवनियों का इसमें प्रकाशन होता था। यह पत्रिका कब और किस कारण से बंद हुई, पता न हो सका, पर इतना अवश्य कह सकते हैं कि प्रस्तुत पत्र हिंदी का पुराना और हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभानेवाला पत्र था।

जयभारती

'महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पुणे' की यह मासिक मुखपत्रिका थी। प्रस्तुत पत्रिका की शुरूआत सन् 1945 ई. को हुई। प्रस्तुत पत्रिका में समिति की परीक्षाओं से संबंधित विवरण तथा वर्धा समिति की परीक्षाओं की जानकारी प्रकाशित की जाती थी। पत्रिका में पुणे के नवोदित एवं प्रतिष्ठित रचनाकारों की रचनाओं को सम्मिलित किया जाता था, साथ ही इन रचनाकारों का परिचय भी दिया जाता था। पत्रिका में सामाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, राजनैतिक एवं साहित्यिक गतिविधियों का परामर्श दिया जाता था।'हिंदी प्रचार संघ' के हीरक महोत्सवी वर्ष 1995 के पावन अवसर पर 'स्मृति-सुगंध' नामक स्मरणिका का प्रकाशन किया गया था। स्मरणिका में प्रकाशित हिंदी प्रचारकों की स्मृति हिंदी के प्रचार-प्रसार की गंध देती चलती है। यह स्मरणिका 'जयभारती' पत्रिका का ही एक विशेषांक है।

संत संदेश

कबीर विद्यापीठ पूना द्वारा सन् 1970 ई. से प्रकाशित की जाने वाली 'संत संदेश' वार्षिक पत्रिका है। श्री जे. बी. पंडित इसके संस्थापक थे। इस पत्रिका का संपादन कार्य प्रतिष्ठित आलोचक आ. आनंदप्रकाश दीक्षित करते थे। प्रस्तुत पत्रिका के लगातार दो अंक निकले-'संत प्रवर धर्मदास विशेषांक' और 'संत कबीर विशेषांक' आदि। संपूर्णतः संत साहित्य पर आधारित इस पत्रिका के दो अंक निकलने के उपरांत बंद हुई। प्रस्तुत पत्रिका हिंदी संत साहित्य के प्रचार-प्रसार में सहायता प्रदान करने वाली पुणे की अल्पकालिक हिंदी पत्रिका थी।

समग्रदृष्टि

'समग्रदृष्टि' पुणे की श्रेष्ठ साहित्यिक पत्रिका थी। पुणे के एक व्यावसायिक और हिंदी के हिमायती श्री. कपूरचंद अग्रवाल ने सन् 2005 ई. को इस मासिक पत्रिका की शुरूआत की थी। इसके प्रमुख संपादक थे-डॉ. केशव प्रथमवीर। इस पत्रिका की सह संपादिका डॉ. चेतना राजपूत थी। प्रस्तुत पत्रिका में साहित्य,

संस्कृति, अध्यात्म, विज्ञान, स्वास्थ्य, पर्यटन, फिल्म, ज्योतिष तथा अन्य अनेक बातों का समावेश होता था। इस तरह यह विविधांगी पत्रिका थी। इतनी सारी अलग-अलग विधाओं की एकत्रित चर्चा अन्य पत्रिकाओं में दुर्लभ पाई जाती है। विविध विषयों पर विचारात्मक आलेख, चुनिंदा कहानियाँ, लघुकथाएँ, कविताएँ, कथासाहित्य व कथेतर साहित्य की विभिन्न विधाओं को पत्रिका में संकलित किया जाता था। इसके अतिरिक्त अनुसंधानपरक लेख और अनूदित साहित्य को भी प्रकाशित करवाया जाता था। पत्रिका में प्रकाशित संपादकीय मंतव्य को काफी सराहना प्राप्त हो चुकी थी। इस पत्रिका में नियमित रूप से कई विषयों पर स्तंभ प्रकाशित होते थे। इसमें नारीपक्ष, विज्ञान जगत्, बालविश्व, पाककला, हास-परिहास, मासिक राशिफल, स्वास्थ्य, सिनेमा तथा व्यंग्य कार्टून आदि स्तंभों का समावेश होता था, जो इस पत्रिका के समग्रत्व को दर्शाता है। इस पत्रिका के अंकों का अध्ययन करने पर विदित हुआ कि प्रस्तुत पत्रिका को दिया हुआ नाम 'समग्र दृष्टि' अपनी समग्रता के दर्शन कराती है। पत्रिका की गरिमा को पाठक प्रतिनिधि अमिता श्रीवास्तव ने इस प्रकार निरूपित किया है-''जब तक पूरी पत्रिका न चाट लूँ, चैन नहीं मिलता। अन्य सारी पत्रिकाओं का समय 'समग्र दृष्टि' चुरा लेती है।''[8] ''अहिंदी भाषी क्षेत्र से इतनी समय पाबंद उत्कृष्ट रचनाओं से भरी पत्रिका का इतनी मेहनत और लगन से निकलना अत्यंत सराहनीय कार्य है।''[9.] पत्रिका के 'आपका मत' विभाग में प्रकाशित विभिन्न विद्वानों के मत पढ़ने पर ज्ञात होता है कि पत्रिका की ख्याति अल्पावधि में अधिक होने लगी थी, पर अचानक 2008 में यह बंद हुई। सन् 2005 ई. से सन् 2008 ई. तक यह निरंतर रूप से चलती रही। अपने तीन वर्ष की आयु में इस पत्रिका ने पुणे के हिंदी वातावरण को जरूर आकर्षित किया है।

ऐक्यभारती

'ऐक्यभारती' यह पुणे से निकलने वाली द्वैमासिक है। प्रस्तुत पत्रिका की संपादिका 'ऐक्यभारती प्रतिष्ठान' (पुणे) संस्था की अध्यक्षा डॉ. दुर्गा दीक्षित है। साहित्य, संस्कृति और संवाद आदि विषयक लेख प्रस्तुत पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं। प्रस्तुत पत्रिका मराठी, अंग्रेजी और हिंदी भाषा के माध्यम से अपने विचारों का वहन करती रही है। पत्रिका में प्रकाशित लेखों में यथासंभव भारतीय संस्कृति के अनछुए पहलुओं पर विचार किया जाता है। जैसे इसका प्रथमांक

सन् 1993 ई. में प्रकाशित किया गया, जो भारतीय लोकनाट्य विशेषांक पर आधारित है। ऐसे ही अन्य अंकों में विदूषक (1994), शाही प्रेमिका (1998), वासंतिका अंक (1998),'मनस्विनी' (1999), कथा संवेदना (1999) और 'गणनायक-जननायक' (1999) आदि प्रमुख है। ये सभी अंक अलग-अलग विषयों पर केंद्रित भारतीय संस्कृति के विविध पक्षों पर आधारित हैं। प्रथमांक में नौटंकी, तमाशा, पारिजात आदि के तुलनात्मक अध्ययन के साथ-ही-साथ लोकनाट्य परंपरा में रंगमंचीयता, संगीत, संप्रेषण विधि आदि की जानकारी प्रस्तुत की गई है। 'मनस्विनी' में भारतवर्ष के भिन्न-भिन्न प्रांतों की स्त्री लेखिकाओं की संवेदनात्मक अभिव्यक्ति है। 'शाही प्रेमिका' इस अंक में भिन्न-भिन्न प्रांतीय शाही प्रेमिकाओं के चरित्रांकन द्वारा भारतीय इतिहास, संस्कृति, चित्र, शिल्प और साहित्य पर पड़े उनके प्रभाव को अंकित किया गया है। 'विदूषक' यह अंक पूर्णतः नाटक के प्रमुख चरित्र विदूषक के विविध रूपों और नाटक में आवश्यक उसकी भूमिका पर केंद्रित है। भारतीय भाषाओं की एकता और सांस्कृतिक समन्वय इस पत्रिका के मूल में दिखाई देता है।

हिंदी अध्यापक मित्र मंडल

'हिंदी अध्यापक मित्र' यह पुणे की त्रैमासिक पत्रिका है। इसके प्रधान संपादक 'महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पुणे' के प्रमुख प्रचारक एवं संचालक श्री. जयराम फगरे हैं। महाराष्ट्र राज्य माध्यमिक हिंदी शिक्षक महामंडल के सदस्यों ने मिलकर प्रस्तुत पत्रिका की शुरूआत की। हिंदी के शिक्षकों की समस्याओं का विवरण और उसका समाधान प्रस्तुत पत्रिका में दिया जाता था। साथ ही हिंदी के प्रचारक शिक्षकों के प्रचार-कार्य का भी विवरण दिया जाता है। यह पत्रिका हिंदी साहित्य के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालती है तथा महाराष्ट्र के हिंदी शिक्षकों की कार्य प्रवृत्तियों से संबंधित दिखाई देती है। हिंदी शिक्षक प्रचारकों में एकता स्थापित करने की भूमिका प्रस्तुत पत्रिका ने तैयार की है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त पत्रिकाएँ बंद हो चुकी हैं। ये पत्रिकाएँ अल्पकालिक सिद्ध हुई हैं। इन पत्रिकाओं ने कुछ समय तक क्यों न हो, हिंदी पाठकों को अपनी ओर आकर्षित किया है। अतः हिंदी के विकास में ये पत्रिकाएँ सहयोगी रही हैं। सामान्यतः आज पुणे से अनेकों हिंदी पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही है। इन

पत्रिकाओं में निरंतर रूप से निकलने वाली पत्रिकाओं का भी समावेश किया जा सकता है, जिन्हें दीर्घकालिक पत्रिकाएँ कहा जा सकता है। इन दीर्घकालीन पत्रिकाओं का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार से देखा जा सकता है-

दीर्घकालीन पत्रिकाएँ

दीर्घकालीन पत्रिकाएँ वे हैं, जो प्रारंभ से आज तक निरंतर निकलती रही है। इन पत्रिकाओं में राष्ट्रवाणी, आंतरभारती, सभा समाचार, परामर्श, मधु संचय और समिति संवाद आदि प्रमुख है। इन पत्रिकाओं का परिचय निम्नलिखित है।

राष्ट्रवाणी

'राष्ट्रवाणी' महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे की मुखपत्रिका थी। वर्तमान में अपना स्वरूप बदलकर यह द्वैमासिक बन चुकी है। वह एक अखिल भारतीय स्तर की राष्ट्रीय, साहित्यिक और समीक्षात्मक पत्रिका बनी है। प्रस्तुत पत्रिका का प्रारंभ सन् 1947 ई. से हुआ। स्थापना से आज तक निरंतर रूप से प्रकाशित होने का गौरव प्रस्तुत पत्रिका को दिया जा सकता है। 'राष्ट्रवाणी' पत्रिका के प्रथम संपादक गोपाल परशुराम नेने और लालजी प्रस्तुतकर्ता थे। गोपाल परशुराम नेने एक आदर्श प्रचारक और गांधीवादी विचारों के पुरस्कर्ता थे। उनके और लालजी उपाध्ये के कुशल संपादन के कारण पत्रिका का स्वरूप अखिल भारतीय स्तर तक पहुँचा। हिंदी के प्रचार-प्रसार में सहायक इस पत्रिका में धीरे-धीरे परिवर्तन होता रहा है। पहले यह पत्रिका केवल सभा की गतिविधियों तथा राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के वृत्तांत प्रकाशित करती थी। सन् 1953 ई. से पत्रिका में परिवर्तन आया और महाराष्ट्र के निवासी हिंदी लेखक, विचारक, समीक्षक, विद्वतजन आदि को अपने विचार व्यक्त करने के लिए यह पत्रिका वरदान के रूप में साबित हुई है। इसमें महाराष्ट्र तथा देश-विदेश के विद्वतजनों और प्रतिभावान शोध-छात्रों के शोधालेख प्रकाशित किए जाने लगे हैं। अब इसमें हिंदी प्रचार-प्रसार के विवरणों के साथ हिंदी अनुसंधानपरक लेखों और साहित्यिक विधाओं के लेखन का भी समावेश किया जाने लगा। अतः इसका स्वरूप व्यापक और विस्तृत हुआ है। 'राष्ट्रवाणी' को प्रसिद्धि पहुँचाने वाले संपादकों में प्रा. सुमतिलाल शाह का नाम उल्लेखनीय है। वर्तमान में इसकी प्रधान संपादिका डॉ. वीणा मनचंदा है। 'राष्ट्रवाणी' द्वारा प्रकाशित विशेषांक संगृहनीय है, इनमें 'गजानन माधव मुक्तिबोध विशेषांक', 'हरिभाऊ

आपटे विशेषांक', 'सातवें दशक की हिंदी कविता', 'सातवें दशक की हिंदी कहानी', 'राष्ट्रभाषा के प्रकाशस्तंभ', 'गुरू नानक', 'संत नामदेव' और 'हिंदी उपन्यासों में आदिवासी विमर्श' आदि विशेषांकों का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। प्रस्तुत पत्रिका के महत्व को निरूपित करते हुए सुमतिलाल शाह ने लिखा हैं- ''उसने साहित्य विषयक वाद-विवादों में पडकर भी कभी पक्षधरता स्वीकार न की, उलटे सभी विचारों, धारणाओं, मान्यताओं और साहित्यिक दलों के लेखकों का विश्वास प्राप्त किया। 'राष्ट्रवाणी' की सामग्री चर्चा का विषय रही, आधुनिक साहित्य विषयक शोधग्रंथों में उदधृत की गई। राष्ट्रवाणी के लिए यह संतोष की बात रही कि उसने हिंदी को नई पीढ़ी के अनेक लेखक दिए।''[10] इस विवरण के आधार पर कह सकते हैं, कि महाराष्ट्र में हिंदीमय वातावरण बनाने में प्रस्तुत पत्रिका का नाम उल्लेख्य रहा है। 13 नवंबर, सन् 1988 को महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे की ओर से 'स्वर्ण जयंती अंक' स्मरणिका का प्रकाशन किया गया था। इस स्मरणिका के प्रधान संपादक प्रा. सुमतिलाल शाह थे और संपादक मंडल के सदस्यों में हिंदी के प्रचारक-देवीसिंह चौहान, यशवंत मांजरेकर, प्राचार्य राम शेवाळकर, प्र.द.पुराणिक, सेलेस्टिनो फर्नांडीस, डॉ. र. वा. बिवलकर और मुरलीधर शहा आदि थे। प्रस्तुत स्मारिका में गांधीजी की भाषा नीति के अनुसार काम करने वाले प्रचारक व हिंदी विद्वान, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा के संस्थापक शंकरराव देव, द्वितीय अध्यक्ष दत्तो वामन पोतदार, स्वामी रामानंद तीर्थ और एस.एम.जोशी आदि की संक्षिप्त हिंदी सेवा को प्रस्तुत किया गया है। महाराष्ट्र में कार्यरत इस संस्था ने अल्पावधि में किए हिंदी प्रचार का कार्य विवरण स्मरणिका में विस्तार के साथ प्रस्तुत किया गया है। सभा के सभी पूर्व प्रचारकों के कार्यवृत्तांत के साथ सभा की प्रगति का आलेख भी इसमें दिया गया है। राष्ट्रभाषा हिंदी के विकास में महाराष्ट्र की भूमिका पर अनेक विद्वानों के आलेख इसमें प्रकाशित किए गए हैं। संक्षेप में प्रस्तुत स्मारिका वह जीवंत दस्तावेज है, जिससे पुणे, महाराष्ट्र और हिंदीतर प्रदेशों में प्रसारित हिंदी के विकासक्रम की झलक प्राप्त होती है। महाराष्ट्र के हिंदी प्रचार-प्रसार का इतिहास अगर देखना होगा, तो इस स्मारिका को पढ़ना अति आवश्यक है।

सभा समाचार

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे इस संस्था की यह मासिक समाचार पत्रिका है। चार पृष्ठों का यह समाचार पत्र सभा के मासिक विवरण को समर्पित

है। संपुर्ण महीने में सभा की ओर से जो भी प्रत्यक्ष हिंदी प्रचार-प्रसार और हिंदी के विकास में सहायक कार्य होता है, उसका पूर्ण विवेचन इस पत्रिका में दिया जाता है। आज तक जिन महानुभावों ने हिंदी का प्रचार कार्य तन, मन और धन से किया है, उनके जीवन कार्य का भी संक्षिप्त विवरण इस पत्र में दिया जाता है। सभा की ओर से ली जाने वाली परीक्षाएँ, उन परीक्षाओं के परीक्षा फल तथा समय-समय पर होने वाली परीक्षाओं की आगामी सूचना प्रस्तुत पत्रिका में दी जाती है। इस कारण हिंदी की परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाले विद्यार्थियों की संख्या बढ़ जाती है। इस प्रकार पुणे की उल्लेखनीय पत्रिकाओं में निरंतर रूप से निकलने वाली दीर्घकालीन पत्रिकाओं में 'सभा समाचार' का नाम अग्रणी रहा है।

मधु संचय

पुणे के पुराने हिंदी प्रचारक रामसुखजी मंत्री ने सन् 1967 को 'मकरंद' नाम से एक हिंदी पत्रिका की शुरूआत की थी। आगे चलकर इस पत्रिका का नाम बदलकर 'मधु संचय' रखा गया। यह पत्रिका संकलन मात्र है। पत्रिका में हिंदी साहित्यकारों की समाजोपयोगी उक्तियाँ, दोहे, चुटकुले, कविताएँ, गद्य परिच्छेद प्रकाशित किए जाते हैं। पत्रिका लगभग 48 सालों से अनवरत रूप से निकलती रही है। रामसुखजी मंत्री के उपरांत सन् 1992 ई से उनकी बहु रेखा मंत्री पत्रिका का संपादन कार्य संभाल रही है। रेखा मंत्री महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पुणे और महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे की सदस्या है। आपके इस हिंदी समर्पित व्यक्तित्व को देखकर सन् 2012 ई में 'हिंदी आंदोलन' संस्था की ओर से उन्हें 'हिंदीश्री' सम्मान से सम्मानित किया गया है। प्रस्तुत पत्रिका की आजीवन सहयोग राशि केवल 500 रूपये हैं। इतनी कम राशि पर चलाई जाने वाली संभवतः पुणे की यह एकमात्र पत्रिका मानी जा सकती है। इस पत्रिका का हिंदी भाषा और साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

आंतर-भारती

साने गुरूजी के शिष्य प्रसिद्ध पत्रकार यदुनाथ थत्ते ने प्रस्तुत पत्रिका की शुरूआत सन् 1975 ई. में पुणे में की। यदुनाथ थत्ते गांधी जी के विचारों के प्रस्तुतकर्ता और हिंदी के बड़े हिमायती थे। वे जानते थे कि, हिंदी का प्रयोग और उसका प्रचार-प्रसार होना देश की एकता के लिए हितकर होगा। इस कारण वे राष्ट्रसेवा दल का संपूर्ण कार्य हिंदी में किया करते थे। प्रस्तुत पत्रिका में प्रारंभ

से ही प्रगतिशील विचारों का वहन होता रहा है। इस पत्रिका में समाज में व्याप्त रूढ़ि परंपरा, अंधविश्वास, धार्मिक विषमता और आडंबर का विरोध होता रहा है। इसमें प्रकाशित आलेख राष्ट्रीय एकता के विचारों के संवाहक हैं। वर्तमान समय में इस पत्रिका के कार्यकारी संपादक प्रा. सदाविजय आर्य है, जो बड़ी लगन से पत्रिका का कार्यभार संभालते हैं। आज कल यह पत्रिका औरंगाबाद शाहजानी से निकलती है। पर यह नहीं भूलना चाहिए कि इसकी नींव पुणे में रखी गई थी और कई वर्षों तक यह पुणे से ही निकलती थी। 'आंतरभारती' पत्रिका राष्ट्रीय एकता और राष्ट्रभाषा हिंदी के महत्व को उजागर करने वाली महत्वपूर्ण पत्रिका रही है।

परामर्श

'परामर्श' यह पत्रिका पुणे विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र विभाग से प्रकाशित होती है। इस पत्रिका के संस्थापक संपादक दर्शन विभाग के पूर्व अध्यक्ष एवं प्रोफेसर डॉ.सुरेंद्र बारलिंगे थे। इस पत्रिका की शुरूआत सन् 1979-80 में डॉ. सुरेंद्र बारलिंगे ने की थी। पत्रिका को सुचारू रूप देने में राजेंद्र प्रसाद, डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित, मो. प्र. मराठे, डॉ.चंद्रकांत बांदिवडेकर आदि का विशेष योगदान रहा है। प्रारंभ में पत्रिका पुणे विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र विभाग, हिंदी विभाग एवं प्रताप तत्वज्ञान केंद्र अमळनेर आदि तीन विभागों के संयुक्त तत्वावधान में प्रकाशित की जाती थी। वर्तमान में इसका प्रकाशन केवल दर्शन विभाग द्वारा किया जाता है। यह त्रैमासिक पत्रिका है। इसमें प्रकाशित लेख तात्विक विवेचन पर आधारित होते हैं। किसी भी विषय पर दार्शनिक दृष्टि से चिंतन करना पत्रिका का प्रमुख उद्देश्य होता है। पत्रिका को (आई. एस. एस. एन नंबर) प्राप्त है। प्रस्तुत पत्रिका अंतर्राष्ट्रीय स्तर की है। इसमें विश्व के विभिन्न विश्वविद्यालयों के विद्वानों, अनुसंधाताओं और तत्वज्ञ प्राध्यापकों के आलेख प्रकाशित होते हैं। वर्तमान में दर्शन विभाग के अध्यक्ष एवं प्रोफेसर डॉ. सुभाष भेलके इसके संपादक है और सुनील राऊत सहायक संपादक के रूप में कार्यरत है।

समिति संवाद

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पुणे इस संस्था की 'समिति संवाद' यह मुखपत्रिका है। यह पत्रिका सन् 2010 ई. से निरंतर प्रकाशित की जाती है। यह पत्रिका द्वैमासिक है। इसके संपादक जयराम फगरे है। 'समिति संवाद' महाराष्ट्र

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पुणे की मृतप्राय पत्रिका 'जयभारती' का ही नवीनतम रूप है, इनमें भेद सिर्फ इतना है कि 'समिति संवाद' वर्तमान कालीन घटनाओं से संबंधित है और 'जयभारती' तत्कालीन घटनाओं से संबंधित थी। पत्रिका में गंभीर और चिंतनपरक विषयों की जानकारी प्रकाशित होती है। पुणे की सांस्कृतिक और साहित्यिक गतिविधियों को इस पत्रिका में समावेशित किया जाता है। इसमें विविध विषयों के आलेख कविता, कहानी, निबंध, एकांकी आदि साहित्यिक विधाओं को प्रकाशित किया जाता है। पत्रिका नियमित समय पर निकलने के कारण पुणे की साहित्यिक गतिविधियों और हिंदी प्रचार-प्रसार की स्थितियों से पाठक अवगत होते हैं। 'महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पुणे' इस संस्था के अमृत महोत्सवी वर्ष के अवसर पर जून, 2012 ई. को 'अमृतकुंभ' नाम से एक स्मरणिका का प्रकाशन किया गया। इस स्मरणिका के प्रारंभिक पृष्ठों में संस्थापक महात्मा गांधी, संस्था प्रवर्तक पं.ग. र. वैशंपायन, संस्था के प्रथम अध्यक्ष वामन दबडघाव, प्रमुख अतिथि श्री जयप्रकाश नारायण, हरिनायण व्यास, डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित तथा समिति में आज तक विभिन्न अवसरों पर उपस्थित मान्यवरों और समिति से जुडे अन्य कार्यकर्ताओं की तसवीरों को लगाया गया है। इससे समिति द्वारा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु किए कार्यों का लेखा-जोखा पाठकों के सामने उपस्थित होता है।

निष्कर्ष

उपरोक्त पत्रिकाएँ दीर्घकालीन है। जब से शुरू हुई है, तब से अनवरत रूप से निकलती ही रही हैं। ये पत्रिकाएँ हिंदी के विकास और प्रचार-प्रसार में सहायक सिद्ध हुई हैं। अतः इनका हिंदी भाषा और साहित्य के विकास में प्रदेय है।

उपरोक्त दीर्घजीवी पत्रिकाओं के अतिरिक्त पुणे के विभिन्न कार्यालयों की राजभाषा पत्रिकाएँ हिंदी के विकास को बढ़ावा देती है। उनका परिचय निम्नलिखित रुप में देख सकते हैं-

वार्षिकांक (प्रमुख कार्यालयों की राजभाषा पत्रिकाएँ)

तृतीय अध्याय में पुणे के प्रमुख कार्यालयीन संस्थाओं का परिचय दिया गया है। इन संस्थाओं के कार्यालयीन कामकाज राजभाषा हिंदी में होने आवश्यक होते हैं। इस दृष्टि से इन कार्यालयों में हिंदी अधिकारियों द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रयुक्तिपरक अध्यापन की व्यवस्था की जाती है। कार्यालय

के सभी कर्मचारियों में हिंदी प्रेम बढ़े और हिंदी की प्रयुक्ति में सहायता हो इस दृष्टि से कुछ वार्षिक अंक निकाले जाते हैं। इनका सामान्य परिचय निम्नवत् है।

आलोक

'आलोक' यह राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला (NCL) की वार्षिक राजभाषा पत्रिका है। आई. एस. एस. एन (0971-1953) नंबर के साथ प्रकाशित की जाने वाली इस पत्रिका का प्रारंभ (सन् 1996 ई.) में हुआ था। इस पत्रिका में प्रकाशित सामग्री तीन खंडों में विभाजित होती है। प्रथम खंड सामान्य है, जिसमें देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में कार्यरत प्राध्यापकों, शोधकर्ताओं, तथा मनीषी विद्वानों और विभिन्न सरकारी कार्यालयों में कार्यरत हिंदी अधिकारियों के वैचारिक आलेख प्रकाशित किए जाते हैं। द्वितीय खंड तकनीकी से संबंधित होता है, इसमें विज्ञान और तंत्रज्ञान शाखाओं से संबंधित विद्वानों के शोध निबंध प्रकाशित किए जाते हैं। तीसरे खंड में हिंदी कविता, कहानी, संस्मरण, यात्रावर्णन, जीवनी तथा अन्य विधाओं की सामग्री प्रकाशित होती है। अंत के कुछ पन्नों में संस्थान में आयोजित हिंदी सप्ताह, हिंदी संगोष्ठी तथा विज्ञान गोष्ठी के कार्य विवरण दिए जाते हैं। पत्रिका की शुरूआत से ही अलग-अलग पन्नों पर नीतिविषयक सूक्तियाँ और विद्वान मनीषियों के राष्ट्रभाषा विषयक विचार प्रकाशित होते हैं। इन विचारों के कारण पत्रिका को गुणात्मक दृष्टि से उच्चता प्राप्त हुई है। यह साहित्यिक, सांस्कृतिक, समीक्षात्मक और वैचारिक लेखों से भरी उच्च कोटि की सशक्त पत्रिका है। हिंदी को राजभाषा के तहत ज्ञान, विज्ञान और सरकारी कार्यालयों में प्रस्थापित करने की कोशिश में यह पत्रिका सार्थक प्रयत्न करती रही है। पत्रिका के पूर्व संपादक हिंदी अधिकारी उमेश गुप्ता का मानना है कि, ''राजभाषा के समुचित विकास एवं कार्यान्वयन का कार्य एक सतत व निरंतर प्रक्रिया है। उसे प्रवाहमान बनाए रखना हम सब का प्रथम कर्तव्य है। केवल सरकारी कर्मचारी ही नहीं, बल्कि देश के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देकर राष्ट्रीय धारा से जुड़े।''[11] इस तरह 'आलोक' यह राजभाषा पत्रिका राष्ट्रीय एकता की संवाहिका है। एक अहिंदी प्रदेश से निकलने वाली यह प्रमुख और महत्वपूर्ण पत्रिका है।

इंद्रधनुष

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, भारत सरकार के एक स्वायत्त संस्थान भारतीय उष्णदेशीय मौसम विज्ञान संस्थान, (IIIM) पुणे की राजभाषा पत्रिका 'इंद्रधनुष'

वर्ष 2005 ई से नियमित निकलती है। राजभाषा हिंदी को समर्पित यह पत्रिका अन्य राजभाषा पत्रिकाओं की भाँति सरकारी कर्मचारियों में राजभाषा हिंदी के प्रति लगाव और झुकाव की ओर संकेत करती है। इसमें संस्थान के हिंदी क्रियाकलापों की जानकारी प्रस्तुत की जाती है। इसमें प्रकाशित सामग्री शोध पूर्ण होती है और अनन्य विषयों पर आधारित होती हैं। साहित्यिक, वैचारिक, वैज्ञानिक और राजभाषा संबंधी लेख तथा कविता, कहानी और अन्य साहित्यिक विधाओं का समावेश इसमें किया जाता है। 'इंद्रधनुष' के संपादक डॉ. ओमकार नाथ शुक्ला का इस संदर्भ में कथन है- ''वस्तुतः हमारा संस्थान मौसम विज्ञान पर अनुसंधान करता है और मौसम संबंधी जानकारी हर खासो-आम आदमी की जरूरत है इसलिए विषयवस्तु की जानकारी मूलतः हिंदी में देना हमारा दायित्व बन जाता है।''[12] संपादक की ओर से इस दायित्व का पूर्ण निर्वाह होता हुआ दिखाई देता है। इसमें प्रकाशित सामग्री हिंदी के विकास में सहायक मानी जा सकती है।

इंद्रायणी

'इंद्रायणी' यह मध्य रेल, पुणे मंडल की अर्धवार्षिक राजभाषा पत्रिका है। यह पत्रिका जुलाई, 2008 ई से निरंतर प्रकाशित होती रहती है। केंद्र एवं राज्य सरकार के सभी कार्यालयीन आदेश एवं संपर्क व्यवस्था में राजभाषा हिंदी का प्रयोग और प्रसार को बढ़ावा मिले यह राजभाषा पत्रिकाओं का महती उद्देश्य होता है। प्रस्तुत पत्रिका इसी उद्देश्य को लेकर स्थापित की गई है। इस संदर्भ में मंडल रेल प्रबंधक प्रभात सहाय का मत है - ''सरकारी कामकाज में राजभाषा के प्रयोग-प्रसार के क्षेत्र में हिंदी में प्रकाशित गृह पत्रिकाओं के दूरगामी परिणाम प्राप्त होते हैं, इसलिए सरकारी कार्यालयों को हिंदी में पत्रिकाओं का प्रकाशन कराना ही चाहिए।''[13] प्रस्तुत पत्रिका में साहित्यिक लेखों, कविताओं, कहानियों के अतिरिक्त, वैज्ञानिक और नैतिकता से संबंधित लेखों का समावेश पाया जाता है। हिंदी के विभिन्न सॉफ्टवेयरों का परिचय भी पाया जाता है। विशेष कर मंडल द्वारा किए गए कार्यालयीन कामकाजों के साथ राजभाषा के क्षेत्र में किए गए कार्यों का उल्लेख भी पत्रिका में दिया जाता है। पत्रिका हिंदी के प्रयोग, प्रचार और प्रसार के कार्यों की संवाहिका रही है। इसके उद्देश्य को निरूपित करते हुए संपादक और राजभाषा अधिकारी विपिन पवार ने लिखा है- ''राजभाषा नीति के अनुसार संपुर्ण पुणे मंडल 'ख' क्षेत्र में आता है। महाराष्ट्र की भाषा मराठी है

लेकिन हिंदी और मराठी भाषाओं में कोई मूलभूत विशेष अंतर नहीं है, फिर दोनों की लिपि भी देवनागरी ही है। यह देखने में आया है कि संपूर्ण पुणे मंडल पर भले ही हिंदी, मराठी और कन्नड भाषा-भाषी कार्यरत हैं, लेकिन कार्यस्थल पर बोली जाने वाली भाषा हिंदी ही है। 'इंद्रायणी' के प्रकाशन का उद्देश्य यह है कि इस पत्रिका के माध्यम से सबको अपने विचार व्यक्त करने का अवसर प्राप्त हो तथा इस पत्रिका को पढ़कर अन्य कर्मचारियों को भी अपने विचार व्यक्त करने की प्रेरणा प्राप्त हो।"[14] इससे स्पष्ट किया जा सकता है कि हिदी के विकास मे 'इंद्रायणी' पत्रिका का सक्रिय सहभाग रहा है।

हम लोग

'हम लोग' यह 'हिंदी आंदोलन' संस्था की वार्षिक पत्रिका है। संस्था द्वारा संपूर्ण वर्ष में किए गए कार्यों का लेखा-जोखा प्रस्तुत पत्रिका में दिया जाता है। सन् 2011 ई. से पत्रिका निरंतर रूप से निकलती है। इसमें पुणे के साहित्यकारों की रचनाएँ प्रकाशित की जाती है। प्रस्तुत पत्रिका में साहित्यिक रचनाओं, अनुसंधानात्मक आलेखों, अनुवादों तथा नैतिक उपदेशों को प्रकाशित किया जाता है। अतः 'हिंदी आंदोलन' संस्था की तरह 'हम लोग' पत्रिका का भी हिंदी प्रेमियों में महत्वपूर्ण स्थान है।

सहविद्या

'सहविद्या' वैकुंठ मेहता राष्ट्रीय सहकारी प्रबंधन संस्थान, पुणे की वार्षिक राजभाषा हिंदी गृहपत्रिका है। वर्ष 2013 ई से यह निरंतर प्रकाशित हो रही है। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री पूर्णतः हिंदी में होती है और पुणे के अन्य कार्यालयों में कार्यरत हिंदी अधिकारी और विशेषज्ञ इसमें अपने-अपने कार्यालयों में परिचालित राजभाषा हिंदी की जानकारी को प्रस्तुत करते हैं। इसके अतिरिक्त कविता, कहानी, वैचारिक आलेख, निबंध, हिंदी प्रचार-प्रसार की भूमिका और वर्तमान के प्रासंगिक विषयों पर विविधांगी लेख प्रस्तुत पत्रिका में प्रकाशित होते हैं। इस तरह पत्रिका का स्वरूप विविधांगी है। संस्थान में कार्यरत हिंदी अधिकारी और हिंदी अनुवादक संस्थान के कर्मचारियों को संपूर्ण कार्य हिंदी में कराने की सूचना और सूचना तंत्र में उसके उपयोग की जानकारी प्रदान करते हैं। प्रस्तुत पत्रिका की नीति यह रही है कि संस्थान के सभी कार्य भारत सरकार की राजभाषा नीति के तहत हों, पत्रिका में प्रकाशित सामग्री इसी उद्देश्य पर आधारित दिखाई देती है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि पुणे से प्रकाशित ये राजभाषा पत्रिकाएँ विविध कार्यालयों में हिंदी के प्रचलन को बढावा देने में सहायक है। इनके सभी क्रिया कलाप भाषाविषयक संवैधानिक नीति के अनुसार किए जाते हैं।

समाचार पत्र

पुणे से कुछ हिंदी समाचार पत्र प्रकाशित होते हैं। इनका परिचय क्रमशः निम्नलिखित है।

आज का आनंद (प्रथम समाचार पत्र)

'आज का आनंद' पुणे का सबसे पुराना समाचार पत्र है। यह सन् 1971 ई से निरंतर रूप से निकलता रहा है। श्यामजी अग्रवाल इसके संस्थापक संपादक हैं। शुरू में यह 'रविवार का आनंद'[15] नाम से साप्ताहिक के रूप निकलता था। श्यामजी अग्रवाल के साथ हुई बातचीत में उन्होंने कहा-''यह मेरी शुरूआत थी और मैं यहाँ पर बसे हिंदी भाषियों के मनोरंजन हेतु यह साप्ताहिक निकालता था, जबकि पूना में उस समय हिंदी का ऐसा पत्र मेरे अनुभव के अनुसार न था।''[16] श्यामजी अग्रवाल के इस वक्तव्य से यह स्पष्ट होता है कि संभवतः यह हिंदी का प्रथम साप्ताहिक था। शुरू में इस पत्र की केवल 500 प्रतियाँ रोजाना खपती थीं। आगे चलकर इसी पत्र को अग्रवाल जी ने सन् 1979 ई. में परिवर्तित कर 'आज का आनंद' नाम से दैनिक पत्र की शुरूआत की। अब इस पत्र का उददे्श्य केवल मनोरंजन तक सीमित न रहकर उसने बृहत् आकार धारण कर जीवन के विविध पक्षों को समेट लिया। प्रस्तुत समाचार पत्र में सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, स्वास्थ्यविषयक, वैज्ञानिक, शैक्षिक, खेल जगत से संबंधित जानकारी प्रकाशित होती है। इसमें हर शुक्रवार और रविवार के दिन उर्दू सफा नामक पन्ने में मुस्लिम धर्मग्रंथों में प्रचलित अच्छे विचारों को प्रकाशित किया जाता है। ''मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए, उसमें उचित मार्गदर्शन का भी मर्म होना चाहिए।'' मैथिलीशरण गुप्त की इस काव्योक्ति के अनुसार श्यामजी अग्रवाल ने भी अपने पत्र में सुधारवादी विचारों को रखने का यत्न किया है। उनका मानना है कि समाजोपयोगी बातों का समावेश करना ही समाचार पत्रों का प्रमुख उद्देश्य होना चाहिए। इसी उद्देश्य से प्रस्तुत अखबार में मन की बात स्तंभ वे खुद लिखते हैं और नैतिक विचारों का प्रस्तुतिकरण करते हैं। प्रस्तुत समाचार पत्र की वर्तमान में लगभग सवा दो लाख प्रतियाँ रोजाना

खपती हैं। प्रस्तुत दैनिक अखबार का हिंदी भाषियों के लिए महत्व तो है ही, पर अहिंदी भाषी प्रदेश पुणे में हिंदी को बढ़ावा देने में इस पत्र का खास योगदान दिखाई देता है।

मेरा भारत टाइम्स

शेख कादरी (बाबा कादरी) नामक गृहस्थ ने 7 नवंबर, सन् 1993 ई. को 'मेरा भारत टाइम्स' नामक दैनिक अखबार की शुरूआत की। इसका कार्यालय नानापेठ में पुलिस चौकी के सामने है। प्रस्तुत समाचार पत्र का आधा भाग उर्दू में और आधा हिंदी में प्रकाशित होता है। लगभग 8 पन्नों में प्रकाशित इस दैनिक अखबार में मुस्लिम समाज में व्याप्त अनेक प्रकार की समस्याओं की ओर समाज का ध्यान आकर्षित किया जाता है। एक प्रकार से पुणे में स्थित मुस्लिम समाज में प्रबोधन कार्य प्रस्तुत समाचार पत्र द्वारा किया जाता है। मुस्लिम समाज की सामाजिक स्थितियों और उनकी समस्याओं को इस पत्र में प्रस्तुत किया जाता है। इसके अतिरिक्त इसमें अन्य हिंदी समाचार पत्रों की तरह खेल, मनोरंजन, राजनैतिक, सांस्कृतिक स्थितियों का अंकन किया जाता है। कुरआन के नीतिविषयक विचार भी प्रस्तुत अखबार में दिए जाते हैं। इस तरह इस अखबार में पुणे के मुस्लिम समुदाय की स्थितियों का अंकन किया जाता है।

नवभारत

'नवभारत' पुणे से प्रकाशित दैनिक समाचार पत्र है। इसके संस्थापक श्री रामगोपाल माहेश्वरी थे और वर्तमान में विनोद आर माहेश्वरी इसके प्रमुख संपादक है। प्रस्तुत समाचार पत्र का प्रधान कार्यालय 326, मंत्री सेंटर, तीसरा माला, तुकाराम पादुका चौक, एफ.सी. रोड 411004 पर स्थित था। यह अखबार गत 18 वर्ष से निरंतर प्रकाशित होता रहा है। इसमें पुणे के नवोदित कवियों की कविताएँ प्रकाशित की जाती है और रोजमर्रा के समाचार भी प्रकाशित किए जाते हैं। इस समाचार पत्र का स्वरूप भी अन्य अखबारों की तरह ही रोजाना की घटनाओं के विवरण से संबंधित होता है। इसमें कई वैचारिक आलेख भी प्रकाशित किए जाते हैं, जो प्रासंगिक विषयों पर आधारित होते हैं। पुणे, मुंबई तथा भारत के विभिन्न राज्यों से संबंधित जानकारी इस अखबार में प्रकाशित की जाती है।

लोकमत समाचार (अल्पकालीन)

'लोकमत समाचार' के संस्थापक संपादक जवाहरलाल दर्डा थे। आजकल गिरीश मिश्र इसके संपादन का कार्यभार संभाल रहे हैं। सन् 2010 ई. से यह

दैनिक अखबार प्रकाशित होता है। पुणे की हिंदी साहित्यिक हलचलों का विवरण इस समाचार पत्र में दिया जाता है। अल्पावधि में हिंदी प्रेमियों में प्रसिद्धि पाने का इस समाचार पत्र को सौभाग्य प्राप्त हुआ है। उसकी प्रसिद्धि का एक कारण यह भी है कि इसमें पुणे के हिंदी साहित्य जगत, शिक्षा जगत और रोजमर्रा की खबरें प्रकाशित की जाती थी। 1 सितंबर, 2013 से 31 सितंबर, 2013 तक इस पत्र में प्रकाशित हिंदी स्तंभ का हिंदी जगत ने खूब स्वागत किया। इस हिंदी स्तंभ में पुणे के सिद्धहस्त कवि, उपन्यासकार, कहानीकार, आलोचक, अनुवादक, अनुसंधाताओं और हिंदी सेवी समर्पित व्यक्तियों का परिचय दिया जाता था। पुणे के हिंदीमय वातावरण की स्थितियों को इस अखबार ने अच्छी तरह रेखांकित करने का प्रयास किया है। इसमें प्रकाशित होने वाले पुस्तक परिचय वाले स्तंभ के कारण भारतवर्ष की अनेक हिंदी पुस्तकों का परिचय मराठी भाषी पाठकों को हुआ है। अनेक दृष्टि से महत्वपूर्ण यह दैनिक अखबार 2015 को अचानक बंद हुआ। अपने पाँच साल की अल्पायु में इस समाचार पत्र ने पुणे के हिंदी प्रेमियों में काफी प्रसिद्धि प्राप्त की। हिंदी के हिमायती विद्वानों को अपने विचारों के प्रतिपादन के लिए यह सशक्त माध्यम था। यह पत्र बंद होने के पीछे एक तर्क यह भी दिया जा सकता है कि मराठी भाषी क्षेत्रों में हिंदी पत्र चलाना कठिन कार्य होता है। इस कठिनता के बावजूद भी अपने अस्तित्व के पाँच सालों में इस समाचार पत्र ने काफी उल्लेखनीय कार्य किया है।

केसरी

पुणे से निकलने वाले मराठी दैनिक अखबार 'केसरी' का ही यह हिंदी संस्करण है। वर्ष 2013 ई को हिंदी केसरी अखबार की शुरूआत हुई। अन्य अखबारों की तरह ही इसमें खेल, मनोरंजन, शिक्षा जगत, राजनीति, सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक जानकारी प्रकाशित होती रहती है। पुणे के हिंदीमय वातावरण के कारण और हिंदी अखबार की मांग देखकर इस समाचार पत्र की शुरूआत की गई थी। यह अखबार 10 पृष्ठों में निकलता है। प्रस्तुत अखबार के संपादक डॉ. दीपक तिलक है। प्रस्तुत पत्र को 568, नारायण पेठ, न.चि.केळकर रोड़, पुणे 411030 यहाँ से प्रकाशित करवाया जाता है। प्रस्तुत अखबार एक साथ पुणे, मुंबई और दिल्ली से प्रकाशित होता है।

हडपसर एक्सप्रेस (साप्ताहिक)

'हडपसर एक्सप्रेस' हिंदी का साप्ताहिक है। इस साप्ताहिक पत्र की स्थापना सन् 2004 ई. में दिनेश चंद्रा ने की और वे ही इस पत्र के संपादक है। पुणे के पूर्वी भाग हडपसर जैसे ग्रामीण क्षेत्र में राष्ट्रभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार करना इस साप्ताहिक पत्र की स्थापना का प्रमुख उद्देश्य है। इस साप्ताहिक में संपूर्ण सप्ताह की खबरें एक साथ प्रकाशित की जाती है। इस पत्र का नामकरण पुणे के पूर्वी भाग हडपसर उपनगर के नाम के आधार पर किया गया है। प्रस्तुत साप्ताहिक हर रविवार को प्रकाशित होता है। महाराष्ट्र शासन और केंद्र शासन के विज्ञापन भी इसमें छपते हैं। स्थानिक हलचलों के साथ-साथ इसमें राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक लेखों का भी समावेश होता है। शुरू में इसकी केवल 500 प्रतियाँ छापी जाती थी। वर्तमान में इसकी 25,000 प्रतियाँ वितरित की जाती है। इसका अर्थ यह कि पहले की तुलना में वर्तमान में हिंदी जानने वालों की संख्या अधिक है। इस प्रकार हिंदी के विकास में योगदान प्रदान करने वाली पत्र-पत्रिकाओं में 'हडपसर एक्सप्रेस' का स्थान महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

भारतीय लोकतंत्र में स्वातंत्र्य, समता और बंधुता आदि तीन स्तंभों के साथ पत्रकारिता यह चौथा सुदृढ़ स्तंभ माना जाता है। जनहित और राष्ट्र विकास में पत्रकारिता का बहुमोल सहयोग होता है। स्वाधीनता आंदोलन में भी इन हिंदी पत्र-पत्रिकाओं का अद्वितीय सहयोग मिलता रहा है। इसी प्रकार स्वदेशी तथा स्वभाषा एवं राष्ट्रभाषा के प्रचार-प्रसार में अन्य भाषी पत्र-पत्रिकाओं की तरह हिंदी पत्र-पत्रिकाओं का भी अवदान दिखाई देता है। स्वतंत्रता पूर्व काल से ही पुणे में हिंदी पत्रकारिता की शुरूआत दिखाई देती है। इन पत्र-पत्रिकाओं में कुछ पत्रिकाएँ अल्पजीवी और कुछ दीर्घजीवी रही हैं। इन दोनों प्रकार की पत्रिकाओं का हिंदी के विकास एवं राष्ट्रभाषा के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। इन पत्रिकाओं के कारण पुणे में आज अनेक कवि, उपन्यासकार, कहानीकार, अनुवादक और आलोचक तथा साहित्यकार इन पत्र-पत्रिकाओं से जुड़े हुए हैं। पुणे के इन साहित्यकारों का हिंदी भाषा और साहित्य को महान प्रदेय रहा है। इन साहित्यकारों की हिंदी को जो देन है, उसका अवगाहन क्रमशः आगामी अध्याय में देखने का प्रयास करेंगे।

संदर्भ

1. भारतीय पत्रकारिता कोश खंड-2 - विजयदत्त श्रीधर, पृ. 606
2. राष्ट्रवाणी - महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा पुणे, पृ. 2
3. भारतीय पत्रकारिता कोश खंड-2 -विजयदत्त श्रीधर, पृ. 631
4. स्मृति सुगंध - संपादक जयराम फगरे, पृ.8
5. राष्ट्रभाषा विचार संग्रह-सं. डॉ.न.चि.जोगळेकर, पृ. 345
6. वही, पृ. 348
7. वही, पृ. 346
8. समग्र दृष्टि - संपादक डॉ. केशव प्रथमवीर, पृ. 4
9. वहीं, पृ.. 4
10. राष्ट्रवाणी -महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा पुणे, वर्ष 1988, पृ. 11
11. आलोक - राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे की राजभाषा पत्रिका के संपादकीय से, वर्ष सितंबर, 2014
12. इंद्रधनुष - भारतीय उष्णदेशीय मौसम अनुसंधान केंद्र, पुणे की वार्षिक राजभाषा पत्रिका के संपादकिय से, वर्ष सितंबर, 2012, पृ. 2
13. इंद्रायणी - रेल प्रबंधक मंडल कार्यालय की राजभाषा पत्रिका के संदेश से
14. वहीं, संदेश से
15. श्यामजी अग्रवाल से की हुई भेंटवार्ता से
16. आज का आनंद - मुखपत्रिका, पृ.4 वर्ष 3, अंक 2 नवंबर, 2007

पंचम अध्याय

हिंदी साहित्य को पुणे की देन

प्रस्तावना

पूर्व अध्याय में हिंदी के प्रचारात्मक, साहित्यिक और भाषिक विकास में पुणे की हिंदी पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका को प्रस्तुत किया गया है। इन पत्र-पत्रिकाओं ने पुणे नगर के रचनाकारों को अपनी रचनाएँ प्रकाशित करने के लिए अवसर प्रदान किया है। इन साहित्यकारों का परिचय देना प्रस्तुत अध्याय में अभीष्ट है। अतः इस अध्याय के अंतर्गत पुणे के हिंदी साहित्यकारों द्वारा सृजित विभिन्न विधाओं के साहित्य का सामान्य परिचय प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है। प्रथमतः काव्य विधा से शुरूआत की गई है।

हिंदी काव्य को पुणे की देन

पुणे शहर में हिंदी के लगभग दो दर्जन से अधिक हिंदी भाषी और अहिंदी भाषी कवि हैं। काव्य सृजन की इस यात्रा में कविवर हरिनारायण व्यास का स्थान सर्वोपरि है। वे अज्ञेय द्वारा संपादित 'तारसप्तक' के प्रमुख कवियों में से एक हैं। इसलिए प्रथमतः उनका परिचय दिया गया है।

कविवर हरिनारायण व्यास (1923-2013)

कविवर हरिनारायण व्यास का जन्म मध्यप्रदेश के शाजापुर जिले के 'सुंदरसी' गाँव में 14 अक्टूबर,सन् 1923 ई. को हुआ। उनकी प्रारंभिक शिक्षा आगरा और उज्जैन में हुई। वे सन् 1954 ई. से सन् 1981 ई. तक स्थायी रूप से पुणे आकाशवाणी केंद्र में कार्यरत रहे। सेवानिवृत्ति के उपरांत वे पुणे में रहे और यहीं रहकर कविताएँ लिखते रहे। व्यास की प्रथम कविता 'हंस' में प्रकाशित हुई थी। सन् 1951 ई. में अज्ञेय द्वारा संपादित 'दूसरा सप्तक' में आपकी कविताओं को स्थान प्राप्त हुआ है। उनके व्यक्तित्व के अनेक पहलू उजागर किए जा सकते हैं, उनमें से एक है-कवि व्यक्तित्व। इनका काव्य संसार इस प्रकार है-

1. मृग और तृष्णा- सन् 1968 ई., रुचिरा प्रकाशन, पुणे।
2. त्रिकोण पर सूर्योदय - सन् 1980 ई., शुभदा प्रकाशन, दिल्ली।
3. बरगद के चिकने पत्ते -सन् 1982 ई., शीर्ष प्रकाशन, हापुड़।
4. आउटर पर रूकी ट्रेन -सन् 1994 ई., शुभकामना प्रकाशन, दिल्ली।
5. यक्ष का संदेश- (महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे), सन् 1994 ई
6. निद्रा के अनंत में जागते हुए - सन् 2012 ई., क्षितिज प्रकाशन, पुणे

हरिनारायण व्यास जीवन के अंतिम क्षणों तक पुणे में हिंदी साहित्यिक वातावरण को पोषकता प्रदान करते रहे और पुणे के नवोदित लेखकों को प्रोत्साहित करते रहे। उनके आकाशवाणी अधिकारी कार्यकाल में 'हिंदी बातचीत' नामक कार्यक्रम को प्रस्तुत किया जाता था। इस कार्यक्रम में अनेक नवलेखक, रचनाकार व कलाकारों को उन्होंने स्थान दिया था। वे पुणे की तत्कालीन संस्थाएँ-'सर्जना' साहित्य एवं कला मंच, पुणे', 'प्लस, मायनस इजुकल्टु झीरो' तथा सभा की विशेष प्रवृत्ति 'ज्ञानदा' के परामर्शदाता थे। उन्होंने सभा की समीक्षात्मक एवं साहित्यिक पत्रिका 'राष्ट्रवाणी' का सफल संपादन किया था। उनके संपादकत्व में निकाले गए 'मुक्तिबोध श्रद्धांजलि अंक' और 'साठोत्तरी हिंदी कविता' विशेषांक पठनीय एवं संगृहणीय है। व्यास जी ने गद्य लेखन भी किया, पर दुर्भाग्यवश उसका संकलन एवं प्रकाशन न हो सका अतः वे मूलतः कवि रूप में ख्याति प्राप्त हैं।

हरिनारायण व्यास की कविता को किसी ने जनवादी कहा तो किसी ने मानवतावादी। वस्तुतः व्यास की कविताएँ प्रकृति-चित्रण, मानवतावादी दृष्टिकोण, मानवीय संवेदना और समकालीन बोध से ओतप्रोत दिखाई देती है। 'मृग और तृष्णा' की इन पंक्तियों में देखिए-''सोए हुए आदमियों के काफिले/अपने सारे फासले/नींद में खोए हुए/ये हैं बेहोश यात्रियों के हुजूम सहयात्री।''[1] व्यास किसी वाद के घेरे में आबद्ध न हो सके और न ही किसी राजनीति या गुटबाजी में। वे लिखते हैं-''मैं/इस संवेदन/निवेदन/संज्ञाशून्य/परिवेश में/बंधा हुआ/बंदी समूह का/सहयात्री हूँ/काफिले का एक अंश हूँ।''[2] हरिनारायण व्यास के संदर्भ में डॉ. चंद्रकांत बांदिवेडकर ने लिखा है- ''मान्यवर हरिनारायण व्यास आकाशवाणी के एक अधिकारी के रूप में महाराष्ट्र में आए, पुणे में रहे और महाराष्ट्र को ही अपनी जन्मभूमि और पुण्यभूमि माना, महाराष्ट्र के समाज से एकरूप हुए, मराठी भाषा और साहित्य के मर्मज्ञ जानकार भी बने। श्री व्यास जी ने पुणे को

अपना घर माना। पुणे के साहित्य प्रेमी समाज ने हरिव्यास को अपना समझ उन्हें स्नेह और सम्मान दिया।"[3]

इस तरह पुणे में हिंदी साहित्यिक वातावरण के निर्माण में हरिनारायण व्यास सदैव स्मरणीय रहेंगे।

डॉ.सिंधु भिंगारकर (सन् 1931 ई.)

डॉ.सिंधु भिंगारकर एक कुशल प्राध्यापिका, आलोचक, हिंदी प्रचारक और कवयित्री थीं। 'सुबह की धूप' आपकी काव्य-कृति महत्वपूर्ण है। सन् 1995 ई. में प्रकाशित इस काव्यसंकलन में कुल 49 कविताएँ संकलित है। प्रस्तुत संग्रह की कविताएँ सामाजिक विषमता, विसंगति, मध्यवर्गीय समाज की आर्थिक स्थिति तथा वर्तमान की भ्रष्ट शासन यंत्रणा पर आघात करती हैं। मानवीय मूल्यों को अभिव्यक्त करने हेतु वह प्रतीकात्मकता का सहारा लेती है। वह लिखती है- ''सामाजिक विषमता, विसंगति पर जब दृष्टि चली जाती है तो मन विषाद से भर उठता है। दोहरे व्यक्तित्वों का मुखौटा उतारने को मन होता है, पर शब्दों के हथियार से लडना जरा मुश्किल हो जाता है, फिर भी कुछ कोशिश की है।"[4] कवयित्री की कोशिश खाली नहीं है, सशक्त है। 'सत्य' कविता में वे लिखती है-''सत्य शेर है/आधुनिक भारत में/सर्कस के पिंजड़े में/बँधा हुआ/ रिंगमास्टर सत्ताधीश/नचाते हैं इशारों पर/उसे अपने संकेतों से/सत्य वह शेर है।"[5] इस तरह इस संग्रह की अन्य कविताएँ भी सामाजिक विषमता और आधुनिक भारत की राजनीतिक यथार्थता को दर्शाती है।

गोवर्धन शर्मा 'घायल' (सन् 1937 ई.)

गोवर्धन शर्मा पुणे के सिंधी कवि हैं। महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के वे अधिकृत हिंदी प्रचारक हैं। सिंधी के साथ-साथ वे हिंदी में भी लिखते हैं। हिंदी में आपका एकमात्र काव्यसंकलन 'बिखरे क्षण' सन् 1998 ई. में प्रकाशित हुआ है। इसमें कुल 56 कविताएँ संकलित है। इनमें कुछ गजल, नज्म, गीत, दोहे, सोरठे और मुक्तकों का समावेश है। गोवर्धन शर्मा की कविताएँ भाव, भाषा और सौंदर्य-बोध की सूक्ष्मतम इकाई है। इन कविताओं में 'मित्रता', 'लौट मेरी प्रेरणा', 'क्षणिकाएँ', 'अंतर', 'ज्वर', 'अंक बोलते हैं', 'दुर्घटना', 'कविता-यात्रा', 'बँटवारा', 'निर्णय', 'बौने रावन', 'त्रिकोण' आदि प्रमुख है। इनकी कविताएँ प्रगतिशील चेतना से युक्त दिखाई देती है।

प्रभा माथुर (जुलाई, 1937 ई.)

प्रभा माथुर हिंदी की प्रसिद्ध लेखिका हैं। आपके दो कविता संग्रह 'लक्ष्मणरेखा' (1986) और 'भीगे पंख' (2004) प्रकाशित हो चुके है। इन दोनों संकलनों में संकलित लगभग 187 कविताएँ सामाजिक विकृतियों पर प्रहार करती है। इन कविताओं में प्रकृति चित्रण, मानवी विकृतियों का दर्शन और स्त्री दशा की सशक्त अभिव्यक्ति, विद्रोह, व्यंग्य और कटुता का स्वर उभरा हुआ दिखाई देता है। कवयित्री इन कविताओं के माध्यम से रूढ़ परंपराओं को नकारना चाहती है। लेखिका का स्त्री विषयक दृष्टिकोण व्यापक है। समाज में दिखाई देनेवाली स्त्री प्रताड़ना को देखकर कवयित्री का मन तड़पने लगता है। उन्होंने इस संदर्भ में लिखा है- ''एक बात बहुत अधिक सालती है। वह यह कि विवाह के संबंध में जब पिता की 'पगड़ी' को ठोकर मार धूल में मिलाया जाता है। तब इस ओछे व्यवहार से मन होता है कि 'पगड़ी' उछालने वाले को पंगु बनाकर पेड़ से लटका दूँ। वैधव्य कलंकित हो गया, परंतु विधुर दुबारा सेहरा बाँधने के बदले चिता में क्यों कूद नहीं जाता ? इन्हीं असंगत क्षणों में जो मानसिक तनाव, उलझनें उत्पन्न हुई उनसे मन में अजीब-नीरसता भरने लगी।''[6] प्रस्तुत कविताएँ इसी मानसिकता का प्रस्तुतिकरण हैं। कवयित्री लिखती है -

किसके लिए साधनारत हुई जा रही हूँ दीक्षक की दक्षिणा बनी जिए जा रही हूँ''[7]

इन संकलनों की अधिकांश कविताएँ स्त्री विमर्श एवं स्त्री-अस्मिता की सशक्त अभिव्यक्ति में सार्थक सिद्ध होती है। 'मैली चादर', 'अस्मिता की तलाश', 'परदा उठाईये', 'टूटी गुड़िया', 'तवायफ', 'पता नहीं मिलता', 'डूब कर देखो', 'चौकी दौड़','रघुकुल का कलंक', 'चाबी का गुच्छा', 'तड़पन', 'खूंटियाँ', 'भाड़ में भुनी आत्मा', 'इबारत', 'रिस रहे हैं', 'गन्ने की छूँछ', 'पुरूषार्थ का श्रम', 'अबलाओं का इतिहास' आदि नारी उत्पीड़न की कविताएँ हैं। डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित ने इन कविताओं के संदर्भ में लिखा है- ''पुरूष के दर्प, अहंकार और अत्याचार से पीड़ित नारी के अनेक रूप इन कविताओं में प्रकट हुए हैं। उनमें पुरूष की आश्रिता, ताड़िता, प्रणयिणी,विरहिणी नारियाँ तो हैं हीं, परिव्यक्ता और वेश्या भी सम्मिलित है।''[8]

इस तरह प्रभा माथुर की कविताएँ वर्तमान की जीवंत समस्याओं पर प्रहार करने में सक्षम दिखाई देती हैं।

डॉ. मालती शर्मा (15 नवंबर, 1938 ई.-13 अक्टूबर, 2018ई.)

मालती शर्मा लगभग 45 वर्षों से लेखन कार्य में जुटी हुई कवयित्री हैं। वह हिंदी, मराठी, अंग्रेजी और ब्रज भाषा की जानकार हैं। उनकी विशेष रुचि लोक साहित्य और लोक संस्कृति के लेखन में पाई जाती है। आपकी प्रमुख काव्य कृतियाँ इस प्रकार है-'निर्वासन की आँधी','ऑक्टोपस के पेट में बचा बीज','दृश्यों के बाहर','उम्र की पुस्तक में 'मोरपंख', 'कहां गए घर' और 'खड़े रहते हैं घर' आदि।

'निर्वासन की आँधी' इस काव्य संकलन में उन्होंने लिखी हुई सन् 1967 ई. से सन् 1980 ई. तक की कुल 45 कविताएँ संकलित की गई हैं। 'ऑक्टोपस के पेट में बचा एक बीज' में 54 कविताएँ संकलित हैं। 'दृश्यों के बाहर' में 42 कविताएँ संकलित हैं। इन संग्रहों की लगभग 141 कविताओं में निम्नवर्गीय समाज के आर्थिक एवं पीड़ित वर्गव्यवस्था का चित्रण किया गया है। आपकी कविताओं में प्रकृति-चित्रण, लोकसंस्कृति, पर्यावरणीय समस्या तथा वर्तमान समाज व्यवस्था से संबंधित अनेक समस्याओं का चित्रण दिखाई देता है।

'देवदासी' नामक कविता में कवयित्री ने स्त्री दशा एवं अंद्धश्रद्धा की पोल खोली है। वर्तमान की भ्रष्ट राजनीति को आपके संकलन 'दृश्यों के बाहर' में बखूबी समेटा गया है। 'कहां गए घर' और 'खड़े रहते हैं घर' की कविताएँ मानवी जीवन के बसेरे की समीक्षा करती है। घर मनुष्य जीवन का ही नहीं अपितु प्राणि जगत्, पशु जगत् और सभी प्रकार के जीवों की प्रमुख आवश्यकता होती है। इसके अभाव में जीवन नीरस और बसेरे से दूर हो जाता है। कवयित्री ने इन घरों के महत्व का चित्रण इन कविताओं में किया है। घर बनाने और बिगाड़ने का जिम्मेदार भी मनुष्य ही है, इस बात की ओर कवयित्री ने इशारा किया है। इस तरह समकालीन हिंदी कविता के क्षेत्र में विविध आयामों को छूती डॉ. मालती शर्मा की कविताएँ विशेष महत्वपूर्ण है। डॉ. राजेंद्र रघुवंशी के अनुसार- ''पूना को अपनी साहित्यिक हलचलों का केंद्र बनानेवाली विदूषी श्रीमती मालती शर्मा अपने में स्वयं एक संस्था बन चुकी है। पुराने को नए से जोड़कर जाँचने की मालती शर्मा की अनुभूति सचमुच अनूठी है। भाषा और भाव दोनों पर उनका अनूठा अधिकार है। इनका नीर-क्षीर विवेक उनकी साहित्यिक उपलब्धि का रहस्य है। अपने इसी संतुलित व्यवहार के कारण वह पल में कलम पकड़ सकती हैं और पल में करछुली उनका साहित्यिक व्यक्तित्व सदैव जगमगाता रहता है, वह बोलती है वह भी साहित्य।''[9]

मेजर सरजूप्रसाद 'गयावाला' (14 अप्रैल, 1939 ई.)

सरजूप्रसाद पुणे के खंडकाव्य लेखक हैं। 'कैकेयी','एकलव्य' और 'भीष्म पीतामह' उनके प्रसिद्ध खंडकाव्य हैं। इनके अतिरिक्त 'इंद्रधनुष'(कविता संग्रह), 'रूह की आवाज' (ग़ज़ल-नज्म संग्रह), 'धाराएँ'(कविता और ग़ज़लों का संग्रह), 'श्रद्धांजलि'(कविता संग्रह), 'शोला और शबनम' (ग़ज़ल-नज्म संग्रह) और 'मैं और मेरी कविताएँ' आदि उनकी प्रसिद्ध काव्य कृतियाँ हैं। रामायण के पौराणिक आख्यान को कथानक का आधार बनाकर 'कैकेयी' जैसे उपेक्षित पात्र की पुनर्व्याख्या करने का सराहनीय कार्य मेजर साहब ने 'कैकेयी' खंडकाव्य में किया है।

सरजूप्रसाद ने 'एकलव्य' खंडकाव्य में पौराणिक के माध्यम से आधुनिक जीवन दर्शन के कथ्य की अभिव्यक्ति सशक्त ढंग से की है। भील पुत्र एकलव्य को निम्न जाति का मानकर पहले तो अपना शिष्य बनाने से द्रोणाचार्य इन्कार कर देते हैं। एकलव्य गुरु द्रोणाचार्य के प्रति श्रद्धा रखते हुए धनुर्विद्या प्राप्त कर लेता है। उसकी यह निपुणता अर्जुन और गुरु द्रोणाचार्य को खटकती है। गुरु के प्रति निष्ठावान एकलव्य गुरु दक्षिणा के नाम पर द्रोणाचार्य के कहने पर अपने दाएँ हाथ का अँगूठा कटवा देता है। इस कथा प्रसंग में कवि ने अपनी ओर से इस आख्यान की पुनर्व्याख्या की है। वे मानते हैं कि गुरु द्रोणाचार्य ने एकलव्य से इसलिए अंगूठा दक्षिणा में मांगा, जिससे आनेवाले भयानक युद्ध संहार में परम शिष्य एकलव्य को संहारक कार्य से बचाया जाए। यहाँ कवि की अनूठी कल्पना गुरु के प्रति आदर्शवाद की व्याख्या प्रस्तुत करती है। आदर्शवाद, राष्ट्रनिष्ठा और गुरु के प्रति नितांत निष्ठा की अभिव्यक्ति में प्रस्तुत रचना विशिष्ट स्थान रखती है।

इनका तीसरा खंडकाव्य 'भीष्म पीतामह' है। प्रस्तुत रचना में पाँच सर्ग है। इन पाँचों सर्गों में कवि ने स्त्री-विमर्श की सशक्त अभिव्यक्ति महाभारत के पौराणिक कथानक के आधार पर की है। कवि ने अपनी बात में लिखा है- ''द्रौपदी के साथ जो भी हुआ, किसी काल, किसी समाज, किसी धर्म सभ्यता एवं संस्कृति के लिए क्षम्य नहीं। कोई भी दंड विधान नारी जाति के साथ इस जघन्य अत्याचार को उचित नहीं ठहरा सकेगा।''[10] भीष्म पितामह के कुंठित व्यक्तित्व और कौरवों के कुकृत्य की आलोचना इस खंडकाव्य में की गई है।

सरजूप्रसाद की चौथी काव्यकृति 'इंद्रधनुष' की अधिकांश कविताएँ वीर रस, राष्ट्रीय भावना और देशभक्ति से ओतप्रोत दिखाई देती हैं। इनमें से 'हुंकार'

कविता आकाशवाणी केंद्र पुणे से कई बार प्रसारित की गई है। 'संकेत' और 'भिखारीन' कविताओं में समाज व्यवस्था पर गहरी चोट की है। आप की चौथी कृति 'रूह की आवाज' ग़ज़ल संग्रह है। इसमें कुल 170 ग़ज़लें संकलित हैं, जो मानव जीवन में प्रेम के महत्व को उद्‌घाटित करती है। कवि की पाँचवी रचना 'धाराएँ' में कुल 125 कविताएँ संकलित हैं। इसमें आधी हिंदी और आधी उर्दू की कविताएँ है। यह काव्यसंकलन भावुकता एवं मानवीय प्रेम संबंधों पर आधारित है। 'श्रद्धांजलि' उनका छठा काव्य संकलन है। इस काव्य संकलन में कुल 94 कविताएँ संकलित है। प्रस्तुत रचना समकालीन परिवेश के चित्रण से ओतप्रोत दिखाई देती है। 'शोला भी शबनम भी' उनका गज़लों और नज्मों का संग्रह है। इसमें कुल 152 गज़लों और नज्मों का समावेश है। इस संग्रह का गज़लें वीर रस और श्रृंगार रस से परिपूर्ण हैं। कवि का अंतिम कविता संग्रह 'मैं और मेरी कविताएँ' है। प्रस्तुत कविता संग्रह में 77 कविताएँ और 63 ग़ज़ल व नज्मों को संकलित किया गया है। ये सारी कविताएँ भारतीय धर्म और संस्कृति के उज्ज्वलतम रूप को हमारे सामने प्रस्तुत करती है। इन कविताओं में वर्तमान काल की राजनैतिक भ्रष्टाचारिता और स्त्री चिंता की सही हकीकत वर्णित की गई है। वास्तविकता में समाज...समाज...और समाज ही इनकी कविताओं का केंद्रबिंदु रहा है। उनकी समाजवादी दृष्टि पर विचार करते हुए डॉ.दामोदर खड़से ने लिखा है- ''मेजर प्रसाद का अपना जीवन दर्शन है। उनकी अपनी आस्थाएँ हैं। सेना के इस वरिष्ठ अधिकारी के एक हाथ में शस्त्र तो दूसरे हाथ में ओजस्वी कलम है। छाती में जहाँ अदम्य बहादुरी और शौर्य है वहीं हृदय में संवेदनशील कविता के बीज है। जीवन की रणभूमि में युद्धरत रहते हुए उन्होंने सीमा पर जिस प्रकार दुश्मन को धूल चटाई, उसी प्रकार समाज को भी देश-प्रेम की काव्य-घूंटी पिलायी। जननी और जन्मभूमि इनकी आस्था के विशेष केंद्र में है।''[11]

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि मेजर साहब की काव्ययात्रा इतिहास एवं पौराणिक कथानकों से शुरू होकर आधुनिक परिप्रेक्ष्य में घटित होती है। इनके लेखन में वीर रस, स्त्री-विमर्श, दलित-विमर्श, राष्ट्रीय भावना, देशभक्ति, समाज जीवन का यथार्थ चित्रण, प्रगतिशील चेतना, राजनीतिक चेतना और समकालीन बोध का समग्र चित्रण दिखाई देता है।

मधु हातेकर (1 जुलाई, 1940 ई.)

मधु हातेकर पुणे के हिंदी कवि है। आप लगभग 25 सालों से कविताएँ लिखते हैं। आपका एकमात्र कविता संग्रह 'मधुसुमन' सन् 2005 ई में क्षितिज

प्रकाशन से प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत संकलन में कुल 35 कविताएँ और तीन मुक्तक संकलित है। ये कविताएँ राष्ट्रीयता, सामाजिकता, राजनैतिक भ्रष्टता तथा वर्तमान कालीन विविध समस्याओं को चित्रित करती है। भारतीय स्त्री जीवन की सही हकीकत इन कविताओं में पाई जाती है। ईश वंदना से कविताओं की शुरूआत होती है और मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठापना करती है। कवि लिखता है-

''सुरों में श्रृंगार लेकर आया हूँ
शब्दों में झंकार लेकर आया हूँ
स्वयं तो पतझर से झरा हूँ लेकिन
सबके लिए बहार लेकर आया हूँ।''[12]

संग्रह की कविताएँ पठनीय और रमणीय है। इन कविताओं की भाषा विषयानुकूल है। इस संदर्भ में पुणे की लेखिका मालती शर्मा ने लिखा है-''मधु हातेकर की कविता मानव मन की अनुभूतियों की शरद ऋतु का धरती से आकाश तक फैला रंगीन-पुष्प संसार है।''[13] अर्थात उनकी कविता में अनुभूति की सच्चाई और अभिव्यक्ति का खरापन साफ-साफ नजर आता है। मधु हाथेकर का यह एकमात्र काव्यसंग्रह अपनी एक खास विशेषता से युक्त है।

रजनी पाथरे 'राजदान' (27 अगस्त, 1940 ई.)

रजनी पाथरे 'राजदान' कश्मीरी भाषी हिंदी कवयित्री है। 'पिघलती मोमबत्ती' आपका कविता संग्रह है। यह कविता संग्रह सन् 2006 ई. में शैवाल प्रकाशन, कानपुर से प्रकाशित हुआ है। इसमें कुल 107 कविताएँ संकलित की गई हैं। आपके कविताओं में भारतीय संस्कृति के दर्शन बार-बार दिखाई देते हैं। उत्सव, तीज़-त्यौहार और महाभारत, रामायण आदि प्राचीन ग्रंथों से प्राप्त कथानक उनके काव्य के प्रमुख विषय हैं। आपकी कविताएँ स्त्री-विमर्श की सशक्त अभिव्यक्ति में सार्थक है। स्त्री जीवन से अवगत कराती एक कविता का उदाहरण देखिए-''आज की सीता ने/स्वेच्छा से निर्वासन मांगा/ताकि वह जीवन के असहनीय तनावों को कुछ साल/न, न कुछ साल क्या/कुछ पल तक ही सही/पराजित तो कर पाए।''[14] स्त्रियों को आज भी अनेक असहनीय अत्याचारों का सामना करना पड़ता है। इससे वह मुक्त होना चाहती है। इसी की अभिव्यक्ति कवयित्री ने की है। आपकी कविताओं में मानवीय संवेदनाओं, और रिश्तों को सार्थक स्वर मिला है।

गजेंद्रदेव उपाध्याय (1 अक्टूबर, 1941 ई)

गजेंद्रदेव उपाध्याय पेशे से इंजीनियर और हिंदी कवि हैं। सन् 1956 ई. में उनकी पहली कहानी 'मृग तृष्णा' छपी थी जिसे वृंदावनलाल वर्मा की सराहना प्राप्त हुई थी। इसके अलावा अब तक 5 काव्यसंग्रह प्रकाशित हो चुके हैं-'सांझ की बेला' (2000), 'तन्हाई' (2002), 'सूर्य की आत्महत्या' (2003), 'ये नैना भर आये' (2005), 'जब तुम दूर होते हो' (2009) आदि।

आपकी कविताएँ समकालीन जीवन के यथार्थ को अभिव्यक्त करती हैं। वर्तमान समय की राजनीतिक व्यवस्था के प्रति कवि आक्रोश व्यक्त करता है। आज जो समाज में विविध प्रकार की समस्याएँ दिखाई देती है उसका एक प्रमुख कारण वर्तमान की राजनीति है। वे अपनी कविताओं में समाज को इसी राजनैतिक वास्तविकता से अवगत कराते हैं। जैसे-

सौ करोड़ की जनसंख्या वाले भारत देश की बागडोर
542 सांसदों के हाथ में है
देश का भविष्य क्या वाकही
सुरक्षित हाथों में है ?''[15]

केवल इतना ही नहीं तो इस व्यवस्था ने आम आदमी के जीवन में बिखराव की अनेकों स्थितियाँ पैदा की है। सामान्यतः आपकी कविताएँ इसी बिखराव वाली स्थितियों से संबंधित है। पुणे के सिद्धहस्त कवियों में गजेंद्रदेव उपाध्याय एक प्रमुख कवि है, उनकी कविताएँ समकालीन परिवेश को व्यक्त करने में सार्थक दिखाई देती है।

बलदेव साजनदास साधवाणी 'निर्मोही' (21 सितंबर, 1945 ई.)

निर्मोही सिंधी, हिंदी, मराठी, उर्दू और अंग्रेजी भाषा के जानकार कवि हैं। ये सिंधी कवि के रूप में अधिक प्रचलित है और हिंदी में भी आपकी कविताएँ दिखाई देती हैं। नई दुनिया, कूंज, सिपूं, हीर, हिन्दवासी, जागृती, हलचल, रिहाण, अदबी चमण, आदि सिंधी पत्रिकाओं में और हिंदी की माधुरी, रूप की शोभा, सुरभि आदि पत्रिकाओं में आपकी कविताएँ प्रकाशित होती है। आपके तीन कविता संग्रह हिंदी में प्रकाशित हो चुके हैं-

1. बेकरारी - हिंदी ग़ज़ल एवं नज्म संग्रह, क्षितिज प्रकाशन पुणे से 2005 में।
2. सुकून - हिंदी ग़ज़ल संग्रह, क्षितिज प्रकाशन पुणे से 2006 में।
3. जुस्तजू - हिंदी व उर्दू ग़ज़ल संग्रह, क्षितिज प्रकाशन पुणे से 2011 में।

इन संग्रहों में प्रकाशित कविताएँ वर्तमान समय में खोते मनुष्यत्व की, जीवन मूल्य की और मानवता की खोज करती है। वे नहीं चाहते कि मजहब के नाम पर मनुष्यत्व ही खो जाए। 'सुकून' ग़ज़ल संग्रह के प्रथम शेर में ही वे लिखते हैं-

''कहते तो हैं कि एक ही परवरदिगार है फिर मजहबों के बीच में क्योंकर दरार है?''[16]

वर्तमान की भ्रष्ट समाज व्यवस्था का वे विरोध करते हैं। एक शेर में वे खुली भ्रष्टता का चित्रण इस प्रकार करते हैं-

''दिल के अरमां बंद यहाँ पर तालों में भी होते हैं काले धंधे, यारों, आज उजालों में भी होते हैं।''[17]

इसी भ्रष्टता के कारण सामान्य मनुष्य की स्थिति लाचार हो गई है, और यह मनुष्य मजबूरी से इस भ्रष्ट दरबार का दरबान बन गया है। जैसे-

''किस तरह लाचार एक इन्सान बन गया हूँ
जालिम के ही दरबार का दरबान हो गया हूँ।''[18]

इनकी गजलों में अनेक समस्याओं का चित्रण पाया जाता है। इन ग़ज़लों की भाषा सरल, स्पष्ट और मुहावरेदार दिखाई देती है। अतः कहा जा सकता है कि निर्मोही का हिंदी कविता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान है।

डॉ.दामोदर खड़से (11 नवंबर, 1948 ई.)

डॉ. दामोदर खड़से अखिल भारतीय स्तर के लेखक है। उनका नाम हिंदी जगत में नामी-गिरामी लेखकों के बीच लिया जाता है। विश्व के ख्यातिप्राप्त हिंदी साहित्यकारों में भी उनकी प्रसिद्धि कायम है। डॉ.दामोदर खड़से ने हिंदी की लगभग सभी विधाओं में अपनी लेखनी चलाई है। उनकी सशक्त लेखनी से कहानी, उपन्यास, कविता, यात्रावर्णन एवं भेंटवार्ता तथा राजभाषाविषयक पुस्तकें व अनुवाद निर्मित हो चुके हैं। डॉ. खड़से के लेखन की शुरूआत कविता से होती है। सन् 1966 ई में अपने मित्र कृष्णा गुप्ता से बिछुड़ने पर उन्होंने कविता लिखी थी। अपने मन की संवेदना को कविता के माध्यम से व्यक्त करने वाले यह सजग कवि है। खड़से के अब तक पाँच कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं-

1.अब वहाँ घोसले हैं -सन् 2000 ई.
2.जीना चाहता है मेरा समय -सन् 2006 ई.
3.तुम लिखो कविता -सन् 2008 ई.

4.सन्नाटे में रोशनी - सन् 2008 ई.

5.रात - सन् 2013 ई.

इनकी सृजन यात्रा अनवरत जारी है। इनके और तीन काव्य-संग्रह 'नदी कभी नहीं सूखती', 'पेड़ कभी अकेले नहीं होते' और 'लौटती आवाजें' प्रकाशनाधीन है।

खडसे की कविता में मानवता की पुकार है। समकालीन बोध, प्रकृति-चित्रण, निम्न मध्यवर्ग का चित्रण, स्त्री-विमर्श, समकालीन संवेदना (राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक) आदि कई विशेषताओं को लेकर उनकी कविता चलती है। उनका मानना है कि कविता में मानवीय संवेदना होनी चाहिए। इस तथ्य को वे इसप्रकार निरूपित करते हैं-

''कविता एक घटना को असंख्य आयामों से देखती है/फिर भी/जो जैसा चाहे/कविता, वैसा ही दिखती है...../तुम लिखो कविता/मेरे प्रतिबिंबों की/और मैं हो जाऊं साकार/हर आयाम में/और देखूं अपना ही प्रतिबिंब मैं/तुम्हारी कविताओं में ...../तुम लिखो कविता।''[19]

खडसे का काव्य-संग्रह 'अब वहाँ घोंसले है' की कविताएँ कहीं व्यंग्य का सहारा लेती है तो कहीं एकदम सरल हो जाती हैं। व्यंग्यात्मकता का सहारा लेकर उन्होंने वर्तमान राजनीति पर कसकर प्रहार किया है। संग्रह की कविताओं में 'वांटेड','काक संवाद','आतंक','सुकरात के बेटे','निष्कर्ष','तानाशाह सूरज' आदि कुछ ऐसी ही कविताएँ है, जो वर्तमान राजनीति की पोल खोलने में सक्षम दिखाई देती है। मधुदीप ने उनके व्यक्तित्व के बारे में लिखा है- ''दामोदर खड़से यह मात्र एक नाम नहीं है अपितु इस नाम के पीछे है एक बहुआयामी व्यक्तित्व। साहित्य के संसार में उनका कद इतना बड़ा है कि उन्हें मिले सभी पुरस्कार उस कद के सामने छोटे लगते हैं। विरले लेखक ऐसे होते हैं जो साहित्य की एक से अधिक विधाओं में सृजन करते हैं मगर यहाँ तो ऐसी कोई विधा ही नज़र नहीं आती जिसमें इन्होंने साहित्य-सृजन न किया हो।''[20]

इस प्रकार डॉ. खड़से जीवनसंघर्ष की सशक्त अभिव्यक्ति करने में सक्षम कवि हैं। उनके बहुआयामी व्यक्तित्व में से कवि व्यक्तित्व का परिचय अतिसंक्षेप में किया गया है। इनकी अन्य विधाओं का विवेचन इसी अध्याय के अलग-अलग बिंदुओं में किया गया है।

शम्मी चौधरी (1 जनवरी, 1948 ई.)

शम्मी चौधरी पुणे के सिद्धहस्त कवि हैं। आपकी कविताएँ कवि-सम्मेलनों में और आकाशवाणी से प्रसारित होती रहती हैं। इनके प्रिय कवि कबीर हैं। कबीर दर्शन से प्रभावित इनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं और चर्चित एवं ख्यातनाम रही हैं। ये एक सफल लेखक, निर्माता एवं दिग्दर्शक आदि विविध रूपों में हमारे सामने उपस्थित होते है। आपकी उपलब्ध रचनाएँ निम्नलिखित हैं-

1.यादें-हिंदी काव्य-संकलन

2.सफर-हिंदी काव्य-संकलन

3.यादों का सफर हिंदी काव्य-संकलन

4.सत्य का दर्शन-संत कबीर की अमृतवाणी

कवि, कविता को चार पहर की कविता मानता है। उनका 'यादें' नामक काव्यसंकलन उनके जीवन के विविध प्रसंगों को उजागर करता है। 'सफर' नामक उनका दूसरा संकलन भी जीवन के सफर को उद्घाटित करता है। इनका तीसरा महत्वपूर्ण काव्य संकलन है-'यादों का सफर'। लेखक जीवन में कविता और कविता में जीवन की खोज करता है। वह सहज भाव से ही कहता है-

''जीवन यादें, जीवन सपना, जीवन छोटी सरिता है।
सुख में रोना, दुख में हँसना, चार पहर की कविता है।''[21]

सुख-दुःख की इसी सच्चाई को अपने जीवन के प्रसंगों के सहारे लेखक ने अपने संग्रहों में प्रकाशित किया है। अपने कवि व्यक्तित्व को वे इस प्रकार लिखते हैं- ''मेरी पहली पुस्तक 'यादें', दूसरी पुस्तक 'सफर' और अब आपके सामने 'यादों का सफर' इस पुस्तक में आप अवश्य पायेंगे बचपन से जवानी, जवानी से बुढापे तक का पूर्ण रस। मुझे विश्वास है कि जीवन की सच्चाई भी बस इतनी है, सुबह, दोपहर, शाम और फिर रात जो इस पुस्तक में छिपी है, आप अवश्य ही इस सच्चाई को खोजकर मेरी रचनाओं का आनंद ले पाएंगे।''[22]

'यादों के सफर' काव्यसंकलन में कुल 87 कविताएँ संकलित की गई हैं। ये सभी कविताएँ जीवन रूपी सफर के सुख-दुःखों को व्यक्त करती है। शम्मी चौधरी ने कविताओं के अतिरिक्त कबीर के दोहों का 'संत कबीर अमृतवाणी'नाम से सरल भावार्थ लिखा है, यह दो जिल्दों में प्रकाशित है। 'सत्य स्वरूपा' उनके द्वारा लिखित सरल कुण्डलियों का संकलन है। इस संकलन में लगभग 180

कुण्डलियाँ संकलित हैं। इस प्रकार पुणे के कुछ खास कवियों या हिंदी सेवियों में आपका नाम भी अग्रणी कहा जा सकता है।

आसावरी काकड़े (23 जनवरी, 1950 ई.)

आसावरी काकड़े मराठी भाषी रचनाकार है। मराठी में इनके वैचारिक गद्य, पद्यलेखन और बालगीत संग्रह प्रकाशित हो चुके है। आसावरी काकड़े ने मराठी की तरह हिंदी में भी लिखा है। आपके दो कविता संग्रह 'मौन क्षणों का अनुवाद' (1997) और 'इसीलिए शायद' (2009) हिंदी में प्रकाशित हैं।

'मौन क्षणों का अनुवाद' छोटी-बड़ी 65 कविताओं की विशिष्ट काव्यकृति है। इसमें मनोभावों की अभिव्यक्ति है। कवयित्री मानती है कि हिंदी भाषा से उसका लगाव होने के कारण ही वह अपने भाव हिंदी में व्यक्त कर सकी। प्रस्तुत संग्रह की कविताएँ सामाजिकता के अनेक आयामों को छूती हैं। प्रकृति-प्रेम, मानव-प्रेम और जीवन की सच्चाई को ये कविताएँ उजागर करती हैं। आज की दौड़-धूप भरी ज़िन्दगी की सच्चाई इन कविताओं में अंकित है।

'इसीलिए शायद' कविता संग्रह में छोटी बड़ी कुल 62 कविताएँ संकलित की गई हैं। ये कविताएँ 1997 से 2009 के बीच विविध पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही है। इनमें भाव गंभीरता के लक्षण स्पष्ट परिलक्षित होते हैं। कुछ कर दिखाने की चाहत और चटपटाहट इनके काव्य की खास विशेषता है। जैसे- ''वह पंछी नहीं/वह तो/उड़ने की इच्छा है/जो/अथाह की थाह लेने/निकली है/ खुद से उभरकर!''[23] अनेक भावों को साथ लेकर चलने वाली ये कविताएँ स्पष्ट और सरल भाषा में लिखी हैं। 'मौन क्षणों का अनुवाद' और 'इसीलिए शायद' की कविताएँ मानव मन की गहराई तक उतर कर मानव मन को जीवन जीने की प्रेरणा देती हैं।

उद्धव महाजन 'बिस्मिल' (17 फरवरी, सन् 1950 ई.)

उद्धव महाजन हिंदी और उर्दू के जानकार कवि और ग़ज़लकार है। 'बिस्मिल' यह उनका उपनाम है। आपके अब तक छः काव्य संग्रह प्रकाशित हुए हैं। वे इस प्रकार है-

1.मेरा तसव्वुर - काव्य संग्रह (1999)

2.थोड़ा-सा आसमान - ग़ज़ल संग्रह (2003)

3.मिट्टी की खुशबू - ग़ज़ल संग्रह (2007)

4.हर्फ-ए-ग़ज़ल - ग़ज़ल संग्रह (2010)

5.धूप में साया - ग़ज़ल संग्रह (2011)

6.ग़ज़ल के साथ - ग़ज़ल संग्रह (2013)

उपरोक्त सभी किताबें अस्बाक् पब्लिकेशन, पुणे से प्रकाशित हुईं। इनके 'हर्फ-ए-ग़ज़ल' को छोड़कर सभी संग्रहों की लिपि देवनागरी है। उनका प्रथम ग़ज़ल संग्रह 'मेरा तसव्वुर' में वे लिखते हैं- ''मेरी कविता में चिड़ियों की चहक, भौरों की गुंजार, तितलियों की बहार, घाव सहलाती बयार, आत्मसमर्पण की बिछि हुई घास और आशीर्वाद-सा फैला हुआ नीला आसमान आदि कुदरत के कुछ नजारे भी मिलेंगे, पर प्रमुख रूप से मेरी कविता प्रेम के माहौल में पली है, बढ़ी है। प्यार के चंद लम्हों ने मेरी प्रतिभा को पंख दिए हैं। जिससे मैं कल्पना के पंखों के जरिए आसमान में ऊँची उड़ान लगाने की कोशिश कर रहा हूँ।''[24] पूरा ग़ज़ल संग्रह अधिकतर प्रेम कविताओं से सराबोर दिखाई देता है।

आपकी दूसरी काव्यकृति 'थोड़ा-सा आसमान' में 90 ग़ज़लें संकलित हैं। इसमें समकालीन बोध की अभिव्यक्ति दिखाई देती है। आज के गतिशील युग में माता-पिता के प्रति युवकों को नए दृष्टिकोण से देखने की प्रेरणा इसमें दी हुई है। जैसे -

''जो माँ के प्यार का साया अता नहीं होता
तो गम की धूप से मैं बचा नहीं होता''[25]

इन ग़ज़लों में कवि अपने माता-पिता, बड़े, बुजुर्ग और नेताओं के आदर्शों का पालन करने के महत्व को निरूपित करता है। देश में जातीयता की समस्या को दूर करने के लिए नेहरू, तिलक, गांधी और सुभाष बाबू के विचारों का पालन करने की आवश्यकता है। इस संदर्भ में वे लिखते हैं-

''दुआ बुजुर्गों की हमको भी काश मिल जाती,
हमारे सर पे भी 'थोड़ा-सा आसमाँ होता।''[26]

महाजन की ग़ज़लें धर्मनिरपेक्ष राज्य की संकल्पना से ओतप्रोत है। वे एक शेर में लिखते हैं-

''पहले तो फकत हिंदू थे, मुस्लिम थे
मगर आजबारूद है, त्रिशूल है, तलवार है हम लोग।''[27]

प्रस्तुत संग्रह की ग़ज़लें स्वदेश-प्रेम, मानव-प्रेम और समाज-प्रेम की सार्थक इकाई है। इन ग़ज़लों में राजनैतिक चेतना और सामाजिक चेतना भी दिखाई देती है।

ग़ज़लकार की तीसरी रचना 'मिट्टी की खुशबू' नज्म, ग़ज़ल और शेर आदि का संग्रह है। संग्रह की शुरूआत में नाअत है और बाद में ग़ज़ल, मुकरियाँ, तिड़कियाँ, नज्म आदि का संकलन किया गया है। इन ग़ज़लों में भ्रष्ट राजनीति की आलोचना की है-

''बहा देते है चंद वोटों की खातिर,
गरीबों का लहू सस्ता बहुत है।''[28]

अनेक विशेषताओं से युक्त इस ग़ज़ल संग्रह के बारे में डॉ. दामोदर खड़से ने लिखा है- ''श्री उद्धव महाजन 'बिस्मिल' की रचना पढ़ना जीवन की संवेदनाओं से गुजरना होता है। ग़ज़लों और नज्मों के रुप में महाजन की रचनाएँ मनुष्य के भीतर की आशा-आकांक्षाओं को शब्द देती है। बहुत कम शब्दों में जीवन के विस्तार, भावनाओं का आकाश और भीतरी तरंगों को इस संग्रह में बखूबी समेटा गया है।''[29]

उद्धव महाजन का 'हर्फ़-ए-ग़ज़ल' चौथा ग़ज़ल संग्रह है। इसकी लिपि उर्दू होने के कारण उसका विवेचन यहाँ नहीं किया है। इनका पाँचवा ग़ज़ल संग्रह 'धूप में साया' की ग़ज़लें प्रेम निरूपण से ओतप्रोत दिखाई देती है। भारत के राजनेता और अमीर लोग किस प्रकार देश के गरीब लोगों का खून चूसने का काम करते हैं इसपर भी 'बिस्मिल' साहब की नज़र गई है। एक जगह उन्होंने इसी सच्चाई को इस प्रकार निरूपित किया है-

''उससे न कर सवाल बड़ा आदमी है वो,
करने दे गोलमाल, बड़ा आदमी है वो।''[30]

इनका छटा ग़ज़ल संग्रह 'ग़ज़ल के साथ' में उपदेशपरक कविताएँ संकलित हैं। इसमें भारत की गरीबी का जीवंत चित्रण कई जगहों पर किया गया है। जैसे-

''गुरबत में मुझको देख के वो यूँ बदल गए,
पहचान कर भी मुझको कहा कोई और है।''[31]

इनकी ग़ज़लों में भारतीय समाज जीवन और भ्रष्ट राजनीति को परखा गया है। इन ग़ज़लों में विषय-वैविध्य के साथ शिल्प वैविध्य भी दिखाई देता है। इन ग़ज़लों की भाषा में मराठी, अहिरानी, अंग्रेजी, हिंदी, अरबी, फारसी और उर्दू शब्दों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में हुआ है।

डॉ.सुभाष तळेकर (8 अगस्त, 1951 ई.)

डॉ.सुभाष तळेकर हिंदी के आलोचक, अनुवादक और कवि हैं। आपका एकमात्र काव्य संकलन 'चाँद और रोटी' सन् 2014 में नंदादीप प्रकाशन, पुणे से प्रकाशित हुआ है। प्रस्तुत काव्य संकलन में लघु एवं दीर्घ प्रकार की कुल 104 कविताएँ संकलित हैं। डॉ.तळेकर ने काव्य संकलन के शुरू में ही आत्मकथ्य में लिखा है- ''जीवन की हर डगर तथा मोड़ पर मैंने जो जितना देखा, महसूस किया, भोगा और सहा है उसे, अर्थात् गर्भ-गृह में घनीभूत उन मूक वेदनाओं को, प्रस्तुत संकलन में जाने-अनजाने वाणी प्रदान की है।''[32] प्रस्तुत संकलन की कविताएँ किसी एक विशेषता को लेकर नहीं चलती, अपितु इसमें एकानेक समकालीन समय और संदर्भ की विशेषताएँ दिखाई देती है। इसमें स्त्री-विमर्श, सामाजिक चेतना, राजनीतिक चेतना, और प्रकृति-चित्रण दिखाई देता है। इसमें राष्ट्रीयता की पुकार और मानवता की वेदना मुखर होती है।

डॉ. कांतिदेवी लोधी (30 अप्रैल, 1952 ई)

डॉ. कांतिदेवी लोधी पुणे की प्रमुख कवयित्री है। आपकी कविताएँ विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती है। आपके पांच कविता संग्रह प्रकाशित हैं। आपकी प्रकाशित काव्य रचनाएँ इस प्रकार है-

1.भावों के पदचिन्ह - मार्च 2000

2.दस्तक देती आँधिया - दिसंबर 2003

3.छनकर आती धुप-मई 2005

4.देहरी के आरपार-अप्रैल 2009।

5.मौन टूटता है - दिसंबर, 2016

मन में छिपे भावों को कविता के माध्यम से व्यक्त करने का कार्य कवयित्री ने अपने प्रथम काव्य संग्रह 'भावों के पदचिन्ह' में अंकित किया है। इस काव्यसंकलन में कुल 65 कविताएँ संकलित हैं। कुछेक कविताओं को छोड़ दें, तो बहुतांश उपर्युक्त विषय वस्तु से संबंधित है। 'ठूंठ', 'सावन का पहला कदम', 'आकाश का दो विस्तार धरा को', 'गुलमोहर', 'आज याद आती है' आदि कविताएँ प्रकृति चित्रण से ओतप्रोत है। तो 'हम बदले युग बदलेगा', 'असमर्थता', 'मैं', 'ना ही महान', 'विषधूम्र' आदि इस संकलन की संदेशपरक कविताएँ है। 'आइना', 'झलक', 'महीना खत्म हुआ', 'अंतहीन डगर' आदि सामाजिक निरूपण करने वाली कविताएँ हैं। इस प्रकार इस काव्य संकलन की कविताएँ प्रकृति

चित्रण, प्रेम-निरूपण, सामाजिक और राजनीतिक यथार्थबोध को स्पष्ट करने में सजग हैं।

कवयित्री का दूसरा काव्य संकलन 'दस्तक देती आँधियाँ' 76 कविताओं का संकलन है। इनमें-1.अपने मन के भावों और विचारों की अभिव्यक्ति में सक्षम कविताएँ 2.प्रकृति-चित्रण तथा प्राकृतिक सौंदर्य को बिंबों, प्रतीकों द्वारा उद्‌घाटित करने वाली कविताएँ 3. राष्ट्रीय तथा सामाजिक भावनाओं का निरूपण करने वाली कविताएँ आदि तीन आयामों की कविताएँ हैं। 'विचार-प्रक्रिया' नामक कविता में मानव के लिए आवश्यक विचार प्रक्रिया पर कवयित्री ने प्रकाश डाला है।

कवयित्री का तीसरा काव्य संकलन 'छनकर आती धूप' 124 मुक्तकों का संकलन है। ये मुक्तक अनेक विषयों से संबंधित हैं। समकालीन परिवेशबोध, प्रकृति-चित्रण और जीवन के आनंद को इन मुक्तकों के सहारे कवयित्री ने बडे मनोहारी ढंग से उद्‌घाटित किया है।

'देहरी के आरपार' आपका चतुर्थ काव्य संकलन है। इसमें कुछ मुक्तक और 20 कविताएँ संकलित हैं। इन मुक्तकों में मानव को मनुष्यत्व के आयामों से परिचित कराने का प्रयास किया गया है साथ ही प्रकृति के मंजरों को संजोया गया है और स्त्री के प्रति समाज के दृष्टिकोण को चित्रित किया गया है।

''नारियों के अस्मत को खेल समझते हो
हैवान बने इंसा इतना न इतराओ
अब जब धरती फटेगी, ज्वालामुखी भडकेंगे
तुम होगे प्रथम लक्ष्य इतना समझ जाओ।''[33]

मनुष्य जीवन अनमोल है, सुंदर है। जहाँ देखो वहाँ सौंदर्य की गरिमा है। इसी सौंदर्य की वास्तविकता का परिचय प्रस्तुत काव्य पंक्तियों में दिखाई देता है।

'मौन टूटता है' यह कवयित्री का पांचवा कविता संकलन है। इसमें 125 कविताएँ संकलित है। कवयित्री के मन में कई प्रश्न उभर आते हैं। इन प्रश्नों पर मन में कसमसाहट पैदा होती है, इस कसमसाहट को कवयित्री ने कविता का विषय बनाया है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि कवयित्री भावुकता भरे गीत लिखती है। वह भावुकता जो मनुष्य को मनुष्यत्व से अवगत कराने में सक्षम है। सचमुच

अनुभूति का आत्मीय विस्तार इनके काव्य की प्रमुख विशेषता रही है।

डॉ.स्मिता दात्ये (14 मार्च, 1952 ई.)

डॉ.स्मिता दात्ये का एकमात्र कविता संग्रह- 'सूरज का उजला पोस्टर' प्रकाशित हैं।इसमें 76 कविताएँ संकलित है। कुछ छोटी-छोटी मुक्त छंद की हैं, तो कुछ बड़ी गहन भावों की अभिव्यक्ति में सार्थक हैं। प्रस्तुत काव्य संकलन की कविताएँ लेखिका के आंतरिक मन के भावों को व्यक्त करने में सार्थक दिखाई देती है। इनमें प्रकृति-चित्रण, मन की गुत्थियों की उलझन व उपदेशात्मक प्रवृत्ति की गहनता सहज दिखाई देती है। इनमें मन की जिज्ञासा और अच्छे समाज के निर्माण की प्रेरणा अवश्य दिखाई देती है।

डॉ. दीप्ति गुप्ता (25 जून, 1953 ई.)

डॉ.दीप्ति गुप्ता के अब तक 3 काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इन काव्यसंग्रहों के नाम है-'अंतर्यात्रा', 'अनुप्राणित' और 'काश'। उनका प्रथम काव्य संकलन 'अंतर्यात्रा' सन् 2005 में प्रकाशित हुआ है। इसमें संकलित कविताएँ जीवन के प्रति चिंतनशील दर्शन की अभिव्यक्ति में सार्थक दिखाई देती हैं। इन कविताओं में 'अंतर्यात्रा' नामक कविता विशेष महत्वपूर्ण है। 'रिश्ते', 'अंतर्यात्रा', 'निश्छल भाव', 'अवमूल्यन', 'भंवर', 'ईमान को क्या हो गया है', 'सुख की हार', 'जीवनसार', 'अँधेरा', 'कर्मफल', 'धरती का दुःख', 'उधेड़बुन', 'वक्तव्य', 'अंतरात्मा', 'बोझिल हवा', 'वतन', 'पीड़ा' और 'काला चाँद' ऐसी ही कविताएँ है।

कवयित्री का दूसरा काव्यसंकलन 'अनुप्राणित' में 32 कविताएँ संकलित की हैं। ये कविताएँ जीवन के विविध पहलुओं जैसे-सुख-दुख, हर्ष-विषाद, उत्थान-पतन, अँधेरे-उजालों से जुड़ी हुई हैं। निश्छल प्रेम से ओत-प्रोत इन कविताओं में 'अनुप्राणित', 'अमर प्रेम', 'अकेलापन' आदि प्रमुख है। संग्रह की कविता 'भुराभुरा वजूद' उदासी से भरे निराश जीवन की गाथा है। प्रेम, साहस और उदासी आदि से भरे जीवन को पूरी यथार्थता के साथ इन कविताओं में रेखांकित किया है।

लेखिका तीसरा काव्य संग्रह 'काश' में से 13 कविताएँ जीवन के शाश्वत सत्य 'मौत' पर आधारित है। तीन कविताएँ 'अब माँ है, निवास है', 'मुझ में बसी माँ' और 'माँ के जाने के बाद' ममतामयी माँ के व्यक्तित्व की पहचान दिलाती हैं। 'मेरी कलम रूक गई' यह कविता स्त्री विमर्श से ओत-प्रोत है। 'जियो जीवन

के साथ' यह कविता मनोबल बढ़ाने वाली सकारात्मक कविता है। 'कबीर तुम कहाँ हो' सामाजिक विकृतियों पर प्रहार करती हुई समाज की असलियत को ईमानदारी से पेश करती है।

इस प्रकार डॉ. दीप्ति गुप्ता की कविताएँ मानवीय संवेदनाओं के साथ मानव मन में मानवीयता के गुणों को भरना चाहती है।

डॉ. पद्मजा घोरपडे (जनवरी, 1955 ई.)

डॉ. पद्मजा घोरपडे पुणे के सर परशुरामभाऊ महाविद्यालय की अध्यापिका थीं। वह प्रसिद्ध कवयित्री हैं। कविता, कहानी, समीक्षा, पत्रकारिता, जीवनी और अनुवाद आदि विभिन्न क्षेत्रों में लेखनी चलाने वाली लेखिका का कवित्व रूप काफी वांछनीय रहा है। उनके प्रमुख कविता संग्रह इस प्रकार है-

1. जख्मों के हाशिए - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली (सन् 1991 ई)
2. पारदर्शी आँधियाँ - वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली (सन् 1993 ई)
3. संवादों के आकाश- संप्रेषन प्रकाशन, पुणे (सन् 2005 ई)
4. सपनों की राहें और समय का सच- युक्ति प्रकाशन, नई दिल्ली (सन् 2010 ई)

इनकी प्रथम कविता सन् 1972 ई. में लिखी गई थी। इस संदर्भ में वे लिखती है- ''गांव में दूर-दूर तक दिखाई देते थे हरे-भरे फैले हुए खेत और मैदान। एक दिन घर के दरवाजे पर खड़ी, डूबते हुए सूरज को देख रही थी और मन में कुछ उथल-पुथल हुई, कुछ पंक्तियाँ दिमाग में उमड़ने लगीं। ऐसा पहली बार हुआ था। उन पंक्तियों को मैंने कागज पर उतारा, तो देखा वह कविता थी...मेरी अपनी कविता।''[34] लेखिका सन् 1972 से निरंतर कविता लिखने में सक्रिय है। आपका प्रथम कविता संग्रह 'जख्मों के हाशिए' कुल 86 कविताओं का संकलन है। इस संग्रह को केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली की ओर से 'अहिंदी भाषी हिंदी लेखक पुरस्कार' तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा के हाथों प्रदान किया गया है। प्रस्तुत कविता संग्रह की भूमिका में कवयित्री ने लिखा है- ''प्रकृति के मंजर, गाँव, शहर, पल, घटनाएँ, राहें, मंजिल, स्वप्न, यथार्थ और व्यक्ति जब मृगजल के समान खिसकते चले गए तब उन्हें पाने के लिए बेचैन मेरी पागल चाह बेतहाशा दौड़ती रही और छटपटाते हिरण की तरह हकीकत बन कर रह गई। ये कविताएँ साक्षी हैं उस छटपटाती प्यासी पुकार की, उन अंतहीन यात्राओं की, उन सहमें संघर्षों की! जब हरियाली के मैदान के मैदान अचानक रेगिस्तान बन रहे थे, जब अपने ही घर आग उगल रहे थे, जब

देखते-देखते इमारतें खंड़हर बन रही थी और जब पलक झपकने से पूर्व ही व्यक्ति स्वप्न-से झर रहे थे तब मेरी ये कविताएँ जन्म ले रही थी चश्मदीद गवाह होने के लिए!''[35]

डॉ. पद्मजा घारपडे ने अनेक प्राकृतिक बिंबों, प्रतिकों एवं रुपकों का प्रयोग अपनी कविताओं में किया है। अनेक कविताएँ ऐसी भी दिखाई देती है जिसमें इतिहास के साथ-साथ वर्तमान समय की अभिव्यक्ति होती है, जैसे- ''इतिहास के पृष्ठ/पलटते-पलटते/कहाँ से आ गए/ये राख के ढेर/आओं चलें/ इस राख को ही/खाद बनाकर/हम उगाएँ/नए पेड़/नए पौधे/नयी पत्तियाँ/नए फूल/नये युग की/नयी पहचान।''[36]

'पारदर्शी आँधियाँ' की कविताएँ आधुनिकताबोध से युक्त दिखाई देती है। इसमें स्त्री विमर्श, प्रणय चित्रण, प्रकृति चित्रण आदि का निरूपण हुआ है। कवयित्री का तीसरा कविता संग्रह 'संवादों के आकाश' में संवादों के महत्व को लेखिका ने काव्यमय शब्दों में इस प्रकार निरूपित किया है-

''घर लौटनेवालों की राह है कविता,
जीवन मार्ग के परे यात्रा है कविता,
काल के अवकाश में शब्द है कविता
शब्दों के खोए संवादों की तलाश है कविता।''[37]

कवयित्री का चौथा काव्य संकलन सपनों के अनदेखे दृश्य पर आधारित है। कवि ने एक स्कूली लड़की को सपनों में बुना है। इसमें चित्रित लंबी कविताओं में वह अपने अतीत की स्मृतियों को ताजा करने का आभास मिलता है। इसमें सपनों के माध्यम से समय के सच को कहने का कवयित्री का प्रयास अप्रतिम रहा है।

इसप्रकार डॉ. पद्मजा घोरपड़े की कविताएँ अनेक विशेषताओं के साथ-साथ समय का सच कहने में सजग दिखाई देती हैं।

शरदेन्दु शुक्ला 'शरद' (16 नवंबर, 1955 ई.)

शरदेन्दु शुक्ला 'शरद' हास्य-व्यंग्य कवि हैं। आपकी कृति 'हास्यास्पद' में 80 कविताएँ संकलित है। इन कविताओं में व्यंग्य के माध्यम से राजनीतिक, सामाजिक और न्यूनाधिक मात्रा में आर्थिक तथा अन्य पहलुओं को उजागर किया गया है। कवि मानता है कि आज हमारा जो राजनैतिक परिवेश है वह अनेक सामाजिक एवं राजनीतिक विषमताओं से भरा हुआ है। इन परिस्थितियों

को देखकर कवि का मन दुखी होता है। कवि मानता है कि इस परिवेशजन्य पतन के पीछे कहीं न कहीं हमारे राजनीतिज्ञों का हाथ है। 'सत्य-असत्य में अंतर' नामक कविता में कवि ने राजनीति के इसी पक्ष पर प्रकाश डाला है।

प्रस्तुत संकलन की कविताओं में कवि ने राजनीतिक भ्रष्टाचार को उद्घाटित करते हुए इस कुप्रवृत्ति को समाज से उखाड़ फेंकने को प्रेरित किया है। 'चौबीस कैरेट देशभक्ति' इस कविता में कवि ने इस कल्पना को बखूबी स्पष्ट करने का प्रयास किया है। इसलिए कविता में जवान बेटा अपने बूढ़े बाप को समझाता है-

''शोषण मुक्त, सफेदपोश माफियों की लिस्ट बनाउँगा
जब तक जिंदा हूँ इन्हें श्मशान पहुँचाऊँगा।''[38]

वर्तमान राजनीति की भयानक परिस्थिति को देख कवि आक्रोशित होता है और विद्रोह करने के लिए लालायित होता है। इस विद्रोह को व्यक्त करने के लिए कवि ने जिस भाषा का प्रयोग किया है वह भी अत्यंत हास्य-व्यंग्योक्तियों से ओतप्रोत दिखाई देती हैं। शुक्ल की भाषा स्पष्ट और सरल है। उनकी इसी विशेषता को प्रोफेसर कृष्णकुमार गोस्वामी ने इस प्रकार स्पष्ट किया है- ''आज के यथार्थ जीवन को अपनी धार-धार व्यंग्य की मार मारने वाले युवा कवियों में है-शरदेन्दु शुक्ला 'शरद' और उनका काव्य-संकलन 'हास्यास्पद'। इस संकलन की अधिकतर कविताओं में शुक्ला ने यथार्थ को व्यंग्य विचार और मानवीय त्रासदी के संदर्भ में प्रस्तुत करने का जो विपुल प्रयास किया है वह कवि के भीतर उमड़ने वाली तिलमिलाहट और छटपटाहट को उजागर करता है।''[39] शरदेंदु शुक्ला मंचीय कवि हैं। समाज के विगत 65 सालों से हो रहे शोषण के खिलाफ उनका संघर्ष कविता के माध्यम से जारी है। उनकी लगभग सभी कविताएँ इसी भ्रष्ट राजनीति का विरोध करती हुई पाई जाती हैं।

डॉ. रजनी रणपिसे (9 अक्टूबर, 1955 ई.)

डॉ. रजनी रणपिसे पुणे के फर्ग्युसन महाविद्यालय की पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष थी। उनका एकमात्र कविता संग्रह 'एक नदी-सी बही होगी' (2014) है। इसमें छोटी-छोटी 42 और मोटी 90 इस तरह कुल 112 कविताएँ संकलित हैं। ये कविताएँ मुक्तछंद में लिखी हैं। अपने जीवन में आए हुए तरल अनुभवों को इनमें व्यक्त किया गया है। इन कविताओं की कुछ कविताएँ ग़ज़ल के ढंग की प्यार भरी उक्तियाँ हैं। इस तरह की कविताओं में 'देन', 'मधुमास', 'खयाल', 'सोच',

'लिख लेती हूँ', 'खास', 'खयालों में', 'दिल्लगी', 'तुम्हें देखने के बाद', 'खत तुम्हारा', 'तुम्हारा प्यार', 'गम नहीं', आदि प्रमुख है। कवयित्री ने कुछ कविताओं में कर्मरत रहने की सलाह भी दी है ऐसी कविताओं में-'लकीरें', 'याद रखो', 'डटे रहो' आदि प्रमुख है। भारतीय मूल्यों और संस्कृति की खोज 'दहलीज' और 'रंग' नामक कविता में पाई जाती है। 'सुना है बुद्धदेव', 'पाषाण पुष्प', और 'बधाई' ऐसी कविताएँ हैं जो आज के जीवन की यथार्थ तसवीर दिखाती हैं और जीने की सही राह भी दिखाती हैं। इस प्रकार कई संभावनाओं को संजोती रजनी रणपिसे की कविताएँ प्यार और विश्वास के साथ जीवन में डटे रहने की प्रेरणा देती हैं।

इंदिरा शबनम 'पूनावाला' (24 नवंबर, 1956 ई.)

इंदिरा शबनम 'पूनावाला' सिंधी, हिंदी और उर्दू आदि भाषाओं की जानकार कवयित्री है। आपकी कविताएँ अनेक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में छपती रहती है। आपकी प्रकाशित काव्य रचनाएँ इस प्रकार हैं-

1.'तस्वीरें' मुक्त छंद की हिंदी कविताएँ सन् 2002 ई.
2.'सरगोशियाँ' (हिंदी ग़ज़ल संग्रह) सन् 2004 ई.
3.'सिलसिले' (हिंदी कविता संग्रह) सन् 2003 ई.
4.'दस्तक' (हिंदी कविता संग्रह) सन् 2004 ई.
5.'मेरी प्रतिनिधि कविताएँ' (हिंदी कविता संग्रह) सन् 2008 ई.
6.'हकीकतें' (हिंदी कविता संग्रह) सन् 2011 ई.

आपकी कविताओं में विषय वैविध्य और विषय व्यापकता के विविध पहलू नज़र आते हैं। स्त्री-विमर्श और मोह रहित स्त्री-प्रेम का निरूपण, आज के भ्रष्ट समाज व्यवस्था पर प्रहार, राजनैतिक दुर्गुणों की निंदा, आधुनिक जन-जीवन की आलोचना, संघर्षमय जीवन की व्याख्या, सांसारिक जीवन में रिश्तों-नातों में पनपने वाली समस्याएँ, आतंकित समाज व्यवस्था की निंदा, आम आदमियों पर होने वाले अत्याचारों की आलोचना आदि तमाम समस्याओं को इनकी कविता में वाणी मिली है। यह वाणी कभी हास्य-व्यंग्य का सहारा लेती है तो कभी पारंपारिक शैली में अभिव्यक्त प्रतीकों एवं बिंबों का।

कवयित्री ने साहित्य के माध्यम से समाज जागृति का सशक्त प्रयास किया है। इस संदर्भ में उन्हीं की टिप्पणी ध्यातव्य है- ''एक 'शबनमी कतरे' ने इन्सान और इन्सानियत की 'इबादत' करते हुए 'मुखरित होने का आनंद' प्राप्त किया, दुनिया की 'तस्वीरें' दिखाकर, खूब 'सरगोशियाँ' की, इस तरह एक

सिलसिला चलता रहा! अब हाँ 'दस्तक' दे रही है 'इन्दु' दिलों पर... भागो नहीं जागो...सच्चाई को खुली आँखों से मैं, आप, हम सब देखें, कोई उपाय ढूँढें इन सामाजिक-आर्थिक, युवाओं, महिलाओं-धार्मिक विडंबनाओं को खुली आँखों से देखें, नजरें न चुराएँ, कि भई हमें तो कुछ लेना-देना नहीं है।''[40] प्रस्तुत टिप्पणी समाज में घटित समस्याओं को रोकने वाले नैतिक उत्तरदायित्व की ओर संकेत करती है। आपकी कविताएँ समाज उद्‌बोधन से ओत-प्रोत है।

अलका अग्रवाल (10 सितंबर, 1956 ई.)

अलका अग्रवाल पुणे के प्रतिष्ठित कान्वेंट में अध्यापिका के रूप में कार्यरत कवयित्री है। इनके तीन कविता संग्रह प्रकाशित हैं। प्रथमतः सन् 2003 ई. में माँगलिक गीतों पर आधारित पुस्तक 'माँगलिका' प्रकाशित हुई। इसमें माँग के गीत, ब्याह के गीत, विदाई के गीत आदि तीन प्रकार के गीत प्रकाशित हैं। तत्पश्चात् सन् 2011 ई. में बालकविता संग्रह 'बच्चों की दुनिया' प्रकाशित हुई। इनका प्रमुख कविता संग्रह है-'विविधांजलि'। यह संग्रह सुलभ प्रकाशन लखनऊ से सन् 2012 ई. में प्रकाशित हुआ है। इस संग्रह में कुल 87 कविताएँ संकलित हैं। कुछ छोटी, कुछ बड़ी ये कविताएँ विविध विषयों पर आधारित हैं, इसीलिए तो इसका नाम विविधांजलि रखा गया है। इसमें ईश आराधना, नारी की स्थिति का वर्णन, वर्तमानकालीन भारत दुर्दशा का चित्रण, गुरू नमन, प्रकृति चित्रण, अस्तित्ववादी दर्शन, ग्लोबलाईजेशन की स्थिति का अंकन, बुढ़ापे के एहसास का वर्णन अत्यंत भावुकता के साथ वर्णित है। इस संग्रह की कविताओं को पढ़ने पर स्पष्ट परिलक्षित होता है कि कवयित्री भावुक है और भावुकता के कारण ही विविध विषयों से संबंधित जीवंत समस्याओं का चित्रण उन्होंने इस संग्रह में किया है। अतः कह सकते हैं कि एक कान्वेंट स्कूल की अध्यापिका भी इस पुणे के कविमय वातावरण से बच नहीं पाई है।

पुष्पा गुजराथी (25 दिसंबर, 1958 ई.)

पुष्पा गुजराथी पुणे की नवोदित कवयित्री है। आपका एक मात्र काव्य संग्रह 'अंजुरी' सन् 2008 ई. में प्रकाशित हुआ है। प्रस्तुत संकलन में कुल 32 कविताएँ संकलित है। इनकी अधिकांश कविताएँ प्रेमपरक है। इनमें अपने प्रेमी को समर्पित व्यक्तित्व और वर्तमान में जीने की चाह को दर्शाया है। नवोदित कवयित्री होकर भी हिंदी काव्य में अपना प्रदेय देने का सफल प्रयास इस कवयित्री ने किया है।

डॉ. इंदु पांडेय (22 जनवरी, 1963 ई.)

डॉ. इंदु पांडेय का एकमात्र कविता संग्रह 'आज़ाद हिंदुस्तान में कैद हूँ' सन् 2000 ई. में प्रकाशित हुआ है। प्रस्तुत संकलन में कुल 47 कविताएँ संकलित है। आपकी कविताओं में मानवीय संवेदनाओं, स्त्री-विमर्श और आजाद भारत की वर्तमान स्थिति (सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, प्राकृतिक) आदि की सशक्त अभिव्यक्ति हुई है।कविताओं के विषय विविध प्रसंगों पर आधारित है। इस काव्यसंग्रह के मूल में राष्ट्रीय संवेदना है। आधुनिक भारत की विविध समस्याओं पर आधारित कविताएँ इनमें हैं। संग्रह की प्रथम कविता माँ शारदा की स्तुति से शुरू होती है। माँ शारदा की स्तुति में कवयित्री अनायास कहती है-

''तेरे बिना माँमूक संसार''[41]

राष्ट्रीयता से ओतप्रोत कविताओं में 'पथिक', 'ललकार', 'मैं आजाद भारत में कैद हूँ', 'देशभक्ति', 'माँ भारती पुकारती', 'जिस देश को अपना कहते हो', 'भारत का लाल', 'हे भगवान', 'हम विश्व विजयी' आदि प्रमुख है। 'ललकार' नामक कविता में कवयित्री देश के नौजवानों को देश की रक्षा हेतु इस प्रकार ललकारती है-

''ना सोओ चादर तान के दुश्मन घुस आया है घर में''[42]

कवयित्री ने बदलती स्त्री-संस्कृति पर प्रहार किया है। वह स्त्री में इतना परिवर्तन नहीं चाहती कि वह अपनी संस्कृति को भूल जाएं और किसी अन्य पाश्चात्य संस्कृति का स्वीकार करे। पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के आदर्श व्यक्तित्व को सामने रखकर भारतीय नारीत्व के विविध गुणों से वह परिचित कराती है।

पर्यावरणीय समस्या विश्व की समस्या है, इस समस्या के पीछे कहीं न कहीं मनुष्य की भौतिक प्रगति है। कवयित्री ने इन समस्याओं से पाठकों को भलीभाँति परिचित कराया है।

इस प्रकार आपकी कविताएँ अनेक विषयों को साथ लेकर चलती है और मनुष्य को मनुष्यत्व से परिचित कराती है।

संजय भारद्वाज (31 मार्च, 1965 ई.)

संजय भारद्वाज द्वारा लिखित कविता संग्रह 'मैं नहीं लिखता कविता' मार्च, 2014 में प्रकाशित हुआ है। इसमें लगभग 58 कविताएँ और 25 मुक्तकों

को संकलित किया गया है। प्रकृति, पर्यावरण, शब्दों का महत्व और मानवता की पुकार इन कविताओं में दिखाई देती है। भारद्वाज के विचारों में संवेदनशीलता के स्वर कूट-कूट कर भरे हैं। इनकी कविताओं में कई जगह पर यह उभरकर सामने आती है। 'घर', 'प्रेम', 'मील का पत्थर', 'अभिमन्यु', 'गरीबी हटाओ', 'रिश्ता' आदि ऐसी ही कविताएँ हैं। उनकी संवेदनशीलता राजनीति, सामाजिकता, नैतिकता और प्रकृति चित्रण आदि कई पैमानों पर नजर आती है। 'राजनीति', 'मानदण्ड', 'कूटनीति', 'मेरा देश कब होगा आजाद', 'बेचारा राजा', 'पाखण्ड' आदि राजनीति के परिप्रेक्ष्य में लिखी कविताएँ हैं। पर्यावरण की दृष्टि से लिखी हुई कविताओं में 'वृक्षारोपण', 'गिलहरी', 'हरी-भरी' आदि प्रमुख हैं। इस तरह कई आयामों को छूती यह कविताएँ कवि के संवेदनशील मन की उपज है और पुणे के काव्य साहित्य में अपना अलग महत्व रखती है।

डॉ.चेतना राजपूत (11 नवंबर, सन् 1965 ई.)

डॉ.चेतना राजपूत पुणे के वाडिया कॉलेज की अध्यापिका और एक सजग कवयित्री है। उनकी कविताएँ विभिन्न साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। आपका एक काव्य संकलन 'ओस-कण' प्रकाशित हुआ है।

विवेचित काव्य-संकलन 'ओस-कण' (2005) में कुल 51 कविताएँ संकलित हैं। समकालीन युगबोध से प्रभावित इन कविताओं में आज की अनेक जीवंत समस्याओं का चित्रण पाया जाता है। संग्रह की प्रथम कविता 'वर दे वीणावादिनी वर दे' और द्वितीय कविता 'गुरु वंदना' मंगलाचरण की द्योतक हैं। प्रस्तुत संकलन की कविताएँ स्तुतिपरक एवं मंगलाचरण से ओतप्रोत, व्यंग्यात्मकता का सहारा लेती हुई समकालीन जीवन की विविध समस्याओं पर प्रकाश डालती हैं। इनमें भारतीय लोकोत्सव की झलक, नारी महिमा, प्रकृति-चित्रण और मानवतावादी दृष्टिकोण की स्पष्ट अभिव्यक्ति दिखाई देती है। कविताओं की भाषा स्पष्ट, सरल और परिमार्जित है। अतः कहा जा सकता है कि आपकी कविताएँ युगानुकूल हैं।

डॉ. भोलादत्त जोशी (11 मार्च, 1966 ई.)

भोलादत्त जोशी पुणे के केंद्रीय विद्यालय में कार्यरत होनहार अध्यापक और साहित्यकार हैं। उन्होंने लगभग छः कविता संग्रहों का सृजन किया है। उनके काव्य संकलन है - 'श्रद्धांजलि' (सन् 1994 ई.), 'प्रेरणा के स्वर' (सन् 2004 ई.), 'घरौंदा' (सन् 2009 ई.), 'मन के गीत' (सन् 2010 ई.), 'राह तलाशती आँखें' (सन् 2010 ई.) और 'अनन्त की ओर' (सन् 2011 ई.) आदि।

'श्रद्धांजलि' इस संग्रह में कुल 57 कविताएँ संकलित है। ये कविताएँ राष्ट्रप्रेम और राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत है। 'प्रेरणा के स्वर' में 34 कविताएँ संकलित हैं। ये कविताएँ भ्रष्टाचार के खिलाफ आवाज उठाती हैं और राष्ट्रीय एकता निर्माण में हाथ बँटाती हैं। 'घरौंदा' में 32 कविताएँ संकलित हैं। इस संकलन की कविताएँ देश की एकता का वहन करती हैं। 'मन के गीत' में 32 गीत संकलित हैं। ये गीत भी मानव प्रेम और मनुष्यता की तलाश करते हैं। 'राह तलाशती आंखें' में 43 कविताएँ संकलित हैं। इनमें कर्तव्य, नीति, अनुशासन, राष्ट्र, प्रकृति, बलिदान, ईश्वरी सत्ता आदि के बारे में विचार व्यक्त किए गए हैं। 'अनन्त की ओर में 49 कविताएँ संकलित हैं। इनमें राष्ट्रप्रेम और नीति के महत्व को उद्घाटित करने वाली कविताएँ सम्मिलित हैं। इस प्रकार राष्ट्र के लिए समर्पित व्यक्तित्वों का निर्माण करने की चाह भोलादत्त जोशी रखते हैं। 'सुमन की समता' इस कविता में वे पुष्प के माध्यम से समता का निर्वाह करते हैं। देखिए -

''जहाँ सुमन देवालय चढ़ता,
वही मदिरालय द्वार सजाता।
नेतृवर्ग का हार बनकर,
आदर का सूचक बन जाता।''[43]

भोलादत्त जोशी की कविताएँ समकालीन समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में लिखी गई है। इसमें सबसे महत्वपूर्ण कथ्य सामाजिक एकता से संबंधित है। अतः पुणे के काव्य जगत् में जोशी की कविताएँ सदा अक्षुण्ण बनी रहेगी।

पुणे के कतिपय हिंदी कवियों का नामोल्लेख

उपर्युक्त कवियों के अतिरिक्त पुणे के हिंदी काव्य जगत में अपना स्थान रखने वालों में डॉ.सुनील देवधर कृत 'मत खींचों अंतर रेखाएँ' (1994), डॉ. सविता सिंह कृत 'सपाट बयानी', मृदुला शर्मा का 'एहसास' और श्रीमती स्वाति चड्ढा का 'मेरे एहसास' आदि प्रमुख है। नीला महाडिक मूलतः हाइकू लेखिका हैं और इनकी कविताएँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। पुणे में कुछ ऐसे कवि हैं, जो उर्दू में लिखते हैं। ये उर्दू के कवि होने के बावजूद भी यहाँ उनका नामोल्लेख करना जरूरी है। इसके दो प्रमुख कारण हैं, एक तो हिंदी और उर्दू में लिपि भेद को छोड़कर काफी अंतर नहीं है। दूसरा कारण यह है कि ये उर्दू के गज़लकार और शायर, कवि गोष्ठियों के माध्यम से हिंदी के विकास में

सहयोग देते हुए नजर आते हैं। ऐसे कवियों में नजीर फतेहपुरी, अपर्णा कडसकर, अनिल अब्रोल, मुमताज मुनव्वर, शमशाद जलील शाद, यासीन बरारी, रफिक काझी, वरयाम सिंघ ऐंधन, स्वरांगी साने, डॉ. ज्योति किराड, रमेश सक्सेना, निर्मला राजपूत आदि प्रमुख हैं। इनकी कविताएँ हिंदी और उर्दू दोनों भाषाओं की विविध पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं।

पुणे के काव्यजगत की विशेषताएँ

पुणे में आज लगभग 50 के करीब कवि हिंदी में सृजनरत हैं अर्थात् यहाँ काव्य लिखने का माहौल बन चुका है। यहाँ पर रहने वाला सामान्य आदमी भी अगर किसी काव्यगोष्ठी में जा पहुँचता है, तो माहौल को देखकर उसकी भी मंशा कविता करने की होती है और दूसरी बार वह अपनी कविता किसी पेज पर लिखकर ही काव्यगोष्ठी में पहुँचता है। अर्थात् मजरुह सुल्तानपुरी वे लफ़्ज़ों में ''मैं अकेला ही चला था जानिबे मंजिल मगर, कारवां बढता रहा, लोग मिलते रहे।'' ऐसी स्थिति आज पुणे के काव्य जगत में दिखाई देती है। हरिनारायण व्यास जैसे दिवंगत कवि का सहवास पुणे को लगा और एक अलग ही काव्यमय वातावरण बन गया। इस वातावरण में और अधिक जीवंतता लाने का प्रयास डॉ. दामोदर खड़से, डॉ. पद्मजा घोरपडे, डॉ. कांतिदेवी लोधी आदि ने किया। वर्तमान में पुणे में कवियों की भीड़-सी नजर आने लगी है। इन कवियों की कविताएँ मजबूरन लिखी हुई नहीं है अपितु इनमें उनकी संवेदना साफ झलकती है। समकालीन जीवन का संपूर्ण परिवेश इन कविताओं में पाया जाता है। घर की समस्या हो या परिवार की, सामाजिक समस्या हो या राजनीति की सभी का वस्तुगत वर्णन पुणे के काव्यजगत् की प्रमुख विशेषता है। स्त्री विमर्श, दलित विमर्श आदि हिंदी साहित्य की आधुनातन प्रवृत्तियाँ भी इन कविताओं में पाई जाती है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि पुणे के हिंदी काव्यजगत् में अनेकविध ज्वलंत समस्याओं का चित्रण पाया जाता है और स्वान्तःसुखाय और परहित दोनों की भावना इन कवियों में पाई जाती है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि पुणे के हिंदी भाषी और अहिंदी भाषी कवियों का हिंदी काव्य में सफल योगदान रहा है। इन कवियों में से कुछ मात्र कवि ही नहीं हैं अपितु हिंदी की अन्य विधाओं पर भी इनका विशेष अधिकार दिखाई देता है। हिंदी कथा साहित्य में लेखनरत इन कथाकारों का अध्ययन निम्नांकित बिंदुओं में किया जा रहा है।

हिंदी कथा साहित्य को पुणे की देन

कथा साहित्य को प्रमुखतः दो वर्गों में विभाजित किया जाता है-उपन्यास और कहानी। प्रथमतः पुणे के प्रमुख उपन्यासकारों का संक्षिप्त परिचय देखेंगे और तत्पश्चात पुणे के कहानी साहित्य पर दृष्टि डालेंगे।

पुणे का हिंदी उपन्यास साहित्य

पुणे में हिंदी उपन्यास लेखन की परंपरा ज्यादा पुरानी नहीं है। पुणे के हिंदी उपन्यासकारों की संख्या भी कविता और कहानी लेखकों की तुलना में कम है। इन उपन्यासकारों में रामचंद्र थोरात,प्रभा माथुर, डॉ. दामोदर खड़से और डॉ.इंदु पांडेय आदि प्रमुख हैं। उपन्यासकारों की वरिष्ठता के अनुसार उनके उपन्यास साहित्य का परिचय निम्नानुसार दिया गया है।

रामचंद्र थोरात (जन्म 1 अगस्त, 1936 ई.-24 सितंबर, सन् 2016 ई.)

रामचंद्र थोरात पुणे के प्रमुख उपन्यासकार हैं। आपने हिंदी में उपन्यास, कहानी और नाटक आदि विधाओं में लेखन किया है, पर आपका मन अधिक रमा है उपन्यास विधा में ही। आपके उपन्यास हैं-'बवंडर' (2000), 'पतन' (2006), 'प्रपंच' (2010), 'अंगारे' (2010), 'दरार' (2010), 'प्रहार' (2011), 'प्रताड़ना' (2013) 'शहादत' (2014) और 'चाँदी का घाव' (2015) आदि।

रामचंद्र थोरात मराठी भाषी होकर भी हिंदी में लिखे उनके उपन्यास पूर्णतः हिंदी उपन्यासों की शैली पर आधारित दिखाई देते हैं। 'पतन', 'प्रपंच', 'अंगारे', 'प्रहार''बवंडर' और 'प्रताड़ना' में पूर्णतः महाराष्ट्रीय भौगोलिक परिवेश का विशेषकर पुणे के आसपास का चित्रण दिखाई देता है। 'बवंडर', एक आंचलिक उपन्यास है जो बीड़ जिले के गड़ेरियों के जीवन पर आधारित है। इसमें इन गड़ेरियों की संपूर्ण जीवन पद्धति का विषद चित्रण दिखाई देता है। 'प्रहार' में आदर्शवादी चरित्रों को अंकित किया गया है। 'पतन' उपन्यास में एक संगीतकार के पतन की कहानी अंकित की गई है। 'प्रपंच' में सांसारिक घटनाओं का उल्लेख किया गया है। 'अंगारे' उपन्यास में एक आदर्शवादी डॉक्टर और एक आदिवासी लड़की की व्यथा को अंकित करते हुए अंत में दोनों को एक साथ जीवन व्यतीत करते दिखाया गया है। 'दरार' पुनर्जन्म पर आधारित है। 'शहादत' उपन्यास उन शहीद युवक और युवतियों से संबंधित है, जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में हिस्सा लेकर अपने आप को शहीद किया। 'चाँदी का घाव' एक मनगढंत लोक आख्यायिका है, जिसे लेखक ने आधुनिक परिवेश के

मुताबिक उपन्यास में वर्णित किया है। एक मनोरंजक और अनहोनी कहानी है- चाँदी का घाव।

इस प्रकार विविध विषयों पर आधारित रामचंद्र थोरात के उपन्यास पुणे के हिंदी उपन्यास साहित्य में अपना उल्लेखनीय नाम दर्ज कराते हैं।

प्रभा माथुर (सन् 1937 ई.)

प्रभा माथुर पुणे की प्रमुख उपन्यासकार है। उन्होंने कविता के साथ ही साथ कहानियों और उपन्यासों की रचना भी की है। आपका एकमात्र उपन्यास ''धुली धुली शाम का उज़ाला'' सन् 2004 ई. में प्रकाशित हुआ है। यह सामाजिक विडंबनाओं पर प्रहार करता है। उपन्यास की संपूर्ण कथा स्त्री पात्र नीता पर आधारित है, जो एक सुंदर और सुशील लड़की होने के बावजूद समाज से प्रताड़ित होती है। उसके चेहरे पर लुकोडरमा का दाग है। नीता एक ढाढसी युवती है। वह अपने बलबूते पर डॉक्टरी की पढ़ाई पूरी करती है। उसके जीवन में डॉ.मनीष आता है। डॉ.मनीष उससे बेहद प्यार करता है पर नीता के समझाने से वह अन्य लड़की नीशा से शादी करता है और नीता लुकोडरमा के अनुसंधान हेतु अमरिका चली जाती है। नीता लुकोडरमा पर अनुसंधान करना चाहती है क्योंकि वह जानती है कि समाज में स्त्रियों की स्थिति अत्यंत दयनीय है और ऐसे दाग का ग्रहण स्त्रियों को और अधिक लांछित करता है। एक स्त्री की प्रताडना कितनी होती है, उसे नीता के शब्दों में देखिए- ''छूत की बीमारी कहकर लोगों ने तिरस्कार किया। रिश्तेदारों ने नाता तोड़ रखा, समाज ने रहने के काबिल नहीं समझा।''[44] लेखिका के दृष्टिकोण से उपन्यास में चित्रित समस्या एक अकेली नीता की समस्या नहीं है, अपितु दुनिया की तमाम नारियों की समस्या है। ''वैसे भी समाज नारियों को मान्यता नहीं देता। वे दूसरे दर्जे का जीव मानी जाती हैं। फिर ऐसी कोई ग्रहण लगाने वाली मिल जाए तो नरक के सिवा क्या रास्ता है उसके पास।''[45] नीता अमरिका में जाकर अपने उद्देश्य में सफल हो जाती है। इस सफलता के पीछे वह अपना सर्वस्व अर्पण करती है। लेखिका का कहना है कि समाज में स्त्रियों की जो दशा रही है उसको बदलने के लिए स्वयं स्त्री को हरसंभव प्रयास करने चाहिए। हर स्त्री को भारतीय संस्कृति में जीना चाहिए न कि पाश्चात्य भद्दी संस्कृति में। प्रस्तुत उपन्यास इन्हीं विशेषताओं को डॉ.नीता के व्यक्तित्व के माध्यम से अधोरेखित करता है। प्रस्तुत उपन्यास के बारे में कमलेश्वर ने ठीक ही लिखा है- ''धुली धुली शाम का

उज़ाला' निश्चय ही नारी की विपुल पीड़ा की संघर्ष कथा है, जो काफी हद तक अव्यक्त रह जाता है। नारी की अव्यक्त पीड़ा का अहसास ही इस उपन्यास को महत्वपूर्ण और पठनीय बनाता है।''[46] कमलेश्वर जी के इन शब्दों से और उपन्यास पढ़ने से पता चलता है कि निश्चित इसमें नारी पीड़ा कूट-कूटकर भरी हुई है। यह नारी पीड़ा उस कोढ़ सदृश बीमारी की भाँति है, जो एकबार लग जाये तो निकलने का नाम न लेती हो। प्रस्तुत उपन्यास पठनीय, रमणीय और समाज में उच्च नैतिक आदर्शों की स्थापना करने वाला एक आदर्श कोटि का उपन्यास माना जा सकता है।

डॉ.दामोदर खड़से (11 नवंबर, 1948 ई.)

डॉ.दामोदर खड़से पुणे के प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं। उनके अब तक दो उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं- 'काला सूरज' (1980) और 'भगदड़' (1996)। 'काला सूरज' उपन्यास आधुनिकता बोध से ओतप्रोत दिखाई देता है। प्रस्तुत उपन्यास में आधुनिक स्त्री जीवन की कथा विविध प्रसंगों के माध्यम से प्रतिपादित की गई है। उपन्यास का केंद्रबिंदु कैलाश नामक पात्र है। कैलाश पत्रकार है। कैलाश मुंबई के प्रतिष्ठित अखबार का उपसंपादक है। अपने कार्य के प्रति दक्ष है। कैलाश विवाहित होकर भी अकेला जीवन जीता है। उसकी पत्नी चाहती है कि वह अपने पिता के प्रेस में कार्य करे, यहाँ पर कैलाश का स्वाभिमान उसे ललकारता है इस कारण वह जर्नालिज़्म का कोर्स ज्वाइन कर लेता है। यहीं से अपनी पत्नी के साथ दरार बढ़ती है। इसी समय उसका संबंध गीता नामक स्त्री से होता है। वह विवाहिता होकर भी कैलाश से प्रेम करने लगती है। जब गीता के पति को इस बात का पता चलता है तब वह गीता से स्पष्ट कहता है कि वह कैलाश से संबंध तोड़ दे। इस विघटन भरी स्थिति में एक तीसरी कथा, कथाप्रवाह में जुड़ जाती है। पामेला नामक कुँवारी कैलाश के जीवन में आती है। यह स्त्री पहले वाली स्त्रियों की भाँति कैलाश पर अपना अधिकार नहीं जताती। वह उससे प्रेम तो करती है पर उसे पति के बंधन से मुक्त करती है। वह गर्भवती रहती है। वह ॲबॉर्शन नहीं करती और मातृत्व का बराबर निर्वाह करती है। प्रस्तुत उपन्यास में उपन्यासकार ने समाज के परंपरात्मक दृष्टिकोण को तिलांजलि दी है। प्रस्तुत उपन्यास पाश्चात्य विचारधारा से प्रभावित दिखाई देता है।

डॉ. दामोदर खड़से का दूसरा उपन्यास 'भगदड़' राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली से सन् 1996 ई. में प्रकाशित हुआ है। 'भगदड़' उपन्यास का नायक

महावीरप्रसाद है। महावीरप्रसाद रिटायर्ड हेडमास्टर है। वह संवेदनशील व्यक्ति है। दुर्भाग्यवश उसके गले में तीन ट्यूमर हैं। कैंसर की आशंका से भयग्रस्त वह जाँच के लिए मुंबई आता है। मुंबई में उसके बेटा और बहू रहते हैं। दोनों नौकरीपेशा है। अस्पताल में जाँच के दौरान पता चलता है कि वह गांठ कैंसर की न होकर ट्यूबरकुलोसिस या टी.बी है। उपन्यास में चित्रित पात्र मानसिक पीड़ा से ग्रस्त हैं। कस्बाई जीवन की सही तस्वीर इन पात्रों के संवादों से व्यक्त होती है। महावीरप्रसाद सोचता है कि मुंबई में आकर वह दोहरे व्यक्तित्व का शिकार हो गया है। एक ओर शरीर को कैंसर कुतर रहा है और भीतर बहुत गहरे मन मस्तिष्क को परायापन लील रहा है। कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि कस्बाई जीवन के आधुनिक परिवेश एवं घुटनभरी जिंदगी का जीवंत दस्तावेज 'भगदड़' उपन्यास है। उपन्यास की भाषा और संवाद योजना प्रभावी और पठनीय है।

डॉ. खड़से के उपन्यास आधुनिक युग की विविध समस्याओं के विश्लेषणों से भरे पड़े हैं और उनमें गहरी संवेदना भी नजर आती है।

डॉ.इन्दु पाण्डे (22 जनवरी, 1963 ई.)

पुणे की प्रमुख महिला लेखिकाओं में डॉ. इन्दु पाण्डे का नाम महत्वपूर्ण है। डॉ.इन्दु पाण्डे कविता, कहानी, उपन्यास और एकांकी आदि विधाओं में लेखनरत है। आपके प्रमुख उपन्यासों में 'मुर्दे के पीठ पर' (2012), 'समुंदर का ओंठ' (2012), 'अर्थ पिशाच' (2010), 'वेदगंगा' और 'सड़क पर आसमान दिख रहा था' आदि प्रमुख है। विषयवस्तु की दृष्टि से आपके उपन्यास उत्तर आधुनिकताबोध से युक्त दिखाई देते हैं। वर्तमान समय की अनेक सामाजिक समस्याओं को इन उपन्यासों में प्रकट किया गया है। 'मुर्दे की पीठ पर' उनका प्रथम सामाजिक उपन्यास है। इस उपन्यास का प्रमुख विषय परीक्षक और वैभवी के प्रेम विवाह और उसके दुष्परिणामों को अंकित करना रहा है। वैभवी और परीक्षक समाज का विरोध सहते हुए विवाहबद्ध होते हैं पर, इनका विवाह टिकता नहीं है। इसका एक प्रमुख कारण यह है कि, जिस समाज में वह रहते हैं, वह समाज अपनी ऊँचाई छत में रहकर गिनता है, ऐसा समाज कितना ऊँचा उठ सकता है, अधिक से अधिक छत भर, उसके आगे नहीं। परीक्षक और वैभवी की बेटी उर्मिला माँ के बार-बार समझाने पर भी प्रेम विवाह करती है, पर इसका प्रेम आधुनिक काल का प्रेम है जिसे समाज विरोध नहीं करता है। वह कनाडा में जाकर बसती है। यह बात जब वैभवी समझती है, तब नाराज होती है। उर्मिला ऐसे समाज में

रहती है, जो खुले विचारों वाला, आधुनिक विचारों वाला है। उपन्यास के अंत में वैभवी कनाडा पहुँचने का इरादा करती है और वह समझ लेती है कि अब समाज बदल गया है, हमें भी बदलना चाहिए। इस मुर्दे समाज को त्यागकर समय के साथ चलने वाले समाज के साथ चलना चाहिए। उर्मिला अपनी माँ से यही बात कहती है- ''आदमी मुर्दे की पीठ पर बैठ कर दुनिया की खोज करने निकलेगा तो उसे क्या हासिल होगा.....?''[47] सामाजिक चेतना से युक्त प्रस्तुत उपन्यास पुराने जनरेशन और नये जनरेशन के मानसिक द्वंद्व को उद्‌घाटित करता है। आपका दूसरा प्रकाशित उपन्यास है-'समुंदर का ओठ'। प्रस्तुत उपन्यास नेव्ही फौजी जीवन का जीवंत दस्तावेज है। इसमें एक साथ अनेक पारिवारिक कथाओं का वर्णन किया गया है। आपका तीसरा उपन्यास है 'अर्थपिशाच'। इसके मूल में धन कमाने की लालसा से मनुष्यत्व खोने के डर को विश्लेषित किया गया है। इस उपन्यास का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू है स्त्री अवहेलना को अभिव्यक्त करते हुए स्त्री शोषण और स्त्री अत्याचार की सीमाओं से अवगत कराना। इस उपन्यास की नायिका अस्मिता का इतना शोषण होता है कि ऐसे समय पर कोई भी स्त्री आत्महत्या करने के लिए विवश हो जाती, पर अस्मिता ने ऐसा नहीं किया अपितु वह नवीन जीवन शुरू करती है। अस्मिता के द्वारा समाज की अन्य स्त्रियों को प्रेरणा मिलती है कि स्त्री को भी जीने का हक है।

इस प्रकार डॉ. इन्दु पाण्डे के उपन्यास उत्तर आधुनिकता से ओतप्रोत हैं और जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं।

पुणे के हिंदी उपन्यास साहित्य की विशेषताएँ

पुणे में रामचंद्र थोरात, प्रभा माथुर, डॉ. दामोदर खड़से और डॉ. इन्दु पाण्डे ये चार ही उपन्यासकार इस क्षेत्र के सृजनकर्ता है। इन्होंने वर्तमान की विविध समस्याओं को अपने उपन्यासों में वर्णित किया है। रामचंद्र थोरात के उपन्यास में महाराष्ट्र के आस-पास का चित्रण है। इनके उपन्यासों में आदिवासी, और घुमंतू जन-जाति की स्त्री का जीवन चित्रित है। अर्थात् स्त्री विमर्श इनके उपन्यासों के केंद्र में है। प्रभा माथुर, डॉ. दामोदर खड़से और डॉ. इन्दु पाण्डे के उपन्यास उत्तर आधुनिकता से प्रभावित हैं। इसमें उत्तर आधुनिकता से प्रभावित नारी चरित्र और उनकी समस्याओं को चित्रित किया है। अतः कह सकते हैं कि पुणे का उपन्यास साहित्य भी हिंदी की आधुनातन प्रवृत्तियों से प्रभावित हैं।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचित उपन्यासकारों के उपन्यासों की विषय वस्तु और कथ्य अपने-अपने ढंग की पहचान के द्योतक हैं। हर एक उपन्यासकार की शैली अलग है। पुणे में निर्मित उपन्यास लेखन की अपेक्षा कहानी लेखन करने वालों की संख्या अधिक है। इनका परिचय निम्न क्रम में देखा जा सकता है।

पुणे का हिंदी कहानी साहित्य

पुणे के प्रमुख हिंदी कहानीकारों में श्रीमती ज्योत्स्ना देवधर, गोपाळ परशुराम नेने, मुरलीधर जगताप, डॉ.मालती शर्मा, प्रभा माथुर, डॉ.दीप्ति गुप्ता, रजनी पाथरे 'राजदान', डॉ.दामोदर खडसे, डॉ.पद्मजा घोरपड़े, काझी मुश्ताक अहमद, इंदिरा शबनम 'पूनावाला', मेजर सरजू प्रसाद 'गयावाला', डॉ.इंदु पांड़ेय, डॉ.राजेंद्र श्रीवास्तव आदि प्रमुख है। इन सभी कहानीकारों, और उनके कहानी संकलनों का परिचय उनके जन्मतिथि क्रम के अनुसार नीचे दिया गया है।

गोपाळ परशुराम नेने (20 जुलाई, 1913 ई.–10 मई 1990 ई.)

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे के संस्थापकों में से एक और हिंदी के पुराने कथाकार और कोशकार के रूप में गोपाळ परशुराम नेने स्मरणीय हैं। आपका कथासंग्रह 'दायरे' सन् 1965 ई. को प्रकाशित हुआ है। प्रस्तुत संग्रह में कुल 7 कहानियाँ संकलित हैं। संग्रह की कहानियाँ चरित्रप्रधान और उपदेशपरक दिखाई देती हैं। प्रथम कहानी में मामी के आदर्शवादी चरित्र को उज़ागर किया है। 'बीच में एक बच्चा' उस अभागन माँ की कहानी है जो अपने ही बच्चे से बड़े खानदान के रीतिरिवाजों के कारण बिछड़ती है और पागल हो जाती है। उसका पागलपन, पागलपन न होकर माया और ममता का प्रतिरूप है। बड़ी संवेदनशीलता के साथ नेने ने प्रस्तुत कहानी में माता की ममता को उज़ागर करने का प्रयास किया है। संग्रह की तीसरी कहानी 'सिद्धांत का सुख' में माटसाहब कथा के केंद्र में है। कहानी की शुरूआत होती है संस्कारधाम के उद्घाटन समारोह के समापन से। उद्घाटन समारोह के पश्चात् कप्तान रमेश माटसाहब के पैर छूता है और उनकी आँखों से आँसू जारी होते है। यह दृश्य गाँववालों को अचम्भे में डालता है। कहानी पुरानी स्मृतियों से शुरू होती है। एक समय से माटसाहब गाँव में संस्कारधाम चलाते थे। इसका इतिहास यह है कि गाँव के स्कूल में पढ़ाने वाले शिक्षकों ने किसी समय परीक्षा के दौरान अपनी तनख्वाह के लिए अनशन किया था और उस समय माटसाहब ने इस अनशन को गांधीवादी दृष्टि

से पूरा करने का प्रयास किया। उन्होंने विद्यार्थियों की पढ़ाई में कोई बाधा आने नहीं दी और अपने घर पर ही संस्कारधाम की शुरूआत की। इसके कारण उन्हें गाँव वालों और स्कूल के शिक्षकों का विरोध भी सहना पड़ा। उसी संस्कारधाम से पढ़े हुए विद्यार्थी आगे चलकर बड़े-बड़े ओहदे पर काम करने लगे और देश के आदर्श नागरिक बने। उन्हीं में से जिसने अनशन के दौरान माटसाहब के भाषण पर उन्हें पत्थर मारा था वही आगे चलकर कप्तान रमेश कहलाया और उसने संस्कारधाम और माटसाहब के कहने पर स्कूल भी नए सिरे से बनवाया। यह सब उसी संस्कार का प्रतिफल था जो कि संस्कारधाम से प्राप्त किया था। इस प्रकार प्रस्तुत कहानी आज भी प्रासंगिक है और शिक्षकों को यह प्रेरणा देती है कि अनशन के दौरान विद्यार्थियों के हित को देखकर अपने हक की लड़ाई एक अलग तरह से सिद्धांतों के अनुरूप लड़नी चाहिए। 'सिद्धांत का सुख' इसी में है। संग्रह की चौथी कहानी- 'आवेग की समाधि' में पुरूष के द्वारा स्त्री की अवहेलना को प्रतिपादित किया गया है। आधुनिक सभ्यता में नाच गानेवाली औरतों की स्थिति से समाज को अवगत कराते हुए उनकी मानव सेवा और समाज में होने वाले उनके महत्व को अभिव्यक्त किया गया है। संग्रह की पाँचवी कहानी है-'नया पाप'। इसमें कर्मठ शास्त्रों का विरोध दर्शाया है। धर्मदत्त नामक पुरोहित की पुण्यकर्म की लालसा में पत्नी और बच्चों का शोषण होता है। इस शोषण का कारण धर्मदत्त की अंद्धश्रद्धा को बताते हुए तत्कालीन स्त्री शोषण को लेखक ने बड़ी खूबी के साथ एक स्वप्न और मिथक कथा के माध्यम से व्यक्त किया है और स्वयं यमराज द्वारा धर्मशास्त्रों के कर्मकांडों की आलोचना की है। संग्रह की अंतिम कहानी है-'दायरे'। इस कहानी में एक स्त्री की व्यथा-गाथा को अंकित किया गया है और यह संदेश भी दिया गया कि स्त्री की एक गलती उसके जीवन को किस प्रकार नरकमय बनाती है। अतः कहा जा सकता है कि नेने की कहानियाँ समाजसुधार और नैतिक मूल्यों से ओतप्रोत रही है।

ज्योत्स्ना देवधर (27 फरवरी, 1926 ई.–17 जनवरी, 2013 ई.)

ज्योत्स्ना देवधर के लेखन की शुरूआत हिंदी की प्रमुख पत्रिका 'धर्मयुग' में प्रकाशित कहानियों से हुई है। हिंदी में आपके दो कहानी संग्रह 'अंतरा' (1964) और 'कॅक्टस' (1981) प्रकाशित है। 'अंतरा' में कुल 14 कहानियाँ संकलित है। 'अंतरा' की कहानियाँ स्त्री जीवन की विविध यातनाओं, मर्यादाओं, उसकी भावनाओं और उसकी सीमाओं को अंकित करती है और भारतीय नारी

के आदर्शवाद को स्थापित करती है। 'अंतरा', 'मैं हारी', 'मुन्ना', 'मैं लहर नहीं सागर बनना चाहती हूँ', 'भाग्य और भाग्य', 'ओ मेरे आत्मांश', 'नदी चुप है', 'चौराहा', 'हुलसी झुलसी गई', 'आहत', 'अशीतल', 'पायल', 'चोरी', 'आश्रित' आदि सभी कहानियाँ नारी के अंतर्मन को स्पर्श करती हैं। नारी मन की भावनाओं को उद्‌घाटित करती हैं। नारी मन की विविध समस्याओं को लेखिका ने इन कहानियों में अंकित किया है। महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे के पूर्व मंत्री ग.वा. करमरकर ने प्रस्तुत कहानी संग्रह की विशेषताओं को इस प्रकार निरूपित किया है- ''इस कहानी संग्रह में जो कहानियाँ संग्रहित की गई हैं उनमें अन्य भावों के साथ विशेष तौर पर नारी जीवन के विविध सूक्ष्म भावों का बड़ी सहृदयतापूर्वक चित्रण किया है। यह करते हुए लेखिका ने नारी स्वभाव के विविध पहलुओं का आकर्षक पद्धति और सिद्धहस्त लेखनी से वर्णन किया है फलतः कहानियों में सर्वत्र ममता, वात्सल्य, करुणा और भावुकता के दर्शन होते हैं। समाज में स्त्रियों के प्रति जो अन्याय मूलक व्यवहार और उपेक्षा की वृत्ति दिखाई देती है उसका चित्रण लेखिका ने अत्यंत मार्मिक ढंग से किया है। सभी कहानियों की भाषा सरल, सरस और हृदयग्राही है।''[48]

अतः कहा जा सकता है कि ज्योत्स्ना देवधर की कहानियाँ स्त्री जीवन के तमाम पहलुओं को उज़ागर करने में सिद्धहस्त हैं।

मुरलीधर जगताप (10 जुलाई, 1930 ई.)

मुरलीधर जगताप हिंदी के पुराने प्रचारक और अनुवादक थे। आपकी रचनाओं को तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है-मौलिक, अनूदित और संपादित। आपने 14 मौलिक, 24 अनूदित और 16 संपादित पुस्तकों का सृजन किया। 'पगडंडी' आपका कहानी संग्रह है, जिसमें छः कहानियाँ संकलित हैं। प्रस्तुत संकलन की कहानियाँ यथार्थवादी हैं। आर्थिक धनाभाव, रंगभेद, बूढ़े व्यक्तियों की सच्ची दास्तान, राष्ट्रभक्ति एवं देशप्रेम आदि विशेषताओं को इन कहानियों में अवलोकित किया है। 'पुरानी पगडंडी' बूढ़े वकील की कहानी है जिसमें उसे बुढ़ापे में स्वावलंबी बनने के लिए पुरानी पगडंडी अर्थात पुराना रास्ता याने वकीली करने को बाध्य होना पड़ता है। 'तकाविकी तल्खी' में घोड़ागाड़ी चलाने वाले अब्दुल की कहानी है जिसमें आर्थिक धनाभाव के यथार्थ को द्योतित किया गया है। रंगभेद को दर्शाती कहानी 'उजला अँधेरा' स्त्रियों के परावलंबी रूढ़ि परंपरा को अंकित करती है। 'साढ़े तीन दिन' कहानी फौजी जीवन के

देशप्रेम को उद्घाटित करती है। 'दूर के ढोल' कहानी में सिनेमा इंडस्ट्रीज में स्त्रियों के शोषण को दर्शाया गया है। इन सभी कहानियों में तत्कालीन यथार्थ स्थितियों को आलोकित करने का प्रयास किया गया है। इस तरह अनेक विषयों से संबंधित और समकालीन जीवन को प्रस्तुत करती मुरलीधर जगताप की कहानियाँ पुणे के हिंदी कहानी साहित्य में अपना विशेष स्थान रखती है।

प्रभा माथुर (जुलाई, 1937 ई.)

आधुनिक समय और समाज में जो विकृतियाँ दिखाई देती है, उन विकृतियों पर प्रहार करना ही लेखिका प्रभा माथुर की कहानियों का प्रमुख उद्देश्य है। इस संदर्भ में वह स्वयं लिखती है- ''आज के दौर में जो आपाधापी मची हुई है उससे मानव मन की संवेदनाएँ कुचलती जा रही हैं। यद्यपि सभ्यता बहुत आगे बढ़ रही है। फिर भी कुरीतियाँ, रूढ़ियाँ हावी हैं उनसे अपने को अलग नहीं कर पा रहे हैं। महिलाओं की हालत में केवल इतनी उन्नति हुई है कि वे प्रत्येक क्षेत्र में पुरूषों की अपेक्षा बहुत अग्रणी हो रही हैं। जो पुरूष वर्ग को असहनीय हो रहा है। परंतु उनकी सुरक्षा व घरेलू या सामाजिक शोषण में कोई कमी नहीं आई है। दहेज प्रताड़ना, आत्महत्या या हत्या, बलात्कार, मार-पीट आदि घटनाएँ चरम सीमा पर हैं, मेरी कहानियाँ इन्हीं विकृतियों पर आधारित हैं।''[49] आप के दो कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। प्रथम कहानी संग्रह 'लौ' सन् 2004 ई. में प्रकाशित हुआ है। इसमें कुल 11 कहानियाँ संकलित है। ये कहानियाँ समकालीन समस्याओं को निरूपित करती हैं। 'आधी कृति' उनका दूसरा कहानी संग्रह सन् 2012 ई. में प्रकाशित हुआ है। दोनों कहानी संग्रहों में प्रकाशित कहानियाँ मानवीय विकृतियों पर आधारित दिखाई देती हैं। अधिकतर कहानियों की विषयवस्तु स्त्री जीवन की विविध पीड़ाओं से संबंधित है। 'दिद्दा', 'मीठा सागर', 'उर्वरा धरती', 'प्रौढ़ अनुराग', 'काली परछाई', 'अन्ततः', 'अनबूझा प्रश्न' आदि ऐसी ही कहानियाँ हैं। 'आधी कृति' कहानी अपने ढंग की एक अलग कहानी है क्योंकि इस कहानी में किन्नर जाति की सभ्य समाज द्वारा किस प्रकार अवहेलना होती रहती है इसका सरल भाषा में वर्णन है। इस कहानी का एक वक्तव्य इस प्रकार है- ''हमें कोई अच्छी निगाह से नहीं देखता। मजाक उड़ाते हैं सब। भद्दी बातें कहते हैं। हमें समाज ने अपने से अलग किया हुआ है। बाबूजी इसमें हमारा क्या दोष है? भगवान ने हमें ऐसा पैदा किया।''[50] लेखिका का मानना है कि स्त्री हो, किन्नर हो या झोपड़पट्टी में रहने वाले गरीब लोग हो, उन्हें

भी उच्च वर्गीय समाज के साथ जीने का पूरा हक है, जो उन्हें नहीं मिल पाता है। 'बिल्लू पालिशवाला' ऐसी ही कहानी है जिसमें लेखिका ने अपनी लेखनी के जरिए पालिशवाले गरीब मजदूर को एक अच्छा लेखक बना दिया।

इस प्रकार लेखिका प्रभा माथुर ने सरल और सहज भाषा के माध्यम से समाज और व्यक्ति के ह्रासोन्मुख जीवन का सही लेखा-जोखा अपनी कहानियों में प्रस्तुत किया है। आपकी कहानियाँ किसी-न-किसी उद्देश्य के साथ चलती हैं। समाज के विविध पक्षों को भीतर से तलाशती ये कहानियाँ अत्यंत मनोहर और सजग बन पड़ी हैं।

डॉ.मालती शर्मा (15 नवंबर, 1938 ई.–13 अक्टूबर, 2018)

डॉ.मालती शर्मा मूलतः लोकसाहित्य और लोक संस्कृति से सरोकार रखने वाली प्रमुख लेखिका है। निबंध एवं कहानी लेखन में भी आपकी विशेष रुचि दिखाई देती है। पुणे की वह बालकथाकार हैं। आपके द्वारा लिखित प्रमुख पांच बाल कहानी संग्रह 'गरम खिचड़ी की सीख', 'तीन द की कहानी' (1992), 'एक खंबा सभागृह' (1993), 'कोकाकोला के झरने' (1999), 'खोज भरी कहानियाँ'(2004), 'अगर फूलों की नींद तोड़ी तो' प्रकाशित हैं।

मालती शर्मा की कहानियाँ बालमनोविज्ञान से संबंधित हैं। इसमें बालकों को नैतिक शिक्षा प्रदान करना और उन्हें भारतीय संस्कृति के दर्शन कराना लेखिका का प्रमुख उद्देश्य रहा है। पर्यावरण और प्रकृति का मानवी जीवन से घनिष्ठ रिश्ता है। बाल मन पर इन बातों का संस्कार होगा तो आने वाली पीढ़ी पर्यावरण और प्रकृति का ह्रास होने नहीं देगी। इसी परिप्रेक्ष्य में आपकी अनेक कहानियाँ लिखी गई हैं। 'अगर फूलों की नींद तोड़ी तो', 'चंदा मामा का कुरता', 'विजयादशमी और सोने के पत्तेवाला पेड़', '...और पासा पलट गया', 'मेहंदी लाजवंती और सहयाद्री पहाड़', 'चंदा, सूरज और पृथ्वी', 'किरणों का जादू' आदि ऐसी ही कहानियाँ हैं। हमारा ही नहीं अपितु विश्व के सभी देशों का भविष्य नन्हें-नन्हें बच्चे होते हैं। उन पर बाल संस्कार करने के लिए आज कल किसी के पास समय नहीं होता है। या फिर इन बच्चों पर संस्कार करने वाले बुजुर्ग घर में नहीं होते हैं। ऐसे में ये बाल कथा संग्रह निश्चित रूप में संस्कार प्रदान करनेवाले सिद्ध होते हैं। इनमें कई संस्कार छिपे हुए हैं, इसी कारण उनकी एक कहानी 'बांसुरी की जन्मकथा' का चीनी और मराठी दोनों भाषाओं में अनुवाद और नाटय् रुपांतर हो चुका है।

ई.

मेजर सरजू प्रसाद 'गयावाला' (14 अप्रैल, 1939 ई.)

मेजर सरजू प्रसाद का एकमात्र कथा संग्रह 'मनमंथन' है। इसमें कुल 14 कहानियाँ संकलित हैं। संकलन की अधिकांश कहानियाँ पुरानी लोक कथाओं पर आधारित आधुनिक कहानियों का संस्करण है। कथा संग्रह के प्रारंभ में अपनी कहानियों के बारे में उन्होंने लिखा है- ''सच पूछिए तो इसमें से कुछ ही कहानियाँ मेरा अपना सृजन हैं। अधिकांश की जन्मदाता मेरी माँ हैं। मैंने उनसे सुनी कथाओं का पुनर्लेखन भर किया है।''[51] संग्रह की अधिकतर कहानियाँ वीर रस से ओतप्रोत हैं। संग्रह की प्रथम कहानी 'प्रतीक्षा' उस वीर जवान के घर की कहानी है जो फौज में वीरगति प्राप्त करता है और उसका घर उसकी प्रतीक्षा में आहत दिखाई देता है। संभवतः यह कहानी मेजर साहब के आँखों देखी अनुभव की कहानी है। जीवन अनमोल है और इस जीवन की विविध अनुभूतियों के प्रति ये कहानियाँ संकेत करती-सी प्रतीत होती हैं। देश के कुछ बदमाश देश को दो खाइयों हिंदू और मुस्लिम में बँटा रहना ही पसंद करते हैं। इसी समस्या को कहानीकार ने 'गलत-फहमी' इस कहानी में अंकित किया है। परिवार और समाज में आपसी रिश्तों को बनाए रखने की आवश्यकता है, पर यह रिश्ते किस प्रकार कानाफूसी करने से टूट जाते हैं, 'कानाफूसी' कहानी द्वारा दर्शाया गया है। 'मरणोपरांत' यह कहानी वर्तमान राजनैतिक व्यवस्था के दोगलेपन को दर्शाती है। 'आत्मसात' कहानी मानवी विकृति को दर्शाती है। जीवन वासनातृप्ति तक सीमित न होकर अनंत संभावनाओं पर आधृत है यही इस कहानी का प्रमुख परिप्रेक्ष्य रहा है। 'एक वरदान' यह कहानी लोककथा पर आधारित दिखाई देती है। 'कुत्ते की पूँछ', 'चने की एक दाल', 'कल्पना से परे', 'नास्तिक के मुख से', 'बच्चा किसका', 'झूठ के हाथ पैर नहीं' और 'रात भर अंडा पकाया फिर भी कच्चा रह गया' आदि कहानियाँ लोककथाओं पर आधारित है और मानवीय मूल्यों की खोज करती है।

'मनमंथन' की कहानियों की भाषा सरल है उसमें कहीं भी अटपटापन दिखाई नहीं देता है। मेजर साहब ने इन कहानियों में लोकोक्तियों और प्रचलित मुहावरों का खूब उपयोग किया है जिससे ये कहानियाँ पठनीय हो जाती है।

रजनी पाथरे 'राजदान' (27 अगस्त,1940 ई.)

रजनी पाथरे 'राजदान' के अब तक दो कथा संग्रह प्रकाशित हैं। 'माया मृग' और 'बोल मेरी मछली कितना पानी' (2001) आदि। लगभग 40 वर्षों से आप पुणे में रहकर साहित्य सर्जना कर रही हैं। 'टाईम पास' और 'अनुत्तरित

उत्तर' आपकी पुरस्कृत कथाएँ हैं। अनेक प्रसिद्ध हिंदी पत्रिकाओं में आपके प्रासंगिक लेख, कहानियाँ, कविताएँ प्रकाशित होती रहती हैं। आपकी कहानियाँ संवेदनशील हैं। मध्यमवर्गीय जीवन के सांस्कृतिक, सामाजिक और पारिवारिक सुख-दुःखों की अभिव्यक्ति इन कहानियों में स्पष्ट परिलक्षित होती है। आपकी कहानियों में कश्मीर की वादियों का स्मरण बार-बार पाया जाता है। ये कहानियाँ नारी जीवन की सच्ची दास्तान कहने में भी सजग दिखाई देती हैं। इनमें नारी जीवन के विविध रूप दिखाई देते हैं। भावुकता भरी ये कहानियाँ प्रेम, घृणा, घुटन और अकेलापन आदि नारी जीवन की समस्याओं को उजागर करती हैं। 'तुलसाबाई', 'बोल मेरी मछली कितना पानी', 'ताश का घर', 'डिजहरू' और 'वचन' आदि कहानियाँ पारिवारिक ढंग की यथार्थवादी कहानियाँ हैं। इस तरह कहा जा सकता है कि रजनी पाथरे की कहानियाँ पुणे के हिंदी कहानी साहित्य में अपना अलग स्थान रखती हैं।

काझी मुश्ताक अहमद (20 मार्च, 1940 ई.)

काझी मुश्ताक अहमद उर्दू के प्रसिद्ध लेखक हैं। उर्दू में नाटक, उपन्यास, कहानी संग्रह, प्रवास वर्णन, रिर्पोताज, लघुकथा संग्रह, निबंध, समीक्षाएँ, यात्रा-वर्णन आदि की लगभग 40 किताबें आपकी प्रकाशित हैं। वे हिंदी में भी लिखते हैं। आपके हिंदी में 3 कहानी संग्रह प्रकाशित हैं-'एक ही रास्ता' (1987), 'जल से बोझिल बदली' (2006) और 'कहानी खत्म हुई' (2010)। 'एक ही रास्ता' कहानी संकलन में 9 कहानियाँ संकलित हैं। फिल्मी अंदाज में लिखी इन कहानियों में इक्कीसवीं सदी के बदलते जीवन-मूल्यों की हकीकत मौजूद है। राजनीति के परिप्रेक्ष्य में लिखी कहानी 'पुराने पापी' वर्तमान समय की दोगली राजनीति पर प्रकाश डालती है। उनका दूसरा कहानी संग्रह 'जल से बोझिल बदली' में कुल 26 कहानियाँ संकलित हैं। इन कहानियों के कथानक यथार्थवाद के निकट हैं। ये सभी कहानियाँ अलग-अलग परिवेश पर आधारित है। राजनीतिक अव्यवस्था, सामाजिक अव्यवस्था, जातीय अव्यवस्था का इन कहानियों में चित्रण अधिक मात्रा में पाया जाता है। ये कहानियाँ सस्पेंस को लेकर चलती हैं। कहानी के अंतिम परिच्छेद में बात साफ होती है कि कहानीकार क्या कहना चाहता है। कुछ कहानियाँ लेखक के स्मरणीय प्रसंगों पर आधारित लगती हैं। जैसे- 'वसीयत', 'खाली बर्तन', 'क्लीन बोल्ड' आदि। सांप्रदायिक चेतना पर आधारित कहानी 'घृणा के रंग' पढ़ने के बाद बेचैन करती है कि क्या

मनुष्य सांप्रदायिक चेतना के कारण मनुष्यत्व खो चुका है? इसी तरह संग्रह की अंतिम कहानी 'जल से बोझिल बदली' मनोविकार पर आधारित दिखाई देती है। इस प्रकार प्रस्तुत संग्रह की कहानियाँ विविध परिवेश पर आधारित और सामाजिक निरूपण से संबंधित हैं। 'कहानी खत्म हुई' उनका तीसरा कहानी संग्रह है। प्रस्तुत संग्रह में कुल 22 कहानियाँ संकलित हैं। अधिकांश कहानियाँ पारिवारिक रिश्तों की उलझनों पर प्रकाश डालती-सी प्रतीत होती हैं। कुछ कहानियाँ मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में लिखी प्रतीत होती है। इनमें 'न बिकनेवाला माल', 'वेरीफिकेशन', 'गूंगा न्याय' आदि प्रमुख हैं। हिंदी में कुल 57 कहानियाँ लिखने वाले काझी की कहानियाँ उर्दू शैली पर आधृत हिंदी कहानियाँ हैं।

काझी मुश्ताक की कहानियों की भाषा अधिक सरल और स्पष्ट है साथ ही इस पर उर्दू और अंग्रेजी का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। इनकी हिंदी शुद्ध हिंदी न होकर हिंदुस्तानी के अधिक निकट है।

डॉ.दामोदर खड़से (11 नवंबर 1948 ई.)

डॉ. दामोदर खड़से बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं। इनकी कर्मभूमि पुणे है। 17 अप्रैल, 1994 के मुंबई से निकलने वाले जनसत्ता अखबार में छपे साक्षात्कार के अनुसार वे अपने आपको कथाकार के रूप में देखना अधिक पसंद करते हैं। डॉ. खड़से के कुल पाँच कहानी संग्रह प्रकाशित हैं। 'भटकते कोलंबस' (1980), 'पार्टनर' (1989), 'आखिर वह एक नदी थी' (1990), 'जन्मांतर कथा' (1996) और 'इस जंगल में' (2008)। 'भटकते कोलंबस' उस जीवन रूपी भटकन के अनुभवों की दास्तान है, जिसे उन्होंने महसूस किया है। 'आखिर वह एक नदी थी' कथा संग्रह में कुल 14 कहानियाँ संकलित हैं। सरल और स्पष्ट शब्दों में लिखी ये कहानियाँ समकालीन परिवेश को दर्शाती हैं। 'इस जंगल में' कहानी संग्रह में 18 कहानियाँ संकलित हैं। ये कहानियाँ महानगरीय जीवन से संबंधित हैं। आपकी सभी कहानियों का एकत्रित रूप है 'संपूर्ण कहानियाँ' जो भावना प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। डॉ. खडसे की कहानियाँ मानव जीवन की विविध कठिनाइयों को संजोती, मानवीय बिखराव को द्योतित करने में सक्षम दिखाई देती हैं। वर्तमान जीवन की कसावट उनमें विद्यमान है। आपकी कहानियाँ समकालीन बोध, और समसामयिक चेतना से ओतप्रोत दिखाई देती हैं। वर्तमान में चल रही क्रूर राजनीति, सामाजिक विषमता और प्राकृतिक आपदाओं का बड़ा ही सशक्त वर्णन इनकी कहानियों की विशेषता

है। लगभग सभी कहानी संग्रह इन विशेषताओं से ओतप्रोत हैं। इन विशेषताओं के केंद्र में विशेषकर नारी, बच्चे और मजदूर वर्ग रहा है। सीधी सी बात है कि समाज में रहते हुए समाज का बारीकी से अध्ययन करना और उसे साहित्य में उतारना खड़से जैसे नामी-गिरामी साहित्यकार का ही कार्य है।

डॉ.स्मिता दात्ये (14 मार्च 1952 ई.)

डॉ. स्मिता दात्ये का एकमात्र हिंदी कहानी संग्रह है-'लाल गुलाब' (2002)। इसमें कुल 10 कहानियाँ संकलित हैं। सभी कहानियाँ मानवीय संवेदनाओं की खोज करती-सी प्रतीत होती हैं। 'अपरिचित', 'वह क्यों रोई', 'प्रतीक्षा', 'सफरनामा', 'फैसला', 'उलटी गिनती', 'जड़ की तलाश', 'चल खुसरो घर आपने' आदि ऐसी ही कहानियाँ हैं। डॉ.दात्ये की सभी कहानियाँ सरल और सहज भाषा में लिखी गई हैं। सभी शहरी परिवेश से जुड़ी और आधुनिकताबोध से संबंधित हैं। चौदह वर्ष पूर्व लिखी ये कहानियाँ आज भी प्रासंगिक हैं और उनका हिंदी जगत् में विशिष्ट स्थान है।

डॉ.दीप्ति गुप्ता (25 जून, 1953 ई.)

डॉ. दीप्ति गुप्ता के दो कहानी संग्रह 'शेष प्रसंग' (2007), और 'सरहद से घर तक' (2011) प्रकाशित है। प्रथम कहानी संग्रह 'शेष प्रसंग' में कुल 9 कहानियाँ संकलित हैं। प्रस्तुत संकलन की सभी कहानियाँ अत्यंत रोचक और सशक्त हैं। आज के समय में मानवीय मूल्य दूर होते जा रहे हैं। लेखिका ने इन कहानियों में ऐसे चरित्र गढ़े हैं, जो मानवीय मूल्यों पर खरे उतरते हैं। ऐसी कहानियों में 'बुधवीर', 'हरियाकाका', गुलाबसिंह' और 'फरिश्ता' आदि प्रमुख हैं। ये चरित्र आदर्शवाद की स्थापना करते हैं। जैसे-'हरिया काका' कहानी में चित्रित हरिया निरक्षर है, परंतु अपने मालिक के प्रति प्रामाणिक है। उसे अपने मालिक के प्रति इतना स्नेह और प्रेम है कि वह ईश्वर से कामना करता है कि अगले जनम में भी वह उसी घर की सेवा करना पसंद करेगा। 'फरिश्ता' कहानी का मधुकर एम्बुलेन्स का ड्राइवर है। वह अपने मरीजों की सेवा अपनी जान से भी ज्यादा करता है। वर्तमान समय और समाज के सामने आदर्श चरित्रों के द्वारा आदर्श समाज व्यवस्था की जो कामना डॉ. दीप्ति गुप्ता ने की है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। प्रस्तुत कहानी संग्रह के महत्व को सूर्यबाला ने इस प्रकार वर्णित किया है- ''घनी संवेदना और सुंदर भावों से भरपूर, लेखिका की कहानियाँ सहज ही दिल की गहराइयों में स्पर्श करती हैं अर्थात कुछ भी सप्रयास या कृत्रिम नहीं है इन रचनाओं में।''[52]

डॉ. दीप्ति गुप्ता का दूसरा कहानी संग्रह 'सरहद से घर तक' सन् 2011 ई में प्रकाशित हुआ है। इस संग्रह में कुल 12 कहानियाँ हैं। सशक्त कथानक, बोधगम्य और प्रवाहपूर्ण भाषा-शैली, पात्रों के चरित्र के अनुसार संवाद इन कहानियों की प्रमुख विशेषताएँ हैं। संग्रह की सभी कहानियाँ अलग-अलग विषयों को साथ लेकर चलती हैं। नारी मन की सूक्ष्म समझ 'पारमिता' कहानी में दर्ज है। 'पारदर्शी' कहानी पूर्वाभास पर आधारित है। 'दर्पण में झांकते चेहरे' पुनर्जन्म पर आधारित है। महाविद्यालय की पृष्ठभूमि पर आधारित 'कपटी' कहानी अत्यंत रोचक बन पड़ी है। स्त्री-पुरूषों के संवेदनशील पहलुओं पर आधारित 'अलगाव से लगाव तक' और 'फिनिक्स' सशक्त रचनाएँ हैं।

इस तरह विविध विषयों से संबधित डॉ. दीप्ति गुप्ता की कहानियाँ पठनीय और गहन संवेदनाओं से ओतप्रोत हैं।

डॉ.पद्मजा घोरपडे (1955 ई.)

पद्मजा घोरपड़े के दो कहानी संग्रह 'गुत्थमगुत्था' (2003) और 'रिश्तों के परे रिश्ते' (2010) पुणे के हिंदी कहानी साहित्य में अपना विशेष स्थान रखते हैं।'गुत्थमगुत्था' में कुल 6 कहानियाँ संकलित है। ये कहानियाँ आधुनिकताबोध के कई आयामों की खोज करने में सार्थक दिखाई देती हैं। अस्तित्ववाद इनकी कहानियों में विशेषकर दिखाई देता है। 'कैपवाला आदमी', 'अकेलेपन और मौत के साथ', 'यात्रा में यात्रा कई यात्राएँ' और '.....और वह मर गई' अस्तित्ववाद से प्रभावित कहानियाँ हैं। 'रिश्तों के परे रिश्ते' आपका दूसरा कहानी संग्रह है। प्रस्तुत कहानी संकलन में कुल सात लघु और दीर्घ कहानियाँ संकलित हैं। कहानी संकलन का नाम बेहद आकर्षक और मुनिया के जीवन के विकट रास्ते पर संपर्क में आए हुए रिश्तों की बुनावट को साकार करता है। लेखिका ने सभी कहानियों में अपने बचपन से लेकर वर्तमान समय तक के रिश्तों को संस्मरणरूपी आलेख में आबद्ध किया है। लेखिका ने कहानी संकलन को- ''उन मुँहबोले रिश्तों को....जिन्होंने जिंदगी के किसी भी मोड़ पर मुझे अनाथ होने नहीं दिया...''[53] समर्पित किया है। 'दूधवाला मामा', 'धोंडू मौसी और उनकी माँ', 'मुन्नी का स्कूल जाना', 'एक नाटक कई किरदार', 'मन्या', 'टँव-टँव' और 'फीड बैक' आदि कहानियों में सम्मिलित चरित्र लेखिका के अपने चरित्र है, जो उसके संवेदनशील और भावुक मन की उपज़ है। इसमें केवल मनुष्य रूपी किरदार ही नहीं है अपितु उनके संपर्क में आए हुए पशु-पक्षी भी है। सभी कहानियाँ

संस्मरणरूपी अतीत की स्मृतियाँ है; जिनका चरित्र निस्वार्थ और नीर-क्षीर बहते प्रवाह के मानिंद है। इन अतीत की स्मृतियों को आत्मीयता के धरातल पर डॉ. घोरपड़े ने उकेरा है। इन सभी कहानियों की मुख्य पात्र 'मुन्नी' कोई और नहीं बल्कि स्वयं लेखिका है। उसी मुनिया के बारे में डॉ. भ.प्र.निदारिया ने लिखा है- ''मुनिया की दुनिया में सत्यम् है। अनुभव यात्राओं का जीवंत दस्तावेज बनी ये संस्मरणात्मक कहानियाँ पढ़कर पाठक भी इस दुनिया में वैसे ही विचरता-विहस्ता-आनंदित होता है जैसे मुन्नी होती रही है।''[54]

इस तरह डॉ.पद्मजा घोरपडे पुणे की संवेदनशील, भावुक और यथार्थ को अपनी कहानियों में अंकित करने वाली प्रमुख लेखिका है।

इंदिरा शबनम 'पूनावाला' (25 नवंबर, 1956 ई.)

इंदिरा शबनम मूलतः कश्मीरी भाषी हिंदी कवयित्री है। ये जन्म से पुणे की नहीं हैं, अपितु कर्म से पुणे की हैं अतः उनकी साहित्य जगत् में 'पूनावाला' नाम से पहचान बनी हुई है। हिंदी में आपका एक कथासंग्रह 'इबादत' (सन् 2000) में प्रकाशित हो चुका है। प्रस्तुत संकलन में 11 कहानियाँ संकलित हैं। 'इबादत', 'प्रवाह का मोड़', 'घर', 'तितर-बितर', 'तुम्हारे नसीब खुल गए', 'पूनम', 'फैसला', 'प्रकृति का नियम', 'रिश्ते', 'चक्रव्यूह' और 'बेफिक्र' आदि शीर्षकों से लिखी ये कहानियाँ स्त्री अस्मिता की खोज करने में सक्षम दिखाई देती हैं। स्त्री जीवन की गहराई में जाकर लिखी ये कहानियाँ भारतीय स्त्री विषयक दृष्टि का दर्पण है। इसलिए इन कहानियों पर टिप्पणी करते हुए मालती शर्मा ने लिखा है- ''इन कहानियों की सबसे बड़ी खूबी है भारतीय स्त्री की कभी हार न मानने वाली, विकट स्थितियों में भी सकारात्मक जीवनशैली! नारी की यही जिजीविषा इन कहानियों को अपना अलग रंग देती है।''[55] इस प्रकार समकालीन परिवेश और स्त्री अस्मिता को अपनी कहानियों का विषय बनाने वाली पुणे की सिद्धहस्त लेखिका इन्दिरा शबनम 'पूनावाला' का 'इबादत' कहानी संग्रह पुणे के कहानी संसार में अपना विशिष्ट स्थान रखता है।

डॉ.इन्दू पाण्डे (22 जनवरी, 1963 ई.)

डॉ. इंदु पांड़ेय द्वारा लिखित एकमात्र कहानी संग्रह है- 'उपन्यास का आदमी' (2013)। प्रस्तुत संग्रह में कुल 26 कहानियाँ संकलित हैं। संग्रह की अधिकतर कहानियाँ हिंदी कहानी की अधुनातन प्रवृत्तियों को समेटते हुए चलती हैं। समकालीन बोध से युक्त कहानियों में 'आधुनिक भीष्म', 'विजय की जीत',

'ग्रीन कार्ड' 'रिटायरमेंट' आदि प्रमुख हैं। 'सावित्री का पुनर्जन्म', 'नीलम', स्त्रीत्व की गरिमा', 'सती' आदि स्त्री विमर्श, स्त्री प्रताड़ना ओर स्त्री चिंतन की गरिमा से युक्त कहानियाँ हैं। प्रस्तुत संग्रह की कहानियों की विषयवस्तुगत व्यापकता पर प्रकाश ड़ालते हुए राजेंद्र श्रीवास्तव ने लिखा है -''कहानियाँ छोटी-छोटी हैं, किंतु कहानियों का फलक अत्यंत व्यापक है। बड़े-बड़े और भारी-भरकम मनोवैज्ञानिक, आर्थिक, अकादमिक प्रश्नों या आंतरर्राष्ट्रीय चिंताओं को उठाने का दिखावा करते हुए यह कहानियाँ नहीं चलती हैं, किंतु मामूली प्रसंगों और रोजमर्रा की घटनाओं के माध्यम से मनुष्य और उसके संघर्ष को केंद्र में रखकर असाधारण रचनासृष्टि की गई है।''[56] इस प्रकार इंदु पांडेय की कहानियाँ विविध विषयों को साथ लेकर चलती है और समाज की यथार्थ स्थितियों का अंकन करती हैं।

डॉ.राजेंद्र श्रीवास्तव (18 अक्तूबर, 1966 ई.)

डॉ.राजेंद्र श्रीवास्तव पुणे के बैंक ऑफ महाराष्ट्र के शहर मुख्य कार्यालय में उप महाप्रबंधक (राजभाषा) के पद पर कार्यरत हैं। आप हिंदी के कथाकार हैं। अनेक नामी पत्रिकाओं में आपके वैचारिक आलेख और कहानियाँ प्रकाशित होती रहती हैं। आपके दो कथासंग्रह 'अभी वे जानवर नहीं बने' और 'कोई तकलीफ नहीं' प्रकाशित हो चुके हैं। 'अभी वे जानवर नहीं बने' (1998) उनका प्रथम कहानी संग्रह है। इसमें कुल 9 कहानियाँ संकलित हैं। संग्रह की अधिकतर कहानियाँ चरित्रप्रधान दिखाई देती हैं, जिसमें आदर्शवादी और सहज मानवीय मूल्यों से ओतप्रोत चरित्रों की सर्जना की गई है। संग्रह की प्रथम कहानी 'रिश्ता' मानवीय मूल्यों की सशक्त अभिव्यक्ति में सार्थक है। दंगल के भयग्रस्त स्थितियों में एक मुस्लिम मनुष्य हिंदू परिवार की किस प्रकार रक्षा करके मानवीय मूल्यों की स्थापना करता है, यह प्रस्तुत कहानी का मूल प्रतिपाद्य है। इसमें चित्रित मुस्लिम मनुष्य का सारा परिवार, बेटा और बहू इसी दंगलीय स्थितियों के शिकार बनते हैं फिर भी वह मनुष्य हिंदू दंपत्ति की रक्षा करता है क्योंकि उसे वे दंपत्ति अपने ही बहू-बेटियों के रूप में दिखाई देते हैं। संग्रह की दूसरी महत्वपूर्ण कहानी है-'संपन्नता'। प्रस्तुत कहानी उस सुखी और संपन्न परिवार की कहानी है जो गरीब है पर, मन से अमीर है। कहानी के प्रमुख पात्र विनायक बाबू को जब ये पता चलता है कि बड़े बाबू के बच्चे अय्याश और आवारा किस्म के हैं तो वह विचार करते हैं कि उनकी दो पुत्रियाँ और पत्नी मन से कितनी

अमीर है। इस प्रसंग को देखकर वे अनायास ही कह उठते हैं- ''हर स्थिति में साथ देनेवाली पत्नी, अभावों में भी जिंदगी के प्रति आशावादी दृष्टिकोण रखनेवाली परिपूर्ण पुत्रियाँ! हर किसी के पास तो नहीं होता इतना कुछ।''[57] प्रस्तुत कहानी में निहित मानवीय गुणों के कारण यह कहानी महाराष्ट्र राज्य बोर्ड की दसवी कक्षा के पाठ्यक्रम में समाहित की गई है। संग्रह की अन्य कहानियाँ 'प्रश्न', 'अपराधी कौन', प्रियनाथ चाचा' और 'अभी वे जानवर नहीं बने' चरित्रप्रधान कहानियाँ हैं।

आपका दूसरा कहानी-संकलन 'कोई तकलीफ नहीं' राधाकृष्ण प्रकाशन द्वारा सन् 2014 को प्रकाशित हुआ है। इसमें कुल 14 कहानियाँ संकलित हैं। संग्रह की प्रथम कहानी 'कलेजा' बेहद प्रभावी है जिसमें मानवीय संवेदना दिखाई देती है। संग्रह की दूसरी कहानी 'कोई तकलीफ नहीं' वृहद है। इसमें नौकरी पेशा अफसरों की भ्रष्ट प्रवृत्ति को उजागर किया गया है। 'जन्मदिन की पार्टी' कहानी, गरीब अस्वाभिमानी युवक की आर्थिक दशा की ओर संकेत करती हैं। गरीबी और तंगदस्ती की स्थिति का विवेचन करना 'साड़ी' कहानी के मूल में है। 'हार-जीत', 'अपराधी कौन', 'हँसी', 'परछाई' और 'पूरी लिखी जा चुकी कविता' आदि कहानियाँ वर्तमान स्त्री दशा की ओर संकेत करती हैं। श्रीवास्तव जी की कहानियाँ समाज जीवन के विविध समस्याओं को उजागर करती हैं। इन कहानियों की भाषा सजग और सशक्त है। इसी कारण महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी का वर्ष 2014 का कथाकार मुशी प्रेमचंद पुरस्कार इस कहानी संकलन को प्राप्त हुआ है। इस तरह राजेंद्र श्रीवास्तव द्वारा लिखित कहानियों का सामाजिक मूल्य अधिक है।

निष्कर्ष

पुणे का कहानी संसार विस्तृत और व्यापक है। इस प्रबंध में अवलोकित कहानी संग्रहों में स्त्री विमर्श की कहानियाँ अधिक पाई जाती है। हिंदी के आधुनातन प्रवृत्तियों की सशक्त अभिव्यक्ति इन रचनाओं की खास विशेषता है। अतः पुणे का हिंदी कहानी साहित्य समृद्ध है।

पुणे का हिंदी नाट्य साहित्य

पुणे में हिंदी साहित्य की प्रत्येक विधा में लेखन कार्य सृजित हुआ है। नाट्य साहित्यकारों का भी इस क्षेत्र में मौलिक प्रयास है। इन नाट्य रचनाकारों और उनकी नाट्य रचनाओं का परिचय नाटककारों की जन्मतिथि क्रम के अनुसार निम्न प्रकार से दिया गया है।

ज्योत्स्ना देवधर (27 फरवरी, 1926 ई.–17 जनवरी, 2013 ई.)

ज्योत्स्ना देवधर का एकमात्र हिंदी नाटक 'कल्याणी' सन् 1993 ई. को प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत नाटक स्त्री जीवन की व्यथा-कथा कहने में सजग और स्त्री की पवित्रता को उद्घाटित करने में सक्षम है। संपूर्ण कथानक नायिका कल्याणी के इर्द-गिर्द घूमता है। प्रस्तुत नाटक तीन अंकों में विभाजित है। ये तीनों अंक प्रभावी और कल्याणी की संघर्ष गाथा तथा उसमें प्राप्त उसके यश की करुण कहानी है। प्रस्तुत नाटक में घटना प्रसंगों की सुरुचिपूर्ण व्यवस्था और अभिनेय संवाद योजना नाटक को प्रभावशाली बनाते हैं। नाटक का कथानक एक शापित हवेली की दृश्य योजना से शुरू होता है। कल्याणी उसी घर में ब्याहता होकर आती है। अनेक यातनाओं को कल्याणी सहन करती है और नाटक के अंत में कल्याणी के कारण ही शापग्रस्त हवेली शाप मुक्त होती है। प्रस्तुत नाटक के माध्यम से स्त्री की अद्भुत शक्ति को द्योतित किया गया है। रंगमंचीयता और अभिनेयता की दृष्टि से भी यह नाटक उत्कृष्ट रहा है। प्रस्तुत नाटक को उत्तर प्रदेश नाटक अकादमी द्वारा अखिल भारतीय नाट्यलेखन (पांडुलिपि) प्रतियोगिता सन् 1988-89 ई में डॉ.लक्ष्मीनारायण लाल पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इस तरह हिंदी में उत्कृष्ट नाटक की रचना कर ज्योत्स्ना देवधर ने महत्वपूर्ण कार्य किया है।

संजय भारद्वाज (31 मार्च, 1965 ई.)

संजय भारद्वाज की पहचान नाटककार, कवि, समीक्षक, प्रभावी वक्ता और पुणे की प्रसिद्ध संस्था 'हिंदी आंदोलन' के संस्थापक अध्यक्ष के रूप में रही है। आपके द्वारा लिखित नाटकों में 'दलदल', 'चक्रव्यूह', 'मृत्युदंड', 'दमन' और 'एक भिखारिन की मौत' प्रमुख है।'दलदल' नाटक के लिए सन् 1985 ई. में पुणे विश्वविद्यालय द्वारा 'सर्वश्रेष्ठ नाटक' का सम्मान प्राप्त हुआ। 'मृत्युदंड' पर फीचर फिल्म का प्रस्ताव मिला। आपने लगभग 20 एकांकियों और रेडियो नाटकों का लेखन किया है। पुस्तक रूप में प्रकाशित आपका नाटक 'एक भिखारिन की मौत' (2004) बहुत संवेदनशील और विकृत मानसिकता पर आधारित है। नाटक केवल दो अंकों का है। नाटक में कहीं पर भी भिखारिन का पात्र नज़र नहीं आता है। उसकी मौत पर संपादक रमेश और उपसंपादिका अनुराधा, चित्रकार नज़रसाहब, ए.सी.पी भोसले, फिल्म अभिनेत्री मधु वर्मा, समाजशास्त्र के प्रो.पंत, नेता रमणिकलाल और कॉलगर्ल रुबी का साक्षात्कार

लिया जाता है। इस साक्षात्कार के जरिए से इन सभी चरित्रों का उस भिखारिन के प्रति होने वाले दृष्टिकोण को अवलोकित किया गया है। इस अवलोकन के पश्चात जो तथ्य सामने आते हैं उससे स्पष्ट होता है कि उस भिखारिन के प्रति किसी की भी सहानुभूति नहीं है। उस भिखारिन के सौंदर्य पर लांछन उठाने का प्रयास ही इन साक्षात्कार कर्ताओं के विचारों से स्पष्ट झलकता है। संपूर्ण नाटक का केंद्रबिंदु बनी भिखारिन सब की उपेक्षा का केंद्र बनती है। इसके माध्यम से नाटककार का चिंतनशील व्यक्तित्व हमारे सामने उपस्थित होता है। बहुत गहराई से नाटककार ने भारतीय समाज के घिनौने चेहरे को नाटक के माध्यम से हमारे सामने उपस्थित कर स्त्री जीवन की यथार्थ तसवीर खींचने का विडंबनापूर्ण कार्य किया है। प्रस्तुत नाटक में सामाजिक विडंबना और समाज व्यवस्था पर गहरी चोट की है।

डॉ.राजेंद्र श्रीवास्तव (18 अक्टूबर, 1966 ई.)

डॉ.राजेंद्र श्रीवास्तव लिखित 'सुबह के इंतजार में' (2013) यह आधुनिक जीवन की सच्चाई को उजागर करने वाली सशक्त नाट्य कृति है। समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार की पोल खोलने में यह नाट्य संग्रह सजग दिखाई देता है। प्रस्तुत नाट्य संकलन में कुल 6 नाटक संकलित हैं। प्रथम नाटक 'सुबह के इंतजार में' उस नई सुबह की खोज करता है, जो समाज में और शिक्षा व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार को मिटाना चाहती है। अविनाश जैसा एक प्राध्यापक अगर पूरी ईमानदारी के साथ सच्चाई का सामना करने को तत्पर होता है और उसका साथ अगर आनेवाली पीढ़ी देगी तो निश्चित ही सक्षम भारत का निर्माण हो सकता है और भ्रष्ट व्यवस्था को तिलांजलि मिल सकती है। प्रस्तुत नाटक इसी परिप्रेक्ष्य में लिखा गया है। 'जन्मदिन का कोट','आलू के पराठे', 'थोड़ा सच थोड़ा झूठ' और 'ब्लड कॉट' नाटक आधुनिकबोध से युक्त है। राजेंद्र श्रीवास्तव के नाटकों की भाषा प्रवाहमयी है और पठनीय है। प्रस्तुत नाटकों के कथानक रोजमर्रा की जिंदगी से संबंधित है। प्रस्तुत नाट्य संग्रह के बारे में प्रकाशक का मंतव्य सटीक लगता है- ''संग्रह के सभी नाटकों का फलक अत्यंत व्यापक है। मामूली प्रसंगों और रोज़मर्रा की घटनाओं के माध्यम से मनुष्य और उसके संघर्ष को केंद्र में रखकर असाधारण रचना-सृष्टि की गई है। जीवन और जगत से संबंध नाटककार के सरोकार अपने कथ्य की मार्मिकता से हमें स्तब्ध कर देते है।''[58] इस तरह हिंदी नाट्य साहित्य में डॉ.श्रीवास्तव के नाटक अपनी छाप छोड़ते हैं।

पुणे का एकांकी साहित्य

उपरोक्त नाटककारों के अतिरिक्त प्रभा माथुर, नारायण करंदीकर और श्रीमती गीता शरद खाडे आदि ने एकांकी संग्रहों का सृजन किया है। प्रभा माथुर का एकमात्र एकांकी संग्रह 'ऐसा क्यों.....?' सन् 2005 ई में प्रकाशित हुआ है। इस संग्रह में 8 छोटे-छोटे एकांकी संकलित है। 'फिर दर्शन दीजिएगा', 'गुलामी', 'अभिशाप की कीलें', 'व्हील चेयर', 'छोटे छोटे सपने', 'सुलझन की उलझन', 'लालबागवाली लाल कोठी' और 'किटी पार्टी' आदि नाम से सृजित ये एकांकी अपने आप में अनूठे हैं। विषय वैविध्य इन नाटकों की प्रमुख विशेषता है। निर्धन समाज, विकलांग बच्चों की स्थिति, समाज में व्याप्त लोगों की ठग प्रवृत्ति आदि की स्पष्ट तसवीर इन नाटकों में दिखाई देती है। भारत में व्याप्त अनेक समस्याओं को देखकर लेखिका का मन बार-बार प्रश्न करने को उत्सुक रहता है-ऐसा क्यों ? समाज की सही पकड़ इन एकांकियों में व्याप्त है।

नारायण करंदीकर द्वारा रचित एकांकी 'ओमना' नवम्बर, 2007 में प्रकाशित हुआ है। इस एकांकी में छः पात्र है। किस तरह बदले की भावना से खून किया जाता है और खूनी कितना भी अक्लमंद क्यों न हो, आखिर पकड़ा जाता है इस बात को प्रस्तुत एकांकी में उद्‌घाटित किया है। यह एकांकी युगानुकूल है।

इस क्षेत्र में एक अन्य महिला एकांकीकार का नाम है श्रीमती गीता शरद खाडे। उनका एकमात्र एकांकी संग्रह 'मेरे वतन' अगस्त, 2010 को प्रकाशित हुआ है। इसमें 10 एकांकियाँ सम्मिलित की गई है। ये अलग-अलग विषयों से संबंधित हैं। ऐतिहासिकता के परिप्रेक्ष्य में 'उम्रकैद', 'जैसा शिवा वैसा शंभू' और 'शहीद' आदि प्रमुख है। 'उम्रकैद' में स्वातंत्र्यवीर सावरकरजी का जीवनगत परिचय दिया गया है। 'जैसा शिवा वैसा शंभू' बाल संभाजी के जीवनपट पर केन्द्रित है और 'शहीद' में भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरू की वीरता का चित्रण है। 'वीरमाता' और 'परमशिष्य' आदि ऐसी ही राष्ट्रप्रेम से ओत प्रोत एकांकियाँ हैं। सामाजिकता के परिप्रेक्ष्य में लिखी हुई एकांकियों में 'मजबूरी', 'वतन' और 'चिट्ठी' प्रमुख है। बच्चों की समस्याओं पर आधारित एकांकियों में 'स्वांग' और 'दीदी मेरी एम. बी. बी. एस' प्रमुख है। इस तरह वर्तमान की विविध समस्याओं से संबंधित ये एकांकियाँ कलात्मक दृष्टि से भी सुंदर हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि पुणे में सृजित नाट्य साहित्य विविधांगी और भिन्न-भिन्न विषयों से संबंधित है। ये सभी नाटक समाजसापेक्ष विषयों पर आधारित हैं।

अन्य विधाएँ

पुणे में सृजित हिंदी साहित्य वैविध्यपूर्ण रहा है। यहाँ कविता, कथा साहित्य और नाट्य साहित्य की तरह गद्य की अन्य विधाएँ निबंध, जीवनी, यात्रावर्णन, साक्षात्कार, संस्मरण आदि का लेखन भी पाया जाता है। माना कि यह काव्य, उपन्यास और नाट्य विधाओं की तुलना में कम मात्रा में लिखा गया है। यद्यपि इन विधाओं का सामान्य परिचय प्राप्त करना अनिवार्य है, जो निम्नानुसार है।

निबंध

पुणे के प्रमुख निबंधकारों में, डॉ.प्रभुदास भुपटकर, डॉ.मालती शर्मा और प्रभा माथुर का नाम अग्रगण्य है।

डॉ.प्रभुदास भुपटकर (13 अप्रैल 1913 – ई.2 जून, 1986ई.)

डॉ. प्रभुदास भुपटकर ने दो निबंध संग्रहों का लेखन किया 'सोने में सुगंध' और 'फागुन के दिन चार'। आपके इन दोनों निबंध संग्रहों में संकलित निबंधों का डॉ. पद्मजा घोरपड़े द्वारा संपादित ग्रंथ 'मेरी आँखों का उत्सव' में संकलन किया गया है। प्रस्तुत पुस्तक के प्रथम खंड में उनके 33 निबंध और 5 समीक्षात्मक आलेख संकलित हैं। निबंध के लिए विचारप्रधानता, भाव प्रवीणता, गद्यगीतात्मकता, मनोवैज्ञानिकता, संस्मरणात्मकता और लालित्य योजना का होना अति आवश्यक होता है। निबंध की ये सारी विशेषताएँ इनके निबंधों में पाई जाती हैं। 'पर उपदेश कुशल बहुतेरे', 'करतब वायस-वेष मराला', 'माटी कहै कुम्हार...', 'का वर्षा जब कृषि सुखाने ?', 'सोह न बसन बिना बरनारी' और 'भूख और भगवान' आदि निबंध विचारप्रधान कोटि के हैं। 'बाबूजी तेल चाहिए' और 'चाणक्य चूर्ण' ललित निबंधों की कोटि में आते हैं। 'मंथरा और सरस्वती' और 'तुममे ही होगा कोई गांधी' वर्णनात्मक निबंध हैं। भावात्मक निबंध लिखने में भी लेखक अग्रसर दिखाई देता है। 'पग घुँघरू बाँध मीरा नाची रे' और 'मेरे तो गिरधर गोपाल' आदि भावात्मक कोटि के निबंध हैं। डॉ. भुपटकर के निबंध कई विषयों से संबंधित है। हिंदी साहित्यकारों की उक्तियों पर भी आपने निबंध लिखे हैं।

डॉ. भुपटकर के निबंधों की भाषा मुहावरों और लोकोक्तियों से भरी हुई, स्पष्ट और तलस्पर्शी है। पुणे के निबंध साहित्य में उनका विशेष स्थान है।

प्रभा माथुर (जुलाई, 1937 ई.)

निबंधकार प्रभा माथुर का एकमात्र निबंध संग्रह 'किसने कहा' नाम से प्रकाशित है। प्रस्तुत निबंध संग्रह में कुल 16 निबंध संकलित किए गए हैं। लोक-जीवन, भारतीय समाज और संस्कृति तथा राष्ट्रीय परिवेश से जुड़े प्रश्न इनके निबंधों के प्रमुख विषय हैं। विचारों की स्पष्टता, विश्लेषण और विवेचन की गहराई, हास्य-व्यंग्य के साथ लालित्य इन निबंधों में स्पष्ट दिखाई देता है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में घटित जीवन का निरुपण, जीवन जीने की प्रेरणा और नए भविष्य की खोज इन निबंधों की खास विशेषता है। आपके निबंधों की भाषा विशेषता और विषय वैविध्यता को उद्‌घाटित करते हुए डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित ने लिखा हैं-''व्यंग्य इनके निबंधों का प्राण है। वर्तमान के साक्ष्य पर रचे गए इन निबंधों में अतीत किसी व्यामोह के कारण नहीं, संस्कारशील जीवन जीने की स्पृहा के कारण स्वीकृति पाता है और यथार्थ के वैषम्यमूलक और विसंगत जीवन को नए भविष्य की खोज के लिए प्रेरित करता है।''[59] इस प्रकार प्रभा माथुर लिखित यह निबंध संग्रह पुणे के हिंदी निबंध लेखन में विशिष्ट स्थान रखता है।

डॉ.मालती शर्मा (1938 ई.–13 अक्टूबर 2018 ई.)

डॉ. मालती शर्मा ने 'सो....फिर भादों गरजी...' और 'बागड़ों से उखड़े बबूल' नामक ललित निबंधों की सर्जना की है। मालती शर्मा लिखित निबंध संग्रह 'बागड़ों से उखड़े बबूल' सन् 2007 ई. में प्रकाशित सांस्कृतिक निंबध संग्रह है। प्रस्तुत संग्रह में कुल 11 निबंध संकलित किए गए हैं। लेखिका के शब्दों में ''इन्हें मैं लोकसांस्कृतिक चिंतनपरक निबंध कहना चाहूँगी। ये उतने ही ललित है जितना आज जीवन में लालित्य है और उतने ही अललित भी।''[60] आगे वह इन निबंधों के विषय वस्तुगत महत्व को इस प्रकार निरूपित करती है-''मेरे इन निबंधों में जो कुछ भी है, वह लोक का है, जो 4-5 वर्ष की उम्र से, मेरी यादों की कोठरी में, संचित होता रहा है।''[61] लेखिका के इस वक्तव्य से यह स्पष्ट होता है कि, ये निबंध वाचिक परंपरा से लिखित रूप ले रहे हैं, जो आधुनिक युवा पीढ़ी के लिए अपनी संस्कृति, समय और समाज का स्मरण कराते हैं। ये निबंध अलग-अलग विषयों से संबंधित है। प्रकृति, मानव और संस्कृति-प्रेम के साथ-साथ पर्यावरणीय समस्याओं का चित्रण भी इनमें पाया

जाता है। बबूल जैसे पेड़ का महत्व, स्त्री विमर्श, वर्तमानकालीन भ्रष्ट राजनीति आदि का चित्रण इन निबंधों में पाया जाता है। अतः इन निबंधों में भारतीय धर्म, दर्शन और लोक संस्कृति का आख्यान है और संस्कृति-निरुपण की दृष्टि से इनका विशेष महत्व रहा है।

जीवनी

पुणे के जीवनी लेखकों में श्रीपाद जोशी, डॉ. सच्चिदानंद परळीकर, मुरलीधर जगताप, न. म. जोशी, डॉ. केशव प्रथमवीर, डॉ. वासंती साळवेकर और डॉ.पद्मजा घोरपड़े आदि प्रमुख हैं। इनकी जीवनीपरक किताबों का संक्षिप्त परिचय निम्नानुसार उनकी वरिष्ठता के क्रम के आधार पर दिया गया है।

श्रीपाद जोशी (1920 ई. –2002 ई.)

श्रीपाद जोशी ने 'संत तुकाराम' (1955), 'समर्थ रामदास' (1956), 'संत ज्ञानेश्वर' (1956), 'नाना फडनवीस' (1957), 'संत नामदेव' (1960), 'वीर शिवाजी' (1961), 'भक्त नरसी मेहता' (1962) और 'महाराष्ट्र के समाजसुधारक' (1967) आदि जीवनियाँ लिखकर आदर्श चरित्रों को समाज के सामने रखा और हिंदी में मराठी के थोर पुरुषों को स्पष्टता के साथ अपनी लेखनी के माध्यम से उद्घाटित किया है। उनका यह प्रयास समाज के लिए आदर्शवत रहा है।

डॉ. सच्चिदानंद परळीकर (18 जनवरी 1930 ई.)

डॉ. परळीकर पुणे के हिंदी प्रचारक, अध्यापक, अनुसंधाता और आलोचक आदि कई रूपों में ख्यातिप्राप्त रहे हैं। उन्होंने 'लोकनायक समर्थगुरू रामदास' नामक जीवनी का सृजन किया है। यह पुस्तक सन् 2002 ई. में लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद से प्रकाशित हुई है। महाराष्ट्र के संतों में समर्थ रामदास स्वामी का स्थान महत्वपूर्ण है। मराठी में समर्थ रामदास स्वामी पर कई किताबें लिखी जा चुकी हैं। हिंदी में कम मात्रा में इन पर लिखा गया है। इस कमी की पूर्ति करने का प्रयास डॉ. सच्चिदानंद परळीकर ने किया है। 'लोकनायक समर्थगुरू रामदास' यह किताब कुल ग्यारह अध्यायों में विभाजित है। इसके प्रथम छः अध्यायों में समर्थ रामदास स्वामी के जन्म, बाल्यकाल, तपश्चरण, देशाटन, छत्रपति शिवाजी महाराज के साथ उनके सबंध तथा उनके विविधांगी कार्यों का परिचय दिया गया है। अध्याय सातवें से ग्यारहवें तक में उनकी रचनाओं का परिचय, उनका भक्तिमार्ग, उनके दार्शनिक विचार, समन्वयात्मक दृष्टिकोण और रामदासी संप्रदाय आदि की जानकारी दी गई है। इस जीवनीपरक किताब का हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। इसमें समर्थ रामदास स्वामी के

जीवन विषयक कतिपय गलत धारणाओं का खण्डन किया गया है। पूर्णतः वस्तुनिष्ठता के साथ इस किताब का सृजन किया गया है। समर्थ के विचार और आचार सर्वसमावेशी, सर्वकल्याणकारी, और समन्वय की भावना तथा साधना से ओतप्रोत थे। इस कारण इस किताब नाम 'लोकनायक समर्थगुरू रामदास' अपने आप में सार्थक है। डॉ. परळीकर की 'लोकनायक समर्थ गुरू रामदास' हिंदी की महत्वपूर्ण अनुसंधान परक जीवनी है।

मुरलीधर जगताप (10 जुलाई, 1930 ई.)

मुरलीधर जगताप ने 'युगपुरूष महात्मा फुले' (1993) और 'संत सावतामाली' (1994) ये दो प्रमुख जीवनियाँ लिखी। महाराष्ट्र के थोर समाजसुधारक और स्त्री उद्धारक महात्मा ज्योतिबा फुले और महाराष्ट्र के संत सावतामाली आदि के जीवन चरित्रों तथा उनके कार्य को इन जीवनियों में सविस्तार चित्रित किया गया है। इसके अतिरिक्त महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा की परीक्षाओं के लिए 'महाराष्ट्र के भूषण' भाग-1 और 2 (1998) लिखकर उसमें अभिनय सम्राट बालगंधर्व, युगपुरूष डॉ.बाबासाहेब आंबेड़कर, अर्थशास्त्री सी.डी.देशमुख, कुष्ठरोगियों के मसीहा : बाबा आमटे, और औद्योगिक क्षेत्र के भीष्माचार्य : शांतनुराव किर्लोस्कर आदि के जीवन तथा कार्यों का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है।

डॉ. न. म. जोशी (11 जनवरी,1936 ई.)

डॉ. न. म. जोशी मराठी के प्रसिद्ध लेखक हैं। हिंदी में आपने दो जीवनी परक किताबों का सृजन किया है। महाराष्ट्र के थोर सुपुत्र यशवंतराव चव्हाण और राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पुणे के भूतपूर्व अध्यक्ष वामन माधव दबडघाव इन दो दिग्गजों के जीवन चरित्र का लेखा-जोखा इसमें किया है। 'सहयाद्री का सुपुत्र' नाम से 2013 में प्रकाशित जीवनीपरक कृति में यशवंतराव चव्हाण के जन्म से लेकर महानिर्वाण तक की सारी घटनाओं को विस्तार के साथ प्रस्तुत किया है। इसमें चित्रित उनकी परवरिश, बचपन का जीवन, राजनीति में प्रवेश, अंतरंग और बहिरंग व्यक्तित्व, राष्ट्रभाषा के पुजारी और मातृभाषा मराठी के लेखक यह उनकी प्रतिमा बेहद प्रेरणास्पद रही है। डॉ. न. म. जोशी की दूसरी जीवनीपरक रचना 'कर्मयोगी भैयासाहब' आम्ही नूमवीय प्रकाशन से 30 जून 2005 को प्रकाशित हुई। कर्मयोगी भैयासाहेब याने वामन माधव दबडघाव। पुणे के प्रसिद्ध नूतन मराठी विद्यालय के वे प्रधानाध्यापक थे। विज्ञान के क्षेत्र में उच्च विदयाविभूषित इस महामानव ने राष्ट्रभाषा हिंदी की अखंड सेवा की है। इनके

जीवन के तमाम प्रसंग इस जीवनी में उद्घाटित किए गए हैं। इस तरह ये दोनों जीवनियों का पुणे के हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है।

डॉ. केशव प्रथमवीर (सन् 1939 ई.)

डॉ. केशव प्रथमवीर ने महाराष्ट्र के संत रामदास की जीवनी 'समर्थ गुरू स्वामी रामदास' नाम से लिखी है। यह रचना अमन प्रकाशन से सन् 2013 में प्रकाशित हुई है। लेखक ने इस रचना को दो भागों में विभाजित किया है। प्रथम भाग समर्थ गुरू रामदास (जीवन-परिचय) में संत शिरोमणि रामदास के बचपन, अध्ययन, भारत भ्रमण, उनके कार्य आदि से संबंधित जानकारी दी है। अर्थात् उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं पर जीवनीकार ने प्रकाश डाला है। इस जीवनी के द्वितीय भाग में समर्थ रामदास के कृतित्व का परिचय दिया गया है। रामदास के पद किसी एक विषय पर आधारित नहीं थे, अपितु विभिन्न विषयों से संबंधित थे। लेखक ने इन सभी पदों को वर्गीविश्लेषण के साथ देने का प्रयास किया है। इस तरह लेखक डॉ. केशव प्रथमवीर द्वारा लिखी यह जीवनी समर्थ गुरू रामदास के विचारों को हिंदी प्रदेशों में ले जाने में सार्थक सिद्ध है। जीवनीकार की भाषा सरल और स्पष्ट है। अतः इस जीवनी का हिंदी जगत में विशिष्ट स्थान है।

डॉ. वासंती साळवेकर (जनवरी, 1939 ई.)

डॉ. वासंती साळवेकर ने 'भारत की महिला संत' इस जीवनीपरक किताब का सृजन किया है। यह पुस्तक अतुल प्रकाशन कानपुर से 2017 में प्रकाशित हुई है। इसमें भारत की 22 महिला संत कवयित्रियों के जीवनपट को वाणी मिली है। 'अंडाल' 'लक्ष्मीकरा' 'अक्क महादेवी' 'माधवी' 'लल्लेश्वरी' 'मीराबाई' 'बावरी साहिबा' 'दयाबाई' 'सहजोबाई' 'वेंगमाम्बा' 'गंगासती' 'लोयण' 'महदायिसा' 'जनाबाई' 'मुक्ताबाई' 'कान्होपात्रा' 'वेणाबाई' 'बहिनाबाई' 'श्री सारदादेवी' 'श्री मां आनंदमई' 'कलावती देवी' और 'मालती देवी' आदि की जीवनियाँ लिखकर डॉ. वासंती साळवेकर ने भारतवर्ष के पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है। यह उनकी खोजपरक जीवनियों का संकलन है।

डॉ.पद्मजा घोरपडे (जन्म, 1955 ई.)

डॉ. पद्मजा घोरपडे ने 'सुनो भाई साधो' और 'संत जनाबाई' नामक दो जीवनियाँ लिखी है। 'सुनो भाई साधो' यह उनकी सन् 2009 ई. में युक्ति प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित रचना है। इसमें मराठी साहित्यकार रॉय किनीकर के जीवन चरित्र को उद्घाटित किया है। 'संत जनाबाई' अमन प्रकाशन से सन्

2013 ई. में प्रकाशित जीवनी है। इसमें महाराष्ट्र की प्रमुख और साहित्यिक दृष्टि से उपेक्षित रही संत कवयित्री जनाबाई की जीवनी, व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला है। जिस प्रकार भारतवर्ष में बसे विभिन्न संतों के जीवन विषयक बिंदुओं में मतभेद और किवदंतियाँ दिखाई पड़ती हैं, वैसे ही संत जनाबाई के जीवन चरित्र विषयक अनेक भ्राँतियों की जाँच कर लेखिका ने अनेक तथ्यों को उजागर किया है। संत नामदेव का पालन-पोषन करने वाली यह स्त्री नामदेव की दासी होने के रूप को भी स्वीकार करती है। संत जनाबाई को अन्य संतों की तरह समाज की लांछना का सामना करना पडा है पर, विट्ठल भक्ति की आराधना में वह इस सामाजिक दुर्व्यवहार को भूल जाती हैं। ज्ञान और प्रेम मार्गी भक्ति का प्रतिपादन करती है। जनाबाई के अभंग कलात्मकता के जीवंत दस्तावेज हैं। उसमें नामस्मरण की महिमा, उपदेशात्मकता, रहस्यात्मक अनुभूतियाँ, पुण्य-पाप की ओर देखने का नजरिया, भक्ति, श्रद्धा, समर्पण के विविध पहलुओं का चित्रण, करुणा की चरम अभिव्यक्ति समाज जीवन की दाहकता, दास्यत्व की गहनता आदि विशेषताएँ पाई जाती है। जनाबाई ने अपने मन की अभिव्यक्ति के लिए अभंग साहित्य के साथ, ओवी और भारूड आदि साहित्य प्रकारों को चुना है। जनाबाई का काव्य भाषा-शैली की दृष्टि से उत्कृष्ट नमूना है। इसमें लौकिक-अलौकिक अनुभूतियों की एकरूपता, उलटबासियाँ, छंदों का पुरजोर प्रयोग किया गया है। संत जनाबाई के जीवन चरित्र और उनके कृतित्व के विविध आयामों की खोज करते हुए डॉ. पद्मजा घोरपडे ने इस जीवनी में संत जनाबाई की तुलना-मुक्ताबाई, कान्होपात्रा, बहिणाबाई, गोणाई, राजाई, आऊबाई, लिंबाई, सोयराबाई, निर्मला, भागूबाई आदि संत कवयित्रियों के साथ की है। जनाबाई के विशेष व्यक्तित्व और जीवन विषयक तथ्यों की खोज इस जीवनी में की है। इस जीवन चरित्र विषयक डॉ. बलदेव वंशी के विचार महत्वपूर्ण हैं -''जनाबाई का जीवन नामदेव के सानिध्य में ऐसे महक उठा जैसे किसी सुगंधित पुष्प से मिट्टी महक उठती है। वस्तुतः नामदेव और ज्ञानदेव की भक्ति और ज्ञान के दोहरे प्रभावों में जनाबाई के नारी-मन की पीड़ा-वेदना ने मिलकर मुक्ति-भाव की त्रिवेणी प्रवाहित कर दी जिसमें अवगाहन करके कोई भी भक्त मुक्ति का लाभ ले सकता है।''[62] इस वक्तव्य से स्पष्ट किया जा सकता है कि महाराष्ट्र की उपेक्षित संत कवयित्री जनाबाई का जीवन चरित्र अभावों से ग्रस्त है पर, संत सानिध्य के माध्यम से विशाल और उत्कृष्ट बनता है, इसी तथ्य की खोज प्रस्तुत जीवनी में की गई है।

पुणे के जीवनी साहित्य की विशेषताएँ

पुणे में निर्मित जीवनी साहित्य अधिकतर संतों की जीवनियों से संबंधित है। फिर भी कम अधिक मात्रा में ऐतिहासिक महापुरूषों के जीवन चरित्रों का उद्‌घाटन भी पाया जाता है। श्रीपाद जोशी और मुरलीधर जगताप की जीवनियाँ ऐतिहासिक महापुरूषों के जीवन से संबंधित है। डॉ. परळीकर, डॉ. केशव प्रथमवीर, डॉ. वासंती साळवेकर और डॉ. पद्मजा घोरपड़े की जीवनियाँ संतों के जीवन से संबंधित हैं। पुणे के जीवनी लेखकों में डॉ. केशव प्रथमवीर को छोड़कर अन्य मराठी भाषी है। फिर भी इनकी जीवनियाँ पढ़ने से पता नहीं चलता कि ये मराठी भाषी होंगे। इतनी स्पष्ट और सरल भाषा इन जीवनीकारों की है।

निष्कर्ष

इस तरह पुणे के जीवनी लेखकों ने महाराष्ट्र के थोर संतों, समाजसुधारकों और नेताओं की जीवनियों को लिखकर एक अभाव की पूर्ति की है।

यात्रा वर्णन एवम् भेंटवार्ताएँ

पुणे में कम पैमाने पर यात्रावृत्त लिखे गए हैं। इस क्षेत्र में यदुनाथ थत्ते, डॉ. वासंती साळवेकर और डॉ. दामोदर खड़से के संस्मरण और यात्रावर्णन प्रमुख हैं। इनके संस्मरणों और यात्रा वर्णनों का परिचय निम्नवत् है।

यदुनाथ थत्ते (5 अक्टूबर, 1922 ई. – 10 मई, 1998 ई.)

राष्ट्र सेवा दल के प्रमुख सदस्य तथा साधना साप्ताहिक के संपादक यदुनाथ थत्ते आंतरभारती के सच्चे पुरस्कर्ता और समाजवादी विचारों के वाहक थे। उनका व्यक्तित्व भ्रमणशील होने के कारण उन्होंने महाराष्ट्र के अनेक जिलों, शहरों, तहसीलों और ग्रामों का भ्रमण किया। इन यात्रावृत्तांतों को उन्होंने 'मुसाफिरनामा' इस पुस्तक में समेटा है। 26 जनवरी, सन् 1993 ई. में प्रकाशित इस किताब में 35 अलग-अलग यात्राओं के संस्मरणों को समाहित किया गया है। 'धर्मनिरपेक्षता के लिए राष्ट्र सेवा दल', 'सत्यचेता मुक्ताबाई', 'गढ़चिरोली के वन में तरुणाई', 'मालेगांव में एक दिन', 'ये नकली हिंदू', 'सांख्यिकी में ख्यात डा. गणपत पाटील', 'ऐसे भी एक वैद्य' 'बीज से वृक्ष बना मुस्लिम सत्यशोधक मंडल', 'इस पाप को माफ नहीं कर सकते', 'साधना की ऐतिहासिक सुनवाई', 'वसई के फादर फ्रांसिस दि ब्रिटो', 'एक साधना ऐसी भी', 'अंधश्रद्धा निर्मूलन में डॉ. अरूण लिमये का योगदान', 'पारगाव : नवनिर्माण

की दिशा में एक प्रयोग', 'शरीफ हुसेन बादशाह : एक नेक अध्यापक', 'अहमदनगर का बालिकाश्रम' आदि शीर्षक ही इस बात के संकेत देते हैं कि महाराष्ट्र के अलग-अलग क्षेत्रों में धर्मनिरपेक्षता के भाव से जो व्यक्ति अनमोल कार्य कर रहे हैं, उन्हीं का चिंतन इन लेखों में हुआ है। राष्ट्रनिर्माण में धर्मनिरपेक्षता की ओर ध्यान देना आवश्यक होता है। इनमें महाराष्ट्र के विविध भागों में समाजसेवा का कार्य करने वाले दिग्गजों, निःस्वार्थ भाव से सेवा सुश्रुशा करने वाले डाक्टरों, अंद्धश्रद्धा का विरोध करने वाले ज्ञानियों, शराबखोरी से लोगों को आगाज करने वाले युवकों का यथार्थ वर्णन किया हुआ है। यह वर्णन आगामी पीढ़ी को निश्चित रूप में प्रेरणा देने वाला सिद्ध होगा। यदुनाथ थत्ते के इस 'मुसाफिरनामा' किताब के संदर्भ में न्यायमूर्ति चंद्रशेखर धर्माधिकारी ने लिखा है-''यदुनाथ जी का मुसाफिरनामा यानि दुनिया के मुसाफिरखाने में से चुने हुए कुछ व्यक्ति और संस्थाओं का चरित्रनामा ही है। ....यदुनाथ जी का लेखन धुली हुई खादी के वस्त्र के समान निर्मल है, जिसे न तो टिनोपाल दिया गया है और न नील पारदर्शिता, यह उसकी विशेषता है। वह दिल की भाषा है और 'स्नेह' उसका स्रोत है।''[63] इस तरह थत्ते का 'मुसाफिरनामा' हिंदी में लिखा हुआ महाराष्ट्र के समाजवादी कार्यकर्ताओं का जीवंत जखीरा है।

डॉ. वासंती साळवेकर (17 जनवरी, 1939 ई.)

पुणे की साहित्यिक गतिविधियों में एक नाम है-डॉ. वासंती साळवेकर। जलगांव विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग से सेवानिवृत्त होने के उपरांत आपने पुणे को अपना निवासस्थान और अपनी साहित्यिक हलचलों का केंद्रबिंदु बनाया। आपका यात्रावृत 'मौली धरती मौला आकाश' सन् 2011 ई. में शैलजा प्रकाशन, कानपुर से प्रकाशित हुआ है। आठ अध्यायों में विभाजित इस कृति में लेखिका ने लगभग 29 प्रदेशों का चित्रण हमारे सामने उपस्थित किया है। लेखिका ने 'जम्मू-कश्मीर', 'चारधाम', 'हिमाचल प्रदेश', 'सिक्किम', 'दार्जिलिंग', 'कोलकाता', 'भुवनेश्वर', 'लक्षद्वीप', 'कोलंबो' आदि प्रदेशों तथा उन प्रदेशों के दर्शनीय स्थलों का चित्रण बखूबी किया है। इस यात्रा साहित्य को पढ़ने से संपूर्ण भारतवर्ष की यात्रा करने का आभास पाठक को होता है। स्पष्ट शब्दों और सरल वाक्यरचना में लिखे इस यात्रावृत्त का पुणे के यात्रा साहित्य में विशिष्ट स्थान है।

डॉ. दामोदर खड़से (11 नवंबर, 1948 ई.)

पुणे के प्रमुख यात्रा वर्णनकार, भेंटवार्ताकार एवम् साक्षात्कार कर्ता डॉ. दामोदर खड़से हैं। आपने 'जीवित सपनों का यात्री' और 'एक सागर और'

नामक दो यात्रा वर्णन लिखे हैं। 'जीवित सपनों का यात्री' यह पुस्तक अनुराग प्रकाशन, नई दिल्ली से सन् 1996 ई. में प्रकाशित हुई है। प्रस्तुत पुस्तक साक्षात्कारों, समीक्षाओं, समाज व संस्कृति संबंधी टिप्पणियों और कुछ यात्राओं का संकलन है। यह संकलन पूर्व प्रकाशित और प्रतिष्ठित रचनाओं का पुस्तक रूपी संकलन है। आपने इसे 'धरोहर', 'प्रतिध्वनियाँ', 'बातें-मुलाकातें', 'स्मृति-गुफाएँ' तथा 'प्रतिबिंब' आदि शीर्षकों में विभाजित किया है। 'धरोहर' में बाबा आमटे के साथ की हुई भेंटवार्ता और उनके कुष्ठरोगियों के प्रति समर्पण भावना को व्यक्त किया गया है। इसी विभाग में अनुताई वाघ की उनकी वाणी में ही शब्दांकित की हुई जीवनी वर्णित है। 'प्रतिध्वनियाँ' में दलित आत्मकथाकार दया पवार, लक्ष्मण माने, लक्ष्मण गायकवाड़, शरणकुमार लिंबाळे, केशव मेश्राम, बेबी कांबळे आदि की आत्मकथाओं में चित्रित स्वानुभूत सत्य को उजागर किया गया है। 'बातें-मुलाकातें' में कथाकार भाऊ समर्थ, लेखिका डॉ. उषादेवी कोल्हटकर, नाटयशिल्पी डॉ. विजय तेंदुलकर, हिंदी के पुराने समर्पित प्रचारक गोपाळ परशुराम नेने, नाटककार जयवंत दळवी, अभिनेता प्रभाकर पणशीकर, निर्देशक सदाशिव अमरापुरकर, अभिनेत्री रोहिणी हटठंगड़ी, संगीतकार नौशाद आदि की बातचीत को संकलित किया गया है। 'स्मृति-गुफाएँ' खंड में लेखक ने अपने स्मरणीय प्रसंगों को आलेखों में आबद्ध किया है। अंतिम खंड 'प्रतिबिंब' में खोखली नैतिकता, अश्लील साहित्य, भ्रष्ट राजनीति आदि पर व्यंग्यात्मक प्रहार किया है।

आपका दूसरा यात्रा-संस्मरण 'एक सागर और' दिशा प्रकाशन, दिल्ली से 2008 में प्रकाशित हुआ है। प्रस्तुत पुस्तक में स्वतंत्र रूप से 26 छोटे-छोटे लेख है। ये सभी लेख अमेरिका यात्रा तथा इस यात्रा के दौरान लेखक जिन प्रदेशों से गुजरा वहाँ की ऐतिहासिक, भौगोलिक, आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जानकारी से संबंधित है। लेखक की परख और दुनिया की ओर देखने का नजरिया विचारणीय है क्योंकि इस अमेरिका वर्णन के दौरान उसने अमेरिका की विश्वजनीन समस्याएँ, नई और पुरानी पीढ़ी का अंतर्द्वंद, अमरिका के बारे में विश्व की सोच, वहाँ का समाज और संस्कृति इन तमाम प्रश्नों को विश्लेषित किया है। इस विश्लेषण में प्रयुक्त भाषा, लेखक के कथाशिल्पी व्यक्तित्व को उजागर करती है। जैसे- ''अमेरिका-भौतिक सुख-सुविधाओं और नई दुनिया की आर्थिक राजधानी। दुनियाभर के लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र...। अतिसंपन्नता के कारण जीवन और समाज में अतिविसंगतियों

का अनुभव। विश्व पंचायत के सरपंच के रूप में बागडोर बटोरकर हर क्षेत्र में दिशा तय करने की अमरिका की जिद कई विवादों, संघर्षों और आशंकाओं को जन्म देती रही है। लेकिन, अमेरिका के प्रति दुनिया का आकर्षण कम नहीं हुआ।''[64] लेखक की वर्णन शैली गजब की है, जो पाठक के सामने अमेरिका का दृश्य खड़ा करती है।

डॉ. खड़से का तीसरा साक्षात्कार संग्रह 'संवादों के बीच' शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली से सन् 2015 ई. में प्रकाशित हुआ है। 'संवादों के बीच' यह ख्यातनाम साहित्यकारों, समाजशास्त्रियों, कलाकारों, चिंतकों और प्रतिभावान कार्यकर्ताओं के साथ की हुई बातचीत का जखीरा है। कवि हरिनारायण व्यास, बालकवि बैरागी, गीतकार गुलजार, पंजाबी कवयित्री अमृता प्रीतम, मराठी के ख्यातनाम लेखक शिवाजी सावंत, फिल्मकार मुल्कराज आनंद, हिंदी कथाकार निर्मल वर्मा, व्यंग्यकार शंकर पुणतांबेकर, मराठी नाटयकार विजय तेंडुलकर, जयवंत दळवी, दिलीप चित्रे, समाजशास्त्री उषादेवी कोल्हटकर, समाजसेविका सिंधुताई सपकाळ और विजया लवाटे, ग्रामीण कथाकार सदानंद देशमुख और अरूण साधु, विदेशों में हिंदी सेवा करने वाले डॉ. पी. जयरामन और डॉ. रूपर्ट स्नेल, चित्रकार भाऊ समर्थ आदि के जीवन के विविध पहलुओं पर इसमें प्रकाश डाला गया है। प्रत्यक्षतः इन विद्वानों से मिलकर ही डॉ. खड़से ने संवादों को पुस्तक रूप दिया है।

अतः कह सकते हैं कि प्रतिभासंपन्न लेखक डॉ. दामोदर खड़से द्वारा लिखित यात्रा वर्णन 'जीवित सपनों का यात्री', 'एक सागर और' और 'संवादों के बीच' लेखक के अनुसंधाता रूप को उद्‌घाटित करते हैं।

डॉ. सुनील देवधर (1955 ई.)

डॉ. सुनील देवधर की कृति 'संवाद अभी शेष है' साक्षात्कार संग्रह का बेजोड नमूना है। यह कृति सन् 2007 ई. में रामप्रसाद एण्ड सन्स प्रकाशन, आगरा से प्रकाशित हुई है। इसमें डॉ. दामोदर खड़से, डॉ. उषादेवी कोल्हटकर, डॉ. चित्रा मुद्‌गल, बालकवि बैरागी, कुंवर बिहारी सक्सेना 'लोचन', निदा फाजली, राजदत्त, शरद ठक्कर, मुनिश्री तरूण सागर और भाईश्री रमेश ओझा आदि अलग-अलग क्षेत्रों के शख्सियत के साक्षात्कार शब्दबद्ध किए हैं। साक्षात्कार संवादों के माध्यम से लिए जाते हैं। इन्हें जब शब्दबद्ध किया जाता है, तब वे पुस्तकाकार रूप लेते हैं। डॉ. देवधर ने इस पुस्तक के माध्यम से यही किया है। पुस्तक पढ़ने से प्रतीत होता है कि साक्षात्कार कर्ता ने विवेच्य मनीषियों के

अंतर्मन को आँका है। अनुवाद और अनुवादक कैसा होना चाहिए इस संबंध में डॉ. दामोदर खडसे के विचार बेहद प्रभावी हैं। इस पुस्तक के माध्यम से इन महानुभावों के विचारों से अवगत होने का भाग्य पाठकों को मिलता है। इस तरह डॉ. सुनील देवधर के संवाद इस पुस्तक रूपी प्रकाशन से जीवित और शेष बने रहते हैं।

पुणे के यात्रावर्णन, भेंटवार्ता एवं साक्षात्कार साहित्य की विशेषताएँ

पुणे के यात्रावर्णनकार यद्यपि मराठी भाषिक होने पर भी इनकी हिंदी लेखन शैली अच्छी है। इन्होंने महाराष्ट्र की धरती के कलाकारों, समाजसेवियों के वर्णन के साथ ही साथ संपूर्ण भारतवर्ष और देश-विदेश की यात्राओं का सजग वर्णन कर पाठक वर्ग के सामने इन प्रदेशों का जीवंत चित्रण साकार कर दिया है।

निष्कर्ष

यदुनाथ थत्ते, डॉ. वासंती साळवेकर, डॉ. दामोदर खडसे इन तीन लेखकों ने यात्रावर्णन लिखकर एक अभाव की पूर्ति की है। डॉ. दामोदर खडसे और डॉ. सुनील देवधर ने साक्षात्कार लेखन में अपनी छाप छोडी है। इस क्षेत्र में इनका नाम अग्रणी है।

संस्मरण साहित्य

संस्मरण, लेखक की यादों का सफर होता है। स्मरणीय प्रसंगों पर आधारित लेखन को संस्मरण कहा जाता है। इस दिशा में गोपाळ परशुराम नेने, डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित और डॉ. केशव प्रथमवीर का नाम उल्लेखनीय है। इन सभी संस्मरण लेखकों और उनके संस्मरणों का परिचय निम्न क्रम में दिया गया है।

गोपाळ परशुराम नेने (20 जुलाई, 1913 ई.–10 मई 1990 ई.)

गोपाळ परशुराम नेने महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे के पूर्व मंत्री संचालक थे। उन्होंने 'संगी साथी' नामक संस्मरण में 23 हिंदी प्रचारकों एवं उनके हिंदी प्रचार-प्रसार के योगदान को अधोरेखित किया है। इनमें नाना धर्माधिकारी, कांतिलाल जोशी, रामानंद शर्मा, काका कडेपूरकर, रामेश्वरदयाल दुबे, बलवंत घाटे, अत्रे गुरूजी, ल.तु.कदम, रजनीकांत चक्रवर्ती, कुमठेकर, डॉ. भुपटकर, शेजवलकर, वेमूरी आंजनेय शर्मा, भैयाशास्त्री वाटवे, मोड़क, गिरिराज किशोर, भालचंद्र आपटे, अमृते, देवरे, साठे और केळुसकर, भी.म.गुरू आदि के चरित्रों को उजागर किया गया है। ''महाराष्ट्र में राष्ट्रभाषा का प्रचार, विशेषता महाराष्ट्र

के कोने-कोने में करते समय जो व्यक्ति संपर्क में आए और जिनकी निष्ठा एवं आस्था हिंदी और राष्ट्रीयता को एक मानती रही, उनकी झाँकी नेने जी ने अपने 'संगी-साथी' में दी है।''[65] अतः नेने द्वारा प्रस्तुत इस संस्मरण के कारण महाराष्ट्र के हिंदी प्रचार-प्रसार की भूमिका और तत्कालीन हिंदी प्रचारकों का परिचय प्राप्त होता है। इस संस्मरण का पुणे के साहित्यिक योगदान में महत्वपूर्ण स्थान है।

डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित (6 फरवरी, 1923 ई.)

डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित पुणे के सुप्रतिष्ठित आचार्य हैं। इन्होंने साहित्य की लगभग हर विधा में लेखनी चलाई है। संस्मरण लेखक के रूप में भी आप ख्यातिप्राप्त हैं। इनके लिखे हुए संस्मरण विविध पत्र-पत्रिकाओं, गौरवग्रंथों और अन्यान्य प्रकार की पुस्तकों में प्रकाशित हो चुके हैं। ये सभी बेजोड़ हैं क्योंकि ये हिंदी के मूर्धन्य विद्वानों की स्मृतियों से जुड़े हुए हैं। इनमें अनन्य निष्ठा एवं कर्तव्यपरायणता की प्रतिमूर्ति-श्रीधर मिश्र (1993), विद्याविनय की मूर्ति : आचार्य विनयमोहन शर्मा (1986), 'सुमन' एक गरिमावान व्यक्तित्व (शिवमंगल सिंह पर संस्मरण 1987), एक भास्वर व्यक्तित्व को इतिहास की तिलांजलि (डॉ. रसाल पर संस्मरण, 1995), डॉ. रघुवीर सिंह, मेरे लिए परमानंद श्रीवास्तव का होना (1996), सरोवर में तैरता राजहंस महापंडित राहुल सांकृत्यायन (1997), पुरूषार्थ की कसौटी डॉ. केशव प्रथमवीर (1999) आदि शीर्षक से लिखे संस्मरण प्रमुख है। इन संस्मरणों में विवेचित व्यक्ति हिंदी के मूर्धन्य आलोचक हैं। अतः डॉ. दीक्षित का संस्मरण लेखक के रूप में भी महत्वपूर्ण स्थान है।

डॉ. केशव प्रथमवीर (1939 ई.)

डॉ. केशव प्रथमवीर के संस्मरण भी विभिन्न पत्रिकाओं, ग्रंथों में बिखरे पडे हैं। उनका संकलित रूप अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है। उन्होंने 'प्रिय भाई मुख्त्यारसिंह', 'अंग्रेजी और मेरी फजियत', 'काले अक्षरों का कारनामा', 'विवाह और मेरी फजीयत', 'उत्तर बनाम दक्षिण', 'बांदिवडेकर : जैसा मैंने देखा', 'शंकरराव खरात : जैसा मैंने देखा', 'डॉ. स. म. परळीकर : संतुलित विवेकशील व्यक्तित्व', 'पहली आजाद हिंद सरकार के संस्थापक राजा महेंद्रप्रताप सिंह', 'न्यायाधीश राजाभाव गवांदे', डॉ. ब्रजवल्लभ मिश्र एक बहुआयामी साहित्यकार', 'पुणे के निष्ठावान हिंदी प्रचारक कार्यकर्ता पंढरीनाथ मुकुद

डांगरे', 'वर्धा समिति के मंत्री रामेश्वरदयाल दुबे', 'मंत्री भदंत आनंद कौसल्यायन', 'फगरे जी और महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति मेरी दृष्टि में' आदि संस्मरणात्मक आलेख लिखे हैं। इनके अतिरिक्त आपने 'हिंदी के प्रचार-प्रसार में पुणे की भूमिका' नामक संस्मरणात्मक आलेख लिखकर पुणे के हिंदी प्रचार-प्रसार की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को अधोरेखित किया है। ये सभी संस्मरण उनके जीवनरूपी नौका के विविध क्षणों को स्पष्ट करते हैं। डॉ. प्रथमवीर की संस्मरणात्मक निबंधों की किताब 'जब पानी ने बानी कौ काम संभार्यो' प्रकाशन की राह पर है।

आत्मकथा साहित्य

हिंदी साहित्य के इतिहास में जब आत्मकथा साहित्य के उद्भव की बात की जाती है, तो बनारसीदास जैन कृत 'अर्धकथानक' (सन् 1641 ई.) प्रथम आत्मकथा मानी जाती है। यह आत्मकथा जैन के 55 वर्ष की जीवन रेखा तक व्याप्त है। अतः यह अपने शीर्षक के अनुसार ही आधी कथा है। इसके बाद स्वामी दयानंद सरस्वती की 'उपदेश मंजरी' का उल्लेख प्रथम स्थान पर आता है। यह आत्मकथा 'पूना प्रवचन' के नाम से प्रसिद्ध है। इस संदर्भ में डॉ. रघुनाथ देसाई ने लिखा है- ''हिंदी में भारतेंदु युग की महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा स्वकथित व स्वलिखित आत्मकथा 'उपदेश मंजरी' या 'पूना प्रवचन' (सन् 1874) से आत्मकथा साहित्य का उद्भव माना जाता है।''[66] बड़े आश्चर्य की बात यह है कि यह आत्मकथा पुणे से प्रसारित है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि पुणे नगरी में हिंदी साहित्य की लगभग सभी विधाओं का उत्कृष्ट लेखन कार्य हुआ है। यहाँ पर बसे हिंदी रचनाकार अपनी साहित्यिक विधाओं के माध्यम से अपने हिंदी प्रेम को दर्शाने में सक्षम दिखाई देते हैं।

संदर्भ

1. मृग ओर तृष्णा - हरिनारायण व्यास, पृ.58
2. वही - पृ.62
3. कविवर हरिनारायण व्यास : व्यक्तित्व एवं कृतित्व - डॉ.चंद्रकांत मिसाळ, (शुभकामनाएँ से)
4. सुबह की धूप - डॉ. सिंधु भिंगारकर, अपनी बात से
5. वही, पृ. 37
6. लक्ष्मणरेखा - प्रभा माथुर, पृ. 15
7. वहीं, पृ. 19
8. भीगे पंख - प्रभा माथुर, पृ. 9

9. लोकयज्ञ - संपादक डॉ. राजेंद्र सोनवणे 'अक्षत', पृ. 9
10. भीष्म पितामह-मेजर सरजू प्रसाद 'गयावाला', पृ. (अपनी बात से)
11. कैकेयी- मेजर सरजू प्रसाद 'गयावाला', पृ. 9
12. मधुसुमन - मधु हातेकर, पृ. 25
13. वही, पृ. 10
14. पिघलती मोमबत्ती - रजनी पाथरे 'राजदान', पृ. 24
15. सांझ की बेला - गजेंद्रदेव उपाध्याय, पृ. 19
16. सुकुन - बलदेव साजनदास 'निर्मोही', पृ. 1
17. वहीं, पृ. 9
18. वहीं, पृ. 11
19. तुम लिखो कविता - डॉ. दामोदर खड़से, पृ.
20. कागज की जमीन पर - संपादक डॉ. सुनील देवधर और डॉ.राजेंद्र श्रीवास्तव, पृ. 91.
21. यादों का सफर - शम्मी चौधरी, पृ. 1
22. वहीं, पृ. 2
23. इसीलिए शायद - आसावरी काकडे, पृ. 11
24. मेरा तसव्वुर- उद्धव महाजन 'बिस्मिल', पृ.4
25. थोडासा आसमान- उद्धव महाजन 'बिस्मिल', पृ. 50
26. वही- पृ. 70
27. वही- पृ. 80
28. मिटटी की खुशबू- उद्धव महाजन 'बिस्मिल', पृ. 7
29. वही- पृ. 80
30. धूप में साया- उद्धव महाजन 'बिस्मिल', पृ. 18
31. ग़ज़ल के साथ - , उद्धव महाजन 'बिस्मिल' पृ. 39
32. चाँद और रोटी - डॉ.सुभाष तळेकर, पृ. आत्मकथ्य से
33. देहरी के आर पार - डॉ.कांतिदेवी लोधी, पृ. 36
34. जनसत्ता (सबरंग) 20 जून 1993, पृ. 14
35. जख्मों के हाशिए - डॉ.पद्मजा घोरपडे, पृ. 8 (भूमिका से)
36. वही - पृ. 31
37. संवादो के आकाश - डॉ. पद्मजा घोरपडे, पृ. 007
38. हास्यास्पद - शरदेंदु शुक्ला 'शरद'. पृ. 30
39. वहीं, पुरोवाक् से
40. दस्तक - इंदिरा शबनम 'पूनावाला' कलमकार की कलम से।
41. आझाद भारत में कैद हूँ - डॉ. इंदु पांडेय, पृ. 7
42. वही, पृ. 14
43. अनन्त की ओर - भोलादत्त जोशी, पृ. 67

44. धुली-धुली शाम का उजाला - प्रभा माथुर. पृ. 50
45. वहीं, पृ. 51
46. वहीं, पृ. 9
47. मुर्दे की पीठ पर - डॉ. इंदु पांडेय, पृ. 92
48. अंतरा -ज्योत्सना देवधर, प्रकाशकीय मंतव्य से
49. आधी कृति - प्रभा माथुर, अपनी बात से।
50. वहीं, पृ. 56
51. मनमंथन - मेजर सरजूप्रसाद 'गयावाला', पृ. 12
52. शेष प्रसंग - डॉ. दिप्ति गुप्ता, पृ. भीने उद्गार से
53. रिश्तों के परे रिश्ते - डॉ. पद्मजा घोरपड़े, समर्पण से।
54. वहीं, कवर पेज पर छपी डॉ. निदारिया की समीक्षा से।
55. इबादत - इन्दिरा शबनम 'पूनावाला', पृ. 6
56. उपन्यास का आदमी - डॉ. इंदु पांडेय, पृ. 8
57. अभी वे जानवर नहीं बने - डॉ. राजेंद्र श्रीवास्तव, पृ. 22
58. सुबह के इंतजार में - डॉ. राजेंद्र श्रीवास्तव, प्रकाशकीय से.
59. किसने कहा - प्रभा माथुर, पृ. 2.
60. बागो से उखड़े बबूल - डॉ. मालती शर्मा, पृ. 7
61. वहीं, पृ. 7
62. संत जनाबाई - डॉ. पद्मजा घोरपडे, पृ. 9
63. मुसाफिरनामा - स्व. यदुनाथ थत्ते, प्रास्ताविक से
64. एक सागर और - डॉ. दामोदर खड़से, पृ. फ्लैश पर से
65. संगी साथी - गो.प.नेने, प्रकाशकीय मंतव्य
66. महिला आत्मकथा लेखन में नारी - डॉ. रघुनाथ देसाई, पृ. 2

षष्ठ अध्याय

हिंदी अनुवाद-साहित्य को पुणे की देन

प्रस्तावना

प्रस्तुत अध्याय में पुणे की हिंदी अनुवाद परंपरा पर एक सामान्य दृष्टिक्षेप डालते हुए पुणे के हिंदी अनुवादकों की नामावली प्रस्तुत की गई है। तत्पश्चात पुणे के हिंदी अनुवादकों द्वारा मराठी तथा हिंदीतर भाषाओं से हिंदी में अनूदित कृतियों का शोध-अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। उपरोक्तनुसार चर्चा करने से पूर्व अनुवाद विधा के महत्व और उसकी प्रासंगिकता पर दृष्टिपात करना समीचीन होगा।

अनुवाद विधा का महत्व तथा प्रासंगिकता

अनुवाद दो भाषाओं, दो संस्कृतियों के बीच सेतु का काम करने वाली सशक्त विधा है। अनुवाद केवल भाषांतर ही नहीं होता है, बल्कि अलग-अलग भाषा-भाषियों को सम-भूमि पर प्रतिष्ठित करके उन्हें वाणी प्रदान करता है। अनुवाद के माध्यम से विभिन्न सभ्यताओं-संस्कृतियों-धर्मों और सामाजिक स्तरों पर तथा देश-विदेश में संवाद स्थापित हो पाता है। 'वसुधैव कुटुंबकम्' के विचार को स्थापित करने और संपूर्ण विश्व में ज्ञान-विज्ञान तथा नवीनतम जानकारी को दूसरी भाषा में प्रस्तुत करने का श्रेष्ठ माध्यम अनुवाद है। वस्तुतः अनुवाद एक महत्वपूर्ण साहित्यिक विधा है जिससे राष्ट्र में विद्यमान विविध भाषाओं या बोलियों के ज्ञान, विचार और संस्कृति आदि का परस्पर विनिमय होता है। अनुवाद किसी एक भाषा प्रदेश की संस्कृति को दूसरी भाषा, प्रदेश तथा समूचे राष्ट्र में पहुंचाने वाला वाहक है। अनुवाद राष्ट्र की एकता को बनाए रखने का सशक्त माध्यम है। ''वस्तुतः अनुवाद एक महत्वपूर्ण विधा है जिससे राष्ट्र में विद्यमान विविध भाषाओं या बोलियों के ज्ञान और विचारों को वाणी भी मिलती है। अनुवाद राष्ट्र की एकता को बनाए रखने का सशक्त माध्यम है।''[1] इस प्रकार की समन्वय की साधक इस विधा को पुणे के अनुवादकों ने मराठी से

हिंदी और हिंदी से मराठी अनुवाद करके हिंदी अनुवाद परंपरा की ठोस भूमि तैयार की है।

पुणे में हिंदी अनुवाद की परंपरा

मौलिक एवं सृजनात्मक साहित्य की समृद्धि में जिस प्रकार पुणे के साहित्यकारों का अतुलनीय योगदान रहा है, ठीक उसी प्रकार हिंदी अनूदित साहित्य की विकास-यात्रा में भी इनका लक्षणीय प्रदेय रहा है। पुणे में मराठी से हिंदी और हिंदी से मराठी में अनूदित साहित्य की उत्कृष्ट और लंबी परंपरा रही है।

पुणे में हिंदी अनुवाद परंपरा के मूल स्रोत अर्थात आरंभ बिंदु का पता लगाना एक जटिल और तलस्पर्शी प्रक्रिया है। पुणे के हिंदी अनुवाद की परंपरा के संदर्भ में डॉ. केशव प्रथमवीर का वक्तव्य दृष्टव्य है- ''पुणे में हिंदी अनुवाद की गंगोत्री भी कम से कम एक सौ वर्ष पुरानी है। लोकमान्य तिलक के 'गीतारहस्य' जैसे महाग्रंथ का अनुवाद माधवराव सप्रे ने किया था, जो बहुत लोकप्रिय हुआ था।''[2] प्रस्तुत वक्तव्य के आधार पर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि पुणे में हिंदी अनुवाद की परंपरा के बीज स्वतंत्रता काल के पूर्व पाए जाते हैं। लोकमान्य तिलक पुणे के थे और हिंदी के हिमायती भी थे। इसलिए उनके 'गीतारहस्य' के अनुवाद को पुणे के अनुवाद परंपरा की प्रारंभिक कड़ियों में गिना जा सकता है। इसी प्रकार हरिनारायण व्यास के मामा पं गोपीवल्लभ उपाध्याय ने साने गुरूजी की मराठी किताब 'श्यामची आई' का 'श्याम की माँ' नाम से 10 नवंबर सन् 1939 ई. में पुणे विद्यार्थी गृह प्रकाशन, पुणे 30 से अनुवाद प्रकाशित करवाया था, जो इसी परंपरा की महत्वपूर्ण किताब है। ''कविवर हरिनारायण व्यास ने भी ग. दि. माडगूळकर की कृति 'गीत-रामायण' का अनुवाद कार्य किया है।''[3] महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे का भी इस अनुवाद कार्य में विशेष योगदान रहा है। इस संस्था ने प्रारंभ से ही कतिपय हिंदी अनूदित पुस्तकों के प्रकाशन कार्य में अपनी सहयोगिता दर्शाई है। प्रारंभिक काल में सभा के सहकार्य से लेखक काकासाहेब गाडगीळ की मराठी किताब 'वक्तृत्वशास्त्र', लेखिका दुर्गा भागवत की किताब 'ऋतुचक्र', लेखक श्री. ना. पेंडसे का उपन्यास 'चट्टान का बेटा', विजय तेंदुलकर का नाटक 'अमीर' आदि किताबों के अनुवाद हुए हैं। पुणे में मधुकर रामराव यार्दी द्वारा अनूदित 'सुरस ज्ञानेश्वरी' इस ग्रंथ का भी विशेषस्थान है। सन् 1992 में प्रकाशित इस किताब में ज्ञानेश्वरी

के श्लोंको का सरस हिंदी अनुवाद किया गया है। इस तरह पुणे में हिंदी अनुवाद की शुरूआत किस कृति से हुई या किस लेखक ने की, यह बताना मुश्किल है। इसके दो प्रमुख कारण बताए जा सकते हैं। एक तो इस क्षेत्र में अनुसंधान कार्य का अभाव और दूसरे जुलाई, 1961 ई. में पानशेत बाँध के टूट जाने से मध्यवर्ती स्थित सभा के कार्यालय में संगृहित पुरानी सामग्री की नष्टता। इस कारण हिंदी अनुवाद कार्य में पुणे के योगदान को देखने के लिए कुछ परवर्ती अनुवादकों का और उनकी अनूदित उपलब्ध सामग्री का अध्ययन करना आवश्यक है। इस प्रकार अध्ययन पूर्ण खोजबीन के बाद पुणे के अनेक सुधी अनुवादकों के नाम सामने आते हैं।

पुणे के हिंदी अनुवादकों की नामावली तथा परिचय

हिंदी अनुवाद परंपरा में पुणे के प्राध्यापकों और अनन्य विभागीय कार्यालयों में कार्यरत हिंदी अधिकारियों का सहभाग रहा है। इनमें से कई अनुवादकों को विशिष्ट सम्मान एवं पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं। पुणे के इन अनुवादकों में डॉ. प्रभुदास भुपटकर,श्रीपाद जोशी, पद्माकर जोशी, यदुनाथ थत्ते, मधुकर रामराव यार्दी, डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित,मुरलीधर जगताप, डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर, डॉ. सिंधु भिंगारकर, डॉ. केशव प्रथमवीर, डॉ. वासंती साळवेकर, डॉ. हनुमंत साने, डॉ. अशोक कामत, डॉ. गजानन चव्हाण, डॉ. स्मिता दात्ये, डॉ. दामोदर खड़से, डॉ. पद्मजा घोरपडे, मीरा नांदगांवकर डॉ. वी. एन. भालेराव और डॉ. गोरख थोरात आदि के नाम उल्लेखनीय है। इसी प्रकार सुशीला दुबे, डॉ. तुकाराम पाटील, पांडुरंग कापडनीस, मृणालिनी सावंत, डॉ. सुनील देवधर, आसावरी काकड़े, डॉ. सुभाष तळेकर, डॉ. नीला बोर्वणकर, डॉ. ओमप्रकाश शर्मा, डॉ. सविता सिंग, डॉ. सदानंद भोसले, डॉ. मंजूषा पाटील, डॉ. बाळासाहेब सोनवणे आदि के नाम ध्यातव्य है। इन अनुवादकों की वरिष्ठता के अनुसार उनके हिंदी अनूदित साहित्य के प्रदेय को वरिष्ठता के क्रमानुसार सार दृष्टिपात करेंगे।

डॉ. प्रभुदास भुपटकर (13 अप्रैल 1913 ई. – 2 जून, 1986 ई.)

डॉ. प्रभुदास भुपटकर पुणे के अनुभव संपन्न अनुवादक और हिंदी की प्रदीर्घ सेवा-कार्य से जुड़े होने के कारण उन्हीं के नाम से पुणे की हिंदी अनुवाद साहित्य की परंपरा को देखने का प्रयास किया जा रहा है।

डॉ. प्रभुदास भुपटकर सर परशुरामभाऊ महाविद्यालय (पुणे) के प्रथम हिंदी विभाग प्रमुख थे। पुणे विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में डॉ. भगीरथ मिश्र

के आगमन के पूर्व विभाग का कार्यभार डॉ. भुपटकर ही संभाल रहे थे। वे मराठी, हिंदी, अंग्रेजी, बांग्ला, फ्रेंच आदि भाषाओं के जानकार थे। उनके बहुभाषाविद होने का हिंदी अनुवाद कार्य में उन्हें पर्याप्त लाभ हुआ, जैसे- फ्रांन्सिसी नाटक 'डॅमेज्ड गुड' का अनुवाद उन्होंने 'फटे हाल' नाम से हिंदी में किया है। यह नाटक सन् 1950 ई. में पुणे में खेला गया था। डॉ. भुपटकर के कई ध्वनि-रुपकों के मराठी से हिंदी में अनुवाद प्रसारित हुए हैं। उन्होंने पु.ल.देशपांडे के 'पुढारी पाहिजे' फार्स का 'मुखिया चाहिए' के नाम से हिंदी अनुवाद किया और पुणे में उसका सफल मंचन भी किया गया। मराठी लेखिका श्रीमती मुक्ताबाई दीक्षित की मराठी नाटयकृति 'जुगार' का उन्होंने सन् 1970 ई. में 'जूआ' नाम से हिंदी में अनुवाद किया है। नाटक का परिवेश सन् 1946 ई. के आस-पास का है। इसमें पुरूषों की बहुविवाह पद्धति पर प्रहार किया गया है। इस अनूदित कृति के संदर्भ में महादेवी वर्मा का निम्नस्थ वक्तव्य दृष्टव्य है- ''प्रादेशिक भाषाओं की साहित्यिक निधियों को हिंदी में लाने का कार्य सांस्कृतिक एकता की दिशा में उठाया गया पग है, अतः अनुवादक महोदय का प्रयास अभिनंदनीय होने के साथ-साथ अनुकरणीय भी है।''[4] इस प्रकार एक महत्वपूर्ण सामाजिक समस्या पर आधारित इस कृति का हिंदी अनुवाद की परंपरा में उल्लेखनीय अवदान है।

श्रीपाद जोशी (1920 ई. –2002 ई.)

श्रीपाद जोशी हिंदी तथा मराठी के प्रसिद्ध लेखक है। काकासाहब कालेलकर, हिंदी के पंडित वियोगी हरि और महात्मा गांधी के साथ उनका संपर्क था। वे राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रचार कार्य में तन-मन से सहयोग देते रहे। मुरगुड (जिला-कोल्हापुर) उनकी जन्मभूमि है और महाराष्ट्र की सांस्कृतिक राजधानी पुणे उनकी कर्मभूमि है। उनकी प्रारंभिक शिक्षा पुणे के नूतन मराठी विद्यालय में हुई। लगभग दो साल आपने वर्धा के अध्यापक विद्यालय में अध्यापन का कार्य भी किया। श्रीपाद जोशी एक उत्कृष्ट अनुवादक थे। आपकी अनूदित पुस्तकों की संख्या प्रायः 70 के करीब मानी जाती है। जोशी की मराठी में लिखी गई औपन्यासिक कृति 'विस्कटलेल घरटं' का स्वयं उन्होंने 'ध्वस्तनीड़' नाम से अनुवाद किया है, यह उनकी ख्यातिप्राप्त रचना है। महात्मा गांधी की हत्या के पश्चात पूरे देश में जो ब्राह्मण-अब्राह्मण विवाद से संबंधित सांप्रदायिकता, जातीय तनाव, मानसिक संकिर्णता, हिंसाचार की भीषण समस्या उपस्थित हुई

उस पर इस कृति में मनोज्ञ भाष्य किया है इस कृति के विषय में स्वयं जोशी की टिप्पणी ध्यातव्य है- ''महाराष्ट्र को पहचानने में मेरा यह उपन्यास किसी हद तक हिंदी जानने वाले पाठकों को अवश्य मददगार बनेगा।''[5] भावों की तरलता एवं विह्वलता का चित्रण इस कृति की महत्वपूर्ण विशेषता है।

पद्माकर जोशी (1922 ई.)

पद्माकर जोशी हिंदी के पुराने अनुवादक हैं। अनेक पुस्तकों के अनुवाद करने के बावजूद भी वे अप्रकाशित और अलक्षित रहे हैं। 17 जनवरी, 1995 के डॉ. दामोदर खड़से द्वारा लिखित 'नवभारत टाईम्स' के दै. अखबार में प्रकाशित लेख के आधार पर उनके अनुवाद साहित्य का परिचय यहाँ दिया गया है। जोशी द्वारा अनूदित साहित्य हिंदी से मराठी में अधिक मात्रा में पाया जाता है। हिंदी से मराठी में उन्होंने कतिपय हिंदी कृतियों के अनुवाद किए हैं। इनमें कमलेश्वर के 'लौटे हुए मुसाफिर', डॉ. धर्मवीर भारती के 'सूरज का सातवा घोड़ा' और 'गुनाहों का देवता', मन्नू भंडारी का 'महाभोज', अज्ञेय का 'शेखर एक जीवनी' जैनेंद्र का 'त्यागपत्र', निर्मल वर्मा का 'एक चिथड़ा सुख' और 'लाल टीन की छत' भगवतीचरण वर्मा का 'चित्रलेखा', कमलेश्वर के 'कितने पाकिस्तान' आदि प्रमुख है। डॉ. पद्माकर जोशी ने लगभग 36 किताबों के हिंदी से मराठी में अनुवाद किए हैं। पद्माकर जोशी का निजी जीवन कई जटिलताओं से भरा था। वे एक अच्छे प्राध्यापक और हिंदी अनुवादक थे। खामोश व्यक्तित्व और कर्तव्यनिष्ठ अभ्यासक थे। मराठी से हिंदी में अनुवाद करने वालों की कमी नहीं है, पर हिंदी से मराठी में अनुवाद करने वालों की कमी है। इसी अभाव की पूर्ति पद्माकर जोशी ने की है। डॉ. जोशी ने सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय से सन् 1977 ई. में ''हिंदी में मराठी-अनूदित साहित्य।'' इस विषय पर पी-एच.डी. अनुसंधान कार्य पूर्ण किया। इस कारण अनुवाद साहित्य पर उनकी अच्छी पकड़ रही है। डॉ. दामोदर खड़से ने डॉ. पद्माकर जोशी के बारें में लिखा है- ''डॉ. पद्माकर जोशी ने अपने आपको एक खामोश पुल की तरह हिंदी और मराठी के बीच बिछा दिया है। इस पर इतनी आवाजाही होगी यह उन्होंने सोचा भी नहीं था। अब यह कार्य उनके जीवन से इतना जुड़ गया है कि उसे वे अलग नहीं कर सकते इसके विपरित सेवानिवृत्ति के बाद यह अनुवाद संजीवनी का कार्य कर रही है।''[6] इससे तात्पर्य यह कि कई प्रमुख पुस्तकों के हिंदी से मराठी में अनुवाद करना पद्माकर जोशी के कार्य का अभिन्न हिस्सा बन चुका था। इनका अनुवाद कार्य अनुसंधान की दृष्टि से पूरी तरह हाशिए पर है। जिसका प्रथम प्रयास यहाँ

पर किया गया है। पद्माकर जोशी अपने अंतिम दिनों में कहाँ गए पता नहीं, पर उनका अनुवाद कार्य आज भी उनकी याद दिलाता है।

डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित (6 फरवरी 1923 ई.)

डॉ आनंदप्रकाश दीक्षित हिंदी के सुप्रतिष्ठित आचार्य, समीक्षक, आलोचक, संपादक और वरिष्ठ अनुसंधाता हैं। आपने कतिपय समीक्षात्मक पुस्तकों के हिंदी अनुवाद किए हैं। पुणे में साहित्यिक कृतियों के अनुवाद तो बड़े पैमाने पर हुए, किन्तु काव्यशास्त्र संबंधी और चिंतनपरक निबंधों के अनुवाद बहुत कम हुए हैं और जो भी हुए हैं, वे डॉ. दीक्षित ने किए हैं। मूल बंग्ला के प्रसिद्ध दार्शनिक तथा साहित्यकार डॉ. सुरेंद्रनाथ दासगुप्त के मूल्यवान ग्रंथ 'सौंदर्यशास्त्र' का हिंदी अनुवाद सन् 1960 ई. में डॉ. दीक्षित ने किया है। मराठी के कतिपय विद्वानों के रससिद्धांत विषयक कुछ इने-गिने लेखों का आपने हिंदी अनुवाद किया है। राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा वर्ष 1998 ई. में प्रकाशित इस अनूदित पुस्तक का नाम है- 'रसचिंतन के विविध आयाम'। श्री शांतिलाल भण्डारी के ग्रंथ 'भारतायन' का हिंदी रुपांतरण भी आपने किया है। यह एक उत्कृष्ट अनुवाद परंपरा की पुस्तक है। इस अनूदित पुस्तक को महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी, मुंबई का बाबूराव विष्णु पराडकर सम्मान प्राप्त हुआ है। उनके अनुवाद विषयक ख्याति का आधार है संतश्रेष्ठ तुकाराम महाराज के अभंगों का सव्याख्या हिंदी गद्य और पद्यमय अनुवाद है। यह अनुवाद महाराज तुकाराम इस वेबसाईट पर उपलब्ध है। वर्ष 2008 में सामयिक प्रकाशन दिल्ली से उनकी और एक 'रसचर्चा' नामक किताब प्रकाशित हुई है। मराठी के काव्यशास्त्री डॉ. पद्माकर दादेगावकर की मराठी पुस्तक 'रसचर्चा' का यह हिंदी अनुवाद है। डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित द्वारा किए हुए अनुवाद अन्य अनुवादकों की तुलना में कुछ अलग प्रकार के ठहरते हैं। पुणे के समीक्षकों में उनका नाम अग्रणी है ही, पर पुणे के अनुवादकों की सूची में भी उनका नाम ससम्मान लिया जाता है।

मुरलीधर जगताप (10 जुलाई 1930 ई.)

मुरलीधर जगताप पुणे के वरिष्ठ अनुवादक थे। लगभग 24 रचनाओं का आपने हिंदी में अनुवाद किया है। आपके अनुवाद साहित्य की मात्रा और पर्याप्तता विपुल मात्रा में पाई जाती है। आपकी अनुदित रचनाओं को दो वर्गों में विभाजित कर देखा जा सकता है-अंग्रेजी से हिंदी में किए गए अनुवाद और

मराठी से हिंदी में किए गए अनुवाद। इन अनूदित रचनाओं को निम्न क्रमानुसार देख सकते हैं-

मराठी से हिंदी

1. सोनार बांगला (बांगला देश का स्वतंत्रता संग्राम), सन् 1980 ई.
2. कच्ची धूप (लेखक विजय तेंदुलकर लिखित ललित निबंध संग्रह), सन् 1991 ई.
3. आर्य चाणक्य (लेखक वसंत पटवर्धन का उपन्यास), सन् 1991 ई
4. आरक्षित पदों की समस्याएँ और मंड़ल आयोग (भाई वैद्य लिखित), सन् 1991 ई.
5. पुणे आकाशवाणी से प्रसारित दो मराठी नाटकों का और 'म. फुले : साहित्य और विचार' इस पुस्तक के 75 पृष्ठों का अनुवाद।
6. बंबई से रोम मोटर साइकिल पर (लेखक प्रवीण कारखानीस लिखित मराठी यात्रावर्णन), सन् 1994 ई.
7. वाल्मीकि रामायण : शाप और वरदान (श्री.र.भिड़े लिखित) सन् 1993 ई.
8. सवाल अपना-अपना (प्रिया तेंडुलकर की कहानियाँ), सन् 1996 ई.
9. रामप्रहर (विजय तेंडुलकर लिखित ललित निबंध), सन् 1996 ई.
10. सैर कर दुनिया की गाफिल, सन् 1999 ई.
11. बाबा आमटे (डॉ.भ.रा.बापट लिखित जीवन चरित्र का हिंदी अनुवाद), सन् 2000 ई.

अंग्रेजी से हिंदी

1. बैंक ऑफ महाराष्ट्र अधिकारी विनियमावली, सन् 1980 ई.
2. लघु उद्योग उद्यमकर्ताओं के लिए मार्गदर्शी सिद्धांत, सन् 1987 ई.
3. लघु उद्योग : विपनन प्रबंधन की अनिवार्यताएँ, सन् 1987 ई.
4. बैंक कार्यविधि - कार्यालय कार्य विधि पुस्तक, सन् 1988 ई.
5. बैंक प्रशिक्षण पुस्तक, सन् 1989 ई.

उपर्युक्त सूची के अतिरिक्त 'तारीखे इस्कंदरी' दक्खिनी काव्य का हिंदी से मराठी में अनुवाद (सन् 1972 ई), भारत सरकार के कार्यालय के लिए लगभग 5000 पृष्ठों का अंग्रेजी और मराठी से हिंदी अनुवाद (सन् 1985 ई से सन् 1992 ई. तक), विभिन्न जमा योजनाओं, आवेदनों, लेखन सामग्री की मदों और परिपत्रकों आदि से संबंधित 10,000 पृष्ठों का अनुवाद और 200 से अधिक फॉर्मों, 70 से अधिक रजिस्टरों के मजमून का भी हिंदी अनुवाद किया है। इस

अनुदित सामग्री की सूची इस बात को प्रमाणित करती है कि आपने न सिर्फ साहित्यिक विधाओं का अपितु बैंक एवं कार्यालयीन पुस्तकों का हिंदी अनुवाद कर हिंदी की अखंड सेवा की है।

मुरलीधर जगताप को मौलिक और अनूदित लेखन कार्य की प्रशस्ति में केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा का वर्ष 2002 का 'गंगाशरण सिंह पुरस्कार' महामहिम राष्ट्रपति अब्दुल कलाम जी के हाथों दिया गया था वह विशेष महत्व रखता है। डॉ. खडसे ने उनके अनूदित कार्य के संदर्भ में लिखा हैं-''एक अनुवादक के रूप में आपका योगदान उल्लेखनीय है। उन्होंने विजय तेंदुलकर, वसंत पटवर्धन, प्रिया तेंदुलकर, प्रवीण कारखानीस, भा. रा. बापट के साथ कई मराठी लेखकों-चिंतकों को हिंदी पाठकों तक पहुँचाया है। तकनीकी साहित्य और विज्ञापन से जुडी सामग्री का उन्होंने अत्यंत सटीक अनुवाद किया है।''[7]

इस प्रकार मुरलीधर जगताप ने अंग्रेजी, मराठी आदि भाषाओं के साहित्य से हिंदी में अनुवाद किए हैं, साथ ही बैंकिग क्षेत्र से संबंधित नियमावलियों और कार्य पुस्तिकाओं के भी अनुवाद किए हैं।

डॉ. सिंधु भिंगारकर (जन्म 1931 ई.)

हिंदी प्रचारिका, अध्यापिका और अनुवादिका के रूप में डॉ. सिंधु भिंगारकर की पहचान है। आपने भारतीय भक्तिकोश प्रथम खंड 'भारतीय आचार्य' का हिंदी अनुवाद किया है। इनकी दूसरी अनूदित रचना है-'तिलक और आगरकर'। मराठी लेखक विश्राम बेडेकर की यह मराठी कृति 'टिळक आणि आगरकर' का यह हिंदी अनुवाद है। इन दोनों कृतियों के बारे में केवल उल्लेख मात्र किया गया हैं क्योंकि ये किताबें उपलब्ध न हो सकी। आपकी तीसरी अनूदित कृति है-'सूर्यास्त'। मराठी के प्रसिद्ध लेखक आचार्य अत्रे की यह मराठी पुस्तक का हिंदी अनुवाद है। प्रस्तुत पुस्तक भारत के प्रथम प्रधानमंत्री नेहरू के जीवनचरित्र पर आधारित है। नेहरू की मृत्यु के पश्चात आचार्य अत्रे ने उनके जीवन विषयक विविध पहलुओं पर लगभग 17 लेख दैनिक 'मराठा' में प्रकाशित करवाए। इन्हीं लेखों का संकलन 'सूर्यास्त' यह पुस्तक है। इस कृति में चित्रित नेहरू के चरित्र को अत्रे ने अत्यंत संस्कारशील भाषा में प्रस्तुत किया है। इस ओजमयी भाषा से प्रभावित होकर डॉ. सिंधु भिंगारकर ने इसका हिंदी अनुवाद किया है। इस संदर्भ में उन्होंने लिखा है-''सूर्यास्त' पुस्तक पढने पर उसकी भाषा शैली, उत्कट आत्मीयता और सूक्ष्म विश्लेषण से मैं प्रभावित हुई। मुझे ऐसा लगा कि आ. अत्रे

जी की प्रतिभा इन लेखों में उत्तुंग शिखर पर विराजमान हुई है। अतः सोच लिया कि हिंदी पाठकों को भी उससे परिचित करा दूँ।''[8] अनुवादिका ने अनुवाद विज्ञान का पूरा ध्यान रखते हुए प्रस्तुत कृति का हिंदी अनुवाद किया है।

डॉ.चंद्रकांत बांदिवडेकर (4 नवंबर 1932 ई.)

डॉ.चंद्रकांत बांदिवडेकर हिंदी और मराठी के वरिष्ठ आलोचक और अनुवादक है। हिंदी और मराठी लेखन संपदा को विकसित करने में आपका प्रमुख हाथ है। मौलिक लेखन के साथ-साथ अनुवाद साहित्य में भी आपका विशेष योगदान है। उन्होंने 8 पुस्तकों के अनुवाद किए हैं। आपके अनुवाद निम्नवत् है-

मराठी से हिंदी में अनुवादित ग्रंथ

1. चानी (चिं. त्र्य. खानोलकर के मराठी उपन्यास का हिंदी अनुवाद), राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली, 1976
2. ऑक्टोपस (श्री. ना. पेंडसे के मराठी उपन्यास का हिंदी अनुवाद), राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली, 1977
3. इसी मिट्टी से (ज्ञाननीठ पुरस्कार विजेता मराठी कवि श्री कुसुमाग्रज की मराठी कविताओं का हिंदी अनुवाद), ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली
4. सौंदर्यमीमांसा (डॉ. रा. भा. पाटणकर के सौंदर्यशास्त्र पर लिखे मराठी ग्रंथ का हिंदी अनुवाद), साहित्य अकादमी, दिल्ली, 1990
5. प्रेम कहानी (रत्नाकर मतकरी के मराठी नाटक का हिंदी अनुवाद) कला प्रकाशन, दिल्ली, 1995
6. यह जनता अमर है (विं. दा. करंदीकर की मराठी कविताओं का हिंदी अनुवाद) संवाद प्रकाशन, मेरठ, 2001
7. कविता मनुष्यों के लिए (मंगेश पाडगावकर की पुस्तक का हिंदी अनुवाद) ज्ञानपीठ दिल्ली.

उपर्युक्त अनूदित साहित्य कृतियों के अतिरिक्त आपने श्री. पी. गुप्ता के 'प्रेमचंद' इस हिंदी ग्रंथ का मराठी में अनुवाद किया है, जो सन् 1982 में साहित्य अकादमी दिल्ली की ओर से प्रकाशित किया गया है।

डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर ने मराठी की अनेक महत्वपूर्ण किताबों का हिंदी में अनुवाद करके मराठी और हिंदी साहित्य की श्रीवृद्धि में चार चाँद लगाने का महत् प्रयास किया है। मराठी साहित्य के अनेक ख्यातनाम लेखकों को अखिल भारतीय स्तर पर पहुँचाने का प्रयास किया है। आपके इस महत्वपूर्ण कार्य की

प्रशस्ति में पुणे के आलोचक डॉ. केशव प्रथमवीर ने लिखा है- ''डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर ने तो केशव प्रथमवीर जैसे कई अनुवादकों का निर्माण किया है।''[9] इस वक्तव्य से मिलता जुलता उद्धरण डॉ. पद्मजा घोरपड़े का भी मिलता है, उन्होंने लिखा है- ''डॉ. बांदिवडेकर जी ने हिंदी-मराठी साहित्य के बीच अनुवाद का पुल बांधने का महती कार्य किया है। मराठी के दलित साहित्य से समूचा हिंदी जगत् परिचित हुआ वह बांदिवडेकर जी के 'दस्तावेज' के मराठी दलित साहित्य के संपादित अंक की वजह से। उन्होंने अनुवादकों की एक पीढ़ी तैयार की।''[10] इस तरह स्पष्ट किया जा सकता है कि वर्तमान में महाराष्ट्र में जो मराठी भाषी हिंदी अनुवादकों की पीढ़ी दिखाई देती है, वह डॉ. बांदिवडेकर की प्रेरणा और प्रोत्साहन से बनी मालूम पड़ती है।

डॉ. सुशीला दुबे (22 जुलाई 1936 ई.)

डॉ. सुशीला दुबे पुणे की अनुवादिका हैं। इनके अनुवाद साहित्य का क्षेत्र मुख्यतः कथा साहित्य है। पुणे विश्वविद्यालय से उन्होंने सन् 1999 ई. में 'मराठी से हिंदी में अनूदित उपन्यासों का अनुवादपरक समीक्षात्मक अनुशीलन' विषय पर डॉ. गजानन चव्हाण के मार्गदर्शन में पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की है। इस कारण अनुवाद की उन्हें विपुल जानकारी रही है। अनुवाद केवल शब्दों का नहीं होता, अपितु मूल कृति में निहित भावों का होता है। डॉ. दुबे द्वारा अनूदित रचनाएँ भावानुवाद की सार्थक इकाई मानी जा सकती है। आपने मराठी से हिंदी में 'चौफुला' उपन्यास का अनुवाद किया है। साथही 30 प्रसिद्ध कहानियों के अनुवाद प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। उन्होंने मराठी से हिंदी में जो अनुवाद कार्य किया है उसकी तुलना में हिंदी से मराठी में किया हुआ अनुवाद कार्य विपुल मात्रा में दिखाई देता है।

हिंदी से मराठी में अनुवाद

1. लेखक श्री भगवान अटलानी की किताब 'इंद्रधनुष क्षितिज के' का 'इंद्रधनुष्य क्षितिजांचे' नाम से मराठी अनुवाद 31 मार्च, 2014 को।
2. लेखक श्री भगवान अटलानी की किताब 'अपनी अपनी मरीचिका' का 'ज्याचं त्याच मृगजळ' नाम से मराठी अनुवाद जून, 2015।
3. सुषमा मुनींद्र के कथा संग्रह का मराठी में अनुवाद 'विलोम' नाम से (सितंबर, 2015)।
4. हिंदी की प्रसिद्ध लेखिका मृदुला गर्ग के उपन्यास 'मैं और मैं' का मराठी अनुवाद 'मी आणि मी' नाम से (2015)।

5. लेखक डॉ. रूपसिंह चंदेल के 'गलियारे' उपन्यास का 'गल्ली बोळ' नाम से मराठी अनुवाद।
6. 'थोड़ी सी आशा' श्रीमती सुषमा मुनींद्र की कृति का मराठी अनुवाद इसी नाम से।
7. प्रसिद्ध लेखक डॉ. शरद पगारे की ऐतिहासिक औपन्यासिक कृति 'बेगम जैनाबादी' का मराठी अनुवाद इसी नाम से प्रकाशित (अक्टूबर, 2015)।
8. प्रसिद्ध लेखक डॉ. शरद पगारे की ऐतिहासिक औपन्यासिक कृति 'गंधर्वसेन' का मराठी अनुवाद इसी नाम से प्रकाशित।

डॉ. सुशीला दुबे द्वारा हिंदी के अनेक जाने-माने लेखक-स्वयंप्रकाश, कमला, श्री भगवान अटलानी, जयनंदन, श्रीमती सुषमा मुनींद्र, डॉ. पुष्पा सक्सेना, श्रीमती कमलपुरकर, श्रीमती जया नर्गीस, आदि की लगभग 230 कहानियों के मराठी अनुवाद स्त्री, किर्लोस्कर, रोहिणी, वसंत, केसरी और प्रभात जैसी स्तरीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके है।

मराठी भाषी अनुवादिका सुशीला दुबे ने अनेक प्रतिष्ठित हिंदी कहानियों और उपन्यासों के मराठी में अनुवाद करके पुणे के हिंदी अनुवादकों में अपना नाम दर्ज किया है, जो उनकी प्रमुख उपलब्धि कही जा सकती है।

डॉ.केशव प्रथमवीर (24 जनवरी, 1939 ई.)

पुणे विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर एवं हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. केशव प्रथमवीर का हिंदी भाषा एवं साहित्य को विपुल प्रदेय रहा है। डॉ. प्रथमवीर की जन्मभूमि उत्तर प्रदेश के आगरा के निकट चम्बल घाटी परिसर में 'दिगरौता' गाँव है पर, उनकी कर्मभूमि पुणे रही है। पुणे विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग से सेवानिवृत्त होने के पश्चात् वे यहाँ रहकर लेखन कार्य करने लगे। मराठी और हिंदी दोनों भाषाओं के अच्छे जानकार होने की वजह से उनका अनुवाद कार्य सफल रहा हैं। आपने अनेक नामी-गिरामी मराठी कृतियों के हिंदी अनुवाद किए हैं। आपकी अनूदित कृतियों की सूची निम्नानुसार है-

1. तराल-अंतराल (लेखक शंकरराव खरात लिखित मराठी आत्मकथा का हिंदी अनुवाद- नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली. संस्करण 1987)
2. भारत में शास्त्रों का उद्गम और विकास (लेखक डॉ.पंढरीनाथ प्रभू लिखित विज्ञान चिंतन का हिंदी अनुवाद- वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली संस्करण 1988)

3. अंतिम आत्मकथा (लेखक राजेंद्र बनहट्टी लिखित मराठी उपन्यास 'शेवटच आत्मकथन' का हिंदी अनुवाद साप्ताहिक धर्मयुग में 21 मई 1989 से जुलाई 1989 तक धारावाहिक रूप में प्रकाशित और पुस्तक रूप में विद्या मंदिर, नई दिल्ली की ओर से 1990 में प्रकाशित।)
4. सी.यू.अगेन (लेखक शांतिलाल भंड़ारी के कश्मीर यात्रावृत्तांत का हिंदी अनुवाद- जगतराम एण्ड संस, नई दिल्ली, 1990)
5. स्वतंत्रता का महाभारत (लेखक ग.प्र.प्रधान लिखित इतिहास एवं राजनीति विषयक पुस्तक का सन् 1995 में हिंदी अनुवाद यह किताब दीर्घा प्रकाशन नई दिल्ली से प्रकाशित हुई।)
6. जूझ (लेखक डॉ. आनंद यादव कृत औपन्यासिक आत्मकथा 'झोंबी' का हिंदी अनुवाद-ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली से सन् 1999 में)

उपर्युक्त प्रमुख ग्रंथों के अतिरिक्त आपने आकाशवाणी प्रसारण हेतु कुछ मराठी नाटकों के भी हिंदी में अनुवाद किए हैं। ये निम्न है-

1. कालाय तस्मय नमः (लेखक चि.त्र्यं.खानोलकर लिखित)
2. बादल (लेखिका सौ. सुधा साठे कृत)
3. सूर्यफूल (लेखक बी. एस. शिंदे कृत)
4. एक गुलाम की गाथा (लेखिका सौ. उषा परांडे लिखित)
5. जगन्नाथ का रथ (लेखिका सौ. ऊषा परांडे कृत)

डॉ. प्रथमवीर जी ने कई प्रमुख कहानियों का हिंदी में अनुवाद कर हिंदी साहित्य की समृद्धि में चार चाँद लगाने का महत् प्रयास किया है। इन कहानियों की सूची इस प्रकार है-

1. बदलते संदर्भ (लेखिका मंगला गोडबोले की मराठी कहानी)
2. टेलीग्राम (लेखक सुनील गंगोपाध्याय की मराठी कहानी)
3. गुदड़ी (लेखक आनंद यादव की मराठी कहानी)
4. मेरा नाम (लेखक शंकरराव खरात की मराठी कहानी)
5. नहान का पर्व (लेखक आनंद यादव की मराठी कहानी)

प्रस्तुत कहानियों के अतिरिक्त केंद्रीय हिंदी निदेशालय की परियोजना के अंतर्गत 'मराठी तत्वज्ञान कोश' के कुछ भाग, लेखक. डा. राम काळे की पुस्तक का 'दाँतों की देखभाल', नारायण सुर्वे की चार कविताओं का और भारतीय स्टेट बैंक के कृषि महाविद्यालय पुणे की कृषि संबंधी हजारों पृष्ठों की अंग्रेजी सामग्री आदि का हिंदी में अनुवाद किया है। आपके इस समृद्ध कार्य पर अनेक

विश्वविद्यालयों में शोध-कार्य भी हुआ है, जैसे-सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय में एम. फिल. उपाधि हेतु स्वीकृत शोध-प्रबंध 'झोंबी का हिंदी अनुवाद : एक अनुशीलन', चेन्नै विश्वविद्यालय में स्वीकृत एम. फिल. शोध उपाधि हेतु ''जूझ का अनुवाद कला की दृष्टि से एक अध्ययन'' और सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय में पी-एच.डी. उपाधि हेतु स्वीकृत शोध-प्रबंध ''डा. केशव प्रथमवीर के अनुवाद कार्य के विशेष संदर्भ में अनुवादपरक अध्ययन'' आदि प्रमुख है। डॉ. प्रथमवीर ने हिंदी की साहित्यिक पुस्तकों के साथ विविध विषयों से संबंधित पुस्तकों के हिंदी में अनुवाद किए हैं। उनकी अनूदित कृतियों पर विविध दृष्टिकोणों से विविध विश्वविद्यालयों में अनुसंधान कार्य किया जाना और राजस्थान सरकार के स्कूलों तथा केंद्रीय विद्यालय संगठन के 12 वीं कक्षा के पाठ्यक्रम में 'झाडा झडती' के कुछ अंश का पाठ्यक्रम में समावेश किया जाना उनकी अनूदित कृतियों की सफलता का द्योतक है।

डॉ. वासंती साळवेकर (जनवरी 1939 ई.)

डॉ. वासंती साळवेकर एक कुशल अनुवादिका है। मराठी से हिंदी में आपकी तीन अनूदित किताबें प्रकाशित हैं। 'लालबहादुर शास्त्री मेरी निगाहों में' यह उनकी सन् 1999 ई. में प्रकाशित प्रथम अनूदित रचना है। मराठी के प्रसिद्ध साहित्यकार आचार्य प्रल्हाद केशव अत्रे की मराठी किताब 'इतका लहान केव्हढा महान' का यह हिंदी अनुवाद है। इसमें भारत के पूर्व प्रधान मंत्री लाल बहादुर शास्त्री के विचारों और जीवन प्रवाह का विषद चित्रण किया गया है। अनूदित कृति और मूल कृति दोनों को पढ़ने से पता नहीं चलता की मूल कृति कौनसी है। डॉ. वासंती साळवेकर का यह अनुवाद कार्य सराहनीय है। सन् 2008 ई. में प्रकाशित 'स्वातंत्र्यवीर सावरकरजी पर किए गए आक्षेप-एक मूल्यांकन' यह आपकी दूसरी महत्वपूर्ण अनूदित कृति है। इसमें महाराष्ट्र के सुपुत्र स्वातंत्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर के जीवन विषयक कतिपय तथ्यों पर समीक्षात्मक विचार व्यक्त किए हैं। मराठी के लेखक श्री दिलीप रामचंद्र पुरोहित की मराठी कृति 'स्वातंत्र्यवीर सावरकरांवर केलेले आक्षेप : एक मूल्यांकन' का यह हिंदी अनुवाद है। इस रचना में सावरकर पर किए गए पाँच आक्षेपों का तर्क के आधार पर मूल्यांकन किया गया है। 1. क्या गांधी हत्या के पीछे सावरकर का सहयोग था ? 2. क्या सावरकर द्विराष्ट्रवाद के जनक हैं ? 3. क्या सावरकर ने ब्रिटिशों से क्षमा याचना की थी ? 4. क्या सावरकर के पास आर्थिक कार्यक्रम नहीं था

? 5. क्यों सावरकर कोई संगठन खड़ा नहीं कर सके ? इन प्रश्नों का गहरा अध्ययन इस कृति की प्रमुख उपलब्धि है। इनकी तीसरी अनूदित किताब 'संत तुकाराम की अभंगवाणी' यह है। मराठी संतों ने समाज सुधार का व्यापक प्रयास किया है। पर इनके विचार कम पैमाने पर हिंदी भाषी प्रदेशों में जा सके। संत तुकाराम के लगभग 463 अभंगों का आपने हिंदी में अनुवाद करके इस अभाव की पूर्ति की है। इस तरह इन तीनों अनूदित किताबों का पुणे के हिंदी अनुवाद साहित्य में विशेष स्थान है।

डॉ. हनुमंत साने (11 अप्रैल 1941 ई. – 8 अप्रैल सन् 2000ई.)

एस. पी. महाविदयालय पुणे के पूर्व प्राचार्य एवं अनुवाद विज्ञान के जानकार प्रा. डॉ. हनुमंत श्रीपाद साने की कुल आठ किताबें प्रकाशित हैं। उनकी प्रथम प्रकाशित किताब 'प्रेमचंद एक सिंहावलोकन' (1984) संपादित है। दूसरी किताब 'वाग्विकल्प' (1986) डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित जी पर लिखा हुआ अभिनंदन ग्रंथ है, इसके वे सह संपादक रह चुके हैं। इनकी तीसरी किताब 'सामाजिक शास्त्रे आणि साहित्य : अंतःसंबंध' (1995) मराठी में संपादित की हुई किताब है। 'यशपाल के उपन्यासों में सामयिक चेतना' यह उनके पी-एच.डी. शोध प्रबंध की किताब है। सन् 1988 में सरस्वती प्रकाशन कानपुर से यह प्रकाशित हुई। इन किताबों के अलावा आपकी अन्य चार किताबें अनुवाद की है। उनकी प्रथम अनूदित कृति है-'प्राचीन भारतीय साहित्य मिमांसा एवं आकलन'। सन् 1994 में यह राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुई है। पुणे के मराठी, हिंदी और अंग्रेजी के भाषाविद्वान डॉ. अशोक केळकर लिखित बृहद् मराठी लेख का यह हिंदी अनुवाद है। पुणे विश्वविद्यालय के दर्शन विभाग से प्रकाशित 'परामर्श' पत्रिका के अप्रैल-जुलाई 1979 ई. के अंक में यह प्रकाशित हुआ था। बाद में उन्होंने इसे प्रदीर्घ रूप देकर अलग से प्रकाशित किया। इस पुस्तक में साहित्य विषयक कई धारणाओं की भ्रांतियों को दूर किया गया है। उनकी दूसरी अनूदित रचना 'अमृतानुभव कौमुदी' सन् 1995 ई. में विद्या प्रकाशन मंदिर, नई दिल्ली से प्रकाशित हुई है। यह किताब भाष्य की है। वेदांत केसरी श्री बाबाजी महाराज पंडित द्वारा विरचित इस कृति में अद्वैत वेदांत के अनमोल सिद्धांतों का विवेचन किया गया है। आठसौ श्लोकों पर आधारित इस मराठी कृति को प्रा. हनुमंत साने ने हिंदी पाठकों तक उसी अन्वयार्थ के साथ पहुँचाया है। डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित द्वारा संपादित और

अनूदित किताब 'रस चिंतन के विविध आयाम' के वे सह अनुवादक रह चुके हैं। यह किताब सन् 1997 ई. में राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित है। रस सिद्धांत के विविध आयामों की खोज मराठी साहित्य में विपुल मात्रा में पाई जाती है। प्रस्तुत मूल मराठी कृति में रस सिद्धांत विषयक नूतन उद्भावनाओं के साथ रस का स्वरूप, रस का व्यवच्छेदक लक्षण, रस विचार, नाटयशास्त्र, भरतमुनि और रस, रसास्वाद के धरातल, करूण रस मिमांसा, त्रासदी, काव्यानंद और क्रांतिरस, सौंदर्यरस, भाव-गंध आदि विषयों पर विचार किया गया है। ये विचार पारंपारिक दृष्टिकोण पर आधारित न होकर नवीन उद्भावनाओं का चिंतन है। हिंदी जगत् में इस पुस्तक का आना अपने आप में सार्थक प्रयास है। डॉ. साने का यह प्रयास सराहनीय है। आपकी चौथी और अंतिम अनूदित कृति 'गंगाधर गाडगीळ प्रतिनिधि समीक्षा' यह है। सन् 2000 ई. में वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली से यह प्रकाशित हुई है। मराठी के प्रसिद्ध रचनाकार गंगाधर गाडगीळ की प्रसिद्धि उनके समीक्षात्मक विचारों और लेखों से लगाई जाती है। गाडगीळ के साहित्य विषयक समीक्षात्मक विचारों का मराठी साहित्य पर ही नहीं अपितु भारतीय साहित्य पर प्रभाव रहा है। इसी ओर ध्यान देते हुए प्रस्तुत अनूदित रचना का निर्माण किया गया है। तीन खंडों में विभाजित इस कृति में गाडगीळ के सैद्धांतिक आलोचना, व्यावहारिक आलोचना और नई साहित्य मीमांसा विषयक लेखों का अनुवाद किया गया है। डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर ने उनके अनुवाद कार्य के संदर्भ में लिखा है-''मराठी समीक्षा-विचार लगभग समग्र महत्वपूर्ण रस विमर्श हिंदी में ले जाने का कार्य डॉ. साने और डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित ने किया है।''[11] इस वक्तव्य को आधार बनाकर कह सकते हैं कि मराठी के रसविषयक सिद्धांतों का हिंदी भाषियों को परिचय कराने का कार्य साने के अनुवाद कार्य ने किया है।

डॉ.अशोक कामत (10 जनवरी 1942 ई.)

डॉ.अशोक कामत संत साहित्य के अध्येता हैं। मौलिक साहित्य लेखन की तरह अनुवाद के क्षेत्र में भी अशोक कामत का उल्लेखनीय योगदान रहा है। आपकी अनूदित कृतियाँ निम्नांकित हैं-

1. 'हिंदुविश्व' नामक पत्रिकाओं के सन् 1966-70 तक के अंकों का हिंदी अनुवाद
2. 'समर्थ रामदास' (हिंदी अनुवाद) नेशनल बुक ट्रस्ट, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा सन् 1988 को प्रकाशित।

3. 'संत तुकाराम' के लगभग 5000 अभंगपदों का हिंदी अनुवाद, प्राचार्य वेदकुमार वेदालंकार के सहयोग से किया है, जो गुरूकुल प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित है।

डॉ. कामत ने कुछ पुस्तकों का हिंदी से मराठी में अनुवाद किया है। इन पुस्तकों में सुभाषमय दिवस (1977) और संत कबीर (1966) आदि प्रमुख हैं।

डॉ.अशोक कामत ने मराठी संतों के पदों का हिंदी में अनुवाद कर के इन अभंगों को अखिल भारतीय स्तर तक पहुँचाया है। अतः उनका यह हिंदी अनुवाद कार्य पुणे के हिंदी अनुवाद कार्य में एक अलग स्थान और महत्व रखता है।

मीरा नांदगांवकर (11 नवंबर 1942 ई.)

साहित्यिक और वैज्ञानिक विषयों की मराठी और अंग्रेजी जानकारी को हिंदी में अनुवाद करने वाली मीरा नांदगांवकर सफल अनुवादिका है। इन्होंने साहित्यिक, धार्मिक, वैज्ञानिक और कार्यालयीन दस्तावेजों के काफी मात्रा में अनुवाद किए हैं। इनके इस अनुवाद को साहित्यिक अनुवाद और साहित्येतर अनुवाद इन दो वर्गों में वर्गीकृत कर के देखा जा सकता है, जो निम्नानुसार विवेचित है-

साहित्यिक क्षेत्र का अनुवाद कार्य

मीरा नांदगांवकर ने मुख्यतः मराठी उपन्यास, कहानी संग्रह तथा नाटकों के सफल अनुवाद किए हैं। उनके इस अनुवाद साहित्य की सूची निम्नलिखित है।

मराठी उपन्यासों के हिंदी अनुवाद

1. अथाह की थाह (लेखक गो. नी. दांडेकर की मराठी औपन्यासिक कृति मृण्मयी का हिंदी में अनुवाद) यह पुस्तक सस्ता साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा सन् 1989 ई. को प्रकाशित की गई है।
2. अग्निशिखा (लेखक गो. नी. दांडेकर की औपन्यासिक कृति 'दास डोंगरी राहतो' का हिंदी अनुवाद) यह पुस्तक सस्ता साहित्य भंडार, नई दिल्ली द्वारा सन् 1991 ई. में प्रकाशित की गई।
3. मनोबोध (लेखिका वसुंधरा सातवळेकर की संत रामदास द्वारा रचित 'मनाचे श्लोक' एवं 'भावार्थ' के अनुसार एक एक संस्कार कथा का हिंदी में अनुवाद) यह पुस्तक अर्चना प्रकाशन, भोपाल द्वारा सन् 1997 ई. में प्रकाशित की गई है।

4. राजमाची का बुधा (मराठी के लेखक गो. नी. दांडेकर की औपन्यासिक कृति 'माचीवरला बुधा' का यह हिंदी अनुवाद है।) यह पुस्तक महाराष्ट्र राज्य मराठी विकास संस्था द्वारा सन् 2001 ई. में प्रकाशित की गई थी।
5. सुपरक्लोन (लेखक डॉ. पंडित विद्यासागर की मूल मराठी औपन्यासिक कृति 'सुपरक्लोन' का यह हिंदी अनुवाद है) यह पुस्तक सुविद्या प्रकाशन, सोलापुर से वर्ष 2011 में प्रकाशित की गई है।
6. जागो, उठो, आगे बढ़ो (लेखक व आई. ए. एस अधिकारी संदीप कुमार साळुंखे की मराठी औपन्यासिक कृति 'धडपडणाछ्या तरूणाईसाठी' का यह हिंदी अनुवाद है।) यह पुस्तक प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा वर्ष 2012 में प्रकाशित की गई है।

मराठी कहानी संग्रहों के हिंदी अनुवाद

1. 'कृष्ण विवर और अन्य विज्ञान कथाएँ' (प्रसिद्ध भारतीय वैज्ञानिक और लेखक डॉ. जयंत नारळीकर की चौदह विज्ञान कथाओं का मराठी से हिंदी में अनुवाद।) यह अनूदित पुस्तक भारत सारकार के विज्ञान प्रसार उपक्रम के अंतर्गत नोएडा नई दिल्ली से वर्ष 2013 को प्रकाशित की गई है।

अन्य साहित्यिक विधाओं के अनुवाद

1. मोगरा महका (लेखक श्री गो. नी. दांडेकर लिखित उपन्यास का डॉ. वीणा देव व डॉ. विजय देव द्वारा संस्कारित मराठी संहिता का मंचन के लिए हिंदी में अनुवाद)
2. कर्म चले संग (विको लेबोरेटरीज के संचालक श्री. गजाननराव पेढ़ारकर के आत्मचरित्र ''कर्म चाले संगति'' का वर्ष 2002 में हिंदी अनुवाद किया है।)

इस साहित्यिक अनुवाद के अलावा कुछ साहित्येतर विधाओं की रचनाओं के भी उन्होंने अनुवाद किए हैं, जो उनके अनुवाद साहित्य की विशेष पकड़ पर प्रकाश डालते हैं।

साहित्येत्तर अनुवाद

1. घरेलू औषधियाँ (रोहन प्रकाशन, पुणे द्वारा प्रकाशित मूल मराठी कृति 'घरगुती उपाय' का हिंदी अनुवाद वर्ष 1994 में प्रकाशित किया गया है)
2. वास्तुप्रकाश (लेखक हरिभाऊ लिमये लिखित मूल मराठी कृति 'वास्तुप्रकाश' का वर्ष 1994 को हिंदी में अनुवाद किया है।)

3. स्वतंत्रता क्यों सड़ गई? (लेखक श्री शरद जोशी द्वारा लिखित पुस्तक 'स्वातंत्र्य का नासले?' का हिंदी अनुवाद वर्ष 2001 में)
4. अन्नपुराण (लेखक डा. अरविंद लिमये की मराठी पुस्तक अन्नपुराण का हिंदी अनुवाद)
5. प्राणियों के ऊतक एवं कोशिका संवर्धन की राष्ट्रीय सुविधा : कार्य वृत्तांत (जैव प्रोद्यौगिक विभाग, भारत सरकार के वर्ष 1992, 93 और 94 के कार्यवृत्तांत का अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद वर्ष 2004 को प्रकाशित)
6. बीमा सभी के लिए (लेखक क्षितिज पाटुकले की मॅकमिलन इंडिया, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'विम्याविषयी सर्व काही' का हिंदी अनुवाद वर्ष 2009 में)
7. युवावस्था में ही रिटायरमेंट प्लॅनिंग (लेखक क्षितिज पाटुकले की मूल मराठी कृति 'युवावस्थेतच रिटायरमेंट प्लॅनिंग' का हिंदी अनुवाद प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा वर्ष 2012 को प्रकाशित।)
8. मेडिक्लेम और हेल्थ इंश्योरेंस (लेखक क्षितिज पाटुकले की मूल मराठी कृति 'मेडिक्लेम आणि हेल्थ इन्शुरन्स' का हिंदी अनुवाद प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा वर्ष 2012 को प्रकाशित।)

उपर्युक्त अनूदित पुस्तकों के अतिरिक्त और भी कई लेखों, कहानियों और विज्ञान कथाओं के सफल अनुवाद करने का श्रेय मीरा नांदगांवकर को है। इन्होंने मराठी नाटक 'एकच प्याला' और मराठी अखबार दैनिक 'महाराष्ट्र टाईम्स' में प्रकाशित नाटकों से संबंधित लेखों के संशोधन कार्य हेतु हिंदी अनुवाद किए हैं। पुणे से प्रकाशित मासिक हिंदी पत्रिका ''समग्र दृष्टि'' में विज्ञान जगत अंतर्गत डॉ. पंडित विद्यासागर एवं डॉ. सुलभा कुलकर्णी के 12 लेखों की लेखमाला 'नॅनो टेक्नॉलॉजी' का सन् 2007 ई. से सन् 2008 ई. तक के अंकों में हिंदी अनुवाद प्रसारित किए हैं। मूल मराठी लेखक श्री चंद्रकांत शेवाळे की प्रश्नोत्तरी का भी आपने 'रमल प्रवेश' नाम से हिंदी में अनुवाद किया है। दंत चिकित्सा के क्षेत्र में सहायक पद पर कार्य करने वाले इच्छुक उम्मीदवारों के लिए डॉ. प्रदीप मालेगांवकर द्वारा लिखित पुस्तक का 'दंत चिकित्सा सहायक' नाम से आपने हिंदी में अनुवाद किया है।

वे निरंतर इस कार्य में जुटी हुई सक्रिय अनुवादिका है। आज भी कई पुस्तकों के अनुवाद प्रकाशन प्रक्रिया की प्रतीक्षा में है, इनमें मराठी लेखक

अच्युत गोडबोले की पुस्तक 'बोर्डरूम', डॉ. संग्राम पाटील की कृति 'परत मायभूमि कडे' का अनुवाद 'मातृभूमि की ओर', लेखक राजेश पाटिल की मराठी पुस्तक 'ताई, मी कलेक्टर व्हयनु' का हिंदी अनुवाद 'माँ, मैं कलेक्टर बन गया', हेमा लेले की मराठी पुस्तक 'आत्मनेपदी' का हिंदी अनुवाद इसी नाम से, लेखक अविनाश धर्माधिकारी की पुस्तक 'अस्वस्थ दशकाची डायरी' का हिंदी अनुवाद 'डायरी अस्वस्थ दशक की', लेखक गो. नी. दांडेकर के 'श्रीकर्णायन' उपन्यास का इसी नाम से हिंदी अनुवाद, भारत सासणे कृत मराठी रचना 'दोन मित्र' का अनुवाद 'दो मित्र'नाम से, लेखक गो. नी. दांडेकर की कृति 'संत गाडगे महाराज व एक बरगद का पेड', लेखक म. गो. पाठक की तीन पुस्तकें 'तिजोरी', 'राखनदार' और 'आखरी रास्ता', श्री बाबासाहेब पुरंदरे की राजा शिवछत्रपति और डा. मेधा खाजगीवाले की कृति 'आत्मा का प्रवास' और 'मृत्यु के पश्चात का जीवन' आदि प्रमुख है। इस प्रकार प्रस्तुत प्रकाशित और प्रकाशनाधीन कृतियों की इतनी बडी सूची देखने पर विदित होता है कि मीरा नांदगांवकर ने अपना जीवन हिंदी अनुवाद साहित्य को समर्पित किया है।

प्रा. पांडुरंग कापडणीस (5 जून 1943 ई.)

प्रा.पांडुरंग कापडणीस पुणे के ख्यातिप्राप्त अनुवादक हैं। इन्होंने मराठी कविताओं का हिंदी में अनुवाद किया है। इन कविताओं में 'सुख-दुःख' और 'कर्जपुत्र' आदि प्रमुख है। आपने 'नारायण सुर्वे की कविता' (1995) नाम से मराठी के कवि नारायण सुर्वे की कुछ चुनिंदा 97 मराठी कविताओं का हिंदी में अनुवाद किया है। इसमें आपने पूरी तटस्थता के साथ प्रस्तुत मराठी रचनाओं का सुरस अनुवाद किया है। आपकी इस अनुवादित कृति के बारे में ज्येष्ठ हिंदी विचारक डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर ने लिखा है- ''जहाँ तक संभव है कापडणीस ने सुर्वे की कविता के बीच अपने को आने नहीं दिया है। सुर्वे की कविता के लय, चित्रमयता, बिंब योजना, संकेत पूर्णता को बनाए रखने का प्रयास किया है।''[12] प्रस्तुत कथन के आधार पर कहा जा सकता है कि प्रा. कापडणीस द्वारा अनुवादित 'कवि नारायण सुर्वे की कविता' पुस्तक पुणे के अनूदित साहित्य में अपना विशेष स्थान रखती है।

डॉ. गजानन चव्हाण (1 अक्टूबर, 1943 ई.)

पुणे विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के पूर्व प्रोफेसर डॉ. गजानन चव्हाण का हिंदी भाषा और साहित्य के विकास में प्रदत्त योगदान दिखाई देता है। उनका

यह योगदान प्रमुख रूप से उनके अनुवाद कार्य की व्यापकता में है। अनेक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में आपके लगभग 50 अनुसंधानपरक आलेख प्रकाशित हो चुके हैं। इन लेखों में से अधिकतर लेख अनुवाद कार्य से संबंधित है, अतः आपकी ख्याति एक अनुवादक के रूप में रही हैं। आपकी अनुवादित पुस्तकें हैं-

1. झाडाझडती - (विश्वास पाटील कृत मराठी उपन्यास 'झाडाझडती' का इसी नाम से हिंदी अनुवाद सन् 1995 ई.)
2. कारगिल : एक मुलाकात विजय के साथ (कारगिल : काय घडले कसे जिंकले का अनुवाद संयोजन)
3. शिखर की ओर (मराठी जीवनीपरक कृति 'गरूडझेप' का हिंदी अनुवाद)
4. संस्कृत-तरंड्गिणि (नौंवी कक्षा संस्कृत-संयुक्त पाठ्यपुस्तक और संपूर्ण पाठ्यपुस्तक आदि दो पुस्तकों का हिंदी अनुवाद करने में सहायता)
5. वृषभ सूक्त (मराठी के साहित्यकार विठ्ठल वाघ की काव्यमयी सूक्तियों का हिंदी अनुवाद वर्ष 2008)

इन पुस्तकों के अतिरिक्त और तीन मराठी पुस्तकों के अनुवाद कार्य जारी हैं, जो शीघ्र ही प्रकाशित होंगे, वे इस प्रकार है-

1. जोताई (आनंद यादव कृत मराठी उपन्यास 'नांगरणी' का हिंदी अनुवाद)
2. आलंपिक वीर खशाबा जाधव (संजय दुधाने की मराठी पुस्तक का हिंदी अनुवाद)
3. आभरान (लेखक पार्थ पोलके की आत्मकथा का हिंदी अनुवाद)

डॉ. चव्हाण ने पुणे के प्रसिद्ध हिंदी लेखक डॉ. दामोदर खड़से का हिंदी कविता संग्रह ''सन्नाटे में रोशनी'' का ''सूर्य आहे साक्षीला'' इस नाम से सन् 2012 ई. में अनुवाद किया है। इसके अतिरिक्त 1. 'नवें दशक का मराठी उपन्यास' (रवींद्र शोभणे के लेख का हिंदी अनुवाद- दस्तावेज, अप्रैल-जून 1993), 2. मध्यमवर्गीय शहरी लोकनाट्य (अलखनंदन के लेख का मराठी अनुवाद-महानिर्वाण : समीक्षा आणि संस्करणे-संपादिका रेखा इनामदार साने), 3. मराठी दलित साहित्य, सन् 1980 के बाद में संगृहीत लगभग 16 लेखों के हिंदी अनुवाद, 4. मराठी का दलित उपन्यास साहित्य, (वि. श. चौगुले) कसौटी 5 में प्रकाशित। आदि कई लेखों के अनुवाद भी किए हैं। आपके द्वारा किए गए अनुवाद कार्य को महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी की ओर से मामा वरेरकर अनुवाद पुरस्कार से सन् 1996 को सम्मानित किया गया। एक अहिंदी

भाषी होकर अहिंदी प्रदेश में अपने अनूदित साहित्य के माध्यम से हिंदी सेवा करने वाले डॉ. चव्हाण को 21 जून, 1997 को तत्कालीन महामहिम राष्ट्रपति डॉ. शंकरदयाळ शर्मा के हाथों केंद्रीय हिंदी निदेशालय का हिंदीतर भाषी हिंदी साहित्यकार पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार उनके कार्य की सही रसीद मानी जा सकती है। आपका अनुवाद कार्य गुणात्मक दृष्टि से उत्कृष्ट और उच्च कोटि का है।

मृणालिनी सावंत (18 मई 1944 ई.)

मृणालिनी सावंत पुणे की वरिष्ठ अनुवादिका है। मराठी के सुप्रसिद्ध लेखक शिवाजी सावंत की तीन किताबों के आपने हिंदी अनुवाद किए हैं। इनमें से 'मृत्युंजय' इस मराठी नाटयकृति का सन् 1993 ई में इसी नाम से अनुवाद किया है। यह किताब जयपुर के साहित्यागार प्रकाशन से प्रकाशित हुई है। श्रीकृष्ण के जीवन पर आधारित 'युगंधर' उपन्यास का सन् 2002 ई में इसी नाम से हिंदी अनुवाद किया है। यह किताब भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली से प्रकाशित हुई है। काँग्रेस के प्रसिद्ध नेता पी. के. आण्णा पाटील के जीवन चरित्र पर आधारित मराठी किताब 'पुरूषोत्तमनामा' का 'पुरूषोत्तमायन' नाम से आपने हिंदी अनुवाद किया है। यह किताब साने गुरूजी विद्या प्रसारक मंडळ, शहादा द्वारा सन् 2006 ई में प्रकाशित हुई है। इस प्रकार केवल तीन पुस्तकों के क्यों न हो पर, मराठी के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार शिवाजी सावंत के प्रमुख उपन्यासों को हिंदी जगत से परिचित कराने का विश्वसनीय कार्य मृणालिनी सावंत ने बखूबी किया है।

डॉ.दामोदर खड़से (11 नवंबर 1948 ई.)

डॉ.दामोदर खड़से बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी और सृजनधर्मी साहित्यकार माने जाते हैं। उनकी यह साहित्य सृजन यात्रा केवल मौलिक साहित्य पर ही नहीं थमती है अपितु अनुवाद के क्षेत्र में भी चलती रहती है। उन्होंने लगभग 6 हिंदी पुस्तकों के हिंदी से मराठी में अनुवाद किए हैं। इनमें उपन्यास, कथा संग्रह और कविता संग्रह आदि प्रमुख है। हिंदी से मराठी में अनूदित साहित्य की तुलना में उनका अन्य भाषा से हिंदी में अनूदित साहित्य अधिक मात्रा में पाया जाता है। उनके द्वारा हिंदी में अनूदित साहित्य की सूची निम्नानुसार है।

1. दया पवार की मराठी आत्मकथा का 'अछूत' नाम से हिंदी अनुवाद सन् 1981 ई।
2. 'रामनगरी' नाम से राम नगरकर की मराठी पुस्तक का हिंदी में अनुवाद

किया, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली से सन् 1983 ई. में।

3. 'बीरबल साहनी' नाम से अंग्रेजी जीवनी का हिंदी अनुवाद किया, भारत भारती प्रकाशन से सन् 1983 ई में।
4. जयवंत दलवी के नाटक का 'कालचक्र' नाम से वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा सन् 1993 ई में अनुवाद किया।
5. लक्ष्मण माने की 'उपरा' नामक मराठी दलित आत्मकथा का 'पराया' नाम से साहित्य अकादमी, नई दिल्ली की ओर से सन् 1993 ई में।
6. शिवाजी सावंत द्वारा लिखित रेखाचित्र का 'ऐसे लोग ऐसी बातें' नाम से वाणी प्रकाशन नई दिल्ली द्वारा अनुवाद प्रकाशित।
7. अभिराम भड़कमकर द्वारा लिखित नाटक का 'सवाल अपना-अपना' नाम से समकालीन भारतीय साहित्य अकादमी द्वारा सन् 1998 में।
8. संघर्ष (शिवाजी सावंत का मराठी नाटक), भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली से 1999 ई।
9. भूले-बिसरे चित्र (अरूण खोरे की आत्मकथा), राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली से 2001 ई।
10. विशिष्ट मराठी कहानियों का संपादन और हिंदी अनुवाद दोनों एक साथ। आधार प्रकाशन, पंचकुला, सन् 2008।
11. शुभ वर्तमान (भारत सासणे का मराठी कथा संग्रह) वाणी प्रकाशन, सन् 2010।
12. झुंड (शरणकुमार लिंबाले का मराठी उपन्यास) वाणी र्प्रकाशन सन् 2012।
13. बारोमास (सदानंद देशमुख का मराठी उपन्यास) साहित्य अकादमी, सन् 2012।
14. मन-सर्जन (डॉ. अनिल देशमुख की मराठी आत्मकथा) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सन् 2012।
15. अपने ही होने पर (ज्ञानपीठ से सम्मानित मराठी कवि विं. दा. करंदीकर की 23 कविताओं का हिंदी अनुवाद और पुस्तक रूपी प्रकाशन) सन् 2006।

इस प्रकार मराठी के शिवाजी सावंत, अभिराम भडकमकर, जयवंत दळवी, दया पवार, और राम नगरकर आदि ख्यातनाम साहित्यकारों के साहित्य के अनुवाद डॉ. खडसे ने किए हैं। डॉ. खडसे का अनुवादकार्य भी उनके सृजनात्मक साहित्य की भाँति पूरी तन्मयता के साथ लिखा हुआ प्रतीत होता है। वे स्वयं इस संदर्भ में लिखते हैं- ''यदि हम भूलकर रचना के भाव को अनुवाद के सांचे में नहीं ढाल पाए

तो रचना की सार्थकता पर प्रश्नचिह्न लग जाता है।''[13] डॉ. खड़से का अनुवाद कार्य भावों के सार्थकता की सूक्ष्मतम इकाई है। इसी कारण डॉ. खडसे को उत्कृष्ट हिंदी अनुवाद करने के उपलक्ष्य में अनेक पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया है। इनमें केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली की ओर से सन् 2005 ई 'भूले बिसरे दिन' इस रचना को प्राप्त श्रेष्ठ अनुवाद पुरस्कार और सदानंद देशमुख की मराठी कृति का हिंदी अनुवाद 'बारोमास' के लिए मिला हुआ साहित्य अकादमी पुरस्कार (वर्ष 2016) प्रमुख है। पुणे में हुए अनुवाद कार्य में डॉ. खड़से के अनुवाद साहित्य का विशेष स्थान है।

आसावरी काकड़े (23 जनवरी,1950 ई.)

आसावरी काकड़े मराठी की लेखिका है। आसावरी काकड़े ने तीन पुस्तकों के अनुवाद किए हैं जिनमें से खुद की चुनिंदा कविताओं का हिंदी में 'मेरे हिस्से की यात्रा' नाम से प्रथम अनुवाद कार्य है। हिंदी के प्रसिद्ध कवि चंद्रप्रकाश देवल के हिंदी कविता संग्रह 'बोलो माधवी' का आपने मराठी अनुवाद 'बोल माधवी' नाम से किया है। सन् 2012 ई में आपने पुणे के प्रसिद्ध वरिष्ठ कवि डॉ. दामोदर खड़से के ''तुम लिखो कविता'' इस हिंदी कविता संग्रह का ''तू लिही कविता'' इस नाम से मराठी अनुवाद किया है। हिंदी के जाने-माने रचनाकारों की काव्यमय कृतियों का मराठी जनों को अपनी भाषा में पढ़ने का अवसर प्रदान करने वाली आसावरी काकड़े प्रमुख है।

डॉ.सुभाष तळेकर (8 अगस्त, 1951 ई.)

अनुवाद कार्य डॉ. सुभाष तळेकर की अभिरूचि का केंद्रबिंदु रहा है। अनुवाद वास्तव में मूल कृति का पुनर्जन्म होता है। अनुवाद दो भिन्न भाषिक समाज, संस्कृतियों का एक रचनात्मक सेतु होता है। अतएव डॉ. सुभाष तळेकर ने मराठी के -'राजघाट' खंडकाव्य हिंदी अनुवाद किया है। मराठी लेखक अरूण शेवते की मूल मराठी कृति 'राजघाट' खंडकाव्य का यह उत्कृष्ट भावानुवाद है। आज गांधी जी के आदर्शों तथा विचारधारा की जो विडंबना हो रही है, उसका उपहासगर्भ भाषा-शैली में चित्रांकन इस कृति में पेश किया गया है।

डॉ.तुकाराम पाटील (1 अक्टूबर, 1951 ई.)

पुणे विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर एवं हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ.तुकाराम पाटील ने लगभग 10 आलोचनात्मक, संपादित और अनुवादित पुस्तकों का सृजन किया है। उनकी अनूदित रचनाएँ इस प्रकार हैं-

1.जिहाद - हुसैन जमादार, शांतिसरोवर प्रकाशन, गुजरात।

2.सच्चर का सच - मुस्लिम प्रोग्रेसिव फ्रंट, कोल्हापुर।

3.शशी की कविताएँ - 'भाषा' पत्रिका में।

4.घरभिंति - आनंद यादव।

5.चरैवति - श्यामसिंह 'शशि'।

'जिहाद' यह मुस्लिम समाज पर केंद्रित स्त्री विमर्श की सशक्त गाथा है। मुस्लिम समाज की स्थिति और गति की सही तस्वीर सच्चर समिति की रिपोर्ट है, इस रिपोर्ट को 'सच्चर का सच' इस पुस्तक में उन्होंने अनूदित किया है। इसी प्रकार मराठी के प्रसिद्ध लेखक आनंद यादव की कृति 'घरभिंती' और श्यामसिंह शशि की पुस्तक 'चरैवति' का अनुवाद भी आपने किया है। आपके अनुवाद साहित्य की विशिष्टता के कारण महाराष्ट्र राज्य अनुवाद विकास परिषद पर आपका चयन किया गया है। अतः कहा जा सकता है कि हिंदी अनुवाद में आपका स्थान महत्वपूर्ण है।

डॉ.स्मिता दात्ये (14 मार्च 1952 ई.)

डॉ.स्मिता दात्ये पुणे की सफल अनुवादिका है।उनके सफल अनुवादक होने के पीछे एक कारण यह भी हो सकता है कि वे अनेक भाषाओं की ज्ञाता रही हैं। जैसे-मराठी, हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत, रूसी आदि। डॉ. दात्ये सिंडिकेट बैंक में राजभाषा के पद पर कार्यरत थीं इस कारण उन्होंने बैंकिंग क्षेत्र से संबंधित अनेक कागजातों के काफी मात्रा में अनुवाद किए हैं। उनके द्वारा की गई हिंदी अनूदित पुस्तकों की सूची निम्न है।-

1. 'वृंदावन का बालक' अंग्रेजी पुस्तक का हिंदी अनुवाद।
2. 'भगवद् भक्ति सौरभ' मराठी से हिंदी में अनुवाद।
3. 'रामप्रहर' मराठी से हिंदी में अनुवाद।
4. 'जीवन साधणा' मराठी से हिंदी में अनुवाद।
5. 'आत्मसंयम' योग मराठी से हिंदी में अनुवाद
6. 'कर्म योग' मराठी से हिंदी में अनुवाद।
7. 'सर्वहित सरणी' मराठी से हिंदी में अनुवाद।
8. 'हिंदुत्व से राष्ट्रीयता की ओर' मराठी से हिंदी में अनुवाद।
9. 'सेवा सरिताओं का अमृतकुंभ' मराठी से हिंदी में अनुवाद।
10. 'श्री विष्णु सहस्त्रनाम स्त्रोत' मराठी से हिंदी में अनुवाद।

11. 'व्यक्तित्व विकास' मराठी से हिंदी में अनुवाद
12. 'दवाएं लेते समय' मराठी से हिंदी में अनुवाद।
13. 'प्रबंधन विद्या' मराठी से हिंदी में अनुवाद।
14. 'साधणा पाथेय' मराठी से हिंदी में अनुवाद।
15. अहमदनगर के श्री ऋषी सागर महाराज की धार्मिक पुस्तकों का 'गुरूवाणी' नाम से हिंदी अनुवाद।
16. 'चूँ' इस मराठी उपन्यास का 'ब्र' नाम से हिंदी अनुवाद।
17. इजराईल की कृषि-लक्ष्मी-मधुमक्की।
18. जिनेरिक दवाएँ कुछ : कुछ सच्चाइयाँ कुछ भ्रांतियाँ
19. चित्रकार प्रभाकर कोलते के चित्रकार, चित्रकला आदि से संबंधित कई आलेखों और व्याख्यानों का हिंदी में अनुवाद का संग्रह ग्रंथ रूप में।
20. ललित कला अकादमी, नई दिल्ली के लिए विविध लेखों का मराठी से हिंदी में अनुवाद।
21. आंध्र प्रदेश महिला समता सोसाईटी की वार्षिक रिर्पोट का पिछले 12 वर्षों से अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद।
22. 'चाईल्ड राइट्स एंड यु क्राय' के न्युज लेटर्स का लगभग पाँच वर्षों से अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद।
23. जे. के. सिमेंट वर्क्स की प्रशिक्षण सामग्री के लगभग 1000 पन्नों का अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद।
24. मराठी के प्रसिद्ध कवि विं. दा. करंदीकर (ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता) की 11 मराठी कविताओं का हिंदी अनुवाद।
25. भारतीय स्टेट बैंक के न्युज लेटर के लिए एक वर्ष तक लगातार हिंदी अनुवाद।
26. साहित्य अकादमी, नई दिल्ली की सहायता से अन्य भारतीय भाषाओं के उत्कृष्ट साहित्य के अनुवाद योजना के तहत मराठी की कुछ कहानियों के हिंदी अनुवाद।

इतना ही नहीं तो वर्तमान में भी डॉ. स्मिता दात्ये हिंदी अनुवाद कार्य में सक्रिय दिखाई देती हैं। उपर्युक्त विश्लेषण इस बात को प्रमाणित करता है कि स्मिता दात्ये हिंदी की सफल अनुवादिका है। दात्ये के इस अनुवाद कार्य को देखकर उन्हें कई विशेष पुरस्कारों से नवाजा गया है। उन पुरस्कारों की सूची

भी यहाँ पर सम्मिलित की गई है, जो निम्नवत् है-

1. केंद्रीय हिंदी निदेशालय के हिंदीतर भाषी हिंदी अनुवाद पुरस्कार योजना के तहत वर्ष 2000-01 ई. को 50000 रू का उत्कृष्ट अनुवाद पुरस्कार।
2. समग्र अनुवाद कार्य के लिए भारतीय अनुवाद परिषद, नई दिल्ली की ओर से 11 हजार रूपयों का द्विवागीश पुरस्कार।
3. महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे द्वारा 'ब्र' उपन्यास के अनुवाद के लिए 2000 रू का पुरस्कार।
4. 'दवाएँ लेते समय' इस अनूदित पुस्तक को महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी, मुंबई की ओर से मामा वरेरकर अनुवाद पुरस्कार।

हिंदी के प्रचार-प्रसार में वे अनुवाद साहित्य को महत्वपूर्ण मानती है। हिंदी आम जनता की भाषा है, उसे जितना सरलता से प्रयोग में लाया जाए, उतना अच्छा होगा। इस संदर्भ में वे कहती है- ''पुणे शहर कॉस्मॉपोलिटन शहर बन गया है। अपने पड़ोस में तमिल, तेलुगु, गुजराती, बंगाली भाषी लोग रहते हैं। उनकी भाषा में कुछ शब्द अंग्रेजी के आ जाते हैं, उन्हें टालना मुश्किल है। हमे बोलचाल में सरल हिंदी का प्रयोग करना चाहिए और लिखित भाषा में सावधानी से शुद्ध हिंदी का प्रयोग करना चाहिए।''[14] अतः कहा जा सकता है कि डॉ. दात्ये का हिंदी अनुवाद और हिंदी प्रचार-प्रसार में मौलिक योगदान रहा है।

डॉ.नीला महाडिक (27 अप्रैल 1953 ई.)

पुणे की प्रसिद्ध 'हाइकू' लेखिका नीला महाडिक की अनूदत किताब है 'महात्मा ज्योतिबा फूले'। यह कृति महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे के प्रकाशन से सन् 1991 ई में प्रकाशित हुई है। मराठी के साहित्य सेवी प्र. द. पुराणिक की महात्मा ज्योतिबा फुले के जीवन-चरित्र पर आधारित इस मूल कृति में महाराष्ट्र भूषण और पुरोगामी विचार सरणी के प्रवर्तक एवं शिक्षा निष्ठ महात्मा ज्योतिबा फुले के संघर्षमय जीवन का सामाजिकता के परिप्रेक्ष्य में आदर्शोन्मुख अंकन किया गया है। इसी कृति का भावानुवाद प्रा. नीला महाडिक ने किया है। यह अनूदित कृति संस्कारशील और बोधप्रद है। इसमें महात्मा फुले के विचार उसी तरह प्रकट किए गए हैं जैसे मूल कृति में हैं।

डॉ.पद्मजा घोरपडे (जनवरी 1955 ई.)

डॉ.पद्मजा घोरपडे पुणे की पुरस्कृत लेखिका है। आपने हिंदी की लगभग सभी विधाओं में लेखन किया है। उन्होंने मराठी से हिंदी में 15 किताबों के और

हिंदी से मराठी में 2 किताबों के अनुवाद किए हैं। पुणे जैसे अहिंदी भाषी प्रदेश में रहकर इतनी विपुल मात्रा में साहित्य सृजन करना उनकी गरिमा को और अधिक ऊँचाई प्रदान करता है। उन्होंने दो प्रमुख हिंदी कृतियों के मराठी अनुवाद किए हैं इनमें हिंदी के प्रसिद्ध मार्क्सवादी आलोचक डॉ. रामविलास शर्मा की आलोचनात्मक कृति 'भारतीय साहित्य की ऐतिहासिक समस्याएँ' (1998) का 'भारतीय साहित्याच्या इतिहासातील समस्या' इस नाम से और डॉ. सिंह द्वारा संपादित दलित काव्य संग्रह 'दर्द के दस्तावेज' का 'वचनांची हस्तलिखिते' नाम से (2005) में किया हुआ अनुवाद प्रमुख है।

डॉ. घोरपड़े ने मराठी नाटक, उपन्यास, कहानी, आत्मकथा और समीक्षाओं के हिंदी अनुवाद किए हैं। आपके मराठी से हिंदी में अनूदित साहित्य कृतियों की सूची निम्न है-

1. जाने अनजाने (1993) - (मराठी की कवयित्री कविता नरवणे लिखित लघुकथा संग्रह)
2. महाकाव्य प्रतिभा के धनी : प्रेमचंद (2003) - (समीक्षात्मक लेखों का अनुवाद तथा संपादन)
3. गंगाधर गाडगीळ प्रतिनिधि समीक्षा (2005) - (सुधीर रसाळ कृत समीक्षात्मक मराठी पुस्तक का हिंदी अनुवाद)
4. कादंबरी एक (2006) - (विजय तेंदुलकर लिखित मराठी उपन्यास का हिंदी अनुवाद)
5. कादंबरी दो (2008) - (विजय तेंदुलकर लिखित मराठी उपन्यास का हिंदी अनुवाद)
6. बारबाला (2009) - (मराठी लेखिका वैशाली हकदनकर लिखित जीवनी का हिंदी अनुवाद)
7. वङ्कासूची (2009) - (मराठी लेखिका रुपा कुलकर्णी लिखित किताब वङ्कासूची का इसी नाम से हिंदी अनुवाद)
8. एक जिद्दी लड़की (2010) - (विजय तेंदुलकर के मराठी नाटक का हिंदी अनुवाद)
9. समंदर (2010) - (मराठी के लेखक मिलिंद बोकिल के उपन्यास का हिंदी अनुवाद)
10. भीतरी दीवारें (2013) - (विजय तेंदुलकर लिखित मराठी नाटक का हिंदी अनुवाद)

11. फुटपाथ का सम्राट (2013) - (विजय तेंदुलकर लिखित मराठी नाटक का हिंदी अनुवाद)
12. भल्या काका (2013) - (विजय तेंदुलकर लिखित मराठी नाटक का हिंदी अनुवाद)
13. सावधान ! दूल्हे की तलाश है (2013) - (विजय तेंदुलकर लिखित मराठी नाटक का हिंदी अनुवाद)
14. कौन की पाठशाला (2013) - (विजय तेंदुलकर लिखित मराठी नाटक का हिंदी अनुवाद)
15. मोम का घरौंदा चिडिया का (2013) - (विजय तेंदुलकर लिखित मराठी नाटक का हिंदी अनुवाद)

इस प्रकार प्रस्तुत सूची देखने से स्पष्ट किया जा सकता है कि डॉ. पद्मजा घोरपड़े का हिंदी अनुवाद कार्य में मौलिक योगदान रहा है। उन्होंने मराठी के लब्धप्रतिष्ठित साहित्यिक किताबों के हिंदी अनुवाद किए हैं। डॉ. घोरपडे को भारत के महामहिम राष्ट्रपति डॉ. शंकर दयाल शर्मा के करकमलों से सन् 1993 में मराठी भाषी हिंदी लेखक पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इसी तरह महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे की ओर से सन् 2010 में मु. मा. जगताप उत्कृष्ट अनुवादक पुरस्कार भी मिला है। हिंदी अनुवाद के क्षेत्र में पुणे के जिन-जिन अनुवादकों के नाम अग्रणी पंक्ति में आते हैं उनमें डॉ. घोरपडे प्रमुख है।

डॉ. सुनील देवधर (1955 ई.)

डॉ. सुनील देवधर पुणे के हिंदी कवि, अनुवादक, पुणे में होने वाले प्रमुख हिंदी कार्यक्रमों के सूत्रसंचालक और पुणे आकाशवाणी केंद्र के संचालक आदि कई रूपों में ख्यातिप्राप्त हैं। आपका पुणे की साहित्यिक गतिविधियों से निकट का संबंध रहा है। पुणे आकाशवाणी केंद्र पर आपने अनेक हिंदी कार्यक्रम प्रस्तुत कर, पुणे में हिंदी वातावरण को पोषकता प्रदान की है। आपका साहित्यिक परिचय विविधांगी है। 'शब्द कलश' (मुक्त चिंतन), 'संवाद अभी शेष है' (साक्षात्कार संग्रह) और 'कागज की जमीन पर' (संपादित) आदि उनकी प्रकाशित कृतियाँ हैं। आपके द्वारा प्रकाशित विविध विषयों की पुस्तकों की तरह हिंदी अनुवाद साहित्य भी काफी सराहनीय है। आपकी अनूदित पुस्तकें हैं-

1. 'सात फेरे सात वचन' जयंत भिड़े की मराठी पुस्तक का हिंदी अनुवाद।
2. 'मेरी यात्रा' विष्णु गोड़से की मराठी पुस्तक 'माझा प्रवास' का हिंदी अनुवाद।

3. 'कहानी इसरो की' डॉ. वसंत गोवारीकर के मराठी पुस्तक का हिंदी में अनुवाद।
4. 'आदमी और परछाई' डॉ. वसंत गोवारीकर के मराठी पुस्तक का हिंदी में अनुवाद।
5. 'झूल' डॉ. वसंत गोवारीकर के मराठी पुस्तक का हिंदी में अनुवाद।
6. 'पासा पलट गया' नाम से पुणे आकाशवाणी केंद्र के हिंदी अधिकारी कौशल पांडेय के तीन हिंदी बाल नाटकों का मराठी अनुवाद। ये सभी पुस्तकें नेश्नल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित है।

डॉ. देवधर के हिंदी कार्य की प्रशंसा में उन्हें अनेक पुरस्कारों से नवाजा गया है। इनमें महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी की ओर से प्राप्त 'मोहन से महात्मा' कृति के लिए विष्णुदास भावे पुरस्कार, 'इसरो की कहानी' इस अनूदित पुस्तक के लिए मामा वरेरकर पुरस्कार, सारस्वत सम्मान, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा समिति, पुणे की ओर से साहित्य सेवा सम्मान, अखिल आकाशवाणी से राजभाषा सम्मान, और हिंदी आंदोलन संस्था से प्राप्त साहित्यश्री सम्मान प्रमुख है। पुणे के हिंदी जगत और अनुवादकों में आपका नाम विशेष उल्लेख्य कहा जाएगा।

डॉ. वी. एन. भालेराव (10 जून, 1958 ई.)

डॉ.वी.एन.भालेराव भाषा विज्ञान के ज्ञाता है। इन्होंने यशवंतराव चव्हाण मुक्त विश्वविद्यालय, नाशिक के पाठ्यक्रम की 3 पुस्तकों के हिंदी अनुवाद किए हैं। उनके द्वारा अनूदित 'बिना चेहरे के लोग' एक महत्वपूर्ण कृति है। सन् 2014 ई. में प्रकाशित प्रस्तुत कृति का महत्व अधिक है क्योंकि यह कृति घुमंतू जन-जाति की संस्कृति, समाज और भाषा की अभिव्यक्ति में सार्थक है। इसमें लगभग 25 कहानियाँ संकलित है। ये सभी कहानियाँ अलग-अलग जन-जातियों की शब्द गाथा हैं। प्रस्तुत पुस्तक के मूल लेखक मराठी के जाने-माने नाटककार प्रा. रामनाथ चव्हाण है। प्रा. रामनाथ चव्हाण ने स्वयं घुमंतू जनजातियों के संपर्क में रहकर और उनके वास्तविक जीवन को देखकर इस पुस्तक का सृजन किया है। समाज में रहने वाले वे बिना चेहरे के लोग हैं जिनका आधुनिक सभ्यता और समाज में कोई अस्तित्व नहीं है। इस अस्तित्वहीन समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और धार्मिक स्थितियों का अंकन पूरी संवेदनाओं के साथ लेखक ने वर्णित किया है और इन्हीं संवेदनाओं को डॉ. वी.

एन. भालेराव ने हिंदी जगत में लाने का प्रयास किया है। अतः यह अनुवाद कार्य उच्च कोटि का सुरुचिपूर्ण है। अनुवाद एक जटिल प्रक्रिया है, उसमें मूल भावों और संवेदनाओं का होना आवश्यक होता है। स्वयं लेखक ने इस संदर्भ में टिप्पणी दी है - ''अनुवाद को चाहिए कि मूल रचना के साथ कोई छेड़खानी न करे। न कुछ अपने मन से जोड़े न घटाएँ बल्कि स्रोत सामग्री को लक्ष्य भाषा में जैसा का वैसा ले जाए। ताकि मूल कृति से अनूदित कृति विकृत न हो जाए। मैंने यथासंभव मूलनिष्ठता को ध्यान में रखते हुए अनुवाद किया है।''[15] इस तरह मूल कृति की संवेदनाओं और भावनाओं के स्तर पर यह अनुवाद खरा उतरता है। प्रोफेसर रामनाथ चव्हाण लिखित एक और किताब 'सत्यशोधक महात्मा फुले' का आपने अनुवाद किया है। यह किताब सन् 2017 ई. में प्रकाशित हुई है। महात्मा फुले का जीवन पुणे में गुजरा है। फुले ने अपना संपूर्ण जीवन त्याग और तपस्या के साथ गुजारा है। उनकी जीवनसंगिनी सावित्रीबाई फुले ने भी महात्मा फुले के साथ पुणे में रहकर स्त्रियों, उपेक्षितों और दलितों को सक्षम बनाने के लिए इस वर्ग को शिक्षा ग्रहण करने के अवसर प्रदान किए। उनकी इसी तपस्या और सेवाभाव को नाटकीय ढंग से इस कृति में पेश किया गया है। डॉ. भालेराव का यह प्रयास काफी हद तक सफल रहा है। इसमें अनुवाद विज्ञान का परिपूर्ण पालन किया हुआ दिखाई देता है।

डॉ.नीला बोर्वणकर (17 जनवरी 1959 ई.)

आबासाहेब गरवारे महाविद्यालय की हिंदी विभागाध्यक्षा डॉ. नीला बोर्वणकर का हिंदी अनुवाद के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आपकी 4 अनूदित किताबें प्रकाशित हैं। 'बिगड़े बच्चे सबसे अच्छे', 'पंडित जवाहरलाल नेहरू', 'प्रयास' और 'पत्राचार' ये उनकी अनूदित किताबें हैं। राष्ट्र सेवा दल, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा और पेंग्विन इंडिया आदि संस्था से जुडी ये किताबें अत्यंत महत्वपूर्ण रह चुकी हैं। 'बिगड़े बच्चे सबसे अच्छे' (2006) यह किताब प्रसिद्ध शिक्षाविद् डॉ. पी. जी. वैद्य द्वारा लिखित 'नापासांची शाळा' इस मराठी पुस्तक का अनुवाद है। डॉ. वैद्य जी ने शिक्षा के क्षेत्र में जो विविध प्रयोग किए हैं, उनका लेखा-जोखा इसमें वर्णित है। मूल पुस्तक वर्णनात्मक है। परंतु अनुवाद करते समय इसमें संवादात्मक शैली को अपनाया गया है। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू के जीवन के महत्वपूर्ण प्रसंगों के आधार पर लिखी गई सुधाकर प्रभु की मराठी पुस्तक 'पंडित जवाहरलाल नेहरू' का इसी नाम से डॉ.

बोर्वणकर ने हिंदी अनुवाद किया है। यह पुस्तक महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे से प्रकाशित हुई है। बच्चों को केंद्र में रखकर इस पुस्तक की रचना की गई है। श्री. विनय सावंत लिखित मराठी पुस्तक 'वैज्ञानिक दृष्टिकोण' का इसी नाम से सन् 2002 ई. में डॉ. बोर्वणकर ने हिंदी अनुवाद किया है। लेखक ने प्रस्तुत पुस्तक में वैज्ञानिक दृष्टिकोण की संकल्पना, विज्ञान की सृष्टि और दृष्टि, वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने से लाभ, विद्यमान प्रश्न तथा विज्ञान आदि कतिपय पहलुओं पर विचार मंथन किया है। अनुवादिका ने इसे उसी ढंग से अपने पुस्तक में उद्घाटित किया है। राष्ट्र सेवा दल इस संस्था द्वारा प्रकाशित और प्रा. सुभाष वारे द्वारा लिखित मराठी किताब 'राष्ट्रवाद' (2002) का भी बोर्वणकर जी ने इसी नाम से हिंदी में अनुवाद किया है। इसमें उन्होंने राष्ट्रवाद को आधुनिक संदर्भों में आँका है। इसमें राष्ट्रवाद की संकल्पना, राष्ट्रवाद के पूरक घटक, जाति-धर्म निरपेक्ष राष्ट्रवाद, वैश्वीकरण के दौरान निर्मित प्रश्न, राष्ट्रभक्त की व्याख्या आदि का विवेचन किया गया है। प्रा. विकास देशपांडे द्वारा लिखित 'जनतंत्र' (2002) पुस्तक मराठी में प्रकाशित हुई है। इसमें जनतंत्र की परिभाषा, भारतीय जनतंत्र की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, वर्तमान स्थिति में जनतंत्र की चुनौतियाँ आदि बातों का वर्णन किया गया है। इस किताब को भी मराठी से हिंदी में लाने का महत् कार्य डॉ. नीला बोर्वणकर ने किया है।

डॉ. सविता सिंह (1960 ई.)

डॉ. सविता सिंह ने मराठी कहानी संग्रह 'आक्रित' का हिंदी में 'अघटित' नाम से अनुवाद किया है। इस कहानी संग्रह के लेखक बबन पोद्दार है। संग्रह में संकलित कुल बारह कहानियाँ भारतीय समाज जीवन की सशक्त दास्तान है। इनमें आया हुआ यथार्थ चित्रण सामाजिक स्त्री जीवन को स्पष्ट करता है। लेखिका ने कहानियों में चित्रित मराठी परिवेश को अखिल भारतीय स्तर तक पहुंचाने का कार्य हिंदी अनुवाद के माध्यम से किया है। प्रस्तुत किताब शैलजा प्रकाशन कानपुर से सन् 2011 ई. में प्रकाशित हुई है। लेखिका ने प्रस्तुत पुस्तक को पुणे शहर को समर्पित किया है। इस संदर्भ में उन्होंने लिखा है-''इस कार्य को मैं अपनी कार्यभूमि महाराष्ट्र-पुणे को समर्पित कर रही हूँ जिसने मुझे एक और भाषा मराठी सीखने का अवसर प्रदान किया।''[16] इस वक्तव्य से लेखिका का संकेत पुणे के हिंदी अवदान की ओर पाठकों का ध्यान खींचने का रहा है। बात स्पष्ट और सरल है कि हिंदी के विकास में पुणे का वातावरण बिल्कुल हिंदी

भाषी राज्यों की तरह नजर आता है।

डॉ. गोरख थोरात (1 जून 1969 ई.)

पुणे के सर परशुराम महाविद्यालय (एस.पी.कॉलेज) में कार्यरत हिंदी के सहयोगी प्राध्यापक डॉ.गोरख थोरात ने कई शैक्षिक पुस्तकों के अनुवाद किए हैं। इन शैक्षिक पुस्तकों के साथ ही साथ ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त मराठी लेखक भालचंद्र नेमाड़े लिखित तीन ख्यातनाम पुस्तकों के हिंदी में अनुवाद किए हैं। इनमें-एक कविता संग्रह 'देखणी' और दो उपन्यास 'झूल' तथा 'हिंदू : जीने का समृद्ध कबाड़' आदि शामिल है। इनकी ख्याति का आधार 'हिंदू : जीने का समृद्ध कबाड़' यह कृति है। सन् 2015 ई में राजकमल प्रकाशन द्वारा प्रकाशित इस अनूदित कृति में भारतीय समाज की जातीय-सांस्कृतिक अधिरचना का बहुआयामी आख्यान वर्णित है। मोहनजोदड़ों से चलकर उन्नीसवीं-बीसवीं सदी के ग्रामीण भारत की अनेकानेक छवियाँ-कथाएँ-दंतकथाएँ इस उपन्यास को भारत की आधारभूत समष्टि चेतना का बृहत् अभिलेख बना देती हैं। इस प्रकार भारत की सही तस्वीर को मूल मराठी लेखक भालचंद्र नेमाडे ने व्यक्त किया है और इसी मूल कृति को हिंदी में डॉ.गोरख थोरात ने लाने का प्रयास किया है। इस कृति को महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी की ओर से वर्ष 2015 का मामा वरेरकर (अनुवाद) पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

डॉ. गोरख थोरात की दूसरी महत्वपूर्ण अनूदित कृति 'बालगंधर्व' यह है। यह किताब 2018 में राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली से सन 2018 में प्रकाशित हुई है। मराठी के प्रसिद्ध लेखक अभिराम भडकमकर की मराठी किताब का यह सरस भावानुवाद है। इसमें अभिनय सम्राट बालगंधर्व के जन्म से मृत्यु तक के जीवनपट का विस्तृत अंकन किया हुआ है। पुणे के हिंदी अनुवाद साहित्य में इस कृति का विशेष उल्लेखनीय अवदान है।

डॉ. मंजूषा पाटील (16 जून 1971 ई.)

डॉ.मंजूषा पाटील एस.एन.डी.टी महिला विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर हिंदी विभाग की प्राध्यापिका है। उन्होंने दो आध्यात्मिक मराठी ग्रंथों के हिंदी अनुवाद किए हैं। मराठी लेखक श्रीकांत आंबेकर लिखित 'साई सागरातील 88 मोती' इस किताब का उन्होंने 'साई सागर के 88 मोती' इस नाम से हिंदी अनुवाद किया है। यह किताब आत्मज्योत प्रकाशन, पुणे से अप्रैल 2011 में प्रकाशित हुई है। सन् 1870 ई. से सन् 1890 ई. तक के बीस सालों में प्रत्यक्ष

साई बाबा के साथ 88 व्यक्ति मिले थे। श्रीनरसिंह स्वामी ने इन 88 भक्तों के व्यक्तिगत अनुभवों को अंग्रेजी में लिखा था। इसे ही लेखक ने मराठी में प्रकाशित करवाया और बाद में डॉ. मंजूषा पाटील ने हिंदी में अनूदित किया। उनकी दूसरी अनूदित किताब है-'भवसागर नाविक', जो अक्टूबर, सन् 2011 ई. को प्रकाशित हुई है। श्रीकांत आंबेकर द्वारा लिखित मूल मराठी रचना 'भवसागर नावाडी' का यह हिंदी अनुवाद है। लगभग 710 पृष्ठों की इस अनूदित पुस्तक में श्री रावसाहेब सहस्त्रबुद्धे वासुदेवानंद सरस्वती का चरित्र है। इस चरित्र के साथ उनके भक्तों के अनुभव भी दर्ज हैं। बाबा महाराज सहस्त्रबुद्धे श्री अक्कलकोट स्वामी के परम शिष्य श्री रामानंद बिडकर महाराज के एकमात्र शिष्य थे। इस प्रकार डॉ. मंजूषा पाटील द्वारा लिखित ये दो धार्मिक और अनूदित पुस्तकें पुणे के हिंदी अनुवाद साहित्य में अपना नाम दर्ज कराती हैं।

डॉ. बाळासाहेब सोनवणे (1 दिसंबर 1973 ई.)

पुणे के डॉ. अरविंद तेलंग महाविद्यालय निगडी के हिंदी विभाग में कार्यरत अधिव्याख्याता डॉ. बाळासाहेब सोनवणे एक अनुवादक हैं। इन्होंने छः किताबों के मराठी से हिंदी और एक किताब का हिंदी से मराठी में अनुवाद किया है। ये सात किताबें अलग-अलग विषयों पर आधारित है। उनकी प्रथम अनूदित किताब है-'दलित नाटक प्रेरणा एवं विकास'। यह कृति सन् 2007 ई. में पायल प्रकाशन, पुणे से प्रकाशित हुई है। दलित साहित्य ने सभी भाषाओं के साहित्य को प्रभावित किया है। दलित साहित्य मराठी भाषा से अन्य भाषाओं में प्रवाहित हुआ है। प्रस्तुत पुस्तक में दलित नाटक के विकासक्रम पर प्रकाश डाला गया है। डॉ. धनंजय लोखंडे लिखित मराठी पुस्तक 'सामाजिक क्रांति चे अग्रदूत गाडगेबाबा' का उन्होंने सन् 2008 ई. में 'सामाजिक क्रांति के अग्रदूत' नाम से हिंदी में अनुवाद किया है। यह किताब एक आदर्श चरित्र को उद्घाटित करती हुई समाजसापेक्ष कार्य करने में पाठकों को प्रवृत्त करती है। 'बुद्धिजीवी' यह उनकी तीसरी हिंदी से मराठी में अनूदित की गई रचना है। इसमें बुद्धिजीवी वर्ग की आलोचना की गई है। डॉ. सोनवणे ने डॉ. दिलीप चव्हाण की मराठी किताब 'साम्राज्यवाद : भाषा आणि संस्कृति' का मई 2015 को हिंदी में 'साम्राज्यवाद : भाषा और संस्कृति' इस नाम से अनुवाद किया है। यह कृति साम्राज्यवाद के घेरे में घिस रही हिंदी और भारतीय भाषाओं के भविष्य पर चिंता व्यक्त करती है। डॉ. दिलीप चव्हाण के मौलिक विचारों को हिंदी पाठकों तक पहुंचाने का

कार्य डॉ. सोनवणे ने इस कृति के माध्यम से किया है। मराठी के जाने माने रचनाकार बाबूराव बागुल की मराठी कृति 'सूड' का आपने हिंदी अनुवाद 'बदला' नाम से किया है। यह कृति मनुष्य के बदले की भावना और उसके परिणाम पर प्रकाश डालती है। डॉ. सोनवणे ने डॉ. धनंजय लोखंडे के मराठी कहानी संग्रह का ''गूंगी संस्कृति बोल उठी'' इस नाम से हिंदी अनुवाद किया है। यह सामाजिक विडंबना को द्योतित करने वाली महत्वपूर्ण किताब है। इस प्रकार डॉ. बाळासाहेब सोनवणे ने विविध विषयों से संबंधित किताबों का अनुवाद व्यवस्थित ढंग से किया है।

कतिपय हिंदी अनूदित रचनाओं का परिचय

उपरोक्त अनुवादकों के अतिरिक्त पुणे में एकाध पुस्तकों के अनुवाद करने वाले कतिपय अनुवादक हैं। उनके कार्य को नहीं भुलाया जा सकता है। इनमें गोवर्धन शर्मा 'घायल', शम्मी चौधरी, डॉ. सदानंद भोसले, डॉ. ओमप्रकाश शर्मा, अपर्णा कडसकर आदि प्रमुख है। गोवर्धन शर्मा 'घायल' ने सिंधी भाषा में लिखी लम्बी कविता का हिंदी अनुवाद सन् 1974 ई. में 'कहानी झूलेलाल की' नाम से किया है। इसमें सिंध प्रांत के देवता झूलेलाल के जीवनचरित्र पर प्रकाश डाला गया है। शम्मी चौधरी ने कबीर के दोहों का हिंदी अनुवाद 'संत कबीर अमृतवाणी-जो समझे सो निहाल' नाम से किया है। डॉ. ओमप्रकाश शर्मा ने डॉ. शंकर पुणतांबेकर लिखित व्यंग्य उपन्यास 'एक मंत्री स्वर्गलोक में' का मराठी अनुवाद किया है। यह अनूदित कृति सन् 2003 ई में 'पुष्प प्रकाशन' पुणे से प्रकाशित हुई है। इसमें मूल लेखक पुणतांबेकर ने सफेद खादी पहननेवाले राजनेताओं की भ्रष्टता का चित्रण किया है और यह सुनिश्चित किया है कि लोकतंत्र (खादी धारकों का) जैसा भी हो, राजतंत्र से ज्यादा अच्छा होता है। राजा अगर सच्चा हो और वह लोकतंत्र का प्रमुख हो तो ही देश आगे बढेगा। इसी विचारधारा को इस फैन्टेसी परक रचना में लेखक ने प्रतिपादित किया है। डॉ. सदानंद भोसले ने मराठी के प्रसिद्ध लेखक उत्तम कांबळे की पुस्तक 'फिरस्ती' का हिंदी अनुवाद 'घुमक्कड़ी' नाम से किया है। प्रसिद्ध मराठी भाषी साहित्यकार के विचारों को अखिल भारतीय स्तर तक पहुँचाने का स्तरीय कार्य डॉ. भोसले ने किया है। इसी तरह सिंधी कवि बलदेव साजनदास 'निर्मोही' की कविताओं का अपर्णा कडसकर ने 'समांतर रेषा' नाम से मराठी अनुवाद किया है।

इस प्रकार पुणे में अनुवादकों की कमी नहीं है। यहाँ बसे अनुवादक मराठी

और हिंदी दोनों भाषाओं पर विशेष अधिकार रखते हैं। इसी कारण पुणे में अनुवाद की लम्बी परंपरा रही है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि अनुवाद विधा में पुणे के हिंदी अनुवादकों का अपूर्व योगदान रहा है। इन अनुवादकों में डॉ. प्रभुदास भुपटकर,श्रीपाद जोशी, पद्माकर जोशी, डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर, डॉ. केशव प्रथमवीर, डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित, मु. मा. जगताप, डॉ. अशोक कामत, डॉ. गजानन चव्हाण, डॉ. स्मिता दात्ये, डॉ. दामोदर खड़से, डॉ. पद्मजा घोरपडे, मीरा नांदगांवकर आदि अनुवादकों का उल्लेखनीय योगदान रहा है। इन अनुवादकों की खास विशेषता यह है कि ये मराठी और हिंदी इन दो भाषाओं के जानकार है। इसी जानकारी के कारण मराठी की रचनाओं का उन्होंने सरस भावानुवाद किया है।

मराठी भाषी प्रदेश के साहित्य को राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुँचाकर दो भिन्न प्रांतीय संस्कृतियों तथा दो भिन्न सामाजिक परिवेश को जोड़ने का काम उपरोक्त अनुवादकों ने किया है। केवल साहित्यिक ही नहीं अपितु सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में इन अनुवादकों का विशेष प्रदेय रहा है।

संदर्भ

1. अनुवाद - संपादक नीता गुप्ता और डॉ. हरिशकुमार सेठी, भारतीय अनुवाद परिषद, नई दिल्ली, अक्टूबर-दिसंबर 2011, संपादकीय से
2. महाराष्ट्र में हिंदी - संपादक डॉ. रामजी तिवारी, पृ. 215
3. हरिनारायण व्यास व्यक्तित्व और कृतित्व - डॉ. चंद्रकांत मिसाळ, पृ. 21
4. जुआ - डॉ. प्रभुदास भुपटकर, पृ. 15
5. ध्वस्तनीड - श्रीपाद जोशी, पृ. 8
6. दैनिक अखबार नवभारत टाईम्स - डॉ दामोदर खडसे का स्तंभलेख, 17 जून 1995
7. असा मी घडलो - मु. मा. जगताप, पृ. 14
8. सूर्यास्त - डॉ. सिंधु भिंगारकर, प्राक्कथन से
9. हिंदी के विकास में महाराष्ट्र का योगदान - मनोज वायदंडे, सिराज शेख, पृ. 20
10. लोकमत समाचार - डॉ. पद्मजा घोरपडे के आलेख से, पृ. 9 (हिंदीरंग) दि. 8 सितंबर, 2016
11. आधुनिक संदर्भों के परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा और साहित्य - संपादक डॉ. पद्मजा घोरपडे, पृ. 282.

12. नारायण सुर्वे की कविता - प्रा. पांडुरंग कापडणीस, पृ. 7
13. कागज जमीन पर - डॉ. दामोदर खडसे, पृ. 284
14. दै लोकमत समाचार (पुणे) - डॉ. ओमप्रकाश शर्मा, पृ. 9 (हिंदीरंग) शुक्रवार, 13 सितंबर 2013
15. बिना चेहरे के लोग - डॉ. वी. एन. भालेराव, भूमिका से.....
16. अघटित - डॉ. सविता सिंह, आमुख से

सप्तम अध्याय

हिंदी अनुसंधान, आलोचना और अन्य (ज्ञानात्मक साहित्य) को पुणे की देन

प्रस्तावना

प्रस्तुत सप्तम अध्याय में आलोचना और अनुसंधान की रचना-यात्रा में पुणे के सुधी आलोचकों तथा अनुसंधाताओं के योगदान का विहंगावलोकन करना उपक्रमित है।

प्रस्तुत अध्याय में आलोचना तथा अनुसंधान इन दो विधाओं का एक साथ अध्ययन करने का तार्किक कारण यह है कि अनुसंधान और आलोचना इन दो पर एक दूसरे की छाया पड़ती है और ये दोनों विधाएँ साहित्य का अध्ययन-विवेचन करती हैं। अनुसंधान के साथ में लेखक की आलोचनात्मक दृष्टि काम करती है। आलोचना और अनुसंधान का परस्पर संबंध अंगी-अंग होता है। अनुसंधान और आलोचना में यद्यपि विषय, क्षेत्र और प्रस्तुति के धरातल पर अंतर पाया जाता है, परंतु दोनों एक दूसरे के बिल्कुल विरोधी न होकर एक दूसरे के पूरक और सहयोगी है। इस संदर्भ में डॉ. नगेंद्र का निम्नस्थ मत दृष्टव्य है- ''उनकी (अनुसंधान और आलोचना) जाति ही नहीं उपजाति भी एक ही है। अतः दोनों में पर्याप्त साम्य है''[1] अनुसंधान का लक्ष्य होता है साहित्य के नए पक्षों का उद्‌घाटन करना, अज्ञात तथ्यों की खोज करना और आलोचना का उद्देश्य होता है साहित्य के अंतःमर्म तथा रहस्यों का उद्‌घाटन करना, निष्कर्षों को प्रतिपादित करना और उनकी व्याख्या करना। अनुसंधान वस्तुपरक होता है और आलोचना दृष्टिपरक होती है। अर्थात दूसरे शब्दों में कहें तो ये दोनों विधाएं जुड़वा होती हैं। एक दूसरे को प्रभावित करती है। बिना आलोचनात्मक दृष्टि के अनुसंधान नहीं होता और बिना अनुसंधानात्मक दृष्टि के आलोचना नहीं होती। पुणे में हिंदी अनुसंधान और आलोचना का प्रचुर मात्रा में कार्य हुआ है। प्रथमतः यहाँ, पुणे में हुए अनुसंधान कार्य के पक्ष पर विचार होगा और तत्पश्चात आलोचना कार्य को अधोरेखित किया जाएगा।

पुणे में हिंदी अनुसंधान कार्य

पुणे में अनुसंधान की शुरूआत पुणे विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की स्थापना के पूर्व हुई थी। इतना ही नहीं पूरे महाराष्ट्र के सभी विश्वविद्यालयों के अनुसंधान कार्य का जायजा लिया जाए तो यह सिद्ध होगा कि हिंदी अनुसंधान का यह प्रथम प्रयास पुणे से हुआ है। इस महत् कार्य की शुरूआत श्रीमती इथापे उषा के व्यक्तिगत शोध प्रबंध ''नवरस तथा इब्राहिम की आलोचनात्मक व्याख्या'' से सन् 1956 ई. में हुई थी। इस प्रबंध में इब्राहिम आदिलशाह 'द्वितीय' कालीन दक्खिनी हिंदी की पुस्तकों 'नौरस' तथा 'इब्राहिमनामा' की आलोचनात्मक व्याख्या प्रस्तुत की गई है। लगभग 678 पृष्ठों में टंकित यह शोध प्रबंध छः अध्यायों में विभाजित है। प्रथम अध्याय दक्खिनी हिंदी के उद्भव और विकास से संबंधित है। द्वितीय अध्याय में दक्खिनी हिंदी के आश्रयदाता सूफी संतों की चर्चा की गई है। तृतीय अध्याय में इब्राहिम आदिलशाह 'द्वितीय' के शासनकाल की जानकारी दी है। चतुर्थ अध्याय में इब्राहिम आदिलशाह 'द्वितीय' के समकालीन बादशाहों के बारे में जानकारी दी गई है। पंचम अध्याय में प्राप्त हस्तलिखित प्रतियों की फारसी लिपि पढ़ने की कठिनाइयों पर प्रकाश डाला गया है। षष्ठ अध्याय में इब्राहिम आदिलशाह 'द्वितीय' के राज्यकाल के सांस्कृतिक कार्यों की चर्चा की गई है। इन छः अध्यायों में विभाजित अनुसंधान कार्य की मौलिकता के कारण दक्खिनी हिंदी साहित्य के अध्ययन की नई दिशाओं का उद्घाटन हुआ है। प्रस्तुत शोध कार्य अनुसंधाता ने बगैर मार्गदर्शक के पूर्ण किया है। सन् 1960 ई. तक हिंदी विभाग में कोई मार्गदर्शक या हिंदी प्राध्यापक की नियुक्ति न हो सकी थी, इसलिए उन्हें यह कार्य स्वयं करना पड़ा। अतः पुणे में हिंदी अनुसंधान कार्य की शुरूआत करने का श्रेय इस महिला अनुसंधानकर्ता को जाता है।

सन् 1960 ई. में डॉ. भगीरथ मिश्र हिंदी विभाग प्रमुख के रूप में नियुक्त हुए और हिंदी अनुसंधान कार्य को गति मिली। वे सन् 1960 ई. से सन् 1966 ई. तक हिंदी विभाग का कार्य संभालते रहे। उन्होंने यहाँ पर अनुसंधान मंडल की स्थापना भी की थी। उनके कार्य काल में अनुसंधान को गति मिली। अपने छः वर्ष के कार्यकाल में उन्होंने अपने निर्देशन में 10 विद्यार्थियों को पी-एच.डी. की उपाधि हेतु मार्गदर्शन किया। हिंदी आलोचना और अनुसंधान की दृढ़ नीव रखने का कार्य डॉ मिश्र जैसे ख्यातिप्राप्त आलोचक को जाता है। सन् 1966

में वे सागर विश्वविद्यालय में चले गए। डॉ. मिश्र के उपरांत पुणे विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग प्रमुख पद पर डॉ आनंदप्रकाश दीक्षित जैसे महानुभाव स्थानापन्न हुए। हिंदी अनुसंधान की जो दृढ़ नींव डॉ. मिश्र ने रखी थी उसको संपन्नता प्रदान करने का श्रेय डॉ. दीक्षित को जाता है। लेकिन उनके ग्रंथों को देखने से विदित होता है कि अनुसंधाता से ज्यादा उनका व्यक्तित्व एक आलोचक का ही रहा है, उनके आलोचकीय व्यक्तित्व पर इसी अध्याय में आगे प्रकाश डाला गया है।

पुणे में हुए अनुसंधान कार्य को उपाधि सापेक्ष और उपाधि निरपेक्ष अनुसंधान कार्य इन दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। उपाधि सापेक्ष अर्थात औपचारिक तौर पर पी-एच.डी. उपाधि प्राप्ति के लिए हेतु परस्पर किया गया कार्य और उपाधि निरपेक्ष अनुसंधान कार्य वह होता है, जो किसी विशेष उपाधि प्राप्ति के लिए न होकर अज्ञात को ज्ञात कराने के विशेष उद्देश्य से किया जाता है। इस दृष्टि से प्रथमतः उपाधि निरपेक्ष अनुसंधान कार्य का सामान्य परिचय दिया गया है।

उपाधि निरपेक्ष अनुसंधान कार्य

उपाधि निरपेक्ष अनुसंधान कार्य करने वालों में डॉ. कृष्ण दिवाकर, डॉ. अशोक कामत और डॉ. दुर्गा दीक्षित और डॉ. मालती शर्मा आदि प्रमुख है, जिनके अनुसंधान कार्य को संक्षेप में नीचे दिया गया है।

डॉ.कृष्ण दिवाकर (30 अगस्त 1931ई. – 01 जून,1985ई.)

डॉ. कृष्ण दिवाकर की जन्मभूमि महाराष्ट्र का सोलापुर शहर है, अतः वे मराठी भाषी हिंदी अनुसंधाता और आलोचक हैं। इनकी कर्मभूमि पुणे है। पुणे शहर को अपनी कर्मभूमि बनाने वाला व्यक्ति यहाँ के हिंदी वातावरण से प्रभावित होने से वंचित नहीं रह पाता। डॉ. दिवाकर के बारे में भी यही हुआ। पुणे के न्यू इंग्लिश स्कूल में उनकी माध्यमिक शिक्षा पूर्ण हुई। सन् 1965 ई में पुणे विश्वविद्यालय से उन्होंने पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। एम. ई. एस कॉलेज, एस. एन. डी. टी कॉलेज और पुणे विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में वे कार्यरत रहे। डॉ. कृष्ण दिवाकर के अनुसंधान कार्य की शुरूआत उनके पी-एच.डी. शोध प्रबंध- ''भोसला राजाओं तथा उनके आश्रित कवियों का हिंदी काव्य'' से हुई थी। डॉ. भगीरथ मिश्र के निर्देशन में सन् 1965 ई. में उन्होंने इसी विषय पर पी-एच.डी. उपाधि प्राप्त की। हिंदी भाषा एवं साहित्य के विकास में महाराष्ट्र प्रदेश का योगदान रहा है। महाराष्ट्र के भोसला राजवंशों के दरबारों में हिंदी कवि सदा

सम्मानित रह चुके हैं। इन कवियों की गवेषणात्मक खोज करने का विश्वसनीय कार्य डॉ. दिवाकर ने प्रस्तुत शोध प्रबंध में किया है। इस प्रमुख शोध प्रबंध के अतिरिक्त उन्होंने 'महाराष्ट्र का हिंदी लोककाव्य', 'महाराष्ट्र का राज्याश्रयी हिंदी काव्य', 'मराठा शासन कालीन महाराष्ट्र', 'प्रेमचंद', 'विचार-प्रवाह', 'कवींद्राचार्य के हिंदी ग्रंथ', 'समीक्षा के सिद्धांत', 'कवि कलशकृत चंदकंवर री बात' आदि अनुसंधानपरक ग्रंथों की रचना की है। महाराष्ट्र की हिंदी भाषा और साहित्य आपके अनुसंधान के मुख्य विषय रहे हैं। अपनी कम आयु में अधिक से अधिक शोध कार्य करने का श्रेय डॉ. दिवाकर को जाता है।

श्रीमती दुर्गा दीक्षित (जन्म 18 अक्टूबर, 1938 ई.)

डॉ. दुर्गा दीक्षित पुणे विश्वविद्यालय में सन् 1985 ई. से सन् 1988 ई. तक हिंदी विभागाध्यक्ष के रूप में कार्यरत रही है। डॉ. दुर्गा दीक्षित ने डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित के मार्गदर्शन में सन् 1971 ई. में ''रससिद्धांत का सामाजिक मूल्यांकन'' इस विषय पर अपना पी-एच.डी. का शोध प्रबंध पूर्ण किया है। यह शोध प्रबंध पुरस्कृत है। इसमें रस विषयक सामाजिक तथ्यों का मूल्यांकन किया गया है। रस सिद्धांत पर प्रकाश डालते हुए अनुसंधाता ने रस का विकास, रस संख्या, रसों के देवता, वर्ण योजना आदि का विवेचन सामाजिक परिप्रेक्ष्य में किया है। इसमें समाजगत विभिन्न समूहों, भेद-विभेदों और विशेषताओं को लक्ष्य करके नाटक, काव्यपाठ, और काव्य की आस्वाद प्रक्रिया को परखने की चेष्टा की है। रस के विभिन्न अंगों का इसमें ऐतिहासिक अध्ययन भी किया गया है। गुप्त हर्ष काल से लेकर वर्तमान समय तक काव्यास्वाद के जितने भी स्तर है, उनका विवेचन इस प्रबंध की प्रमुख उपलब्धि है। यह उपाधि सापेक्ष अनुसंधान कार्य होने के बावजूद भी यहाँ उसका उल्लेख किया है क्योंकि यह कार्य बिहार राष्ट्रभाषा परिषद द्वारा पुरस्कृत है और अनुसंधान का एक अनोखा कार्यक्षेत्र काव्यशास्त्र से संबंधित है। इसके अलावा उन्होंने 'नाटक और नाट्यशैलियाँ' (1982) और 'महाराष्ट्र का लोकधर्मी नाट्य' (1984) नामक अनुसंधानपरक ग्रंथों की रचना की है। ये तीनों किताबें उच्च कोटि के अनुसंधान कार्य की द्योतक हैं। इन दोनों किताबों को केंद्रीय हिंदी निदेशालय की ओर से अहिंदी भाषी हिंदी लेखक पुरस्कार प्रदान किए जा चुके हैं। इस तरह हिंदी नाट्य साहित्य और काव्यशास्त्र आदि में इनका अनुसंधान कार्य विशेष कोटि का है।

डॉ. मालती शर्मा (15 नवंबर, 1938 ई.)

डॉ. मालती शर्मा का लेखन विविधांगी है। बालकथाकार, कवयित्री, निबंधकार आदि विविध क्षेत्रों में आपका सृजन जारी है। उनके लेखन का सबसे प्रभावी क्षेत्र है- लोकसाहित्य का अध्ययन। अर्थात् लोकसाहित्य, लोकपरंपरा और पारंपारिक खेल आदि आयामों की खोज मालती शर्मा ने अपने अनुसंधान कार्य द्वारा की है। इनकी तीन अनुसंधानपरक किताबें-'ब्याहुलों की लोकपरंपरा और महादेव का ब्याह', 'ब्रज के लोकसंस्कार गीत' और 'हाथी घोड़ा पालखी' प्रकाशित हो चुकी है। सन् 1991 ई. में प्रकाशित 'ब्याहुलों की लोकपरंपरा और महादेव का ब्याह' इस खोज परक कृति में 10 अध्याय है। प्रथम अध्याय 'मंगल काव्य या ब्याहुले एक विवेचन' में मंगल काव्य की अवधारणा, स्वरूप और उसके महत्व को प्रतिपादित किया है। दूसरे अध्याय 'मंगल काव्य का इतिहास' में हिंदी के मंगल काव्य का समग्र इतिहास प्रस्तुत किया है। तीसरा अध्याय 'मंगल काव्य और ब्याहुलों का तन्त्र' में मंगल काव्य की निर्मिती करने वाले ब्याहुलों का परिचय है। चौथा अध्याय 'लोकजीवन में शिक्षा' में भारतीय जनमानस में मौखिक रूप से और परंपरात्मक ढंग से महादेव और पार्वती की लोक कथाओं द्वारा जो शिक्षा दी जाती थी, उस परंपरा को उद्घाटित किया गया है। आज कल यह मौलिक कथाएँ लुप्तप्राय होती जा रही हैं। इसके पांचवे अध्याय 'भारतीय दाम्पत्य और गंगा-गौरी ब्याहुले' में शिव पार्वती के साथ ही साथ गंगा और गौरी के महत्व को निरूपित किया गया है। छठे अध्याय में भारत के विविध प्रांतों में नाथों, सिद्धों और जोगियों के गीतों में महादेव से संबंधित लोकपरंपरा का निर्वाह किया है। इसके सातवें अध्याय में महादेव ब्याह के रचनातंत्र पर प्रकाश डाला गया है। आठवें, नौंवे और दसवे अध्याय में शिव विवाह संबंधी फुटकर गीत, और महादेव ब्याह के मूल पाठ को अधोरेखित किया है। इस तरह यह एक अनोखी अनुसंधानपरक कृति है।

मालती शर्मा की दूसरी महत्वपूर्ण अनुसंधानपरक कृति 'ब्रज के लोकसंस्कार गीत' यह है। सन् 2009 ई. में प्रकाशित इस खोजपरक कृति में पाँच अध्याय है। प्रथम अध्याय लोकसंस्कार के कर्मकांडों से परिचित कराता है। द्वितीय अध्याय में लोकसंस्कार के 43 गीतों का समावेश किया गया है। तृतीय अध्याय में लोक संस्कार के गीतों पर विविध टिप्पणियाँ दी हैं और अंतिम अध्याय में इन गीतों के रचनाविधान का स्पष्टीकरण दिया है। इस तरह पाँच अध्यायों में विभाजित इस कृति में लोकसंस्कार गीतों का समग्र अध्ययन प्रस्तुत किया है।

मालती शर्मा की तीसरी खोज कृति 'हाथी, घोड़ा पालकी' है। सन् 2013 ई. में प्रकाशित इस रचना में बच्चों के पारंपारिक खेलों का विवेचन और विश्लेषण किया है। वर्तमान युग कम्प्यूटर का है इसलिए हर बच्चे के हाथ में की बोर्ड, मोबाईल फोन दिखाई देता है। बच्चों के खेलने के दिन अब मोबाईल और संगणक में व्यस्त रहते हैं। परिनामतः बच्चों की उम्र कम हो रही है। व्यायाम के अभाव में बच्चे क्षतिग्रस्त होते जा रहे हैं। लेखिका ने इसी बात को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत पुस्तक का सृजन किया है। इसमें 42 पारंपारिक खेलों की खेल प्रक्रिया और उनके शारीरिक तथा मानसिक विकास के महत्व को उद्घाटित किया है। इस कृति के महत्व को उद्घाटित करते हुए डॉ. महेंद्र भानावत ने लिखा है-''मालतीजी की यह पुस्तक-'हाथी घोड़ा पालकी' बच्चों के लुप्तप्राय होते खेलों की परंपरा को जोडने का अत्यंत ही सफल प्रयास है। कई तरह के खेल, अकेले खेले जाने वाले, कुछ साथी सहेलियों के साथ मिलकर खेले जाने वाले खेलों में बालकों की उम्र के अनुसार खेल मिलते हैं। इन खेलों में बालकों की मनोदशा, बुद्धि चातुर्य, श्रम-पुरुषार्थ, मनोविनोद, समूह भावना का विकास, कल्पना-सृजन-सुख, स्नेह-सौहार्द की सीख, शिक्षा-संस्कार का वपन, स्वस्थ रहने के गुर, अनुशासन का बोध, कर्मशील कर्तव्यनिष्ठा, हार-जीत के उत्स, ऋतुचर्या का ज्ञान, समयबद्धता तथा स्पर्धाजनित समझ देखने को मिलती है।''[2] इस तरह मालती शर्मा लिखित विवेच्य किताबें उपाधि निरपेक्ष अनुसंधान की कोटि में आती हैं।

डॉ.अशोक कामत (10 जनवरी 1942 ई.)

डॉ. अशोक प्रभाकर कामत हिंदी और मराठी आदि दोनों विषय के पी-एच.डी. धारक अनुसंधाता हैं। वे पुणे विश्वविद्यालय के संत नामदेव अध्यासन केंद्र के प्रमुख थे। यहाँ रहकर इन्होंने हिंदी अनुसंधान के क्षेत्र को बढ़ावा देने का यशस्वी प्रयास किया है। डॉ. कामत विशेषतः संत साहित्य के अनुसंधाता रहे हैं। उनकी अनुसंधानपरक और आलोचनात्मक पुस्तकों का विवरण निम्न है-

1. महाराष्ट्र निवासी हिंदी संतकवि मानपुरी पदावली-सन् 1966 ई
2. भक्तकवि ठाकुरदास : जीवन परिचय तथा पदसंग्रह संपादन-सन् 1967 ई.
3. आद्य महाराष्ट्रीय कवि आचार्य दामोदर पंडित और उनकी कविता-1976 ई
4. हिंदी और मराठी का स्नेहबंध-सन् 1973 ई
5. गोरख मच्छिंद्र संवाद (शोध पुस्तिका)-सन् 1977 ई

इन संत साहित्य से संबंधित पुस्तकों के अतिरिक्त हिंदी सार्थ तुकाराम गाथा के तीन खण्डों के आरंभ में विस्तृत प्रस्तावनाएँ लिखी है-'मराठी संत परंपरा और श्री तुकाराम', 'वारकरी संप्रदाय और संत तुकाराम' तथा 'संत कबीर और संत तुकाराम' आदि प्रस्तावनाएँ उल्लेखनीय और अनुसंधान के उत्कृष्ट नमूने हैं।

डॉ. अशोक कामत ने स्वयं हिंदी संत साहित्य के अनुसंधान कार्य में अपने जीवन को व्यतीत किया है। लगभग 35 वर्षों का उन्हें शोध निर्देशन का अनुभव है। उनके निर्देशन में आज तक 17 शोध प्रबंधों को पुणे विश्वविद्यालय में स्वीकृति मिल चुकी है। इसके अतिरिक्त संत नामदेव अध्यासन द्वारा स्वीकृत शोध प्रकल्पों के लिए वे स्वतंत्र रूप से निर्देशन का कार्य करते रहे हैं। उनके निजी ग्रंथालय में दुर्लभ और हस्तलिखित ग्रंथों की संख्या लगभग 16000 है। उनके द्वारा किए हुए अनुसंधान कार्य के लिए उन्हें अनेक पुरस्कारों से पुरस्कृत किया गया है। इनमें 'हिंदी और महाराष्ट्र का स्नेहबंध' इस पुस्तक को पुणे विश्वविद्यालय की अनुदान राशि प्राप्त हुई थी। भारत सरकार द्वारा दिया जाने वाला वर्ष 1975 का अहिंदी भाषी हिंदी लेखक पुरस्कार उन्हें दिया गया। अनुसंधान और राष्ट्रीय ऐक्य निर्माण में किए कार्य को देखकर उन्हें महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी की ओर से वर्ष 1997 को गजानन माधव मुक्तिबोध पुरस्कार दिया गया। प्रादेशिक भाषा मराठी और राष्ट्रभाषा हिंदी में किए विशेष कार्य को देखते हुए उन्हें भारतीय भाषा परिषद की ओर से वर्ष 1997 में 'साहित्यश्री' सम्मान प्राप्त हुआ। तटस्थ वृत्ति के इस आलोचक के सूक्ष्म और तलस्पर्शी अनुसंधान कार्य की प्रशंसा में प्रसिद्ध आलोचक डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे ने लिखा है- ''महाराष्ट्र का हिंदी भाषा से संबध कितना प्राचीन काल से है, यह डॉ. कामत जी ने अनेक प्रमाणों द्वारा सिद्ध किया है। महाराष्ट्र के अधिकतर संतों ने हिंदी में अपना काव्य प्रस्तुत किया है, इसे वे अनेक प्रमाणों द्वारा सिद्ध करते हैं। डॉ. कामत जी का यह शोध कार्य तथा इससे संबंधित इनकी आलोचना मध्यकाल की मानसिकता को समझ लेने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।''[3] इस प्रकार डॉ. अशोक कामत का हिंदी संत साहित्य विषयक अनुसंधान कार्य पुणे में हुए अनुसंधान कार्य की विशेष निधि है।

उपाधि सापेक्ष अनुसंधान कार्य

उपाधि सापेक्ष अनुसंधान कार्य वह है, जो पी-एच.डी. या अन्य किसी उपाधि प्राप्ति हेतु किया जाता है। पुणे में पुणे विश्वविद्यालय का हिंदी विभाग,

एस.एन.डी.टी विश्वविद्यालय का हिंदी विभाग और टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ का हिंदी विभाग कार्यरत है। इन तीनों विश्वविद्यालयों में प्रचुर मात्रा में उपाधि सापेक्ष अनुसंधान कार्य किया गया है।

पुणे के हिंदी अनुसंधान कार्य की विशेषताएँ

पुणे मराठी भाषी शहर है। यहाँ के मराठी भाषी अनुसंधाताओं द्वारा हिंदी में अनुसंधान करना बड़े महत्व की बात है। इस दृष्टि से उपाधिनिरपेक्ष अनुसंधान करने वाले महानुभावों में डॉ. कृष्ण दिवाकर, डॉ. अशोक कामत का कार्य उल्लेखनीय रहा है। डॉ. मालती शर्मा का अनुसंधान कार्य लोक साहित्य से संबंधित मौलिक चिंतन का परिणाम है। इसी तरह उपाधि सापेक्ष अनुसंधान की दृष्टि से पुणे के प्रमुख तीनों विश्वविदयालयों क्रमशः सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, श्रीमती नाथीबाई दामोदर ठाकरसी विश्वविद्यालय (पुणे शाखा) और टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ में एम. फिल और पी-एच.डी. का विपुल मात्रा में शोध कार्य हुआ है। पुणे विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग से लगभग 260, एस. एन. डी. टी विश्वविद्यालय से 18 और टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ से 6 शोध कर्ताओं ने विद्यावाचस्पति उपाधि हासिल की है। इन अनुसंधानकर्ताओं ने हिंदी साहित्य और भाषा के कतिपय पहलुओं का विविध दृष्टिकोणों से अध्ययन किया है। इसमें किसी विशेष कृति के मूल्यांकन के साथ भाषाशास्त्रीय अध्ययन, सौंदर्यशास्त्रीय अध्ययन, तुलनात्मक अध्ययन भी प्रस्तुत किया है। इस तरह पुणे में प्रचुर मात्रा मे हिंदी अनुसंधान कार्य हुआ है।

आलोचना कार्य

जिस प्रकार हिंदी अनुसंधान कार्य के क्षेत्र में पुणे अग्रिम दिखाई देता है ठीक उसी प्रकार से पुणे में कुछ ऐसे प्रसिद्ध आलोचकों की श्रेणी देखी जा सकती हैं, जो केवल महाराष्ट्र में ही नहीं अपितु भारतवर्ष में ख्यातिप्राप्त रह चुके हैं। उनमें डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित, डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर, डॉ. स. म. परळीकर, डॉ. केशव प्रथमवीर, डॉ. ओमप्रकाश शर्मा आदि प्रमुख है। इन प्रमुख आलोचकों का सामान्य परिचय निम्न रूप में देखा गया है।

डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित (6 फरवरी, 1923 ई.)

सन् 1966 ई. में डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित जैसे मेधावी आलोचक, अनुसंधाता, संपादक, संस्मरण लेखक, कवि, अनुवादक और हिंदी सौंदर्यशास्त्र

के अध्येता पुणे विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग प्रमुख के रूप में विराजमान हुए। सौभाग्य की बात यह कि भारतवर्ष के प्रमुख आलोचकों मे गिने जाने वाले दीक्षित जी का कर्मक्षेत्र पुणे रहा है। उनके प्रमुख आलोचनात्मक ग्रंथों की सूची इस प्रकार है-

1. बेलि क्रिसन रूक्मणि री (विश्वविद्यालय प्रकाशन, गोरखपुर तथा वाराणसी 1953)
2. रस-सिद्धांत : स्वरूप विश्लेषण (शोध प्रबंध, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.नई दिल्ली, 1960)
3. तुलसीदास : वस्तु और शिल्प (सहलेखन सरस्वती प्रकाशन सदन आगरा, 1960)
4. केशवदास : मूल्यांकन और पाठ-संग्रह (सहलेखन कमल प्रकाशन, इंदौर, भोपाल, उज्जैन, 1960)
5. विद्यापति : आलोचना और पाठ-संग्रह (साहित्य प्रकाशन मंदिर, ग्वालियर, 1967)
6. आज के लोकप्रिय कवि : शिवमंगलसिंह 'सुमन' (राजपाल एण्ड़ सन्स, दिल्ली 1969)
7. मैथिलीशरण गुप्त (संपादक वसुमति प्रकाशन, इलाहाबाद, 1970)
8. साहित्य सिद्धांत और शोध (मनीषी प्रकाशन, मेरठ 1973)
9. हरिचरणदास ग्रंथावली भाग1 (काकखंड़, मनीषी प्रकाशन मेरठ, 1975)
10. आलोचना : प्रक्रिया और स्वरूप (संपादक नेशनल पब्लि. हाऊस, नई दिल्ली 1976)
11. सुमित्रानंदन पंत (संपादक, सेतु प्रकाशन, झाँसी 1976)
12. हिंदी रीति-परंपरा : विस्मृत संदर्भ (मनीषी प्रकाशन, मेरठ 1980)
13. प्रताप पचीसी (शिवचंद कृत काव्यदोष निरूपक ग्रंथ, मनीषी प्रकाशन, मेरठ 1980)
14. कबीरदास : चिंतन और सृजन (संपादक मनीषी प्रकाशन, मेरठ 1980)
15. मराठी संतों की हिंदी वाणी (संपादक पंचशील प्रकाशन, जयपुर 1981)
16. दौलत कवि ग्रंथावली (पाठालोचन, अनुसंधान संस्थान, पुणे 1993)
17. त्रेता एक अंतर्यात्रा (नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली 2009)

डॉ. दीक्षित ने इन प्रमुख ग्रंथों के अतिरिक्त 1 संपादित अभिनंदन ग्रंथ, 34 विविध ग्रंथों की भूमिकाएँ, प्रतिष्ठित पुस्तकों में लगभग 45 आलेख, अभिनंदन

और स्मृति ग्रंथों में 40 आलेख, लगभग 225 पुस्तकों की समीक्षाएँ और मराठी, संस्कृत, अंग्रेजी में कतिपय विवरणात्मक लेख लिखे हैं। यह सभी कार्य तटस्थ आलोचना की कोटि में आता है। वे सर्जनशील कवि, गद्यगीतकार, कहानीकार, निबंधकार, संस्मरण लेखक आदि बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं। इन सबसे ज्यादा उनका रूप, एक आलोचक का रहा है। अपने अध्यापकीय कार्यकाल में और सेवा निवृत्ति के उपरांत भी अनेकों शोध छात्रों को उन्होंने अनुसंधान कार्य में मार्गदर्शन किया है।

डॉ. दीक्षित के मार्गदर्शन में कुल 28 छात्र पी-एच.डी. और कइयों ने एम.फिल की उपाधियाँ प्राप्त की हैं। इनके संदर्भ में अनेकों विद्वानों ने अपने वक्तव्य से उनके बहुआयामी व्यक्तित्व को दर्शाया है। इनमें डॉ. त्रिभुवन राय और देवेश ठाकुर द्वारा संपादित त्रैमासिक पत्रिका 'समीचीन' का जुलाई, अक्टूबर, सन् 1985 ई. का 'डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित अंक' और उन के अमृत महोत्सव के अवसर पर प्रकाशित अभिनंदन ग्रंथ 'वाग्विकल्प' तथा त्रिभुवन राय द्वारा संपादित 'आनंदप्रकाश दीक्षित : व्यक्ति और दृष्टि' तथा कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर लिखित जनवरी, 1987 का अंक-'डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित : एक रेखांकन' आदि प्रमुख है। देवेश ठाकुर और त्रिभुवन राय ने लिखा है- ''डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित स्वाधीनता के बाद के उन कुछ इने-गिने आलोचकों में से हैं, जिन्होंने बिना किसी खेमेबाजी और प्रचार-प्रियता के हिंदी आलोचना को निष्ठा के साथ आगे बढ़ाया है। एक प्रखर समीक्षक के साथ आरंभ से ही उनमें एक सूक्ष्म दृष्टि संपन्न गंभीर अनुसंधानकर्ता भी क्रियाशील रहा है। अपने अनुसंधान कार्यों से उन्होंने हिंदी शोध को भी कम संपन्न नहीं किया है।''[4] इस प्रकार उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट किया जा सकता है कि डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित हिंदी अनुसंधान और आलोचना के क्षेत्र में बड़े विद्वान व्यक्ति हैं। उनके बारे में सबसे वांछनीय बात यह कि उनका यह संपूर्ण कार्य पुणे जैसे मराठी भाषी पुण्यभूमि में संपन्न हुआ है। उनके इसी कार्यकर्तृत्व को देखते हुए उन्हें कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। इन्हीं में से एक सन 2018 में दिया गया 'गंगाशरण सिंह पुरस्कार' महत्वपूर्ण है।

डॉ. सच्चिदानंद परळीकर (18 जनवरी, 1930 ई.)

डॉ. स. म. परळीकर पुणे के हिंदी प्रचारक, आलोचक और अनुवादक के रूप में ख्यातिप्राप्त हैं। हिंदी आलोचना के क्षेत्र में आपका अनन्य असाधारण

महत्व है। वे मूलतः मराठी भाषी हिंदी अध्यापक है। हिंदी के प्रति उनका रुझान बिल्कुल हिंदी भाषियों की भाँति रहा है। इसी कारण उन्होंने हिंदी और मराठी दोनों भाषाओं में आलोचनात्मक और अनुसंधानात्मक ग्रंथों को लिखकर इन दो भाषाओं के साहित्यिक आदान-प्रदान का मार्ग प्रशस्त किया है। 'हिंदी और मराठी के समस्यामूलक उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन' (सन् 1920 से 1940 तक) यह उनके पी-एच.डी. का शोध प्रबंध है, जो सन् 1966 ई में पुणे विश्वविद्यालय से स्वीकृत किया गया है। डॉ. भगीरथ मिश्र के निर्देशन में पूर्ण किया गया यह शोध कार्य उनका मौलिक और आदर्शपरक कार्य रहा है। इसके अतिरिक्त सेवा निवृत्ति के उपरांत आपने दो आलोचनात्मक किताबों का सृजन किया है 'बाणभट्ट की आत्मकथा एवं अन्य निबंध' और 'हिंदी के समीक्षात्मक निबंध' आदि। ये दोनों समीक्षात्मक ग्रंथ उनके समय-समय पर प्रकाशित शोध निबंधों के अलग-अलग संकलन हैं। उपर्युक्त हिंदी आलोचनात्मक किताबों के अतिरिक्त उन्होंने मराठी में 'रहीमची नीतिवचने', 'कहत कबीर', 'तुलसी मंजिरी के 4 भाग' और 'बिहारी के 100 दोहें' आदि पुस्तकों की रचना की है।

डॉ. परळीकर के ये ग्रंथ हिंदी साहित्य की खोज परक व्याख्या करते हैं। डॉ. परळीकर का नाम पुणे के प्रमुख आलोचकों में लेना आवश्यक है। हिंदी आलोचना के क्षेत्र में परळीकर का स्मरणीय योगदान है।

डॉ.चंद्रकांत बांदिवडेकर (4 नवंबर 1932 ई.)

डॉ. चंद्रकांत बांदिवड़ेकर सन् 1977 ई. से सन् 1984 ई. तक पुणे विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में रीडर पद पर कार्यरत थे। पुणे में उनका निवास स्थान है और पुणे की साहित्यिक गतिविधियों के विकास में उनका स्थान अग्रिम पंक्ति में लिया जा सकता है। वे एक सफल अनुवादक, संपादक और हिंदी मराठी के तुलनात्मक अध्ययन के अध्येता है। डॉ. बांदिवडेकर एक वरिष्ठ और ख्यातिप्राप्त आलोचक हैं। अपनी मातृभाषा मराठी और राष्ट्रभाषा हिंदी साहित्य से अतीव प्यार उनके अनुसंधानात्मक और आलोचनात्मक ग्रंथों से स्पष्ट झलकता है। मराठी में लगभग 9 आलोचनात्मक और 2 संपादित ग्रंथों की रचना उन्होंने की है। हिंदी में उनके द्वारा लिखित आलोचनात्मक ग्रंथों की संख्या 12 है। उन्होंने हिंदी में 11 संपादित ग्रंथों का सृजन किया है। इनके लिखे आलोचनात्मक ग्रंथों के नाम निम्न है-

1. 'हिंदी और मराठी के सामाजिक उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन', कृष्णा ब्रदर्स, अजमेर, 1969

2. 'अज्ञेय की कविता : एक मूल्यांकन' सरस्वती प्रेस, दिल्ली, 1971. पुनर्मुद्रण वाणी प्रकाशन दिल्ली से 1993 में
3. 'हिंदी उपन्यास : स्थिति और गति', पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली 1977, पुनर्मुद्रण वाणी प्रकाशन, दिल्ली से 1993 में
4. 'कविता की तलाश' विभूति प्रकाशन, दिल्ली 1983. पुनर्मुद्रण वाणी प्रकाशन दिल्ली से 2010 में
5. 'जैनेंद्र के उपन्यास : मर्म की तलाश', पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली 1984
6. 'आधुनिक हिंदी उपन्यास सृजन और आलोचना', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1985
7. 'कथाकार अज्ञेय', हरियाणा साहित्य अकादमी चंडीगढ़, 1993
8. 'चंद्रकांत देवताले की कविता : कविता स्वभाव', वाणी प्रकाशन दिल्ली, 1995
9. 'मराठी साहित्य : परिदृश्य', वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1997
10. 'गोविंद मिश्र का औपन्यासिक संसार', भूमिका प्रकाशन, दिल्ली, 2000
11. 'डॉ. धर्मवीर भारती व्यक्तित्व और कृतित्व', साहित्य अकादमी, दिल्ली, 2000
12. 'महाकाव्यीय प्रतिभा के धनी प्रेमचंद', सार्थक प्रकाशन, गौतम नगर, नई दिल्ली, 2003 ई.

इसके अतिरिक्त हिंदी, मराठी और अंग्रेजी की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में 250 से अधिक आलेख, 20 से अधिक संपादित पुस्तकों में लेख और 15 से अधिक मराठी पुस्तकों की समीक्षात्मक प्रस्तावनाएँ प्रकाशित हुई हैं। आकाशवाणी पर उनके 100 से अधिक भाषण प्रसारित हुए हैं।

डॉ. बांदिवडेकर हिंदी और मराठी दोनों के मूर्धन्य आलोचक और अनुसंधाता हैं। उनके द्वारा लिखित मराठी और हिंदी के अनेक ग्रंथों को अनेक पुरस्कारों से नवाजा गया है। इनमें 'कविता की तलाश' इस समीक्षात्मक पुस्तक को सेन्ट्रल हिंदी डाइरेक्टोरेट (भारत सरकार) द्वारा दिया गया मौलिक ग्रंथ पुरस्कार, मराठी समीक्षात्मक पुस्तक 'कादंबरी : चिंतन आणि समीक्षा' के लिए महाराष्ट्र साहित्य परिषद पुरस्कार (1983), 'संत ज्ञानेश्वर : जीवन और कार्य' इस पुस्तक के लिए माता कुसुमकुमारी अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किए जा चुके हैं। इनके अतिरिक्त उन्हें उनकी हिंदी सेवा से संबंधित लगभग 17 विविध पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं। इससे स्पष्ट होता है कि आपकी हिंदी सेवा तथा हिंदी आलोचना

और अनुसंधान कार्य का महत्व सर्वविदित है। डॉ. उषा देशमुख ने उनके अनुसंधाता और आलोचकीय रूप पर इस प्रकार प्रकाश डाला है- ''डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकरांच्या साहित्य विचारात मन 'आंतरभारती चे एक स्वप्न पूर्ण झाले आहे. हिंदी ही राष्ट्रभाषा आणि मराठी ही मातृभाषा असलेल्या डॉ. बांदिवडेकरांनी या दोन्हीं संपन्न आणि गर्भ श्रीमंत भाषांतील साहित्याचा अनुवादाच्या माध्यमातून, समीक्षेच्या अनुबंधातून, तौलनिक विचार व्यूवहातून सातत्याने विचार विमर्श केलेला आहे. डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर हे मराठी साहित्याचे हिंदीतील आणि हिंदी साहित्याचे मराठीतील समन्वयदूत आहेत.''[5] इस वक्तव्य को आधार बनाकर स्पष्ट किया जा सकता है कि बांदिवडेकर ने हिंदी मराठी अनुसंधान कार्य में सेतु का कार्य किया है। प्रसिद्ध आलोचक डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे ने उनके आलोचकीय दृष्टिकोण को इस प्रकार व्यक्त किया है- ''मराठी के दलित साहित्य का परिचय आपने ही हिंदी समीक्षकों को करा दिया है। रचनाओं की ओर पूरी तटस्थत से आप देखते हैं। इनकी समीक्षा अत्यंत सरस तथा गहरी संवेदनशीलता से युक्त होती है। सर्जनात्मक समीक्षा कहे तो कोई अतिश्योक्ति न होगी।''[6] अतः पुणे के आलोचकों और हिंदी अनुसंधाताओं में आपका नाम सदैव स्मरणीय रहेगा।

डॉ. केशव प्रथमवीर (24 जनवरी 1939 ई.)

डॉ. केशव प्रथमवीर की कर्मभूमि पुणे है। पुणे जैसे अहिंदी प्रदेश में रहकर आपने हिंदी की विपुल सेवा की है। यह सेवा हिंदी प्रचार-प्रसार कार्य से लेकर एक अद्वितीय अनुसंधान कार्य तक रही है। अद्वितीय अनुसंधान इसलिए कहा गया है क्योंकि इन्होंने एक अछूते, अनछुए विषय को लेकर सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय में पी-एच.डी. का कार्य पूर्ण किया। उनका शोध विषय है- 'हिंदी की कुण्डलिया छंद और साहित्य'। दो खण्डों और नौ अध्यायों में विभाजित इस शोध प्रबंध में तर्क, प्रमाण और वैज्ञानिक ढंग से कुण्डलिया छंद और साहित्य का विविधांगी अध्ययन और सांगोपांग विवेचन किया गया है। अनुसंधान कार्य में डॉ. प्रथमवीर की अच्छी पैठ नजर आती है। डॉ. सुभाष तळेकर ने इनके इस महत्वपूर्ण कार्य की प्रशंसा में लिखा है- ''डॉ. प्रथमवीर की पी-एच.डी. का शोध विषय 'हिंदी का कुण्डलिया छंद और साहित्य' अनोखा प्रबंध है। एक छंद के शिल्प और साहित्य पर साढ़े तीन सौ पृष्ठों का यह ग्रंथ शायद हिंदी साहित्य में एकमात्र है।''[7] अनुसंधान और आलोचना के क्षेत्र में अपनी अलग पहचान बनाने वाले प्रथमवीर की कतिपय आलोचनात्मक पुस्तकें

प्रकाशित हैं। ये किताबें उनके अलोचकीय व्यक्तित्व पर प्रकाश डालती हैं। उनके अन्य आलोचनात्मक ग्रंथों के नाम हैं-

1. हिंदी की विकास यात्रा - राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा का वृहद इतिहास, 2011
2. कबीर का मृत्युबोध- संपादन डॉ. चेतना राजपूत, अनुभव प्रकाशन गाजियाबाद, 2016
3. खुद्दु की रोटी और मुंशी जी का कफन- अनुभव प्रकाशन, गाजियाबाद, 2017
4. हे विधना! भारत में न किसान बनइयों (प्रकाशनाधीन) - अनुभव प्रकाशन गाजियाबाद, 2017
5. कफन के ताने बाने (प्रकाशनाधीन)
6. राष्ट्रीयता : भाषा समन्वय की भूमिका (प्रकाशनाधीन)
7. सगोत्री विधाओं का अकेला मेला (प्रकाशनाधीन)

ये सभी किताबें आलोचनात्मक और गहरी खोज को अभिव्यक्त करने में सार्थक है। 'हिंदी की विकासयात्रा' यह एक वृहतकाय शोध ग्रंथ है। इसमें हिंदी प्रचार संस्थाओं के इतिहास को खोज भरी निगाहों से देखा गया है। यह उनका विशाल और मौलिक शोध कार्य है। 'कबीर का मृत्युबोध' आलोचनात्मक निबंधों का संग्रह है जिसमें प्राचीन हिंदी साहित्य चिंतन से संबंधित लेखों का संकलन किया गया है। 'खुद्दु की रोटी और मुंशी जी का कफन' साहित्यिक और वैचारिक आलेखों का संकलन है। 'हे विधना भारत में न किसान बनइयों' यह उनके द्वारा संपादित पत्रिका 'समग्रदृष्टि' के संपादकीय आलेखों का संकलन है। 'कफन के ताने-बाने' आधुनिक हिंदी साहित्य के विभिन्न पहलुओं पर उनकी चिन्तनपरक दृष्टि को उद्घाटित करता है। 'राष्ट्रीयता भाषा समन्वय की भूमिका' राष्ट्रभक्ति और राष्ट्रभाषा से संबंधित आलेखों का संकलन है। 'सगोत्री विधाओं का अकेला मेला' में पुस्तक समीक्षाएँ संकलित है, जो उनकी आलोनात्मक दृष्टिकोण की परिचायक है। इस प्रकार डॉ. प्रथमवीर की रचनाएँ मूलतः हिंदी अनुसंधानपरक और आलोचनात्मक कोटि के ग्रंथ हैं। अतः हिंदी अनुसंधान और आलोचना को पुणे में विकसित करने का श्रेय जिन विद्वानों का रहा है उनमें प्रथमवीर प्रमुख हैं।

डॉ. ओमप्रकाश शर्मा (1 जून 1955 ई.)

पुणे के आबासाहेब गरवारे महाविद्यालय के हिंदी विभाग प्रमुख एवं प्राध्यापक डॉ. ओमप्रकाश शर्मा सर्जनशील व्यक्तित्व के धनी है। इनका सृजन

विशेष तौर पर आलोचना के क्षेत्र में पाया जाता है। उनकी पुस्तकों की सूची निम्नवत् है-

1.स्वातंत्र्योत्तर हिंदी रंगमंच : समस्या और उपलब्धि (पी-एच.डी. शोध प्रबंध) वर्ष 1988 ई.

2.शैलीकार शंकर पुणतांबेकर

3.षट्कवि विवेचनात्मक अध्ययन दो खण्ड सं. 1999

4.सूरदास एक पुनरावलोकन

5. साहित्य विविध वाद 2010 और 2013 दो संस्करण

उपरोक्त रचनाएँ आलोचनात्मक लेखन की पुस्तकें हैं। प्रथम पुस्तक 'स्वातंत्र्योत्तर रंगमंच : समस्या और उपलब्धि' यह उनका पी-एच.डी. का शोध प्रबंध है। यह प्रबंध उन्होंने डॉ. दुर्गा दीक्षित के मार्गदर्शन में सन् 1988 में पूर्ण किया है। इसके बाद उन्होंने निरंतर पुस्तकों के लेखन में अपने आपको लगाया है। 'शैलीकार पुणतांबेकर' यह उनकी अनुसंधानपरक रचना है जिसमें उन्होंने डॉ. शंकर पुणतांबेकर के सर्जनशील व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला है। 'षट्कवि विवेचनात्मक अध्ययन' यह उनकी दो खंडों में विभाजित महत्वपूर्ण किताब है। इसके प्रथम खंड में कबीर, विदयापति और जायसी तथा द्वितीय खंड में घनानंद, बिहारी, तुलसीदास आदि कवियों के जीवनविषयक तथ्यों के साथ उनके कृतित्व पर प्रकाश डाला गया है। 'सूरदास एक पुनरावलोकन' सूरदास के काव्य विषयक कतिपय धारणाओं से अवगत कराने वाली किताब है। 'साहित्य विविध वाद' यह एक ऐसी महत्वपूर्ण रचना है, जो साहित्यिक अनुसंधान विषयक विविध सिद्धांतों का व्यवस्थित प्रतिपादन करती है।

इस प्रकार डॉ. ओमप्रकाश शर्मा ने हिंदी में लगभग 10 किताबों का सृजन किया है। ये सारी किताबें आलोचना की कोटि में आती है। हिंदी आलोचना के क्षेत्र में डॉ. शर्मा का नाम उल्लेखनीय है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि हिंदी आलोचना के क्षेत्र में भी पुणे के चिंतक गंभीर दृष्टि से साहित्य आलोचना करते रहे हैं। ये उच्च कोटि के आलोचक है। इन्होंने हिंदी के आदिकालीन ग्रंथों से लेकर आधुनिक कालीन हिंदी की कतिपय विधाओं पर भाष्य करने का स्तुत्य प्रयास किया है।

उपरोक्त हिंदी अनुसंधान और आलोचना की तरह पुणे के साहित्यकारों ने अन्य (ज्ञानात्मक) साहित्य का सृजन किया है। इनका विवेचन निम्नलिखित है।

अन्य (ज्ञानात्मक साहित्य)

पुणे में अनुसंधान और आलोचना के साथ कुछ ऐसी पुस्तकें लिखी गई है, जो न अनुसंधान की कोटि में आती है और न ही आलोचना की कोटि में। पर यह खोजपरक कृतियाँ होने के कारण इनका इसी अध्याय में समावेश किया गया है। इस प्रकार के लेखन को निर्मितिक्षम लेखन कह सकते हैं। यह लेखन ज्ञानात्मक और सृजनात्मक साहित्य की कोटि में आता है। यह लेखन विविध विषयों से संबंधित होता है। ऐसी पुस्तकों की रचना करने वाले महानुभावों में डॉ. अशोक केळकर, डॉ. भगीरथ मिश्र, डॉ. विठ्ठल भालेराव, डॉ. पद्मजा घोरपडे, डॉ. ओमप्रकाश शर्मा, डॉ. सुरिंदर कौर 'गौड', डॉ. सुभाष तळेकर, माधुरी नगरकर, डॉ. चंद्रकांत मिसाळ, डॉ. सदानंद भोसले, डॉ. शशिकला राय, डॉ. गोरख थोरात आदि प्रमुख हैं। इन लेखकों ने भाषा विज्ञान, काव्यशास्त्र, प्रयोजनमूलक हिंदी, सौंदर्यशास्त्र, पत्रकारिता, नेट, सेट, स्त्री विमर्श जैसी प्रतियोगिताओं की किताबों का सृजन किया है। इनके इस कार्य का लेखा-जोखा निम्नांकित क्रम में देखा गया है।

भाषा विज्ञान और प्रयोजनमूलक हिंदी से संबंधित पुस्तकें

पुणे में भाषा विज्ञान से संबंधित किताबों का भी सृजन हुआ है। इस कार्य में सर्वप्रथम डेक्कन कॉलेज के पूर्व प्रोफेसर एवं निदेशक डॉ. अशोक रामचंद्र केळकर (1929 ई.) ने किया है। डॉ. केळकर का जन्मस्थान और कर्मस्थल दोनों पुणे ही है। ये हिंदी, अंग्रेजी, मराठी और उर्दू भाषाओं में भाषा विज्ञान से संबंधित लेखन करते थे। अंग्रेजी में उनके 'स्टडीज इन हिंदी उर्दू' और 'इन्ट्रोडक्शन एण्ड ओरोल्ड फोनोलॉजी' आदि विशेष लोकप्रिय ग्रंथ है। भाषावैज्ञानिक तथा साहित्यिक विषयों पर उनकी लेखमाला भी प्रकाशित हो चुकी है। हिंदी में आपकी तीन किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं। 'त्रिवेणी' यह किताब भाषा, साहित्य और संस्कृति के महत्व को निरूपित करने वाली कृति है। इस कृति में उनके सन् 1971 ई. से सन् 1999 ई. तक के हिंदी में प्रकाशित हुए 19 लेख संकलित हैं। लेखक इस पुस्तक में भाषा विचार से भाषा विचार तक अपने मंतव्य को घुमाते रहे हैं। भाषा विचार के साथ-साथ साहित्य और संस्कृति विषयक विचारों का प्रतिपादन भी इस पुस्तक में किया गया है। लेखक को अंग्रेजी में भाषा विज्ञान पढ़ाने का प्रदीर्घ अनुभव होने के कारण इस पुस्तक में विवेचित उनके विचार बेहद प्रभावी हैं। इस क्षेत्र में कार्य करने वाले दूसरे विद्वान डॉ. वी. एन.

भालेराव है। वे पुणे विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में प्राध्यापक के रूप में कार्य करते हैं। इनके पी-एच.डी. का विषय 'नांदेड जिले की भाषा सर्वेक्षण' है। भाषाविज्ञान के अध्येता भालेराव ने पुणे में आकर पुणे की हिंदी भाषा और साहित्य के परिवेश में अपने विचारों को गढ़ा है। पुणे जिले की बोली का उन्होंने बी.सी.यू.डी. प्रोजेक्ट के तहत सर्वे किया। इसके अतिरिक्ति आपने ''जनजातियों की बोली समाज और संस्कृति'', ''बोलियाँ समाज और संस्कृति'' तथा ''वडारी बोली, समाज और संस्कृति'' आदि भाषाविज्ञान से संबंधित अनुसंधानपरक ग्रंथों की रचना की है। मार्च 2016 में प्रकाशित 'प्रयोजनमूलक हिंदी के अद्यतन प्रयोग' उनके लघु शोध परियोजना का विषय है। इसमें उन्होंने हिंदी के व्यावसायिक, कार्यालयीन महत्व को उद्घाटित किया है। यह उनकी विशेष कृति है। भाषा विज्ञान से संबंधित एक किताब का संपादन डॉ. सुभाष तळेकर ने भी किया है। यह किताब पुणे विश्वविद्यालय के पाठयक्रम हेतु संपादित की गई है। यह एक प्रकार से छात्रोपयोगी पुस्तक है। डॉ. पद्मजा घोरपड़े ने 'भाषा बोध भाग 1' (2009) और 'आओं हिंदी सीखें' (2011) नामक पुस्तक का दो भागों में प्रकाशन किया है। ये किताबें विदेशी छात्रों को हिंदी सीखाने के उद्देश्य से लिखी है। अतः व्यावहारिक हिंदी का ज्ञान प्रदान करने वाली ये उत्कृष्ट किताबें हैं। डॉ. ओमप्रकाश शर्मा ने भी 'सुलभ भाषाविज्ञान' नाम की किताब लिखकर हिंदी अध्येताओं के भाषा विज्ञान संबंधित अड़चनों को दूर करने का प्रयास किया है। उनकी यह किताब निराली प्रकाशन से प्रकाशित छात्रों के अध्ययन की सुविधा हेतु लिखी गई है। डॉ. सदानंद भोसले द्वारा लिखित 'विशुद्ध हिंदी भाषा' यह रोशनी प्रकाशन, कानपुर से वर्ष 2007 को प्रकाशित हुई है। यह किताब हिंदी वर्तनी की अनेक त्रुटियों में सुधार लाने के उद्देश्य से लिखी गई है। डॉ. गोरख थोरात द्वारा लिखित 'प्रयोजनमूलक हिंदी' यह किताब सन् 2009 में निराली प्रकाशन पुणे से प्रकाशित हुई है। इसमें हिंदी भाषा का उद्भव और विकास, हिंदी की मानक वर्तनी, पारिभाषिक शब्दावली, पत्र लेखन, साक्षात्कार, सार लेखन, पल्लवन, विज्ञापन, फीचर लेखन, प्रतिवेदन लेखन, अनुवाद आदि से संबंधित छात्रोपयोगी सामग्री का संकलन और लेखन किया गया है। इस तरह पुणे में भाषा विज्ञान तथा प्रयोजनमूलक हिंदी से संबंधित लेखन कार्य हुआ है।

कोश एवं व्याकरण ग्रंथ

पुणे हिंदीतर भाषी शहर है। विद्या का पीहर है। जिज्ञासुओं की यहाँ कोई कमी नहीं है। अतः अनेक भाषाओं के ज्ञानी व्यक्तियों का निवास यहाँ पर विद्यमान है। इस कारण साहित्य, संस्कृति और भाषा के अध्ययन की त्रिवेणी गंगा यहाँ प्रवाहमान होती रही है। कोश ग्रंथों के निर्माण में भी यह शहर अग्रणी रहा है। इस दिशा में सर्वप्रथम जिस विद्वान का नाम लेना अपेक्षित है, वह है- विश्वनाथ दिनकर नरवणे (सन् 1924 ई - सन् 2003 ई.)। राष्ट्रीय एकता निर्माण में और स्वतंत्रता समर में विविध प्रांतों को जोडने का महती कार्य हिंदी ने किया था। हिंदी का यह इतिहास सर्वश्रुत है। विश्वनाथ नरवणे ने इसी एकता निर्माण की पहल में 'भारतीय व्यवहार कोश' का निर्माण किया। इसमें प्रमुख भाषाएँ हिंदी, अंग्रेजी के साथ भारत की अन्य सोलह भाषाओं में व्यवहृत समानार्थी शब्दों को देवनागरी लिपि में उच्चारण के साथ अभिव्यक्त किया है। कोश के अंतिम पृष्ठों में प्रात्यक्षिक के रूप में वाक्यावली दी गई है, जिसमें समानार्थी शब्दों के हेर फेर से दो भाषाओं में आदान-प्रदान की आसानी को दर्शाया गया है। इस कोश के माध्यम से भारत के किसी भी प्रांत में व्यावहारिक भाषा का प्रयोग आसानी के साथ किया जा सकता है। नरवणे जी खुद अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे। भारतीय भाषाओं के साहित्य को परिचित कराने हेतु उन्होंने 'भारतीय कहावत संग्रह कोश' के तीन खंडों का सृजन किया। प्रथम दो खंडों में भारतीय भाषाओं में प्रचलित समानार्थी कहावतों को हिंदी और अंग्रेजी में अनुवादित कर संग्रहीत किया है। तीसरे खंड में कुछ ऐसी कहावतों को सम्मिलित किया गया है जो प्रथम दो खंडों से बची हुई है। इस तरह तीनों खंडों का यह कोश संग्रह संपूर्ण भारतवर्ष के कोश संग्रहों में महत्वपूर्ण सिद्ध होता है। गौरवास्पद बात यह कि इन कोश ग्रंथों का निर्माण राष्ट्रभाषा हिंदी में किया गया है और इसी पुण्यभूमि की यह अमूल्य उपज है। अतः विश्वनाथ नरवणे का यह कार्य अविस्मरणीय और अमूल्य है।

कोश निर्माण के क्षेत्र में दूसरे महत्वपूर्ण विद्वान श्रीपाद जोशी और गो.प.नेने आदि हैं।श्रीपाद जोशी को ख्याति प्राप्त हुई एक कोशकार के रूप में, ही। उन्होंने 1. मराठी-हिंदुस्तानी कोश, (1943) 2. हिंदी-मराठी शब्दकोश, (1956) 3. अभिनव शब्दकोश, (1958) 4.बृहत् हिंदी-मराठी शब्दकोश, (1965) 5 बृहत् मराठी-हिंदी शब्दकोश, (1971) और 6.उर्दू-मराठी-हिंदी शब्दकोश की निर्मिति कर महाराष्ट्र के हिंदी जगत में एक बड़े अभाव की पूर्ति की। इस क्षेत्र

में और एक उल्लेखनीय नाम श्रीमती मालती इनामदार का है। इन्होंने जीवसृष्टि शब्दकोश का निर्माण किया है। यह कोश, विज्ञान के अध्येताओं विशेषकर प्राणिशास्त्र और वनस्पतिशास्त्र के अध्येताओं को जलचर, वायुचर और भूचर के पशुओं और वनस्पतियों की जानकारी प्राप्त कराने के लिए महत्वपूर्ण स्रोत है। यह कोश संपूर्णतः हिंदी में है, इसमें 1001 शब्दों का संकलन है, इन शब्दों के अर्थों को अधिक स्पष्टता देने के लिए चित्रों का समावेश किया गया है। प्रारंभ में विषय के शब्दों का परिचय, रंगीन और श्वेतधवल चित्रों का अंतर्भाव, हिंदी-मराठी शब्दसूची का समावेश, देवनागरी लिपि में उच्चारण की व्यवस्था, पर्यायवाची शब्दों का समावेश, संस्कृत, मराठी और अंग्रेजी प्रतिशब्दों का अंतर्भाव, रूढ़ या गुण, रूप, क्रिया आदि पर गढ़ाये गए शब्दों का उपयोजन आदि इस कोश की विशेषताएँ हैं। इसमें अलग से वनस्पति विभाग में कुलनाम का अभिनिर्देश, अंग्रेजी आद्याक्षरक्रम के अनुसार रचना, वनस्पति से संबंधित प्रकारों की जानकारी विस्तार के साथ दी गई है। साथ ही प्राणि विभाग में संघ और गण के अनुसार वर्गों का नामोल्लेख, प्राणी से संबंधित अवयव आदि शब्दों को स्पष्ट किया गया है। हिंदी व्याकरण और भाषा शुद्धता की दृष्टि से सिंधी विद्वान हर्दवाणी की 'विशुद्ध हिंदी भाषा' और प्रा. सुमतिलाल शाह की 'मानक वर्तनी के नियम' (लघु पुस्तिका) आदि प्रमुख है। इस प्रकार हिंदी कोश ग्रंथ और व्याकरण ग्रंथों के निर्माण कार्य में भी पुणे के रचयिताओं का विशेष योग है।

काव्यशास्त्रीय ग्रंथ

डॉ. भगीरथ मिश्र पुणे विश्वविद्यालय के प्रथम हिंदी विभाग प्रमुख थे। डॉ. मिश्र लिखित 'काव्यशास्त्र' तथा 'काव्यशास्त्र का इतिहास' दो महत्वपूर्ण किताबें हैं। काव्यविषयक कतिपय धारणाओं के संदर्भ में इसमें हल खोजने का प्रयास किया जाता है। डॉ. भगीरथ मिश्र लिखित काव्यशास्त्र एक अप्रतिम पुस्तक है। डॉ. वी. एन. भालेराव लिखित 'भारतीय काव्यशास्त्र' इस क्षेत्र की दूसरी महत्वपूर्ण किताब है। इसमें भारतीय काव्य सिद्धांतों का सांगोपांग विवेचन किया गया है। विद्यार्थियों को पाश्चात्य साहित्य सिद्धांत विषयक कतिपय धारणाओं से अवगत कराने की दृष्टि से डॉ. ओमप्रकाश शर्मा लिखित 'पाश्चात्य साहित्य सिद्धांत विवेचन' एक महत्वपूर्ण कृति है। पुणे की लेखिका माधुरी नगरकर लिखित 'काव्यशास्त्र' यह किताब भी इसी कोटि की है। इसमें काव्यशास्त्र के विविध अंगों पर सविस्तार चर्चा की गई है। आबासाहेब गरवारे महाविद्यालय की

प्राध्यापिका डॉ. सुरिंदरकौर गौड़ ने 'सौंदर्यशास्त्र' नामक किताब लिखी है। यह किताब अभय प्रकाशन, कानपुर से सन् 2015 ई. में प्रकाशित हुई है। इसमें सौंदर्य का अर्थ, उसकी परिभाषा, उसके लिए प्रयुक्त शब्द, सौंदर्य की अवधारणा और सौंदर्यानुभूति पर प्रकाश डाला गया है। इसमें सौंदर्य-मूल्य और जीवन-मूल्य के महत्व को उद्घाटित किया गया है। इस प्रकार पुणे में ज्ञानात्मक साहित्य की कोटि में आने वाले काव्यशास्त्र इस विषय से संबंधित पुस्तकों का भी सृजन हुआ है।

फिल्म से संबंधित ग्रंथ

हिंदी के विकास में फिल्मों का योगदान रहा है। इन फिल्मों की भाषा और फिल्मी गीतों की भाषा आम जनता तक पहुंचने में सक्षम रही है। डॉ. सुनील देवधर ने इन हिंदी फिल्मी के गीतों का समीक्षात्मक अध्ययन किया है। उनकी यह पुस्तक 'बड़े अनमोल गीतों के बोल' सन् 2017 ई. में प्रकाशित हुई है। इसमें देशभक्ति और प्रार्थना से संबंधित 51 गीत संकलित हैं। इन गीतों की समीक्षा भी उन्होंने समाज, धर्म, दर्शन और जीवन मूल्यों के परिप्रेक्ष्य में की है। डॉ. चंद्रकांत मिसाळ (4 जनवरी सन् 1969 ई.) एस.एन.डी.टी विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं। उनकी अधिकांश किताबें फिल्म समीक्षा से संबंधित हैं। उनकी प्रथम पुस्तक ''हरिनारायण व्यास : व्यक्तित्व और कृतित्व'' उनके पी-एच.डी. का शोध प्रबंध है। जनवरी, 2006 में प्रकाशित 'दूसरा सप्तक के कवियों का तुलनात्मक अध्ययन' यह उनकी दूसरी आलोचनात्मक कृति है। आठ अध्यायों में विभाजित इस किताब में दूसरा सप्तक के प्रमुख कवियों-भवानीप्रसाद मिश्र, शकुंतला माथुर, शमशेरबहादुर सिंह, रघुवीर सहाय, नरेश मेहता और धर्मवीर भारती आदि के काव्य की काव्यगत विशेषताओं के साथ हरिनारायण व्यास के काव्यगत विशेषताओं का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। डॉ. मिसाळ की तीसरी आलोचनात्मक कृति है-'सामाजिक मूल्यनिर्धारण में सिनेमा का योगदान''। इसमें संबंधित विषय के लगभग अट्ठारह आलेख संकलित हैं। ''घरेलू हिंसा और मानवाधिकार : कारण और उपाययोजना' यह उनकी चौथी अनुसंधानपरक किताब है। स्त्री जीवन की विविध घरेलू समस्याओं और उसके उपायों को इस कृति में उद्घाटित किया है। ''हिंदी सिनेमा में चित्रित पत्नी उत्पीड़न'' नामक आपकी पाँचवी आलोचनात्मक किताब में पत्नी वर्ग के उत्पीड़न की कथाओं को संजोया गया है। ''हिंदी सिनेमा

में अभिव्यक्त दांपत्य जीवन'' आपकी छठीं किताब है। यह किताब हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर से प्रकाशित हुई है। आपकी सातवीं प्रकाशित रचना ''साहित्य और सिनेमा का अंतःसंबंध' है। इस कृति में साहित्य और सिनेमा दोनों के महत्व को उद्घाटित करते हुए साहित्य पर बनी फिल्मों का परिचय दिया है। डॉ. मिसाळ के सिनेमा विषयक लेखकीय योगदान पर प्रकाश डालते हुए डॉ. शैफाली सक्सेना ने लिखा है-''मिसाल जी ने सिनेमा को सही मायने में देखा, परखा और समझा है। आम आदमी सिर्फ मनोरंजन के उद्देश्य से अथवा समय गुजारने के लिए सिनेमा देखता है परंतु आपने सिनेमा को समाज और साहित्य से जोड़कर लेखनीबद्ध करके उसे अमरता प्रदान की है।''[8] सिनेमा चाहे उनकी आलोचना का विषय क्यों न हो पर, वे साहित्य के महत्व को भी नहीं भूलते हैं क्योंकि सिनेमा का मूल्यांकन वे साहित्य के परिप्रेक्ष्य में करते हैं। फिल्म और साहित्य विषयक नूतन दृष्टिकोण के कारण उन्हें वर्ष 2016 में सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार के केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड की ओर से सलाहकार समिति पर नियुक्त किया गया है। डॉ. मिसाळ का कार्य सराहनीय है।

पत्रकारिता से संबंधित पुस्तकें

हिंदी पत्रकारिता से संबंधित पुस्तकों के लेखन में डॉ. पद्मजा घोरपडे और डॉ. ओमप्रकाश शर्मा का नाम उल्लेखनीय है। डॉ. पद्मजा घोरपडे की किताब 'भाषा की अदालत में समाचार पत्र' प्रतिमा प्रकाशन, पुणे से सन् 2001 ई. में प्रकाशित हुई है। इसमें पुणे और मुंबई से प्रकाशित होने वाले मराठी और हिंदी समाचार पत्रों के भाषिक आदान-प्रदान और उनके योगदान का अध्ययन किया गया है। यह उनके लघु शोध परियोजना का विषय है। मराठी और हिंदी के समाचार पत्रों की भाषा के सामर्थ्य को इस किताब में उद्घाटित किया गया है। डॉ. ओमप्रकाश शर्मा की किताब 'जनसंचार और पत्रकारिता : विविध आयाम' सन् 2012 ई. में प्रकाशित हो चुकी है। इस किताब में हिंदी पत्रकारिता के विविध आयामों की खोजपरक व्याख्या की गई है। इस पुस्तक को सन् 2012 ई. में महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी का 'बाबूराव विष्णु पराडकर पुरस्कार' प्राप्त हुआ है। पुणे के हिंदी पत्रकारिता विषयक किताबों में यह अपने ढंग की किताब है। इस तरह पुणे के हिंदी पत्रकारिता विषयक किताबों के लेखन में इन दो लेखकों का स्थान महत्वपूर्ण है।

अनुसंधान लेखन से संबंधित पुस्तकें

हिंदी के वरिष्ठ आलोचक डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित की किताब ''साहित्य सिद्धांत और शोध''अनुसंधान से संबंधित आलेखों का संग्रह है। अनुसंधान क्या होता है और उसे कैसे किया जाना चाहिए इन प्रश्नों का प्रात्यक्षिक रूप प्रस्तुत पुस्तक है। इसमें लगभग 15 आलेख प्रकाशित है। संस्कृत काव्यशास्त्र में रस-सिद्धांत, प्रसाद का काव्य विवेक, प्रसाद का रस विवेचन, डॉ. कन्हैयालाल सहल का काव्य-विवेक, आलोचना : स्थिति और गति, मूल्य विघटन, हिंदी शोध एक प्रतिक्रिया, साहित्य तथा साहित्येतर विषयक शोध और साहित्य का सांस्कृतिक अनुसंधान आदि लेख बेहद प्रभावी और उनके सूक्ष्म अनुसंधान की उपज है। शोध चिंतन से संबंधित इन लेखों का हिंदी अनुसंधान कार्य से गहरा संबंध है। अतः पुणे में अनुसंधान से संबंधित लिखे पुस्तकों में इस किताब का महत्वपूर्ण स्थान है। डॉ. सुभाष तळेकर और प्रा. माधुरी नगरकर लिखित किताब ''अनुसंधान के तत्व'' एक उत्कृष्ट किताब है। यह किताब सन् 2016 में निराली प्रकाशन पुणे से प्रकाशित हुई है। इसमें भी अनुसंधान से संबंधित सभी बिंदुओं का विवेचन और विश्लेषण, चिंतन-मनन के आधार पर किया गया है। इस पुस्तक की खास विशेषता यह है कि इसमें अनुसंधान के नूतन आयाम, जैसे-आदिवासी विमर्श, स्त्री विमर्श, दलित विमर्श आदि की चर्चा की गई है। यह पुस्तक हिंदी के निदेशकों और अनुसंधाताओं के लिए अत्यंत उपयुक्त है।

डॉ. ओमप्रकाश शर्मा ने ''अनुसंधान एक विवेचन'' (2016) नाम की निराली प्रकाशन से पुस्तक प्रकाशित की है। इसमें अनुसंधान का स्वरूप, अनुसंधान के लिए प्रयुक्त विविध शब्द, अनुसंधान के तत्व, अनुसंधान के प्रकार, अनुसंधान की प्रक्रिया, शोध प्रबंध लेखन प्रणाली आदि कतिपय शोध कार्य से संबंधित बिंदुओं का सांगोपांग विवेचन किया है। इस प्रकार हिंदी अनुसंधान से संबंधित जानकारी प्राप्त कराने वाली ये तीनों किताबें उत्कृष्ट महत्वपूर्ण हैं।

प्रतियोगिता परीक्षा संबंधित पुस्तकें

यू.जी.सी की नियमावली के अनुसार हिंदी विषय में नेट और सेट की परीक्षाओं को दृष्टि में रखकर डॉ. ओमप्रकाश शर्मा ने हिंदी नेट, सेट के तृतीय प्रश्नपत्र की किताब प्रकाशित करवाई है। यह पुस्तक नेट, सेट परीक्षाओं की दृष्टि से उत्तम और उत्कृष्ट रही है। अब तक इसके तीन संस्करण निकल चुके हैं। पुणे विश्वविद्यालय के वर्तमान हिंदी विभाग प्रमुख और प्रोफेसर डॉ. सदानंद

भोसले ने हिंदी नेट, सेट की वस्तुनिष्ठ किताब का सृजन किया है। डॉ. भोसले ने नेट, सेट परीक्षाओं के संदर्भ में प्रचलित अनेक भ्रामक कल्पनाओं को झूठ साबित करते हुए इस पुस्तक में योग्य दिशा-निर्देश दिए हैं। यह पुस्तक एक उत्कृष्ट और अनुभवसंपन्न ज्ञान पर आधारित दिखाई देती है।

स्त्री विमर्श से संबंधित आलोचनात्मक पुस्तकें

हिंदी साहित्य की आधुनातन प्रवृत्तियों में स्त्री विमर्श एक है। स्त्री की अस्मिता, स्त्री पर होने वाले अन्याय और अत्याचार तथा आज की सक्षम स्त्री आदि विषयक चर्चा स्त्री विमर्श संबंधी आलोचना में की जाती है। पुणे विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में कार्यरत सहायक प्राध्यापिका डॉ. शशिकला राय ने इस संबंध में सृजन किया है। इनकी किताबें है-'इस्पात में ढलती स्त्री', 'कथा, समय सृजन और विमर्श', 'रचना की भूमि और आलोचना के बीज', तथा 'जिंदा कहानियाँ' आदि। 'इस्पात में ढलती स्त्री' यह उनकी सामयिक प्रकाशन, दिल्ली से 2008 में प्रकाशित महत्वपूर्ण रचना है। इसमें स्त्री विमर्श से संबंधित लगभग 22 आलेखों को संकलित किया गया है। 'जिन्दा कहानियाँ' यह उनकी वाणी प्रकाशन से प्रकाशित महत्वपूर्ण रचना है। इसमें संकलित कहानियाँ हिंदी की प्रसिद्ध पत्रिका 'हंस' में धारावाहिक रूप से प्रकाशित होती रही है। इसमें महाराष्ट्र की सिंधुताई सकपाल, अपंगों की सेवा करने वाली नसीमा हुरजुक, तृतीय पंथियों में कार्य करने वाली लक्ष्मी त्रिपाठी, तमाशा कलाकार राजश्री काळे, जल, जंगल और जमीन संरक्षिका कुसुम कार्णिक, वेश्या व्यवसाय को परास्त करने वाली सुधा आशा, गांधीवादी करूणा फुटाने, दलित स्त्री में शिक्षा की रूचि जगाने वाली करूणाताई साळवे और अंतरजातीय विवाह को प्रेरणा देने वाली सुनीता अरलीकर आदि की कार्य प्रणालियों का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है।

अन्य कतिपय शोधपरक हिंदी पुस्तकों का नामोल्लेख

पुणे के प्राध्यापकों ने कतिपय शोधपरक हिंदी पुस्तकों का सृजन किया है और अपना शोध कार्य जारी रखा है। इनका नामोल्लेख होना आवश्यक है। इस दृष्टि से डॉ. श्रीकांत उपाध्याय की संपादित और व्याख्यायित किताब 'ये रहीम दर दर फिरहिं', डॉ. गजानन चव्हाण की 'रीतिकाव्य-विवेचन', डॉ. तुकाराम पाटील की 'यात्रा साहित्य', 'यायावर साहित्य अवधारणा और अवदान',

'नाट्यालोक', डॉ. सुभाष तळेकर की 'रोजगारोन्मुख हिंदी दिशाएँ और संभावनाएँ' और 'हिंदी उपन्यासों के अमर चरित्र', डॉ. इंद्रजीत राठोड़ की 'महिला रचनाकारों के साहित्य में चित्रित नारी विमर्श' और 'हिंदी कवि शमशेर बहादुर सिंह और मराठी कवि कुसुमाग्रज का तुलनात्मक अध्ययन', डॉ. सुरिंदर कौर गौड़ कृत 'डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी के निबंधों में मानवीय चिंतन', डॉ. पद्मजा घोरपडे की 'समकालीन हिंदी कविता की नई सोच' डॉ. सदानंद भोसले की 'साहित्य और मानवीय संवेदना', डॉ. सविता सिंग की 'हिंदी आत्मकथा का स्वरूप, विवेचन और और विकासक्रम' तथा 'हिंदी प्रिंट मीड़िया में महिलाओं का योगदान' तथा 'प्रकाश मनु का व्यक्तित्व और कृतित्व', डॉ. गोरख थोरात की 'प्रेमचंद तथा आण्णाभाऊ साठे के उपन्यासों में स्त्री विमर्श', 'हिंदी तथा मराठी के उपन्यासों में भारतीयता' डॉ. शशिकला राय की खोजपरक कृति 'पाँखा पर सात सलाम' आदि प्रमुख है।

इलेक्ट्रानिक मीडिया में हिंदी

पुणे में निर्मित साहित्य सृजन विविधांगी है। यहाँ हिंदी के विकास के लिए इलेक्ट्रानिक माध्यमों का भी प्रयोग किया जाता है। इस दृष्टि से डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित, डॉ. दामोदर खड़से, शम्मी चौधरी और डॉ. सुनील देवधर का नाम महत्वपूर्ण है। डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित ने तुकाराम महाराज के अभंगों के हिंदी अनुवाद किए हैं, जो महाराज तुकाराम इस वेबसाइट पर उपलब्ध है। डॉ. दामोदर खडसे की कविताओं का कैसेट 'मैं लौट आया हूँ' बेहद प्रभावशाली है। शम्मी चौधरी ने कुछ म्युजिक अलबम बनाए हैं इनमें 'यादें', 'मैं क्यों प्यासा', 'तेरा शुक्रिया' और 'सत्य का दर्शन' आदि प्रमुख है। इस क्षेत्र के तीसरे विद्वान डॉ. सुनील देवधर हैं। उन्होंने 'मोहन से महात्मा' और 'आकाश में घूमते शब्द' रेडियो रूपकों का सृजन किया है। उनका यह कार्य मीडिया से संबंधित है। उन्होंने हिंदी गीतों की संगीतमय सीडी 'एक पल का मधुमास' का भी सृजन किया है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि हिंदी अनुसंधान और आलोचना के क्षेत्र में पुणे का योगदान सराहनीय है। महाराष्ट्र में पहली बार हिंदी अनुसंधान कार्य की शुरूआत करने का श्रेय पुणे विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग को जाता है। साथ ही परवर्ती अनेक अनुसंधाताओं ने जो मौलिक शोध कार्य किया है वह

भी प्रशंसापरक रहा है। महाराष्ट्र की हिंदी विषयक ऐतिहासिक गतिविधियों को प्रकाश में लाने का स्तुत्य प्रयास डॉ. कृष्ण दिवाकर और डॉ. अशोक कामत जैसे विद्वानों ने किया है। रस सिद्धांत के सामाजिक पक्षों पर विचार और विश्लेषण करने का श्रेय डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित और डॉ. दुर्गा दीक्षित को जाता है। डॉ. केशव प्रथमवीर आलोचक की कोटि में आते हैं, पर उनका अनुसंधान कार्य भी मौलिक और अछूते विषय पर आधारित होने के कारण एक उत्कृष्ट अनुसंधाता की कोटि में आपकी गणना की जाती है। पुणे में प्रतिष्ठित अनुसंधाताओं की तरह आलोचकों की सूची भी प्राप्त होती है। इनमें सुप्रतिष्ठित आचार्य डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित, डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर, डॉ. स.म.परळीकर, डॉ केशव प्रथमवीर, डॉ. ओमप्रकाश शर्मा आदि प्रमुख है। अनुसंधान और आलोचना की ही तरह सृजनात्मक लेखन के संदर्भ में भी पुणे के लेखकों का बहुत बडा योगदान रहा है। भाषा विज्ञान संबंधित पुस्तकों के लेखकों में डॉ. अशोक केळकर, डॉ. वी.एन.भालेराव, डॉ. सुभाष तळेकर, डॉ. ओमप्रकाश शर्मा का नाम उल्लेख्य है। काव्यशास्त्र जैसे कठिन विषय पर भी डॉ. भगीरथ मिश्र, डॉ. वी.एन.भालेराव, डॉ. ओमप्रकाश शर्मा, प्रा. माधुरी नगरकर आदि ने अपनी लेखनी चलाई है। फिल्म संबंधी लेखन में डॉ. चंद्रकांत मिसाळ का नाम ध्यातव्य है। कोश ग्रंथ निर्माण कार्य में भी पुणे की अहम भूमिका रही है। कोशकार विश्वनाथ नरवणे, डॉ. श्रीपाद जोशी और गो.प.नेने तथा मालती इनामदार को इस संदर्भ में भूलाया नहीं जा सकता। अनुसंधान कैसे करें इस संदर्भ में पुणे के डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित, डॉ. सुभाष तळेकर और माधुरी नगरकर तथा डॉ. ओमप्रकाश शर्मा की पुस्तकें लाभान्वित करती है। पत्रकारिता और प्रतियोगिता संबंधी पुस्तकों का भी पुणे में निर्माण कार्य हुआ है। डॉ. पद्मजा घोरपड़े, डॉ. ओमप्रकाश शर्मा और डॉ. सदानंद भोसले इस क्षेत्र के सृजनकर्ता है।

विवेच्य अध्याय में हिंदी आलोचना, अनुसंधान और सृजनात्मक साहित्य के क्षेत्र में पुणे के हिंदी सेवी समीक्षकों, शोध कर्ताओं और अन्य ज्ञानात्मक साहित्य सृजनकर्ताओं के लेखन को अधोरेखित किया गया है। हिंदी भाषा और साहित्य के विकास में और राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में पुणे का अतुलनीय योगदान रहा है। इस प्रबंध के पूर्व सात अध्यायों में इसी भूमिका को प्रस्तुत किया गया है। आगामी अष्टम् अध्याय में पुणे के कतिपय साहित्यकारों की भाषिक अभिव्यक्ति पर प्रकाश डाला गया है।

संदर्भ

1. अनुसंधान और आलोचना - डॉ. नगेंद्र, पृ. 95
2. हाथी घोडा पालखी - डॉ. मालती शर्मा, पृ.11
3. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे, पृ. 327
4. समीचीन - सं. देवेश ठाकुर, और सं. डॉ. त्रिभुवन राय अपनी बात से पृ. 1
5. भारतीय साहित्याची संकल्पना -डॉ. पद्मजा घोरपडे, पृ. 336
6. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे, पृ. 325
7. दै. लोकमत समाचार पुणे - डॉ. सुभाष तळेकर, 13 सितंबर, 2013
8. हिंदी के विकास में महाराष्ट्र का योगदान - प्रा. मनोज वायदंडे, प्रा. शिराज शेख, पृ. 98

अष्टम अध्याय

पुणे का हिंदी साहित्य : भाषिक अध्ययन

प्रस्तावना

पूर्व अध्यायों में पुणे के हिंदी वातावरण को अवलोकित करते हुए, हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार और साहित्यिक विकास में इसकी भूमिका को प्रस्तुत किया गया है। हिंदी अनुवाद, अनुसंधान, आलोचना और अन्य ज्ञानात्मक साहित्य निर्मिति में पुणे के अवदान पर भी प्रकाश डाला गया है। साहित्य का अध्ययन कथ्यगत और भाषिक दृष्टिकोणों से किया जाता है। अतः प्रस्तुत अष्टम अध्याय में पुणे के हिंदी साहित्य का भाषिक अध्ययन किया जाना अभिहीत है।

भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम होती है। साहित्यिक गठबंधन के लिए आवश्यक भाषा में भावों और विचारों को प्रकट करने की क्षमता होती है। इस सक्षमता के लिए उसमें जन प्रचलित शब्दों, लोकोक्तियों, मुहावरों, सूक्तियों, बिम्बों, प्रतीकों, अलंकारों आदि तत्वों का उचित प्रयोग और विविध प्रकार की शैलियों की आवश्यकता होती है। भाषा की सरलता, स्पष्टतः और भाव गंभीरता ही साहित्य को सशक्त बनाती है। पुणे में निर्मित साहित्य का अध्ययन उपरोक्त परिप्रेक्ष्य में निम्नवत् किया गया है। उन कृतियों का ही यहाँ विवेचन किया गया है, जिनमें उपरोक्त साहित्यिक तत्व खोजे गए हैं।

प्रतीक विधान

काव्य में प्रतीकात्मकता का होना अति आवश्यक होता है। विचार या भाव को संवेदनात्मक रूप देने का कार्य प्रतीकों द्वारा किया जाता है। प्रतीक शब्द का प्रयोग दृश्य या गोचर वस्तु के लिए किया जाता है, जिससे अदृश्य या अगोचर विषय को स्थापित किया जाता है। प्रतीक ऐसा शब्द-चिह्न है, जो किसी वस्तु का बोध कराता है। अर्थात् प्रतीक अप्रस्तुत का प्रतिनिधित्व करने वाला प्रस्तुत होता है। बृहत् हिंदी कोश में प्रतीक का अर्थ इस प्रकार निरूपित है-''वह दृश्य वस्तु

या तथ्य जो किसी अदृश्य वस्तु या तथ्य के प्रायः अनुरूप होने के कारण उसके प्रतिनिधि या प्रतिरूप के रूप में मान ली जाए।''[1]

पुणे के साहित्यकारों ने अपनी साहित्यिक रचनाओं में विविध प्रकार के प्रतीकों का प्रयोग किया है। इनमें कविवर हरिनारायण व्यास, डॉ. दामोदर खड़से, डॉ. पद्मजा घोरपड़े, आसावरी काकड़े, डॉ. चेतना राजपूत आदि प्रमुख हैं।

कविवर हरिनारायण व्यास के काव्य में विविध प्रकार के प्रतीक अनिवार्यता देखने को मिलते हैं। महाभारत और रामायण के पौराणिक पात्र-द्रोपदी (दुःख सहने वाली नारी का प्रतीक), दुःशासन (अन्याय और अत्याचार करने वाले व्यक्तित्व का प्रतीक), राम (मानवतावादी शक्ति का प्रतीक), राक्षस (दुष्प्रवृत्तियों का प्रतीक) आदि प्रतीक दिखाई देते हैं। इस संदर्भ में उदाहरण दृष्टव्य है-

''अब आदमी का स्पर्श तुममें
फिर से जान डाल देगा
राम मानव है पाषाणी
मानव पत्थर को उर्वरित बनाता है।''[2]

यहाँ रामायण का पौराणिक पात्र राम मानवीय चेतना का प्रतीक है।

''मकड़ी अपना जाला बुन रही है
धीरे-धीरे गिरफ्त में उसके
आता जा रहा है
दुबका हुआ वह नन्हा कीड़ा
अभी वह छटपटाएगा
और पेट में समा जाएगा।''[3]

उपरोक्त पद में मकड़ी भ्रष्ट तंत्र के प्रतिनिधित्व का प्रतीक है, जो हमेशा दीन-दुखियों का शोषण करता है।

डॉ. दामोदर खड़से के काव्य का निम्न उदाहरण प्रतीक योजना की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। देखिए-

''बरसात में किसी मोड़ पर नदी/
किनारों को भरपूर गलबहियाँ देकर/
सन्नाटे में/ रोशनी बोती है/
और उदारता की नई परिभाषा से/

समय का अमृत तिलक करती है/

नदी की हर बूंद/समय का जन्म है।''[4]

इसमें नदी परिवर्तनशील जीवन का प्रतीक है, जो हमेशा समय के साथ चलती है।

इसी संदर्भ में डॉ. पद्मजा घोरपड़े के काव्य का निम्नलिखित उदाहरण दृष्टव्य है-

''टेलिफोन बूथ में/चेहरे पर बिखरी/

पारे-सी बूंदे/कमीज की बाह से/

पोंछते-पोंछते/उंगलियों में फंसी/

शबनमी कणियों को/निहारते-निहारते/

बड़ी उत्सुकता से चला गया/हौले-से रिसीवर में/

जैसा की हवा का झोंका बन बांस बन जगाने जा रहा हो....।''[5]

यहाँ टेलिफोन बूथ और रिसीवर में मानवनिर्मित प्रतीक देखे जा सकते हैं।

आसावरी काकड़े की कविताओं में भी अनेक प्रतीक उभरकर सामने आते हैं। यहाँ निम्नलिखित उदाहरण दृष्टव्य है-

''हर तूफान/हमेशा खत्म नहीं करता हमें!/

कभी-कभी वह/पत्तों जैसे/उड़ाकर/पहुंचाता है वहाँ/

जहाँ पहुंचने के लिए/शायद हमें/कई साल गुजारने पड़ते!।''[6]

यहाँ तूफान हमारी इच्छाओं की पूर्ति करने वाले पगचिह्न का प्रतीक है, जिसे पाने के लिए मनुष्य हर संभव प्रयास करता रहता है।

''विजय पर्व है दशहरा

बुराई पर अच्छाई की

अंधकार पर रोशनी की।''[7]

उपरोक्त काव्य पंक्तियों में दशहरा बुराई पर अच्छाई की विजय प्राप्ति का प्रतीक है।

इस प्रकार पुणे के कवियों ने अनेक विध प्रतीकों का अपनी कविताओं में सार्थक प्रयोग किया है। उक्त उदाहरण प्रातिनिधिक तौर पर दिए हैं। पुणे के कवियों ने प्रतीकात्मकता के साथ-साथ मिथकों का भी प्रयोग सूक्ष्मता के साथ किया है। इनकी मिथकीय चेतना पर निम्नांकित रूप में प्रकाश डाला गया है।

मिथक

मिथक शब्द अंग्रेजी के 'मिथ' तथा ग्रीक शब्द 'माइथस' से बना है। इसका अर्थ होता है-मनगढ़ंत कथा अथवा पौराणिक कथा। यह लोक विश्वास पर आधारित होती है। वृहद हिंदी कोश में मिथक की परिभाषा इस प्रकार दी गई है- ''प्राचीन पुराकथाओं का तत्व जो नवीन स्थितियों में नए अर्थ का वहन करे।''[6] अर्थात् मिथक का अर्थ है-पुराणकथाओं के माध्यम से नवीनता की खोज करना।

पुणे के रचनाकारों ने अपनी रचनाओं में मिथक का प्रयोग किया है। मिथकीय चेतना से युक्त कुछ उदाहरण यहाँ दृष्टव्य हैं :–

''पुत्र मरणोन्मुख के सामने परित्राण का मरण
समापन के सामने प्रारंभ का मरण
समाप्त होने वाली पीढ़ी के सामने
नई पीढ़ी का मरण यह कितना दारूण है।''[8]

कविवर हरिनारायण व्यास की कविता 'श्रवण के पिता का प्रलाप' की इन पंक्तियों में राजा दशरथ के बाणों से आहत पुत्र श्रवण की स्थिति तथा श्रवण के पिता के प्रलाप को व्यक्त किया गया है। श्रवण के पिता के प्रलाप के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि यह वेदना केवल श्रवण के पिता की न होकर, संपूर्ण मानवता की है। इस कविता का कथास्रोत पौराणिक है, पर उद्देश्य आधुनिक जीवन की व्याख्या करना रहा है। अतः मिथकीय चेतना से युक्त है। अन्य उदाहरण दृष्टव्य है-

''इन्द्रों ने/जन का जीवन जन चुराया है/
काले धनवाले/जमाघरों से मिलकर/वर्षा रुकवा दी है/
चुनाव यज्ञ में/वोटों की आहुतियाँ न पाकर/
झूठे अभावों की /वर्षा में डुबाया है/मगर कोई गिरवरधर/नहीं जन्मा।''[9]

उपरोक्त पंक्तियों में पुरातन पात्र इन्द्र के माध्यम से आधुनिक जीवन की राजनीतिक स्थितियों को व्याख्यायित किया है। अतः यह कविता मिथकीय चेतना से युक्त है। अन्य उदाहरण देखिए -

''छल से छलता है अगर सम्मान को
दूषित करता कैसे भी माँ के मान को
तनय गर यह देखकर भी मौन है
पापी वह सुत नहीं तो फिर कौन है''[10]

मेजर सरजूप्रसाद 'गयावाला' के खण्डकाव्य 'कैकेयी' की उपरोक्त पंक्तियों में भरत द्वारा माता कैकेयी की जो अवहेलना हुई है, उसके उत्तर में माता के मान, सम्मान के महत्व को यहाँ वर्णित किया गया है। यहाँ ऐतिहासिक कथानक के माध्यम से स्त्री मुक्ति की पुनर्व्याख्या की गई है। राम कथा पर आधारित इस कथानक में कैकेयी के प्रति नूतन दृष्टिकोण से देखा गया है। कैकेयी ने राम के बारे में जो कुछ किया वह अपने पुत्र भरत के स्नेह में डूबकर ही किया था। भरतद्वारा माता कैकेयी की अवहेलना का कवि ने विरोध किया है। अन्य उदाहरण महत्वपूर्ण है-

''सच, मैं अभिमन्यु तो हूं ही नहीं
फिर चक्रव्यूह की बात
क्योंकर सोचने लगा
क्या मेरा यह सोचना
किसी व्यूह से कम नहीं....''[11]

उपरोक्त पंक्तियों में डॉ. दामोदर खड़से ने अभिमन्यु के माध्यम से (मिथक) वर्तमान कालीन युवावर्ग के व्यूह याने अंतर्मन की पड़ताल करने का प्रयास किया है। अतः यहाँ मिथकीय चेतना दिखाई देती है। अन्य उदाहरण महत्वपूर्ण है-

''आज की नारी नहीं द्रोपदी या गांधारी
वह समर्थ है सभी दृष्टि से करती चिंतन
सही-गलत की परिभाषा जीवन से जुड़ती
कर रही वह नई दृष्टि से युग आवाहन।''[12]

उपरोक्त उदाहरण डॉ. कांतीदेवी लोधी की कविता 'माँ गांधारी' से लिया है। इसमें महाभारतकालीन दो स्त्री पात्र-गांधारी और द्रौपदी की विवशता और बेबसी को व्यक्त किया गया है। कौरवों की माँ गांधारी ने अपनी आंखों पर पट्टी बांध रखी थी। परिणामतः उसके पुत्र अहंकार रूपी अंधकार में डूबे हुए थे। पर गांधारी को यह सब देखने का अवसर कहाँ था ? इसी तरह द्रौपदी के कपड़े भरी सभा में उतारे गये। द्रौपदी के सामने विवशता और लाचारी के सिवा अन्य उपाय ही नहीं था। कवयित्री ने इसी मिथक के माध्यम से आज की आत्मनिर्भर नारी की तुलनात्मक आलोचना की है। आज की नारी स्वयंपोषित और आत्मनिर्भर है। अर्थात् पौराणिक कथा के माध्यम से वर्तमान की वस्तुस्थिति को आंकने का सराहनीय कार्य डॉ. कांतिदेवी लोधी ने किया है। प्रस्तुत उदाहरण दृष्टव्य है :–

''कहीं नफरत की आग है लगी।
कहीं मारकाट की रेल चली
यहाँ द्रौपदी का है चीर-हरण
निसदिन होता, ऐ गिरी महान!
अब तो जागों हे हिम विशाल''[13]

उपरोक्त काव्यपंक्तियों में द्रोपदी के चीर-हरण प्रसंग के माध्यम से आज की नारी की अवहेलना को उजागर किया गया है।

इस प्रकार पुणे के कवियों ने आवश्यकतानुसार मिथकों का प्रयोग अपने काव्य में किया है। प्रतीक और मिथकों के साथ-साथ बिम्ब विधान की निर्मिती भी पुणे के कवियों ने की है। प्रातिनिधिक तौर पर जिन-जिन साहित्यकारों में बिम्ब-योजना आई है, उनका संक्षेप में विवेचन निम्नलिखित किया गया है।

बिम्ब

काव्य में बिम्ब का महत्वपूर्ण स्थान होता है। बिम्ब शब्द अंग्रेजी के 'इमेज' शब्द का हिंदी रुपांतर है। बिम्ब अमूर्त को मूर्त रूप प्रदान करता है। बिम्ब के लिए चित्रमय भाषा आवश्यक होती है। काव्य में बिम्ब चित्रमयी रूप को लेकर रुपक के माध्यम से काव्यानुभूति को सादृश्य तक पहुंचाता है। बिम्ब के लिए कल्पना, भावना और ऐन्द्रिकता इन तीन तत्वों की आवश्यकता होती है। काव्य प्रसंग में सजीवता लाने का महत प्रयास बिम्ब के द्वारा होता है। बिम्ब और प्रतीक में असमानता यह है कि बिम्ब मूर्त होता है और प्रतीक संकेतात्मक होता है।

पुणे के कवियों ने विविध प्रकार के बिम्बों का प्रयोग कर काव्यानुभूति को सशक्त बनाया है। इस दृष्टि से कविवर हरिनारायण व्यास, डॉ. मालती शर्मा, प्रभा माथुर, डॉ. पद्मजा घोरपडे, डॉ. कांतीदेवी लोधी, डॉ. दीप्ति गुप्ता, गजेंद्रदेव उपाध्याय, शम्मी चौधरी, आसावरी काकड़े आदि की काव्य कृतियाँ महत्वपूर्ण है। निम्नलिखित उदाहरण दृष्टव्य है-

''तरू तन्वंगिनी टहनी ने भी
उठा दिया मुख, मेघ-अधर-रस-चुंबन सुख आकांक्षा से।''[14]

उपरोक्त पद कविवर हरिनारायण व्यास के 'यक्ष का संदेश' इस कविता संग्रह का है। इसमें प्राकृतिक बिम्ब दिखाई देता है।

''यहाँ/वहाँ/थूकते/नाक छींकते हैं/भेड़ बकरियों से चलते हैं।
अरे जरा-सी नागरिकता इस सड़े-से माहौल में/भला कैसे तुम जीते।''[15]

डॉ. मालती शर्मा के 'दृश्यों के बाहर' कविता संग्रह से लिए उपरोक्त पद में घ्राण बिम्ब का निर्माण हुआ है।

''टूटे जल पर थर-थराते हैं
पके बालियों के प्रतिबिम्ब''[16]

डॉ. मालती शर्मा के 'निर्वासन की आँधी' के उपरोक्त पंक्ति में दृश्य बिम्ब उद्भूत हुआ है।

''आज दोपहर से ही/बोझिल हुआ-सा आसमान।
बोझिल हुए आसमान को/सीने से लगा/
दौडने-लौटने झूमने लगा था मतवाला बादल/
जैसे कोई बच्चा हो/अभी-अभी चलना सीख गया/
कोई नन्हा-सा बच्चा।''[17]

डॉ. पद्मजा घोरपडे के 'संवादों के आकाश' की उपरोक्त पंक्ति में प्रकृति का मानवीकरण हुआ है। अतः प्राकृतिक बिम्ब की निर्मिति हुई है।

''सुनो सखी सावन आया
उमड़-घुमड़कर मेघा आए
घनघोर घटा काली घिर आए
खेतन में में हरियाली छाए
देख-देख मन हरषाया।''[18]

डॉ. चेतना राजपूत के 'ओस कण' इस कविता संग्रह की उपरोक्त काव्य पंक्ति में प्राकृतिक दृश्य बिम्ब का निर्माण हुआ है।

''मृग-मरीचिका-सी तुम तो चली जाती हो दूर
मुसाफिरों का लेकिन हम पर ही अब भरोसा नहीं रहा।''[19]

डॉ. स्मिता दात्ये का कविता संग्रह 'सूरज का उजला पोस्टर' की प्रस्तुत काव्य पंक्ति में भी दृश्य बिम्ब का निर्माण हुआ है।

''हमारे दरमियान
सिर्फ
कोहरा ही तो है
देखो न....''[20]

आसावरी काकड़े द्वारा लिखित 'इसीलिए शायद' की उपरोक्त पंक्ति में कोहरे का दृश्य हमारे सामने उपस्थित होता है। अतः यहाँ भी दृश्य बिम्ब की निर्मिती हुई है।

इस प्रकार पुणे के कवियों ने अपनी रचनाओं में बिम्बों का उचित प्रयोग किया है।

अलंकार

काव्य की शोभा बढ़ाने वाले कारक अलंकार होते हैं। अतः काव्य में अलंकारों का विशेष महत्व होता है। शब्दालंकार, अर्थालंकार और उभयालंकार आदि अलंकार के तीन भेद होते हैं। शब्दालंकार में-अनुप्रास, यमक, श्लेष, पुनरुक्ति और वक्रोक्ति आदि प्रकार होते हैं। अर्थालंकार में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, व्यतिरेक, विभावना, विशेषोक्ति, दृष्टांत, अर्थांतरण्यास, उल्लेख, विरोधाभास, भ्रांतिमान आदि प्रकार होते हैं। पुणे के रचनाकारों ने विविध प्रकार के अलंकारों का प्रयोग अपनी रचनाओं में किया है। यहाँ नमूने के तौर पर कुछ महत्वपूर्ण अलंकारों को दिया है। जैसे -

''पीत, पत्र, तरूत्यात्क, तृषित मन।।''

पुलकाकुल धरती नमित नयन, नयनों में बंधे स्वप्न नये।''[21]

जहाँ व्यंजनों की पुनरावृत्ति होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार की निर्मिति होती है। कविवर हरिनारायण व्यास की कविता 'यक्ष का संदेश' की उपरोक्त काव्य पंक्तियों में 'प' तथा 'न' व्यंजनों की पुनरावृत्ति होने के कारण अनुप्रास अलंकार की निर्मिती हुई है।

''नोच-नोच कर/वृक्षों से झर पड़ती हैं
बुझी हुई पत्तियाँ झर-झर
पंजो पर उलझकर
नयी नयी लड़कियाँ
देखती है।''[22]

हरिनारायण व्यास के 'मृग और तृष्णा' काव्य संग्रह की उपरोक्त काव्य पंक्तियों में 'झर-झर', 'नयी-नयी' आदि शब्दों की पुनरावृत्ति होने के कारण पुनरूक्ति अलंकार की निर्मिती हुई है।

''ये घर लौट आए कि दस्तक-सा चाँद
ये बच्चों की मुस्कुराहट से तारे
और ये आपसी झगड़ों की उल्काएँ।''[23]

डॉ. मालती शर्मा के 'निर्वासन की आँधी' की उपरोक्त काव्यपंक्तियों में उपमा अलंकार का सृजन हुआ है। इसमें दस्तक-सा चाँद, मुस्कुराहट से तारे तथा झगड़ों सी उल्काएँ में उपमा अलंकार पाया जाता है।

''मुझे याद है/कि दादी होली पर/गुड़ के सेबों के लड्डू बनाती थी/
बंधने के इन्कार में/ मुँह खोलते लओं को धमकाती थीं।''[24]

डॉ. मालती शर्मा के 'निर्वासन की आँधी' के उपरोक्त पद में स्मरण अलंकार की निर्मिति हुई है।

''अधर हैं कमल-दल प्यारे
चुनर है लालों-लालों लाल,
भाल पे सूर्य चमकता लाल,
केश ज्यूँ काले घन हो विशाल
वेणी लहराती सर्प समान''[25]

अलका अग्रवाल के विविधांजली इस काव्य संग्रह की उपरोक्त पंक्ति में वेणी को सर्प की उपमा दी गई है। अतः उपमा अलंकार का निरूपण हुआ है।

''यूँ लगे हम हैं ऊपर,
सूरज जमीं पर आ गया,
रोशनी को पार लेकर''[26]

अलका अग्रवाल की 'विविधांजली' कविता संग्रह की उपरोक्त काव्यपंक्तियों में अतिश्योक्ति अलंकार है।

''तुम डटे रहो,
अपनी सीमा रेखा पर।
सच और झूठ की
दान और लूट की।''[27]

रजनी रणपिसे का काव्य संकलन 'एक नदी-सी बही होगी' की उपरोक्त पंक्तियों में विरोधाभास अलंकार है।

इस प्रकार पुणे के कवियों ने विविध प्रकार के अलंकारों का प्रयोग अपनी कविताओं में किया है।

शब्द-समूह

पुणे में हिंदी भाषी और अहिंदी भाषी साहित्यकारों ने साहित्य सृजन किया है। हिंदी भाषी साहित्यकारों में मराठी भाषी, सिंधी भाषी, कश्मीरी भाषी और उर्दू भाषी प्रमुख है। इन की काव्यभाषा पर अपनी-अपनी मातृभाषा का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। इनमें विविध प्रकार के शब्द-समूह पाए जाते हैं। प्रमुखतः संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू, अरबी और फारसी शब्दों की बहुलता देखी जा सकती है। जिनका विवेचन निम्नलिखित रूप से प्रस्तुत है।

तत्सम्

पुणे में हिंदी भाषी और अहिंदी भाषी साहित्यकारों ने साहित्य सृजन किया है। अहिंदी भाषी साहित्यकारों में मराठी भाषी, सिंधी भाषी, कश्मीरी भाषी और उर्दू भाषी प्रमुख हैं। इनकी काव्यभाषा पर अपनी-अपनी मातृभाषा का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। इनमें विविध प्रकार के शब्द-समूह पाए जाते हैं। प्रमुखतः संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू, अरबी और फारसी शब्दों की बहुलता देखी जा सकती है। जिनका विवेचन निम्नलिखित रूप से प्रस्तुत है।

''किसी भाषा के मूल शब्द को 'तत्सम्' कहते हैं। 'तत्सम्' का अर्थ है- 'उसके समान' या 'ज्यों का त्यों'। (तत्, तस्य याने संस्कृत के, सम् याने समान) अर्थात् संस्कृत के वे शब्द जो साहित्य में ज्यों के त्यों प्रस्तुत होते हैं, वे तत्सम् शब्द होते हैं।''[28] पुणे के साहित्य जगत् में संस्कृतनिष्ठ शब्दावली का प्रयोग प्रचुर मात्रा में हुआ है। जैसे -

आषाढ़, क्षितिज, नीलांजन, घन, पीत, पत्र, तरू, त्यात्तृषित, तन, नव, उमंग (हरिनारायण व्यास - यक्ष का संदेश, पृ. 2), सृष्टि, भ्रूण, गर्भस्थ, ऊर्जा, प्रज्ञा, आसुरी, अभिलाषा, आराधना, निर्जल, श्रम, श्लथ, योगमाया (डॉ. मालती शर्मा - निर्वासन की आँधी, पृ. 27, 28), प्रस्फुटित, नतमस्तक, मण्डित, दिव्य, स्वतः, सूर्यास्त, तिमिर, प्रज्वलित, आलोक, अदृश्य, दशकंधर, किसलय, पावक, दिक्पाल, विधना, चतुर्भजधारी, ध्वस्त (मेजर सरजूप्रसाद 'गयावाला' - पृ. 1, 2, 3, 4, 5), रक्त-रंजित, करुण, मेघ, सनातन, अधर, शेष, चक्रव्यूह, असमर्थ, समर्पण, हताश, विवश, आकुल, भेद, प्रस्थापित, विवशता (डॉ. स्मिता दात्ये - सूरज का उजला पोस्टर, पृ. 14, 16, 17, 18,20) घनी, भयावह, चिंता, पल, ममता, मूर्त, वात्सल्य, स्नेह, आलिंगन, मोहजाल, निर्ममता, आतंक (डॉ. पद्मजा घोरपड़े - गुत्थमगुत्था, पृ. 9), नमः, अनुकम्पा, अनुपम, अरुण, पथिक, तनिक, परवारे, नीर, भिन्न, आहत, अम्बर, पुलकित, अकुलाना (डॉ. इन्दु पाण्डे - आजाद हिंदुस्तान में कैद हूँ, पृ. 7, 8, 9, 104), नतमस्तक, वर, कामना, भव्य, आशीर्वाद, पतवार, आलोक, आनंद, अमृत, अस्तित्व, स्त्रोत, चरण, कंचन, कदंब, कामिनी, मोक्ष, तृप्त, मरूस्थल, विषैली, दुविधा (गजेंद्रदेव उपाध्याय - ये नैना भर आए, पृ. 1, 2, 4, 5), नमन, ज्योति, प्राण, दृष्टि, आलस्य, कृपा, जगत् (अलका अग्रवाल - विविधांजलि, पृ. 1) चेतन, अठखेलियाँ, निस्पंद, कामनाएँ, उन्मत्त, शाश्वत, पंखुरियाँ, शव, नीरधन, उच्छृंखल, अल्हड़, उन्मादिनी,

अनुरागिनी, मृदगंधिता, समर्पिता (पुष्पा गुजराथी - अंजुरी, पृ. 1, 2, 3, 6) आदि।

अंग्रेजी शब्द-समूह

पुणे के लगभग सभी रचयिताओं ने अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग आवश्यकतानुरूप किया है। जैसे - मशीन, फैशन, हिरो, डिपार्टमेंट, स्टोअर्स, ट्रेन, सिग्नल सिटी, आउटर, प्लेटफॉर्म (हरिनारायण व्यास - यक्ष का संदेश, पृ. 27, 35, 63), टेबल, लैम्प, कॉलोनी, पोस्ट, जनरेटर, इमरजेन्सी, फ्रेंड, ब्रेकिंगन्यूज, मोबाईल, फोन, कार, गँग, रेप, फ्रेंडशिप ब्रासलेट, मल्टीनेश्नल इंडिया, रियालिटी लाइव कास्ट, रिमोट, मिस्टर, मिसेज, मॅडम, सर, डियर, डार्लिंग, रिस्पेक्टेड़, एम. एस., लेडिज ॲन्ड़ जेंटलमेन (डॉ. मालती शर्मा - बागड़ों से उखड़े बबूल, 20, 37, 61, 68), रिपेयरिंग, लूज, हेड़ लाईट, नट बोल्ट, टाईट, बाथरूम, ब्लॉक, कंट्री, फाईटर, राईटर, हैंडल, पेन्शन, टेंशन(मेजर सरजूप्रसाद 'गयावाला' - मैं और मेरी कविताएँ, पृ. 50, 51) केस, डाक्टर इंजक्शन, स्लॅप, रिपोर्ट, कॉट, प्रॅक्टिस, पेशंट, बिल (रामचंद्र थोरात - अंगारे, पृ. 82) व्हिस्की, रिसीवर, टेलिफोन बूथ, ट्रैफिक, हॉर्न, शॉक

भुपटकर - मेरी आँखों का उत्सव, पृ. 43), प्रेस, पार्ट, जर्नलिज्म, डिपार्टमेंट, स्टॉप, आर्टिकल, प्रोजेक्ट (डॉ. दामोदर खड़से - काला सूरज, पृ. 102) लोकल, ड्राइंगरूम, ट्रीटमेंट, रिपोर्ट, फ्लैट, लिफ्ट, काऊंटर, प्रमोशन, ऑपरेशन (डॉ. दामोदर खड़से - भगदड़, पृ. 39) कॉलबेल, कॅन्टीन, मैडम, कॉपियाँ, अपडेट, ट्रे, कप, कॉरिडॉर, मास्टर प्लॅन, क्लास, डायरी, नोट, इंटरकॉम, फाईल, करेक्शन, एजेण्डा (डॉ. दीप्ति गुप्ता - सरहद से घर तक, पृ. 32, 33, 34, 35) रिसिपनिस्ट, फैमिली, बैकग्राउंड, मम्, अप्वायंटमेंट, क्वींस कॉलेज, असिस्टंट, क्लर्क, एज्युकेशन, एम.बी.ए., पोजीशन, कैरियर, हेल्प(डॉ. इन्दु पाण्डे.- अर्थ-पिशाच्, पृ. 13), शॉर्ट न्यूज, इट कॅन बी अ सन्शेश्नल हेड़ लाईन्स, न्यू डेड़ बॉड़ी ॲन्ड़ डेड़ सेन्सिटीवीटी, हॉट इशु, यु आर अ टेलेंटेड़ एडिटर, माई सिटी, इन्टरव्यूह, फैन्टेस्टिक, सुपर्ब फ्रंट पेज, बैक पॉश्चर, वल्गेरिटी, नॉट ॲट ऑल, सीयू ॲट वन अ क्लॉक, बाय, क्रेडिट, हिप्नोटिज्म, कमॉडिटी, मॉडलिंग, हिटलिस्ट, डिपार्टमेंट(डॉ. संजय भारद्वाज - एक भिखारिन की मौत, पृ. 1, 2, 3, 5, 13) अकौंटन्सी, बैलन्सशीट, मार्क्स, टीचर, एन्ट्री, करस्पौंडिंग, डेबिट, क्रेडिट, व्हाइस, व्हर्सा, टैली (आसावरी काकड़े - इसीलिए शायद, पृ. 22) आदि।

इस प्रकार पुणे के साहित्यकारों ने अंग्रेजी के प्रचलित शब्दों के साथ कुछ देशज शब्दों का प्रयोग भी किया है।

देशज शब्द-समूह

देश में बने शब्द 'देशज' कहलाते हैं। 'देशज' वे शब्द हैं, जिनकी व्युत्पत्ति का पता नहीं चलता।''[29] लोकभाषाओं में ऐसे शब्दों की अधिकता होती है। पुणे के साहित्यकारों ने ऐसे शब्दों का भी प्रयोग किया है। जैसे-

कहकहे, बाती, थरथरा, टपकना, गठरी, धुँधला, कड़कड़ा, कुनकुने, दहाड़ता, गुर्राता(हरिनारायण व्यास - यक्ष का संदेश, 27, 28, 29, 32, 34, 48, 49), तोड़े-मरोड़े, भरसक, खड्ड (डॉ. प्रभुदास भुपटकर - मेरी आँखों का उत्सव, पृ. 1, 2, 3) बजबजाती, फड़फड़ा, चें चें, डाँड़, चाबूँ, सकपका, गुहारी, अररर, खच्च, खच्च, गा, गी, गे, ठक ठक, थोथे, छूंछी, टटुट्टुओं, खट-खट(डॉ. मालती शर्मा - निर्वासन की आँधी, पृ. 12, 13, 14, 16, 19, 24, 25, 37, 63) झाड़ू, बुहारू, झुरमूट, जुन, थबकियाँ, गद्दा, खुरपी, खटखटा, गठ्ठर (रामचंद्र थोरात - अंगारे, 4, 8, 11, 25, 36, 45) धडाम्, कयास, तेंदुआ, झुग्गियों, फफकना, डबडबा(डॉ.दामोदर खड़से - इस जंगल में, पृ. 10, 13, 27, 61, 90), तिनका, टँव टँव (डॉ. पद्मजा घोरपडे - रिश्तों के परे रिश्ते, पृ. 86) धप्प, लताड़ा, चंगी, तू तू मैं मैं (काझी मुश्ताक अहमद, कहानी खत्म हुई, पृ. 17, 20, 22, 24)आदि।

उर्दू/अरबी/फारसी शब्द

हिंदी भाषा की समृद्धि में अनेकानेक भाषाओं का योग होने के कारण इसमें कई भाषाओं के शब्द पाए जाते हैं। इन शब्दों में उर्दू, अरबी और फारसी शब्दों की भरमार अधिक दिखाई देती है। पुणे के रचना संसार में इन शब्दों की बहुलता दिखाई देती है। यहाँ जिन रचनाओं में बहुतायत से ये शब्द घुलमिल गए हैं, उनका उल्लेखमात्र किया गया है।

वक्त, शोर शराबा, उजाले, रोशनी बहाव, समेट, अखबार, चिन्गारियाँ, उमर, पर्दा, मासूम, ठेकेदार, कश, अदा, लाजवाब, इस्तक्बाल (हरिनारायण व्यास - यक्ष का संदेश, पृ. 38, 39, 41) अर्सा, सलोना, बेशक, मिठास, कायर, एतराज, हजम, गनीमत, खाक, पंसारी, दुश्वार, बेचैनी, मजा, इंतजार, वस्ल, करमात, कारगुजारी, फौरन, खब्त, अदब, लिहाज, मुफ्त, बदनाम, शिकवाखोर, बदनियति, खैर, दिवाला, नाकामियाबी, शिकवा, फरियाद, कंगाली,

खुजली, मुनाफा, बातुनी(डॉ. प्रभुदास भुपटकर - मेरी आँखों का उत्सव, पृ. 1, 2, 4, 7, 8, 11, 15, 16, 18) पागल, बेखबर, बदतमीज, दहलीज, हवस (ज्योत्स्ना देवधर - अंतरा, पृ. 1, 4, 8) पीर, निभाना, सेज, बेचैन, बेबुनियाद, चुनौती, हमसफर, हमदर्द, अजीब, चुभन, छुअन, एहसास, सूली, पगली (डॉ. मालती शर्मा - बागड़ों से उखड़े बबूल, पृ. 45, 46) महसूस, मशगूल, खुशनुमा, शर्मीली, तकाजा, दाग, सुर्खी (प्रभा माथुर - धुली धुली शाम का उजाला, पृ. 22) जुलूस, शामिल, भीड़, काबू, लष्कर, रोबीला, खामोश, कब्जा, वारदात, बहानेबाजी (रामचंद्र थोरात - शहादत, पृ. 12) हमेशा, मुआयजा, खुशी, जख्म, हासिल, गलत, जिंदगी, अफसोस, अजीब (डॉ. दामोदर खड़से - भगदड़, पृ. 92) सपना मुलाकात, परेशानी, अक्सर, दस्तखत, सख्त, इशारा, मौजूद, अजीब, खबर, दफ्तर, मजाक (डॉ. दामोदर खड़से - काला सूरज़, पृ. 107) जुबाँ, दर्द, जिगर, लम्हा, सितम, जफा, नफरत, उल्फत, बेजार (शम्मी चैधरी - यादों का सफर, पृ. 7) बेमतलब, गहराई, गुत्थियाँ, सुलझाना, आमतौर, बेहतरीन, गहरी, लकीर (डॉ. पद्मजा घोरपडे - गुत्थमगुत्था, पृ. 29) फन, ईजाद, इन्तखाब, कामयाब, बेनकाब, जर्रा, आफताब, शाद, बेताब, तसव्वुर, सैय्याद, हिङ्का, बहरहाल, जुदाई, शबाब, माजरा, एतबार, करार, ऐब, सिला, नशेमन, हवस, वहशत, उल्फत, बेदाद, शादाब, पुरसोज (उद्धव महाजन 'बिस्मिल' - थोडा-सा आसमान, पृ. 38, 39, 40, 41, 42) खालिस, बहस, गुंजाईश, तौलिया, ख्यालात, बेवकूफ, दकियानूसी, खातून, परहेजगार, तआल्लुकात (काझी मुश्ताक अहमद - कहानी खत्म हुई, पृ. 25) आदि।

मराठी भाषा का प्रभाव

पुणे में हिंदी भाषी और अहिंदी भाषी साहित्यकार विद्यमान हैं। अतः इनके साहित्य पर अपनी-अपनी मातृभाषा का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। महत्वपूर्ण बात यह है कि पुणे में रहते हुए पुणेरी मराठी का प्रभाव भी इनकी साहित्यिक रचनाओं में प्रायः देखने को मिलता है। इन्हीं शब्दों के प्रभाव को यहाँ आँका गया है। जैसे-

ओसारे (घर के आंगन से पहले का हिस्सा जिसे मराठी में ओसरी, पड़वी कहा जाता है।), शाक-भाजी, कमानीदार (ज्योत्स्ना देवधर - कल्याणी), मारा-मारी, पातल भाजी (हरिनारायण व्यास - यक्ष का संदेश, पृ. 24, 26), ज्या गावच्या बोरी, त्याच गावच्या बाभळी, भईन उन्हामधी सीता रडती ऐका, दिला

सभाजव यास बोरी बायका, अगं काय पाहतेस एवढ़े लक्ष देवुन, अगं विठ्ठलाला वहायला'भाजी-भाकरी, वरण-भात, चटणी-भाकरी, पूरन-पोळी, आमटी-भात, ताक-भात, दूध-भात (डॉ. मालती शर्मा - बागड़ों से उखड़े बबूल, पृ. 49, 79, 16, 19), भाजी, पेढ़े, पोशाख, गुलवणी, बोझा, पांदी, गोठा, कचरा, आवार, माडी, टांगा, रजा, पाट, थंडा पानी, धागा, खाली, हंगाम, समाधान (रामचंद्र थोरात - बवंडर, पृ. 61) पाठांतर, मुदत, संप, तोरण, दवाखाना, यात्रा, जतन, बळजोरी, गुरूजी (रामचंद्र थोरात - पतन, पृ. 138) रंगीत तालीम, पंधरा, शिलाई (रामचंद्र थोरात - प्रपंच, पृ. 223), पगार (डॉ. दामोदर खडसे - काला सूरज, पृ. 44) सरपट (डॉ. दामोदर खड़से - इस जंगल में, पृ. 87) अपशब्द, अचंभित, गडबड, विनोद (डॉ. इन्दु पाण्डे - अर्थ-पिशाच, पृ. 11, 21, 49) नाही चालनार नाही, मराठी समझत नाही, च्या आईला, ह्याला मराठी कळत नाही, मला (संजय भारद्वाज - एक भिखारिन की मौत, पृ. 14) आदि।

लोकोक्तियाँ, सूक्तियाँ और मुहावरे

साहित्य समाज का दर्पण होता है। अतः साहित्य में समाज की स्थितियों का अंकन होता है। इस अंकन के लिए साहित्यकार लोकोक्तियों, सूक्तियों और मुहावरों का प्रयोग करता है। इस प्रयोग के कारण साहित्यकार 'गागर में सागर' भरने का महत् कार्य करता है। अर्थात् कम शब्दों में अधिक भाव व्यक्त करने की क्षमता लोकोक्तियों, सूक्तियों और मुहावरों में होती है। पुणे के साहित्यकारों ने अपनी बात स्पष्ट करने के लिए लोकोक्तियों, सूक्तियों और मुहावरों का उचित प्रयोग किया है। इन पर प्रकाश डालने से पूर्व लोकोक्ति, सूक्ति और मुहावरों के अर्थ को समझने का प्रयास करेंगे।

लोकोक्ति यह शब्द 'लोक' और 'उक्ति' इन दो शब्दों से बना है। इसका अर्थ है-लोगों में प्रचलित उक्ति। इसी तरह 'सूक्ति' का अर्थ - सुंदर उक्ति अथवा सुभाषित होता है। मुहावरे और कहावतें लोकोक्ति के हीं अंग हैं।

पुणे के साहित्यकारों में-श्रीपाद जोशी, डॉ. प्रभुदास भुपटकर, डॉ. मालती शर्मा, हरिनारायण व्यास, रामचंद्र थोरात, डॉ. दामोदर खड़से, डॉ. इन्दु पाण्डे आदि के साहित्य में प्रचलित लाकोक्तियों और सूक्तियों का प्रयोग दिखाई देता है।

श्रीपाद जोशी ने अपने उपन्यास 'ध्वस्तनीड़' में कतिपय मुहावरों का प्रयोग किया है। जैसे - 'लेने के देने पड़ना', 'घोड़े बेचकर सोना', 'नौं-दो ग्यारह होना', 'बाल भी बाँका न करना। (पृ. 160) आदि।

डॉ. प्रभुदास भुपटकर ने संस्कृत, अंग्रेजी और उर्दू की प्रचलित उक्तियों का सहारा लिया है। देखिए संस्कृत सूक्तियों में -''स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान सर्वत्र पूज्यते'', ''श्रोता वक्ताचः दुलर्भा'', ''बालादपि सुभाषितं ग्राह्यम्'', ''परोपदेशे पांडित्यम'', ''ब्रहम सत्यम् जग्नमिथ्या'', ''शुभास्ते पंथाना सन्तु'' (मेरी आँखों का उत्सव, पृ. 1, 15, 29, 48, 50) आदि प्रमुख है।

संस्कृत की तरह ही डॉ. भुपटकर ने अंग्रेजी उक्तियों को अंग्रेजी लिपि में ही लिपिबद्ध किया है, देवनागरी में नहीं। यहाँ अंग्रेजी के कुछ उदाहरण देना अपेक्षित है। जैसे- 'Appearance often roclaims, 'the age of miracles's not gone', 'words are rascals they rather hide than express', 'when the heart is fall, the tounge is tie." (मेरी आँखों का उत्सव - 12, 14, 28, 30)आदि।

डॉ. भुपटकर हिंदी अध्यापक थे इसलिए हिंदी साहित्यकारों की उक्तियों का उन पर बेहद प्रभाव था। उनके निबंधों में समय-समय पर हिंदी साहित्यकारों की विविध उक्तियों का नजारा देखने को मिलता है। जैसे-

संतन को कहां सिकरी सो काम ?

इक लोहा पूजा में राखत, इक घर बधिक परो। यह दुविधा पारस नहीं जानत कंचन करत खरो।।

पराधीन सपनेंहू सुख नाहीं

पानी केरा बुदबुदा अस मानस की जात। देखत ही छिप जाएगा ज्यों तारा परभात।। (मेरी आँखों का उत्सव - पृ. 4, 19, 22, 37)

इस तरह हिंदी साहित्यकारों की कई उक्तियों पर भुपटकर ने अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। डॉ. भुपटकर की भाषा में उक्तियों, सूक्तियों के प्रभाव पर टिप्पणी देते हुए डॉ. केशव प्रथमवीर ने लिखा है-'डॉ. भुपटकर जी के निबंध-लेखन की भाषा के अंतर्गत मुहावरे और कहावतों की चमक से आँखें चैंधियाँ जाती हैं और व्यंग्य की भीनी-भीनी गंध नाक में सुर-सुरी मचाने लगती है। सचमुच ये निबंध 'मेरी आँखों का उत्सव' है।'[30] इस उद्धरण से स्पष्ट होता है कि निबंध के लिए आवश्यक विचारप्रधान भाषा का उपयोग इनके निबंधों में हुआ है।

हरिनारायण व्यास ने भी मुहावरों का प्रयोग अपने काव्य में किया है। जैसे-

''वह आत्मीयता की तलाश में/पहाड़ों से टकराता है।''

''यह वक्त तो घायल और पिसे हुए लोगों के साथ हाने का है/घावों पर मरहम लगाने का है।''[31]

उपरोक्त काव्य पंक्तियों में - पहाड़ों से टकराना और घाव पर मरहम लगाना आदि मुहावरों का प्रयोग हुआ है। इसी तरह 'पूत के पाँव पालने में देखना', धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का' (यक्ष का संदेश - संपादक डॉ. केशव प्रथमवीर, पृ. 25, 34) आदि मुहावरों का प्रयोग उनके काव्य में मिलता है।

डॉ. मालती शर्मा ने लोक सांस्कृतिक चिंतनपरक निबंधों में संस्कृत उक्तियों का समय-समय पर प्रयोग किया है। जैसे-''इदं ज्योतिः अमृतं मर्त्येषु'', ''सूर्यांश सम्भवो दीपः'', ''अग्निर्ज्योती रवि ज्योतिश्चंद्र ज्योतिस्त थेव च। उत्तमः सर्व ज्योतिषं दीपोस्यम्।।''(बागो से उखड़े बबूल - पृ. 21)

यहाँ दीपक के महत्व को निरूपित करने के लिए लेखिका ने पुराणों में वर्णित संस्कृत उद्धरणों को दिया है। 'अप्प दीपो भव' जैसी उक्तियों का भी सहारा लिया गया है।'

डॉ. मालती शर्मा का लोकाभ्यास अच्छा होने के कारण अनेक लोकप्रचलित उक्तियों का उन्होंने परिचय दिया है। इसी तरह उनके लेखन में ''पाँसा पड़ै सो दाव'', ''राजा करै सो न्याव'', ''जाके पाय न फटै बिवाई सो क्या जाने पीर पराई'', ''मामा आयौ माँ हंसी। दे गयो पांच ले गयो असी'', ''खाय खसम को गावे भैया को'' (सो फिर भादों गरजी - पृ. 10, 15, 101, 125) जैसी पहेलियाँ भी पाई जाती हैं। यह उनकी लोकाभ्यास को प्रतिपादित करने की अनोखी शैली है।

रामचंद्र थोरात ने भी अपने उपन्यासों में कुछ इन-गिने मुहावरों का प्रयोग किया है। जैसे - 'पत्तल चाटना', 'जले पर नमक छिड़कना', 'हाथ पर हाथ धरे बैठना', 'मुँह में पानी भर आना' (अंगारे - पृ. 35) आदि।

डॉ. दामोदर खड़से ने भी अपने उपन्यास 'भगदड़' में - 'जैसा देस वैसा भेस', तथा 'एक पंथ दो काज' (पृ. 65) जैसे मुहावरों का प्रयोग किया है।

मेजर सरजूप्रसाद 'गयावाला' ने 'मैं और मेरी कविता' इस संग्रह में 'नाकों से चने चबाना', 'हाथी के दाँत दिखाना', 'गिरगिट जैसा रंग बदलना', 'चोरी और सीनाजोरी', 'नाच न जाने आँगन टेढ़ा', 'पीठ में छुरी भोंकना', 'नौं दो ग्यारह होना', 'उल्लू बनाना', 'घड़ियाली आँसू बहाना', 'अपना राग अपनी

डफली', 'चुल्लू भर पानी में डूब मरना'(पृ. 103, 104) आदि मुहावरों का प्रयोग किया है।

डॉ. इन्दु पाण्डे ने 'गंगा में छलांग लगाना', 'हाथी तो नौलाखी', 'एक पथ दुई काज'(अर्थ-पिशाच, पृ. 18, 22, 30) जैसे मुहावरों का प्रयोग किया है।

इस प्रकार पुणे के साहित्यकारों ने जनप्रचलित सूक्तियों, मुहावरों का प्रयोग करके अपने विचारों को अधिक गहराई के साथ प्रतिपादित किया है। पुणे के साहित्य जगत् में पाई जाने वाली उपरोक्त भाषिक इकाइयों के साथ विविध प्रकार की शैलियाँ भी देखने को मिलती है। अतः इन शैलियों का विवेचन अधोलिखित है।

शैली वैविध्य

साहित्य सृजन की यात्रा में शैली का विशेष महत्व होता है। वैशिष्टयपूर्ण शैली के कारण ही साहित्यकार समाज के सामने अपने विचारों को सशक्त ढंग से रखता है। पुणे के सृजनकर्ताओं की शैली में वैविध्यता स्पष्ट झलकती है। इनके शैली वैविध्य पर प्रकाश डालने से पूर्व शैली का अर्थ और परिभाषा को देखने का प्रयास करेंगे।

शैली यह शब्द अंग्रेजी के 'स्टाईल' का हिंदी पर्याय है। कालिका प्रसाद के वृहद हिंदी कोश में शैली के विविध अर्थ बताए गए हैं। जैसे-''किसी काम के करने का ढंग, तरीका, रीति, पद्धति, अभिव्यक्ति की रीति, अभिव्यक्ति का कौशल।''[31] अर्थात् शैली का अर्थ, लेखन पद्धति से अथवा लेखक के साहित्यिक अभिव्यक्ति कौशल से लगाया जाता है। हिंदी साहित्य कोश भाग एक में इस संदर्भ में लिखा है-''शैली अनुभूत विषयवस्तु को सजाने के उन तरीकों का नाम है, जो उस विषयवस्तु की अभिव्यक्ति को सुंदर एवं प्रभावपूर्ण बनाते हैं।''[32] हर लेखक की लिखने की पद्धति अलग-अलग होती है। पुणे के सृजनकर्ताओं ने भी अनेक प्रकार की शैलियों का प्रयोग किया है। अतः पुणे के साहित्य संसार में पाई गई कुछ इनी-गिनी और महत्वपूर्ण शैलियों का अध्ययन यहाँ निम्नलिखित पद्धति से किया गया है।

वर्णनात्मक शैली

वर्णन का अर्थ होता है-चित्रण करना, लिखना, किसी के बारे में ब्योरेवार बात कहना। उपन्यासों, कहानियों, यात्रावृत्तों, जीवनियों, रेखाचित्रों आदि साहित्यिक विधाओं के साथ-साथ कविता में भी वर्णनात्मक शैली का प्रायः प्रयोग किया जाता है। हिंदी की प्रारंभिक साहित्यिक विधाओं में इसी शैली का

प्रयोग किया जाता था। पुणे के सृजनकर्ताओं ने इस शैली का प्रयोग अधिकतर किया है। कुछ महत्वपूर्ण उदाहरण दृष्टव्य है :–

"यह है पहला कमरा/भीतरी कमरे से जुड़ा हुआ/
साफ सुथरा/अंदर की सारी संदिग्धताओं पर बिछी स्वच्छ चादर।
फर्श पर आसमान उतरकर फैल गया है। यह रसोई घर है।"[33]

इसमें कविवर हरिनारायण व्यास ने कमरे का सचित्र वर्णन किया है। इसे पढ़कर पाठक के सामने वह कमरे का दृश्य अंकित हो जाता है। यहाँ प्रभावशाली वर्णनात्मक शैली प्रयुक्त हुई है।

वर्णनात्मक शैली का प्रयोग गद्य साहित्य में अधिकतर किया जाता है। उपरोक्त उदाहरण कविता का है। उसे इसलिए प्रस्तुत किया है, क्योंकि इसमें सपाटबयानी के साथ वर्णनपरकता चित्रित हुई है।

रामचंद्र थोरात के उपन्यास वर्णन शैली के उत्कृष्ट नमूने हैं। इनमें पुणे के आसपास के परिवेश का जीवंत वर्णन किया गया है। निम्न उदाहरण दृष्टव्य है-

"विद्यालय में समारोह चल रहा था। विद्यालय के चार ही कमरे थे। लेकिन उसके आगे बड़ा मैदान था। उस पर आ बीताव तना था। रंग-बिरंगी पताकाएँ फड़क रही थीं। विद्यालय के पीछे बड़ा पर्वत था। पेड़ पौधों से खाली ऐसा लगता था मानो वह बड़ी चट्टान ही खड़ी की गई हो।"[34]

इस तरह का वर्णन पाठकों के सामने परिवेश का जीवंत चित्रण खड़ा कर देता है।

डॉ. दामोदर खड़से के उपन्यासों और कहानियों में इस शैली का प्रयोग अधिक मात्रा में पाया जाता है। जैसे-

"तीसरी मंजिल तक चलकर आया था वह। साँस फूल रही होगी...नहीं दमा था उसे...ऊपर के ये काले बादल और पिछले तीन दिन से लगातार बरसता पानी...उसके दमे को हवा दे रहा था, अब तक दरवाजे के भीतर वाले व्यक्ति ने उसे इतना तो पहचान लिया कि बाहर वाला व्यक्ति कॉलोनी का ही आदमी है। लैच की कुंडी उठाते हुए उसने टीवी पर एक फिसलती निगाह डाली।"[35]

इस तरह पात्रों के चरित्रों को उजागर करने के लिए भी वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।

"सड़क के दोनों ओर फैले मकान, पटों में मुँह छिपाएँ दूकान, ऊँचे देवदार, फैले चिनार और डलगेट के ठीक सामने सिर उठाएँ शंकराचार्य की पहाड़ी के

उपर काले पत्थरों का शिव मंदिर कई मीटर लम्बी चौड़ी बर्फ की चादर के तले मुँह छिपाए गहरी नींद में सो रहे थे।''[36]

रजनी पाथरे 'राजदान' के 'बोल मेरी मछली कितना पानी' इस कहानी संग्रह से उद्धृत उपरोक्त वाक्य में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग हुआ है।

इस तरह पुणे के रचयिताओं ने प्रसंगानुरूप इस शैली का खूब उपयोग किया है।

आत्मकथनात्मक शैली

लेखक जब अपनी कथा स्वानुभूत सत्य के आधार पर विस्तार से ब्योरेवार लिखता है, तो उसे आत्मकथन कह सकते हैं। आत्मकथन और आत्मकथनात्मक शैली में अंतर है। आत्मकथनात्मक शैली में साहित्यकार किसी पात्र की कहानी स्वयं 'मैं' (प्रथम पुरूष) पद्धति से लिखता है। अर्थात् उस 'मैं' में स्वयं लेखक किसी अन्य के माध्यम से बोलता है। इससे पाठक वर्ग भी कथानक में अपने को खोजने की कोशिश करता है। अतः साहित्य सृजन में इस शैली का स्थान महत्वपूर्ण माना जा सकता है। पुणे के सृजनकर्ताओं ने इस शैली को बखूबी अपनाया है। इनमं ज्योत्स्ना देवधर, रामचंद्र थोरात, इंदिरा शबनम 'पूनावाला' आदि प्रमुख है।

ज्योत्स्ना देवधर की कहानियों में नारी जीवन की पीड़ा को 'मैं अथवा आत्मकथनात्मक शैली में अभिव्यक्ति मिली है। 'भाग्य और भाग्य'' इस कहानी की नायिका की पीड़ा देखिए-

''मेरा शरीर पीड़ा से कांप उठा। आह! भगवान! नारी मूक होकर क्या-क्या झेलती रहे ? आह! सोमा अभागन देख तो पति कह रहे हैं बाबा कहो। नीचे सास कह रही है उनके वंश का दीपक जलाओ। भगवन, तुम ही बताओ, जिस नारीत्व ने पत्नीत्व का स्पर्श तक न पाया था, वह मातृत्व कैसे पा ले।''[37]

'अर्थ-पिशाच' इस उपन्यास का पात्र शंकर अपनी पुरानी स्मृतियों को आत्मकथनात्मक शैली में व्यक्त करता है। जैसे- ''और तब मैं अपना सूटकेस चुपचाप उठाकर निकल लिया था। कविता और तीनों बेटियाँ मेरे जाते कदमों को निहारती रही। मैं कविता से आँखे नहीं मिला सका था। मेरे जाने के बाद उसने मुझे खत लिखा था। तमाम गिल-शिकवे के साथ उसने कहा था।''[38]

इंदिरा शबनम 'पूनावाला' की कहानी 'इबादत' में निम्न प्रकार से आत्मकथनात्मक शैली का प्रयोग हुआ है।

"मेरे हाथ से वह छायाचित्र छूट गया। तभी दरवाजे पर किसी ने घंटी बजाई। मैं चैंक गया। मेरे हाथ-पाँव काँपने लगे।.....मेरा दिल धडक रहा था। इस वक्त बाबा न आए तो अच्छा होगा। यह सोचते हुए मैंने दरवाजा खोला। बाहर धोबी खड़ा था। मैंने कपड़े लेकर फिर से दरवाजा बंद किया। मेरे शरीर में एकदम थकान महसूस हो गई। मैं पलंग पर लेट गया।"[39]

इस प्रकार पुणे के कहानीकारों ने आत्मकथनात्मक शैली का प्रयोग किया है।

संवाद शैली

संवाद, संबंध प्रस्थापित करने का माध्यम है। दो, तीन या उससे अधिक लोग आपस में संवादों के माध्यम से विचार विनिमय करते हैं। अतः संवादों का, साहित्य और रोज के जीवन में विशेष महत्व होता है। साहित्यिक विधाओं में विशेषकर नाट्य साहित्य में इनका अधिक महत्व होता है। संवाद नाटक के प्राणतत्व होते हैं। संवादों के माध्यम से ही नाटकों के पात्र परस्पर वार्तालाप करते हैं। नाट्य विधा के साथ-साथ अन्य विधाओं में भी इस शैली का प्रयोग किया जाता है। पुणे के सृजनकर्ताओं ने इस शैली का बहुतायत से प्रयोग किया है।

रामचंद्र थोरात के उपन्यासों में संवाद शैली का प्रयोग दिखाई देता है। प्रपंच उपन्यास का निम्न उदाहरण इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है। जैसे-

"तभी सुहासिनी ने कहा, आप यहाँ कितने सालों से काम करते हैं ?

जी! कोई चार साल हो गए।

पहले आप क्या करते थे। मैं पुणे में था।

मेरा मतलब यह कि आप वहाँ क्या करते थे।

जी! वर्ग चलाया करता था।

कौन-से विषय के अंग्रेजी के ?

जी! नहीं, हिंदी के वर्ग चलाया करते थे।"[40]

डॉ. दामोदर खड़से की कहानी 'बगुले' पूरी तरह संवाद शैली में लिखी गई है। जैसे-

"हैलो!"

"कौन ?"

"अजी मैं...नहीं पहचाना ?"

"अं ऽ ऽ हं...!"

''मैं अजीत देशपांडे... उस दिन ज्वाइंट कॉन्फ्रेन्स में मुलाकात हुई...''

''अच्छा ऑईल कम्पनी...''

''बिल्कुल सही, आपको मैंने अपना कार्ड...''[41]

इस प्रकार यह कहानी कभी टेलिफोन संवाद में तो कभी मौखिक शैली में शुरूआत से अंत तक चलती रहती है।

''''माल'' उसके स्वर में आश्चर्य था।

''अर्जेंट! राईट ?'' अफसर के स्वर में सख्ती आ गई थी।

''यस जनरल''

''गुड''''[42]

रजनी पाथरे 'राजदान' की कहानी 'अनुत्तरित उत्तर' में संवाद शैली का प्रयोग हुआ है।

इस प्रकार पुणे के रचयिताओं ने अपनी रचनाओं में संवाद शैली का उचित मात्रा में प्रयोग किया है।

संबोधन शैली

वह शैली, जिसमें किसी को संबोधित कराते हुए बात कही जाती है, संबोधन शैली होती है। इसमें हे, अरे, अहो, अजी, सुनो आदि प्रत्ययों का भी प्रयोग किया जाता है। संबोधन शैली के कारण साहित्य में जीवंतता आती है। पुणे के कतिपय रचयिताओं ने इस शैली का प्रयोग किया है।

हरि नारायण व्यास की कविताओं में विचारों की स्पष्टतः है। इन कविताओं में संबोधन शैली का प्रयोग बहुतायत से हुआ है। संबोधन शैली का एक उदाहरण देखिए-

''क्षमा करो मित्र!/वह अभिनय मेरे बूते का नहीं पराया व्यक्तित्व ओढ़कर/ मंच पर हूबहू प्रदर्शन।''[43]

उपरोक्त काव्य पंक्ति में मित्र को संबोधित किया गया है। हरिनारायण व्यास का शिल्प विधान सशक्त है। उनकी भाषा के बारे में डॉ. रामजी तिवारी ने लिखा है-''भाषा प्रयोग की दृष्टि से हिंदी कविता के लिए व्यास जी का विशेष योगदान है। वे भाषा को जीवन और समाज का ऐसा अस्त्र मानते हैं जो निरंतर जीवन के भीतर ही अपना अस्तित्व बनाए रखता है। उनकी भाषा सीधे जीवन से गृहित होकर अपना रचनात्मक रूप प्राप्त करती है। वे भाषा को लक्षणा और व्यंजना की घुमावदार बारीकियों में उलझाकर उसका अभिधात्मक प्रयोग ही

श्रेयस्कर मानते हैं। उनके लिए भाषा वह पोत है जो संप्रेषण की बाधाओं को काटती हुई निहितार्थ को गृहिता तक पहुंचाती है।''[44]

ज्योत्स्ना देवधर की कहानियों में भी इस शैली का प्रयोग हुआ है। एक उदाहरण दृष्टव्य है-

''मास्टरजी...

सुनो, दीपा! मुझे मास्टरजी न कहो तो...''[45]

समय-समय पर ऐसे संबोधन शैली के वाक्य इनकी कहानियों में प्राप्त होते हैं।

मेजर सरजूप्रसाद 'गयावाला' के काव्य में भी संबोधन शैली प्रयुक्त हुई है। जैसे-

''हे भोले! इनको पढ़ने दे हे भोले! इनको बढ़ने दो!

ये पढ़ती है तुम भी पढ़ोगे, ये बढ़तर है तुम भी बढ़ोगे।''[46]

रामचंद्र थोरात के उपन्यासों में संबोधन शैली का प्रयोग अधिक मात्रा में दिखाई देता है। 'शहादत' उपन्यास का निम्न वाक्य दृष्टव्य है-''लोगों देखिए, आप चारों तरफ से घिर गए हो। यहाँ आपको कोई बचाने नहीं आएगा। इससे यह अच्छा है कि आप हिंसा का मार्ग छोड़कर यहाँ से निकल जाएँ।''[47]

काझी मुश्ताक अहमद की कहानियाँ संबोधन शैली में लिखी है। यथा-''सुनील! मैं जानता था कि यह समाचार सुनकर तुम परेशान हो जाओगे, इसलिए मैंने तुम्हें जान बूझकर सूचना नहीं दी कि कहीं तुम्हारी पढ़ाई डिस्टर्ब न हो जाए।''[48]

इस प्रकार पुणे के रचयिताओं ने संबोधन शैली का प्रयोग अपनी साहित्यिक रचनाओं में समय-समय पर किया है।

प्रश्नात्मक शैली

अपनी बात को अधिक स्पष्ट करने के लिए साहित्यकार प्रश्नात्मक शैली अपनाता है। प्रश्न के माध्यम से साहित्यकार, पाठक तथा पात्र के मन में कौतूहल निर्माण करता है कि उस प्रश्न का उत्तर क्या होगा, इस खोज में कहानी को आगे बढ़ाया जाता है। साहित्यिक विधाओं के सृजन में ऐसी शैलियों का प्रयोग करके साहित्यकार अपनी कृति को सजीवता प्रदान करता है और उत्तर ढूंढने की लालसा में पाठक उस विधा को पूर्णतः पढ़ लेता है। पुणे के सृजनकर्ताओं ने प्रश्नात्मक शैली का प्रयोग अपनी रचनाओं में किया है। इस दृष्टि से कविवर

हरिनारायण व्यास, रामचंद्र थोरात, मेजर सरजूप्रसाद 'गयावाला', डॉ. इन्दु पांण्डेय, इंदिरा शबनम 'पूनावाला' आदि के साहित्य में पाए गए कतिपय उदाहरण यहाँ प्रस्तुत है। देखिए-

''क्या मिला? /इस धूप ने ही क्या दिया?
वृक्षों की परछाई में, छटपटाती भोर/ क्या मिला?''[49]

कविवर हरिनारायण व्यास की उपरोक्त कविता में प्रश्नात्मक शैली का प्रयोग हुआ है।

''अपनी बहू के प्रति क्यों सदय और सुहृदय नहीं हो पाती? क्योंकर जया और हेमा की फुफेरी बहन की सासों में यह स्त्री आज भी बहू के आते ही घर के तमाम नौकरों की छुट्टी कर देती है ? इस अर्थप्रधान युग में जब हर एक सेवा का, काम का मूल्य है तब नौकरी न करके सिर्फ घर का काम करती, घर संभालती बहू 'निठल्ली', 'बेकार' कैसे हो सकती है ?''[50]

डॉ. मालती शर्मा ने अपनों निबंधों में उपरोक्त पद्धति से प्रश्नात्मक शैली का आवश्यकतानुरूप प्रयोग किया है।

''हॅलो, कौन बोल रहा है? मेरी आवाज नहीं पहचानी? ओ हो प्रवीण तुम हो? ...क्या? मारपीट? कौन कर रहा है?''[51]

रामचंद्र थोरात के उपन्यास 'शहादत' में सी. आई. डी अफसर निशा फोन पर प्रश्नात्मक शैली में उपरोक्त पद्धति से खोज-बीन कर रही है। अतः यहाँ प्रश्नात्मक शैली प्रयुक्त हुई है।

''कोई काला कौवे को उजला करेगा ?
कभी श्वान की पूँछ सीधा करोगे ?
कभी कूप में तुम समुंदर भरोगे ?''[52]

मेजर सरजू प्रसाद ने 'मैं और मेरी कविताएँ' की कविता 'असंभव...संभव' पूरी प्रश्नात्मक शैली में लिखी है। उपरोक्त पंक्तियों में प्रश्नात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।

''भइया, अगली बार आ गए होंगे तो आपकी रिटायरमेंट भी हो गई होगी न ?....आगे की क्या प्लानिंग है आपका?... मैं कुछ समझा नहीं भैय्या?...इसमें ना समझने वाली क्या बात है भाई?''[53]

डॉ. इन्दु पाण्डे के उपन्यास 'अर्थ-पिशाच' के उपरोक्त उद्धरण में प्रश्नात्मक शैली में संवाद घटित होते दिखाई देते हैं। अतः प्रश्नात्मक शैली दिखाई देती है।

''माँ तुम पढ़ी लिखी क्यों नहीं ? बेटा, गुरूमुखी तो आती है ना ?'' मुझे क्या बैरिस्टर बनना था ? घर-गृहस्थी के काम में क्या शिक्षा का होना इतना जरूरी है ? पर आज तू यह सब क्यों पूछ रहा है ?''[54]

इंदिरा शबनम 'पूनावाला' के इबादत कहानी संग्रह में इस प्रकार के प्रश्नों के साथ कहानी आगे बढ़ती है। अतः प्रश्नात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।

इस प्रकार पुणे के सृजनकर्ताओं ने प्रश्नात्मक शैली को अपनाकर अपनी रचनाओं को गरिमा प्रदान की है। उनका यह कार्य उल्लेखनीय है।

पूर्वदीप्ति शैली

पूर्वदीप्ति यह शब्द 'पूर्व' और 'दीप्ति' इन दो शब्दों के योग से बना है। पूर्व का अर्थ होता है-पहले का, अर्थात् इसका संबंध भूतकाल की घटनाओं से होता है और दीप्ति याने प्रकाश। अर्थात् जिस कथानक में पूर्वकाल की घटनाओं पर प्रकाश डाला जाता है, उसे पूर्व दीप्ति शैली से आपूरित कथानक माना जाता है। इस संदर्भ में डॉ. त्रिभुवनसिंह ने लिखा है-''''फ्लैशबैक टेक्निक' अंग्रेजी भाषा का शब्द है, जिसे हिंदी में पुरादीप्ति शैली कह सकते हैं। ....'फ्लैश' का अर्थ होता है-प्रकाश और 'बैक' का अर्थ होता है-पीछे। फ्लैश बैक अथवा पिछले जीवन को प्रकाशित करना।''[55] पुणे के कतिपय रचयिताओं ने इस शैली का प्रयोग किया है। इस संदर्भ में ज्योत्स्ना देवधर, रामचंद्र थोरात, डॉ. दामोदर खड़से, डॉ. इन्दु पाण्डे, रजनी पाथरे 'राजदान', डॉ. चेतना राजपूत के आदि के साहित्य में प्राप्त उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किए गए हैं। देखिए-

ज्योत्स्ना देवधर की कहानी 'मैं सागर नहीं लहर बनना चाहती हूँ' में दीपा अपने अतीत की घटनाओं को बार-बार याद करती है। जैसे-

''वह दिन आज भी याद है, जब मैं छः सात साल की थी। घर में बड़े जतन से पाला हुआ तोता पिंजड़े में बंद था। उसे मैंने उड़ा दिया था, इतना ही नहीं, तालियाँ पीट-पीटकर सारे घर को सुबह ही जगा दिया था। पिता जी की धोती से लिपटकर मैंने बड़े चाव से उन्हें वह उड़ता हुआ तोता दिखा दिया था। मैं नाच रही थी, खुश हो रही थी। लेकिन जब पिताजी ने मुझे हाथ पकड़कर घसीटा और जोर से चपत लगा दी, तब मेरी आँखों की खुशी बुझ गई थी।''[56]

'पतन' और 'अंगारे' उपन्यास में पूर्वदीप्ति शैली पद्धति का प्रयोग हुआ है। 'पतन' का नायक प्रभाकर स्मृतियों के सहारे जीवन की एक-एक घटना को याद करता है। 'अंगारे' उपन्यास की नायिका पलुसी के जीवन को इसी शैली

में लेखक ने उद्‌घाटित किया है। उपन्यास की शुरूआत में डॉ. मनीष के दवाखाने में काम करने वाली पलुसी के बचपन के दिनों का रेखांकन उपन्यासकार ने किया है। देखिए -

''पलुसी अभी तीन साल की भी नहीं हुई थी, उसकी माँ शराब वाले के घर में घुस गई थी। वह भी आदिवासी था। उसकी माँ पर डोरे डाल रहा था। उसे सौ रूपये मिलते थे। खाना-पीना मिल जाता था, पलुसी नासमझ थी फिर भी अपने बाप को याद करती थी क्योंकि वह उसे लेकर घूमता था।''[57]

डॉ. दामोदर खड़से का 'भगदड़' उपन्यास पूर्वदीप्ति शैली में लिखा गया है। इसके दूसरे से पांचवे अध्याय तक उपन्यास का नायक कृष्णा की कहानी स्मृति पर आधारित व्यक्त की है।

डॉ. दामोदर खड़से की अनेक कहानियों में पूर्वदीप्ति शैली प्रयुक्त है। एक उदाहरण देखिए -

''दो महीने पहले की घटना आप भूल गए। याद है न कि बीस साल की एक लड़की को दिन-दहाड़े, चौक में एक लड़के ने अपने दोस्तों के साथ मिलकर चाकू से गोद डाला था...।'' ''हाँ हाँ...वह घटना कौन भूल सकता है। ...''[58] इस तरह वह कहानी दोहराई जाती है।

इंदिरा शबनम 'पूनावाला' की कहानी 'बोल मेरी मछली कितना पानी' में पूर्वदिप्ति शैली का प्रयोग निम्नवत् हुआ है। जैसे -

''कांता कहवा पीते उसे एकटक देख रही थी। उसके स्मृतिपटल पर बीस वर्ष पहले की घटनाएँ बिजली की तरह कौंध गई। वह गांधी कालेज में बी.ए. के प्रथम वर्ष में थी। तभी एक दिन एक स्वस्थ, सुडौल गोरा-चिट्टा युवक उसकी बाई ओर बैंच पर आकर बैठ गया। पता चला नया एडमिशन है। वह रोज आकर उसी जगह पर बैठता और मौका पाते ही कनखियों से उसे देखता रहता।''[59] यहाँ पूर्व की घटनाओं को रेखांकित किया है।

इस प्रकार पुणे के उपन्यासकारों ने इस शैली का बखूबी प्रयोग किया है।

पुणे के साहित्यकारों की भाषिक विशेषताएँ

पुणे के साहित्यकारों ने हिंदी भाषा को समृद्धता प्रदान करने में सहायता प्रदान की है। लगभग सभी रचनाकारों की इस संदर्भ में विशेष भूमिका रही है। कविवर हरिनारायण व्यास की कविता नई भाव भंगिमाओं को लेकर लिखी गई है। इनके काव्य में विविध भाषिक आयाम पाए जाते हैं। शैली और शिल्प के

लगभग सभी सजग पहलू उनकी रचनाओं में मिलते हैं। इसी तरह डॉ. मालती शर्मा की भाषा ब्रज क्षेत्र की मीठी सुगंध के साथ मराठी और हिंदी के विकास में सजग है। अनेक भाषाओं की लोकोक्तियों, सूक्तियों, मुहावरों और लोक प्रचलित कहावतों के साथ इनका लोकाभ्यास अभिव्यक्त होता है। मेजर सरजू प्रसाद की कविताओं की भाषा खिचड़ी बनी हुई है। इनकी कविताओं में अलग-अलग भाषाओं के शब्द पाए जाते हैं। डॉ. सिंधू भिंगारकर की भाषा में मराठी शब्दों की भरमार है। गोवर्धन शर्मा 'घायल' की भाषा में सिंधी भाषा की मीठी सुगंध है। प्रभा माथुर की काव्यभाषा संस्कृतनिष्ठ है। रजनी पाथरे 'राजदान' की काव्यभाषा में हिंदी के साथ-साथ कश्मीरी भाषा के सौंदर्य की झलक मिलती है। डॉ. पद्मजा घोरपडे के साहित्य की भाषा बिम्ब विधान की दृष्टि से सजग है। गजेंद्र देव उपाध्याय की काव्यभाषा राजनीति के परिप्रेक्ष्य में लिखी होने के कारण उनमें व्यंग्योक्ति की भरमार अधिक है। बलदेव साजनदास 'निर्मोही' ने नज्म और गजलें लिखी है। इस कारण इनमें उर्दू, अरबी, फारसी, अंग्रेजी, सिंधी के शब्द अधिक दिखाई देते हैं। शम्मी चौधरी मंचीय कवि होने के कारण सपाटबयानी के साथ उन्होंने प्राकृतिक उपादानों का सहारा लिया है। आसावरी काकड़े के काव्य में मराठी भाषा के अनेक शब्द मिल जाते हैं। दीप्ति गुप्ता की काव्य भाषा में देशी-विदेशी शब्दों का प्रयोग हुआ है। शरदेंदु शुक्ला 'शरद' के काव्य में व्यंग्योक्तियों की भरमार है। इंदिरा शबनम 'पूनावाला' की भाषा सिंधी और उर्दू मिश्रित है। गजल के ढंग पर लिखी ये कविताएँ अपनी भाषा के कारण सशक्त बन चुकी हैं। केवल काव्य की भाषा ही नहीं बल्कि डॉ. दामोदर खड़से, रामचंद्र थोरात, श्रीपाद जोशी और डॉ. इन्दु पाण्डे के उपन्यासों तथा ज्योत्स्ना देवधर, गो. प. नेने, मु. मा. जगताप, राजेंद्र श्रीवास्तव आदि के कहानियों की भाषा में भी अनेक प्रकार के शब्द समूह, लोकोक्तियाँ, मुहावरे तथा विविध प्रकार की शैलियाँ पर्याप्त मात्रा में पाई जाती हैं। अहिंदी प्रदेश होने के बावजूद भी हिंदी के विकास में पुणे का भाषिक प्रकार्य विशेष उल्लेखनीय है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि जिस प्रकार हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार, उसके साहित्यिक विकास में पुणे की अहम् भूमिका रही है, उसी प्रकार पुणे के साहित्यकारों का भाषिक सौंदर्य भी अप्रतिम रहा है। पुणे के साहित्यकार किसी एक प्रांत के नहीं हैं, अतः उनकी साहित्यिक भाषाओं में अपने-अपने प्रांत की

मीठी सुगंध प्राप्त होती है। यह सब होते हुए भी, राष्ट्रीय एकता की संवाहिका हिंदी का ही यहाँ बोलबाला रहा है। इन साहित्यकारों ने अपनी साहित्यिक रचनाओं में प्रतीकों, मिथकों, बिम्बों, विविध प्रकार के प्रचलित शब्द-समूहों, लोकोक्तियों और सूक्तियों का उचित प्रयोग किया है। इतना ही नहीं अपितु भाषिक सौंदर्य को चार चांद लगाने वाली विविध प्रकार की शैलियों का भी प्रयोग किया है। उनका यह कार्य पुणे की हिंदी के विकास में सहायक है। अतः पुणे शहर का हिंदी भाषा और साहित्य को अमूल्य प्रदेय रहा है। हिंदी भाषा और साहित्य को पुणे का जितना प्रदेय है उतना शायद ही अहिंदी भाषी प्रांतों के किसी शहर का होगा।

संदर्भ

1. वृहद हिंदी कोश - कालिका प्रसाद, पृ. 732
2. यक्ष का संदेश - हरिनारायण व्यास, पृ. 46
3. वहीं, पृ. 45
4. सन्नाटे में रोशनी - डॉ. दामोदर खड़से, पृ. 10
5. संवादों के आकाश -डॉ. पद्मजा घोरपडे, पृ. 91
6. इसलिए शायद- आसावरी काकड़े, पृ. 12
7. ओस - कण - डॉ. चेतना राजपूत, पृ. 46
8. श्रवण के पिता का प्रलाप मृग और तृष्णा - हरिनारायण व्यास, पृ. 44
9. निर्वासन की आँधी - डॉ. मालती शर्मा, पृ. 29.
10. कैकेयी - मेजर सरजू प्रसाद 'गयावाला', पृ. 73
11. जीना चाहता है मेरा समय - डॉ. दामोदर खड़से, पृ. 68
12. दस्तक देती आँधिया - डॉ. कांतीदेवी लोधी, पृ. 66
13. विविधांजली - अलका अग्रवाल, पृ. 2
14. यक्ष का संदेश - सं. डॉ. केशव प्रथमवीर, पृ. 20
15. दृश्यों के बाहर - डॉ. मालती शर्मा, पृ. 42
16. निर्वासन की आंधी - डॉ. मालती शर्मा, पृ. 47
17. संवादों के आकाश - डॉ. पद्मजा घोरपडे, पृ. 86
18. ओस-कण - डॉ. चेतना राजपूत, पृ. 49
19. सूरज का उजला पोस्टर - डॉ. स्मिता दात्ये, पृ. 41
20. इसिलिए शायद - आसावरी काकड़े, पृ. 35
21. यक्ष का संदेश - कविवर हरिनारायण व्यास, पृ. 73
22. मृग और तृष्णा - हरिनारायण व्यास, पृ. 55
23. निर्वासन की आँधी - डॉ. मालती शर्मा, पृ. 23
24. वहीं, पृ. 96

25. विविधांजली -अलका अग्रवाल, पृ. 4
26. वहीं, पृ. 10
27. एक नदी-सी बही होगी - डॉ. रजनी रणपिसे, पृ. 20
28. आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना - वासुदेवनंदन प्रसाद, पृ. 147
29. वहीं, 148
30. मेरी आँखों का उत्सव - सं. डॉ. पद्मजा घोरपड़े, फ्लैप से
31. वृहद हिंदी कोश - कालिकाप्रसाद, पृ. 1143
32. हिंदी साहित्य कोश भाग 1 - धीरेंद्र वर्मा, पृ. 681
33. बरगत के चिकने पत्ते - हरिनारायण व्यास, पृ. 48 (कुत्ते की आत्मकथा)
34. प्रपंच - रामचंद्र थोरात, पृ. 1
35. इस जंगल में - डॉ. दामोदर खड़से, पृ. 125
36. बोल मेरी मछली कितना पानी - रजनी पाथरे 'राजदान', पृ. 10
37. अंतरा - ज्योत्स्ना देवधर, पृ. 38
38. अर्थ-पिशाच् - डॉ. इन्दु पाण्ड़े, पृ. 5
39. इबादत -इंदिरा शबनम 'पूनावाला', पृ. 11
40. प्रपंच - रामचंद्र थोरात, पृ. 4
41. इस जंगल में - डॉ. दामोदर खड़से, पृ. 71
42. बोल मेरी मछली कितना पानी - राजनी पाथरे 'राजदान', पृ. 14
43. त्रिकोण पर सूर्योदय - हरिनारायण व्यास, पृ. 39
44. यक्ष का संदेश - हरिनारायण व्यास, पृ. 17 (भूमिका से)
45. अंतरा - ज्योत्स्ना देवधर, पृ. 1
46. मैं और मेरी कविताएँ - मेजर सरजू प्रसाद 'गयावाला', पृ. 60
47. शहादत - रामचंद्र थोरात, पृ. 10
48. कहानी खत्म हुई - काझी मुश्ताक अहमद, पृ. 17
49. त्रिकोण पर सूर्योदय - हरिनारायण व्यास, पृ. 14
50. बागड़ों से उखड़े बबूल - डॉ. मालती शर्मा, पृ. 95
51. शहादत - रामचंद्र थोरात, पृ. 10
52. मेजर सरजू प्रसाद 'गयावाला', पृ. 124
53. अर्थ-पिशाच - डॉ. इन्दु पाण्ड़े, पृ. 4
54. इबादत - इंदिरा शबनम 'पूनावाला', पृ. 12
55. हिंदी उपन्यासः शिल्प और प्रयोग - डॉ. त्रिभुवन सिंह, पृ. 205
56. अंतरा - ज्योत्स्ना देवधर, पृ. 23
57. अंगारे - रामचंद्र थोरात, पृ. 30
58. इस जंगल में - डॉ. दामोदर खड़से, पृ. 17
59. बोल मेरी मछली कितना पानी - रजनी पाथरे 'राजदान', पृ. 15

उपसंहार

हिंदी के संवर्धन में हिंदी भाषी प्रांतों की तरह हिंदीतर भाषी प्रांतों की भी अहम् भूमिका रही है। इसके पीछे कई कारण हैं। इन कारणों में से एक कारण यह है कि हिंदी का उद्‌गम संस्कृत से हुआ है और अन्य कतिपय भारतीय भाषाओं का उद्‌गम भी हिंदी की तरह संस्कृत से ही माना जाता है। अतः भारत में बोली जाने वाली विविध भाषाओं का संबंध हिंदी से है। इसलिए देश की प्रमुख भाषा हिंदी का विकास दिनों दिन बढ़ता गया है। दस हिंदी भाषी राज्यों में जिस प्रकार हिंदी भाषा और साहित्य का विकास होता गया, वैसे ही हिंदीतर भाषी राज्यों में भी इसका विकास होता गया है। अंतर सिर्फ इतना पाया जाता है कि हिंदी भाषी राज्यों की मातृभाषा हिंदी रही, इस कारण से यहाँ विपुल मात्रा में हिंदी में साहित्य सृजन हुआ और अन्य प्रांतों में अपनी प्रांतीय मातृभाषाओं के साथ देश की प्रमुख संपर्क भाषा हिंदी में साहित्य निर्मिति कुछ कम अधिक मात्रा में होती रही है। अर्थात हिंदी प्रदेशों में हिंदी का विकास होना विशेष बात नहीं है पर अहिंदी प्रदेशों में हिंदी का विकास, प्रचार-प्रसार और राष्ट्रीय आंदोलन से उस भाषा को जोड़ना अपने आप में बहुत बड़ा कार्य है। इसी कार्य के कारण देश की एकता में कोई बाधा नहीं आई। भारत के कई अहिंदी प्रांतों ने एकता की संवाहिका हिंदी के विकास में बखूबी सहयोग की भूमिका निभाई है। प्रथम अध्याय की संपूर्ण लिखित सामग्री इसी ओर संकेत करती है। इसमें भारत के हिंदी भाषी और अहिंदी भाषी राज्यों में पनपने वाली हिंदी की स्थिति का सामान्य परिचय दिया गया है। इन प्रमुख प्रदेशों में पूर्वी अंचल के असम्, उड़ीसा, मेघालय, नागालैंड, मणिपुर, त्रिपुरा, अरुणाचल प्रदेश, मिजोराम, आदि प्रमुख हैं। इन प्रांतों में हिंदी का प्रचार-प्रसार होता रहा है। इन प्रदेशों में बसने वाले आम लोगों की बोलचाल में हिंदी प्रयुक्त होती रही है। यहाँ के बाजार की

भाषा टूटी-फूटी हिंदी ही है। पूर्वी अंचल के इन प्रदेशों की तरह ही पश्चिमी अंचल के गुजरात, पंजाब के लोगों और साहित्यकारों में हिंदी का प्रचलन रहा है। दक्षिण के प्रमुख प्रांत आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडू, केरल, गोवा, आदि प्रदेशों में हिंदी का प्रचार-प्रसार होता रहा है। केंद्रशासित प्रदेशों में भी हिंदी की स्थिति काफी संतोषजनक रही है। महाराष्ट्र भारतवर्ष के केंद्र में बसा हुआ मध्यप्रांत है। इस प्रांत का हिंदी के प्रचार-प्रसार में योगदान रहा है। इस योगदान के पीछे महाराष्ट्र की भौगोलिक स्थितियों का संबंध रहा है। महाराष्ट्र के प्रमुख प्रादेशिक विभागों में विदर्भ, मराठवाड़ा, कोंकण, पश्चिम महाराष्ट्र और खानदेश आदि सदियों से ही हिंदी भाषियों के संपर्क में रहे हैं। आदिकालीन महाराष्ट्र के विभिन्न प्रदेशों में नाथों, संतों, जैन साधुओं, सूफी फकीरों आदि के हिंदी पद प्रायः प्राप्त होते हैं। मध्यकाल में दखनी हिंदी के प्रवेश के कारण हिंदी का यहाँ आम लोगों में प्रचार-प्रसार होता रहा है। आधुनिक कालीन महाराष्ट्र में तो हिंदी कविता, कथा साहित्य, नाट्य साहित्य, आलोचना और अनुसंधान, हिंदी अनुवाद, हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में महाराष्ट्र के साहित्यकारों, अनुवादकों, अनुसंधाताओं, आलोचकों, पत्रकारों और प्रचारकों की अहम भूमिका दिखाई देती है। इन सभी स्थितियों का अंकन प्रथम अध्याय में किया गया है।

भारतवर्ष के कई इलाकों में भारतीय संस्कृति के दर्शन कराने वाले शहर बसे हुए हैं। आगरा, जयपुर, जम्मू, दिल्ली, बेंगलोर, मुंबई ऐसे ही शहर हैं, जिनकी अपनी-अपनी खास विशेषताएँ रही हैं। पुणे शहर एक ऐसा ही अपनी अलग विशेषता से युक्त शहर है। इसे महाराष्ट्र की सांस्कृतिक राजधानी माना जाता है। सामाजिक, आर्थिक, व्यापारिक दृष्टि से संपन्न इस शहर में अनेक जाति धर्मों और विभिन्न प्रांतीय लोग निवास करते हैं। अतः इस शहर में बसने वाले लोग जब आपस में वार्तालाप करते हैं, तो इसी हिंदी का सहारा लेते हुए पाए जाते हैं। हिंदी इन लोगों के रग-रग में बसी हुई है। हिंदी का व्यापक प्रचार-प्रसार इस शहर से हुआ है। इसलिए दूसरे अध्याय में इस शहर में हुए हिंदी प्रचार-प्रसार की भूमिका को प्रस्तुत किया गया है। संपूर्ण भारतवर्ष में हिंदी के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु महात्मा गांधी जी ने अपने पुत्र देवीदास गांधी को दक्षिण भारत भेजा और सन् 1918 ई. में 'दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास' की स्थापना हुई। यह संस्था केरळ, मद्रास, कर्नाटक और तमिलनाडु इन चार प्रदेशों में कार्य करती रही। महाराष्ट्र में भी इस प्रचार-प्रसार की आवश्यकता

को ध्यान में रखते हुए गांधी जी के वर्धा आश्रम के निकट 'महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा' की स्थापना सन् 1936 ई. में की गई। तथ्य यह है कि महाराष्ट्र में इस संस्था की स्थापना से पूर्व ही पुणे में सन् 1934 ई. में 'हिंदी प्रचार संघ' नामक संस्था यह कार्य कर रही थी। अर्थात् महाराष्ट्र में हिंदी प्रचार-प्रसार के कार्य की शुरूआत पुणे शहर से हुई है। कतिपय वैचारिक मतभेदों के कारणों से बाद में इस संस्था की दो संस्थाएँ बनी। 'महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पुणे' जो कि वर्धा समिति के अंतर्गत कार्य करने लगी और दूसरी संस्था 'महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे' जो कि स्वतंत्र रूप से कार्य करने लगी। संपूर्ण महाराष्ट्र में हिंदी के व्यापक प्रचार-प्रसार का कार्य इन दो प्रमुख संस्थाओं के कारण हो सका है। पुणे शहर की यह एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

पुणे की उपरोक्त दोनों हिंदी प्रचारक संस्थाओं से बहुधा अनेक हिंदी अध्येता परिचित है क्योंकि ये दोनों संस्थाएँ विशेष ख्यातिप्राप्त है और उनका कार्य प्रत्यक्ष रूप में हिंदी का प्रचार-प्रसार करना रहा है। पुणे शहर में उपरोक्त दोनों संस्थाओं के अतिरिक्त हिंदी का अप्रत्यक्ष रूप से प्रचार करने वाली संस्थाएँ भी शोध अध्ययन के दौरान खोजी गई है। ये संस्थाएँ देश की एकता को बरकरार रखने के लिए, हिंदी का प्रचार अप्रत्यक्ष रूप से करती है। इन संस्थाओं में शैक्षिक, साहित्यिक, कार्यालयीन आदि स्तर की संस्थाएँ हैं। साहित्यिक संस्थाएँ कवि गोष्ठियों का आयोजन करती हैं तो शैक्षिक संस्थाएँ हिंदी साहित्य में अध्ययन, अध्यापन और अनुसंधान विषयक कार्य करती है। तो कार्यालयीन संस्थाएँ राजभाषा हिंदी की प्रयुक्तिपरकता को लेकर कार्य करती है। अर्थात कारण चाहे कितने भी एकानेक क्यों न हो, पर निष्कर्ष यह कि हिंदी का विकास, प्रचार-प्रसार और अहिंदी भाषिक शहर पुणे में हिंदीमय वातावरण की निर्मिति इन संस्थाओं ने की है। इनमें राष्ट्रीय एकता को बरकरार रखने वाली संस्था राष्ट्र सेवा दल, कवि गोष्ठियों और काव्य सम्मेलनों का आयोजन करने वाली साहित्यिक संस्थाओं में - 'हिंदी आंदोलन', 'चिंतनमंच', 'रसिक मित्र मंडल', 'प्रयास', व्यक्तिगत तौर पर हिंदी के लिए कार्य करने वाली संस्थाएँ - 'हिंदी निकेतन', 'गुरूकुल प्रतिष्ठान', 'ऐक्यभारती प्रतिष्ठान', 'भारतीय भाषा न्यास' और 'अक्षरभारती अनुवाद ॲकॅडमी' आदि प्रमुख है। इन संस्थाओं ने पुणे के परिवेश को हिंदीमय बनाया है। हिंदी भाषा और साहित्य को समृद्ध करने में यहाँ की शैक्षिक संस्थाओं का भी हाथ रहा है। इस संदर्भ में महत्वपूर्ण तथ्य यह

कि पुणे विश्वविद्यालय का हिंदी विभाग महाराष्ट्र का प्रथम हिंदी विभाग है, जहाँ विश्वविद्यालयीन स्तर पर हिंदी अनुसंधान कार्य की शुरूआत हुई। महिलाओं में शैक्षिक विकास करने वाला एस.एन.डी.टी. विद्यापीठ भी यहाँ है जिसमें महिलाओं को हिंदी अनुसंधान करने का अवसर दिया जाता है। इन शैक्षिक विश्वविद्यालयों के अलावा 'पुणे आकाशवाणी केंद्र', 'एफ.टी.आय', 'राष्ट्रीय रक्षा अकादमी' 'विविध बैंक शाखाएँ', 'रेल मंडल का प्रबंधक कार्यालय', 'भारत सरकार के विविध कतिपय कार्यालय' जैसे-वैकुंठ मेहता संस्थान', 'राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला', 'भारतीय उष्णदेशीय मौसम अनुसंधान केंद्र' आदि में राजभाषा हिंदी के तहत कार्य करने का प्रयास किया जाता है। कतिपय धार्मिक स्थलों पर हिंदी ही विचार विनिमय और प्रवचन प्रेषण की भाषा रही है। अतः इन संस्थानों की हिंदी विषयक भूमिका विचारणीय है।

पुणे में हुए हिंदी प्रचार-प्रसार कार्य में हिंदी पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। पुणे के हिंदी प्रचार-प्रसार को समझने के लिए उत्कृष्ट ऐतिहासिक दस्तावेज के रूप में उनका महत्व हैं। इनमें साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, द्वैमासिक, त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक, वार्षिक आदि पत्रिकाओं का समावेश है। कतिपय प्रारंभिक हिंदी पत्रिकाओं के स्थापना वर्ष का अंदाजा नहीं लगाया जा सका है। इसका कारण यह है कि सन् 1965 में पानशेत बांध टूटने के कारण कतिपय पुरानी पत्रिकाएं बाढ़ का शिकार हुईं। उपलब्ध सामग्री के आधार पर पुणे में हिंदी पत्रिकाओं की शुरूआत भी स्वतंत्रतापूर्व काल में 'चित्रमय जगत्' नामक मराठी मासिक के हिंदी संस्करण से मानी जानी चाहिए। पुणे से निकलने वाली पत्रिकाओं में कई मृतप्राय हैं तो कई अनवरत रूप से अपना कार्य करती हुई पाई जाती हैं। इनमें 'राष्ट्रवाणी', 'मधु संचय' आदि अव्वल नंबर की पत्रिकाएँ है, जो कभी बंद न हुई। 'परामर्श' जैसी पत्रिकाएँ कुछ कारणों से चाहे बंद हुई हो पर दुबारा शुरू हुई है। डॉ. केशव प्रथमवीर के संपादनत्व में निकलने वाली 'समग्रदृष्टि' पत्रिका के सभी अंक अपनी समग्रता को द्योतित करते हैं। पुणे से अनेक हिंदी समाचार पत्र भी प्रकाशित किए जाते हैं। इनमें 'आज का आनंद' का विशेष महत्व रहा है क्योंकि यह अखबार शुरू से आज तक कभी बंद नहीं हुआ। पुणे का उपनगर हडपसर से दिनेश चंद्रा हिंदी में 'हडपसर एक्सप्रेस' साप्ताहिक निकालते है। इस तरह पुणे से प्रकाशित इन हिंदी पत्र-पत्रिकाओं का हिंदी के विकास में योगदान रहा है।

पुणे में हिंदी की लगभग सभी विधाओं का लेखन हुआ है। 'तारसप्तक' के प्रमुख कवि हरिनारायण व्यास के सानिध्य से यहाँ के अनेक कवियों ने हिंदी कविताओं के लेखन में योग दिया है। इस शोध प्रबंध में पुणे के लगभग 25 कवियों के काव्य का अध्ययन किया गया है। भावों की तरलता, मन की चंचलता, यथार्थ की पैनी धार, राजनीतिक स्थितियों का व्यंग्यपरक दृष्टि से चित्रण, स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, कौटुंबिक समस्याओं का चित्रण इन काव्य रचनाओं की खास विशेषताएँ हैं। ग़ज़ल, खंडकाव्य आदि कविता के विभिन्न रूपों में भी उद्धव महाजन 'बिस्मिल' और मेजर सरजू प्रसाद 'गयावाला' जैसे कवियों ने उत्तम कार्य किया है। केवल कविता ही नहीं अपितु उपन्यास, कहानी, नाट्य साहित्य तथा अन्य साहित्यिक विधाओं में भी यह लेखन कार्य आगे बढ़ रहा है। प्रभा माथुर, रामचंद्र थोरात, डॉ दामोदर खड़से और डॉ. इन्दु पांडे पुणे के उपन्यासकार है। इनके उपन्यास अनेक दृष्टियों से उत्कृष्ट हैं। ज्योत्स्ना देवधर, गो.प.नेने, मुरलीधर जगताप, मालती शर्मा, डॉ. दीप्ति गुप्ता, डॉ. पद्मजा घोरपडे, काझी मुश्ताक अहमद, इंदिरा शबनम 'पूनावाला', डॉ. राजेंद्र श्रीवास्तव आदि की कहानियाँ समकालीन परिवेश से संबंधित मानवीय जीवन की विविध समस्याओं से ओत-प्रोत है। पुणे के हिंदी नाट्य लेखकों में ज्योत्स्ना देवधर, प्रभा माथुर, डॉ. राजेंद्र श्रीवास्तव और संजय भारद्वाज आदि कतिपय नाटककार प्रमुख हैं। निबंध के क्षेत्र में डॉ. प्रभुदास भुपटकर को विस्मृत नहीं कर सकते क्योंकि आपने 'सोने में सुगंध' और 'फागुन के दिन चार' नामक उत्कृष्ट निबंध संकलनों का निर्माण किया है। उनका यह कार्य उल्लेखनीय और सराहनीय है। जिस प्रकार हिंदी का प्रचार-प्रसार पुणे शहर में तेजी के साथ हुआ, ठीक उसी प्रकार साहित्यिक गतिविधियों में भी इस पुण्यभूमि की अहम भूमिका दिखाई देती है। हिंदी साहित्य की कतिपय विधाओं के लेखन में इस शहर के निवासियों ने बखूबी भूमिका अदा की है। इनका रचना संसार हिंदी साहित्य की श्रीवृद्धि में सहायक सिद्ध हुआ है।

साहित्यिक सृजनशीलता की प्रक्रिया में अनुवाद साहित्य का अपना एक अलग महत्व होता है। मराठी से हिंदी, हिंदी से मराठी में कई पुस्तकों के अनुवाद पुणे के अनुवादकों ने किए हैं। यह अनुवाद कार्य उत्कृष्ट कोटि में गिना जा सकता है क्योंकि इनमें से कई अनुवादकों को अखिल भारतीय स्तर के अनुवाद पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। इनमें डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित, डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर,

डॉ. केशव प्रथमवीर, मीरा नांदगांवकर, डॉ. स्मिता दात्ये, डॉ. सुशीला दुबे, डॉ. गजानन चव्हाण आदि प्रमुख हैं। कथा साहित्य, कविता, यात्रा साहित्य, वैज्ञानिक विषयों की पुस्तकें, तथा विविध विषयों की किताबों के अनुवाद पुणे में हुए हैं। यह परंपरा स्वतंत्रता काल से पाई जाती है। आधुनिक काल के प्राध्यापकों और विभिन्न कार्यालयों में कार्यरत हिंदी अधिकारियों ने इस क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है। इस दृष्टि से डॉ. दामोदर खड़से का कार्य उल्लेखनीय रहा है। उन्होंने लगभग 15 विविध विषयों से संबंधित पुस्तकों के अनुवाद किए हैं। अनुवाद परंपरा की इस यात्रा का फलक अत्यंत विस्तृत होने के कारण पुणे के अनेक नूतन अनुवादक भी अपने आपको बचा न पाए। ऐसे अनुवादकों में डॉ. सुभाष तळेकर, डॉ. तुकाराम पाटील, डॉ. सदानंद भोसले, डॉ. बाळासाहेब सोनवणे, डॉ. मंजूषा पाटील आदि के नाम भी महत्वपूर्ण हैं। इन्होंने एकाध पुस्तकों के ही अनुवाद किए हैं, पर ये उत्कृष्ट कोटि के हैं। इस तरह हिंदी अनुवाद की समृद्धि में पुणे के अनुवादक अग्रणी है।

पुणे शहर में निर्मित अनुसंधान, आलोचना और सृजनात्मक लेखन कार्य अनुपम है। एक छोटे-से अहिंदी भाषिक शहर में इतने पैमाने पर इस तरह का कार्य होना इस शहर की एक महत्तम् उपलब्धि कही जा सकती है। हिंदी अनुसंधान कार्य में पुणे विश्वविद्यालय का हिंदी विभाग अग्रणी है। सन् 1960 ई. में श्रीमती उषा इथापे द्वारा प्रस्तुत शोध प्रबंध पूरे महाराष्ट्र में हिंदी अनुसंधान कार्य की प्रथम कडी मानी जा सकती है। तदुपरांत डॉ. कृष्ण दिवाकर, डॉ. अशोक कामत, डॉ. दुर्गा दीक्षित का अनुसंधान कार्य विशेष ख्यातिप्राप्त रहा है। पुणे में केवल अनुसंधान ही नहीं बल्कि आलोचना के क्षेत्र में भी विपुल कार्य हुआ है। यहाँ पर कार्यरत आलोचक अखिल भारतीय स्तर के हैं। इनमें वरिष्ठ आलोचक और सुप्रतिष्ठित आचार्य डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित, डॉ. स.म.परळीकर, डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर, डॉ. केशव प्रथमवीर, डॉ. ओमप्रकाश शर्मा प्रमुख है। हिंदी भाषा विज्ञान के क्षेत्र में डॉ. केळकर, डॉ. वी. एन. भालेराव, डॉ. ओमप्रकाश शर्मा आदि प्रमुख है। हिंदी काव्य शास्त्र से संबंधित पुस्तकों के सृजनकर्ताओं में डॉ. भगीरथ मिश्र, डॉ. वी. एन. भालेराव, डॉ. ओमप्रकाश शर्मा आदि प्रमुख हैं।

पुणे के सृजनकर्ता विभिन्न भाषा-भाषी होने पर भी हिंदी के प्रति इनकी गहरी आस्था है। इनके साहित्य का भाषिक सौदर्य उच्च कोटि का है। इनमें

भाषिक सौंदर्य को बढ़ाने वाले विविध आयाम विद्यमान है। बिम्ब, प्रतीक, अलंकार, मिथक तथा विविध भाषाओं के शब्द इनकी रचनाओं में मिलते हैं। लोकोक्तियाँ, सूक्तियाँ, मुहावरे आदि के प्रयोग के साथ ही साथ विविध प्रकार की शैलियों का प्रयोग भी इन रचनाकारों ने किया है। अतः पुणे के साहित्य जगत का भाषिक सौंदर्य अप्रतिम है।

इस प्रकार हिंदी के प्रचार-प्रसार, हिंदी साहित्य की वृद्धि तथा हिंदी भाषा की समृद्धि में पुणे की अहम् भूमिका दिखाई देती है।

उपलब्धियाँ

- महाराष्ट्र के हिंदी प्रचारक, हिंदी की विभिन्न विधाओं में सृजनरत साहित्यकार, हिंदी चिंतक, अनुवादक, अनुसंधाता आदि का हिंदी को लक्षणीय प्रदेय रहा है।
- प्रस्तुत शोध प्रबंध में पुणे की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और भाषिक स्थितियों का ऐतिहासिक दस्तावेज प्रस्तुत करते हुए इसमें पुणे के हिंदी प्रेम और राष्ट्रीय एकता में उनकी सहभागिता के महत्व का निरूपण हुआ है।
- हिंदी के प्रचार-प्रसार में 'महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पुणे', 'महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे' तथा पुणे की अन्य कतिपय हिंदी प्रचार संस्थाओं के विशेष उल्लेखनीय कार्य को रेखांकित किया है।
- पुणे से प्रकाशित हिंदी पत्रिकाओं का इतिवृत्तात्मक इतिहास प्रस्तुत करते हुए हिंदी के प्रचार-प्रसार में उनकी भूमिकाओं को विश्लेषित किया है।
- पुणे के साहित्य जगत में सृजित गद्य-पद्य आदि विधाओं को रेखांकित करते हुए कविवर हरिनारायण व्यास, डॉ. दामोदर खड़से, डॉ. पदमजा घोरपडे, डॉ. मालती शर्मा, ज्योत्स्ना देवधर, प्रभा माथुर आदि की रचनाओं के महत्व पर प्रकाश डाला है।
- दूसरे सप्तक के कवि हरिनारायण व्यास से लेकर उत्तर आधुनिकता की अधुनातन प्रवृत्तियाँ स्त्री विमर्श और दलित विमर्श के लेखनकर्ताओं का विवेचन करते हुए स्त्री विमर्श से जुड़े ज्योत्स्ना देवधर, प्रभा माथुर, डॉ. मालती शर्मा, डॉ. पद्मजा घोरपडे और दलित विमर्श से जुड़े सृजनकर्ताओं में मेजर सरजू प्रसाद 'गयावाला' आदि के लेखन कार्य का विवेचन प्रस्तुत है।

- पुणे के साहित्यिक जगत से संबंधित सभी प्रकार की रचनाओं का कथ्यगत विवेचन इस शोध-प्रबंध में निर्दिष्टित है और उनके भाषिक पहलुओं पर प्रकाश डाला है।
- पुणे के अनुवादकों के साहित्य का सामान्य परिचय देते हुए हिंदी के विकास में इन अनुवादकों की भूमिका को प्रस्तुत किया है।
- सवित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय का हिंदी विभाग, शैक्षिक और शोध-कार्य की दृष्टि से महराष्ट्र में अग्रगण्य रहा है। हिंदी के विकास में इस विभाग की उपादेयता के महत्व को आंका गया है।
- सन् 1960 ई. में श्रीमती इथापे उषा द्वारा लिखित 'इब्राहीम आदिलशाह कालीन दक्खिनी हिंदी में 'इब्राहीमनामा' की भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन' महाराष्ट्र में हिंदी का प्रथम शोध प्रबंध है। पुणे विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत यह प्रबंध दक्खिनी भाषा के महत्व की मीमांसा करता है।
- पुणे के हिंदी आलोचना साहित्य की समृद्धि में डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित, डॉ. चंद्रकांत बांदिवडेकर, डॉ. स. म. परळीकर और डॉ. केशव प्रथमवीर आदि का आलोचना कार्य विशेष उल्लेखनीय है।
- कोश ग्रंथ के रचयिता विश्वनाथ नरवणे, श्रीपाद जोशी, गोपाळ परशुराम नेने, श्रीमती मालती इनामदार आदि के साहित्यिक योगदान को रेखांकित करने का प्रयास हुआ है।
- रस सिद्धांत के आलोचक सुप्रतिष्ठित आचार्य डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित के हिंदी अवदान का विवेचन हुआ है।
- भाषाविज्ञान विषयक ग्रंथों के लेखनकर्ताओं में डॉ. अशोक केळकर, डॉ. भालेराव आदि के लेखन पर प्रकाश डाला गया है।

सारांशतः कह सकते हैं कि पुणे में व्यक्तिगत, संस्थागत और संगठनात्मक रूप में हिंदी का प्रचार-प्रसार हो रहा है। इस समृद्धि में पुणे के प्रचारकों, अनुवादकों, आलोचकों तथा विविध विधाओं के सृजनकर्ता लेखकों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इनके कार्य को ऐतिहासिक दस्तावेज के रूप में सुरक्षित रखने की प्रक्रिया का यह छोटा सा प्रयास इस प्रबंध की विशेष उपलब्धि मानी जा सकती है।

शोध की संभावनाएँ

शोध प्रक्रिया के इस अंतिम पडाव तक आते-आते कई मौलिक शोध संभावनाओं की प्रकल्पनाएँ मेरे मन में उभरी। इस प्रबंध का एक-एक अध्याय अपने आप में शोध का विषय हो सकता है। इसके अतिरिक्त और भी कतिपय शोध संभावनाएँ नजर आती है। उनकी सूची यहाँ निम्नवत् दी गई है-

- पुणे विश्वविद्यालय में स्वीकृत हिंदी पीएच्.ड़ी प्रबंधों की प्रामाणिकता-अप्रामाणिकता (शोध पद्धति के विशेष संदर्भ में)
- पुणे के कवियों का कथ्यगत् अध्ययन
- पुणे के कवियों की भाषा का भाषावैज्ञानिक अध्ययन
- लोक साहित्य के क्षेत्र में डॉ. मालती शर्मा का योगदान
- रामचंद्र थोरात के उपन्यासों का शिल्पगत अध्ययन
- डॉ. दामोदर खड़से के साहित्य में विविध आयाम
- पुणे में निर्मित अनुवाद साहित्य का अनुवादपरक अनुशीलन
- डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित का सर्जनशील साहित्यः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
- पुणे के हिंदी प्रचार आंदोलन का इतिहास
- पुणे की महिला लेखिकाओं के कहानी साहित्य में चित्रित स्त्री-विमर्श
- पुणे की हिंदी बोली का भाषावैज्ञानिक अध्ययन, आदि

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अंगारे - रामचंद्र थोरात, निशांत प्रकाशन, पुणे, सं. जनवरी, 2010
2. अंजुरी - पुष्पा गुजराथी, क्षितिज प्रकाशन, पुणे, सं. 2008
3. अंतरा -ज्योत्स्ना देवधर, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे, सं. दिसंबर, 1964
4. अघटित - डॉ. सविता सिंग, शैलजा प्रकाशन, कानपुर सं. 2011
5. अभी वे जानवर नहीं बने - डॉ. राजेंद्र श्रीवास्तव, किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 1998
6. अनुसंधान और आलोचना - डॉ. नगेंद्र, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली प्र. सं. दिसंबर 1961
7. अर्थ-पिशाच् - डॉ. इन्दु पाण्ड़े, अमन प्रकाशन, कानपुर, सं. 2010
8. आउटर पर रुकी ट्रेन - हरिनारायण व्यास, शुभकामना प्रकाशन दिल्ली, सं. 1994
9. आदिकालीन हिंदी के विकास में महाराष्ट्र का योगदान - श्रीकांत मधुकर जोशी, पुणे विश्वविद्यालय, पुणे वर्ष 1985 (अप्रकाशित शोध-प्रबंध)
10. आज़ाद हिंदुस्तान में कैद हूँ - डॉ. इंदु पांडेय, पराग बुक्स गाजियाबाद, प्र. सं. 2010
11. आधी कृति - प्रभा माथुर, अनीता पब्लिशिंग हाऊस गाजियाबाद, प्र. सं. 2012
12. आधुनिक संदर्भों के परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा और साहित्य - सं. डॉ. पद्मजा घोरपडे, नंदादीप प्रकाशन, पुणे, सं. 7 अप्रैल, 2001.
13. आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना - वासुदेवनन्दन प्रसाद, भारती भवन पब्लिशर्स, पटना सं. 1996
14. आधुनिक हिंदी साहित्य को अहिंदी लेखकों का योगदान - डॉ. विलास गुप्ते, नवमीत प्रकाशन, मुंबई-14 प्र. सं. 1973
15. आधुनिक हिंदी साहित्य का इतिहास - डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे, विकास प्रकाशन, कानपुर, सं. 2005
16. ओस-कण - डॉ. चेतना राजपूत, प्रगति प्रकाशन, डी.पी.रोड, औंध, पुणे. प्र. सं. 2005

17.इबादत - इन्दिरा शबनम 'पूनावाला', निर्मल प्रकाशन, पुणे प्र. सं. 27 अगस्त 2000
18.इस जंगल में - डॉ. दामोदर खड़से, ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2008
19.इसीलिए शायद - आसावरी काकडे, सेतु प्रकाशन, पुणे. सं. 2009
20.उपन्यास का आदमी - डॉ. इंदु पांडेय, अमन प्रकाशन कानपुर, प्र. सं. 2013
21.एक नदी-सी बही होगी - डॉ. रजनी रणपिसे, अथर्व प्रकाशन, पुणे, सं 2015
22.एक भिखारिन की मौत - संजय भारद्वाज, क्षितिज प्रकाशन, पुणे सं 2004
23.एक सागर और - डॉ. दामोदर खड़से, दिशा प्रकाशन,दिल्ली, सं. 2008.
24.कविवर हरिनारायण व्यासः व्यक्तित्व एवं कृतित्व - डॉ.चंद्रकांत मिसाळ, क्षितिज प्रकाशन, पुणे, प्र. सं. नवंबर 2005
25.कल्याणी - ज्योत्स्ना देवधर, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा पुणे, सं 1993
26.कहानी खत्म हुई - काजी मुश्ताक अहमद, माडर्न पब्लिकेशिंग हाउस, नई दिल्ली, सं 2010
27.कागज जमीन पर - डॉ. सुनील देवधर, डॉ. राजेंद्र श्रीवास्तव, दिशा प्रकाशन दिल्ली, प्र. सं. 2012
28.काला सूरज - डॉ. दामोदर खडसे, हिंदी साहित्य संसार नई दिल्ली, प्र. सं. 1980
29.किसने कहा - प्रभा माथुर, स्वयं लेखिका से प्राप्त हस्तलिखित पांडुलिपि
30.कैकेयी- मेजर सरजू प्रसाद 'गयावाला', क्षितिज प्रकाशन प्र.सं.अक्तुबर, 2003.
31.ग़ज़ल के साथ - उद्धव महाजन 'बिस्मिल' उद्धव महाजन 'बिस्मिल', असबाक् पब्लिकेशनस् पुणे, प्र. सं. नवंबर, 2013
32.गुत्थमगुत्था - डॉ. पद्मजा घोरपडे, पवन प्रकाशन, दिल्ली, प्र. सं. जुलाई, 2003
33.चाँद और रोटी - डॉ.सुभाष तळेकर, नंदादीप प्रकाशन, पुणे. प्र. सं. 2014.
34.जख्मों के हाशिए - डॉ. पद्मजा घोरपडे, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, सं. 1991
35.जीना चाहता है मेरा समय - डॉ. दामोदर खड़से, पवन प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2006

36. जुआ - डॉ. प्रभुदास भुपटकर, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा पुणे, द्वि. सं. अक्टूबर, 1970
37. तुम लिखो कविता - डॉ.दामोदर खड़से, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली. प्र.सं, 2008,
38. थोडासा आसमान- उद्धव महाजन 'बिस्मिल', आर्मेक साहित्य प्रचार योजना, पुणे, प्र.सं.सितंबर, 2003
39. दस्तक - इंदिरा शबनम 'पूनावाला', 9/ब 'मयुरबन' अपार्टमेंट, शिवाजी नगर, मॉडेल कॉलोनी पुणे, प्र. सं. 2004
40. दस्तक देती आँधियाँ - डॉ. कातिदेवी लोधी, क्षितिज प्रकाशन, पुणे, सं. दिसंबर, 2003
41. देहरी के आर पार - डॉ.कांतिदेवी लोधी, क्षितिज प्रकाशन, पुणे. प्र. सं 2009.
42. दृश्यों के बाहर - डॉ. मालती शर्मा, नीरज प्रकाशन, पुणे, प्र. स. 1990
43. धुली-धुली शाम का उजाला - प्रभा माथुर, दीपा माथुर 3 महिन्द्रा सोसाइटी प्र. सं. 2004
44. धूप में साया- उद्धव महाजन 'बिस्मिल' उद्धव महाजन 'बिस्मिल', असबाक् पब्लिकेशनस् पुणे, प्र. सं. मार्च 2011
45. ध्वस्तनीड - श्रीपाद जोशी, विश्वेश्वरानंद वैदिक शोध संस्थान, प्र. सं. 1960
46. पतन - रामचंद्र थोरात, अनिकेत प्रकाशन, पुणे, प्र. सं. 2006
47. पिघलती मोमबत्ती - रजनी पाथरे 'राजदान', शैवाल प्रकाशन नई दिल्ली, सं. 2006.
48. प्रपंच - रामचंद्र थोरात, निशांत प्रकाशन, पुणे, प्र. सं. जनवरी, 2010
49. बवंडर - रामचंद्र थोरात, अनिकेत प्रकाशन, पुणे, प्र. सं.2000
50. बागों से उखड़े बबूल - डॉ. मालती शर्मा, शैवाल प्रकाशन, गोरखपुर, प्र. सं. 2007
51. बिना चहरे के लोग - डॉ. वी. एन. भालेराव, शैलजा प्रकाशन कानपुर, प्र. सं 2014
52. बोल मेरी मछली कितना पानी - रजनी पाथरे 'राजदान', निर्मल प्रकाशन, पुणे, प्र. सं अक्टूबर, 2001

53. भगदड़ - डॉ. दामोदर खड़से, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 1996
54. भारतीय नेताओं की हिंदी सेवा - डॉ. ज्ञानवती दरबार, रंजन प्रकाशन नई दिल्ली, प्र. सं. 1961
55. भीगे पंख - प्रभा माथुर, दीपा माथुर 3 महिन्द्रा सोसाइटी पुणे, प्र.सं.अगस्त 2004
56. भीष्म पितामह-मेजर सरजू प्रसाद 'गयावाला', क्षितिज प्रकाशन पुणे, प्र.सं-मार्च, 2012
57. नारायण सुर्वे की कविता - प्रा. पांडुरंग कापडणीस, बहर प्रकाशन सदाशिव पेठ, पुणे, प्र. सं. 20 जनवरी, 1995
58. नाथसंप्रदाय - डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी, हिंदुस्तानी अकादमी, इलाहाबाद उत्तर प्रदेश, प्र. संस्करण 1950
59. निर्वासन की आँधी - डॉ. मालती शर्मा, सौरभ प्रकाशन, पुणे, प्र. सं. अगस्त, 1981
60. मधुशाला - श्री. विजयकुमार चोकशे, हिंदी निकेतन, सदाशिव पेठ, टिळक पथ, पुणे. द्वितीय संस्करण 1983.
61. मनमंथन - मेजर सरजूप्रसाद 'गयावाला', क्षितिज प्रकाशन, पुणे प्र. सं. अक्टूबर 2009
62. मधुसुमन - मधु हातेकर, क्षितिज प्रकाशन, सं. 2005
63. महाराष्ट्र में हिंदी - डॉ.रामजी तिवारी और डॉ.त्रिभुवन राय, शारदा ज्ञानपीठ, मुंबई, प्र. सं. 2014
64. महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे (परिचय पत्रिका), संस्करण
65. महिला आत्मकथा लेखन में नारी - डॉ. रघुनाथ देसाई, एस. बी. एस. पब्लिकेशन वाराणसी, संस्करण 2012
66. मुर्दे की पीठ पर - डॉ. इंदु पांडेय, अमन प्रकाशन प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं. 2012
67. मुसाफिरनामा - यदुनाथ थत्ते, आंतर भारती प्रकाशन, औराद शहादानी 26 जनवरी, 1993
68. मिटटी की खुशबू- उद्धव महाजन 'बिस्मिल', असबाक् पब्लिकेशनस् पुणे, प्र. सं. अगस्त 2007
69. मेरी आँखों का उत्सव - सं डॉ. पद्मजा घोरपडे, डॉ. प्रभुदास भुपटकर स्मृति ग्रंथ समिति पुणे, प्र. सं. 2 जून, 2004

70. मेरा तसव्वुर- उद्धव महाजन 'बिस्मिल', ''साहित्य कलायात्री'' प्रकाशन प्रा. लि. पुणे, प्र. सं. जून 1999
71. मैं और मेरी कविताएँ - मेजर सरजूप्रसाद 'गयावाला', क्षितिज प्रकाशन, पुणे, प्र. सं. मई, 2015
72. मृग ओर तृष्णा - हरिनारायण व्यास, रूचिरा प्रकाशन, पुणे-संस्करण 1968
73. यक्ष का संदेश - सं. डॉ. केशव प्रथमवीर, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे, प्र. सं. 1994
74. यादों का सफर - शम्मी चौधरी, शीतला प्रोडक्शनस् एवं पब्लिकेशनस् पुना, प्र.सं. 2008
75. ये नैना भर आए - गजेंद्रदेव उपाध्याय, क्षितिज प्रकाशन, पुणे, प्र. सं. 2005
76. राष्ट्रभाषा विचार-संग्रह - डॉ. न. चि. जोगळेकर, अनाथ विद्यार्थी गृह प्रकाशन, पुणे चतुर्थ परिष्कृत परिमार्जित संशोधित संस्करण 1964
77. राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा तथा महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पुणे के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित साहित्यकारों एवं हिंदी प्रचारकों के एक दिवसीय सम्मेलन के अवसर पर प्रकाशित लघु परिचायिका 31 मार्च 2017-हिंदी भवन, शुक्रवार पेठ, पुणे-2
78. राष्ट्रभाषा आंदोलन - गोपाळ परशुराम नेने, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे प्र. सं. 15 अगस्त, 1963
79. राष्ट्रसेवा दल इतिहास और कार्य - डॉ. मु. ब. शहा, राष्ट्रसेवा दल प्रकाशन, पुणे प्र. सं. 12 नवंबर, 2002
80. रिश्तों के परे रिश्ते - डॉ.पद्मजा घोरपडे, युक्ति प्रकाशन नई दिल्ली, प्र. सं. 2010
81. शहादत - रामचंद्र थोरात, निशांत प्रकाशन, पुणे, प्र. सं. 2014
82. शेष प्रसंग - डॉ. दिप्ति गुप्ता, नीलकंठ पब्लिकेशनस्, कल्याणी नगर, पुणे, प्र. सं. 2007
83. सन्नाटे में रोशनी - डॉ. दामोदर खडसे, क्षितिज पकाशन पुणे, प्र. सं. 2008
84. सपनों की राहें और समय का सच - डॉ. पद्मजा घोरपडे, युक्ति प्रकाशन, दिल्ली, प्र. सं. 2010
85. सरहद से घर तक - डॉ. दीप्ति गुप्ता, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र. सं. 2011

86. संवादो के आकाश - डॉ.पद्मजा घोरपडे, 'संप्रेषण' साहित्य मंच प्रकाशन, पुणे, प्र. सं. जनवरी 2005
87. संगी साथी - गो.प.नेने, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे, मार्च 1968
88. संत जनाबाई - डॉ. पद्मजा घोरपडे, अमन प्रकाशन, कानपुर, प्र. सं. 2013
89. सांझ की बेला - गजेंद्रदेव उपाध्याय, क्षितिज प्रकाशन, पुणे. प्र. सं. 2000
90. सुबह के इंतजार में - डॉ. राजेंद्र श्रीवास्तव, आधार प्रकाशन प्रा. लि. हरियाणा प्र. सं. 2013
91. सुकून - बलदेव साजनदास 'निर्मोही', क्षितिज प्रकाशन, पुणे. प्र. सं, नवंबर, 2006
92. सूरज का उजला पोस्टर - डॉ. स्मिता दात्ये, शुभकामना प्रकाशन दिल्ली, प्र. सं. 1993
93. सूर्यास्त - डॉ. सिंधु भिंगारकर, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे, प्र. सं. 20 फरवरी, 1999
94. सो फिर भादों गरजी - डॉ. मालती शर्मा, नीरज प्रकाशन, पुणे, प्र. सं. 1989
95. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य के संवर्धन में महाराष्ट्र की भूमिका - डॉ. विजयलक्ष्मी वधवा, ऋषभचरण जैन एवं संतति, नई दिल्ली, प्र. सं. 1987
96. हरिनारायण व्यास व्यक्तित्व और कृतित्व - डॉ. चंद्रकांत मिसाळ, क्षितिज प्रकाशन, पुणे. प्र. संस्करण नवम्बर, 2005
97. हाथी घोडा पालखी - डॉ. मालती शर्मा, सुभद्रा पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रिब्यूटर्स, दिल्ली, सं. 2013.
98. हास्यास्पद - शरदेंदु शुक्ला 'शरद'. सरला प्रकाशन, नवीन शाहदरा दिल्ली-110032, प्र. सं. 2001
99. हिंदी उपन्यासः शिल्प और प्रयोग - डॉ. त्रिभुवन सिंह, हिंदी प्रचारक संस्थान, वाराणसी, प्र. सं. 1973
100. हिंदी की विकासयात्रा - डॉ. केशव प्रथमवीर, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिती, वर्धा, सं. 2011
101. हिंदी के विकास में महाराष्ट्र का योगदान - सं. प्रभात, मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई प्र. सं. 1982
102. हिंदी के विकास में महाराष्ट्र का योगदान - प्रा. मनोज वायदंडे, प्रा. सिराज शेख, हर्षवर्धन पब्लिकेशनस्, प्रा. लि. बीड, प्र. सं. मार्च 2016

103. हिंदी साहित्य को हिंदीतर प्रदेशों की देन - सं. डॉ. मलिक मोहमद, राजपाल एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली, प्र. सं. 1977.
104. हिंदी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास - डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद नवम् संस्करण 2010
105. हिंदी साहित्य तथा भाषा को महाराष्ट्र की देन - डॉ. रणजीत जाधव, विकास प्रकाशन कानपुर, प्र. सं. 2007
106. हिंदी साहित्य को विदर्भ की देन - पं. प्रयागदत्त शुक्ल, विदर्भ हिंदी साहित्य सम्मेलन नागपुर, प्र. सं. 10 फरवरी, 1961
107. हिंदी को मराठी संतों की देन - आ. विनयमोहन शर्मा, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना, संस्करण मार्च 1957
108. हिंदी और महाराष्ट्र का स्नेहबंध - डॉ. अशोक कामत, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे प्र. सं. 1971
109. हिंदी भाषा शिक्षण - भाई योगेंद्रजीत, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, चौबीसवाँ संस्करण 2006/07

हिंदी पत्रिकाएँः

1. अनुवाद - सं. नीता गुप्ता और डॉ. हरिशकुमार सेठी, भारतीय अनुवाद परिषद, नई दिल्ली, अक्टूबर-दिसंबर 2011.
2. अमृतकुंभ - महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पुणे (स्मरणिका), जून 2011,
3. आज का आनंद - श्यामजी अग्रवाल से की हुई भेंटवार्ता तथा उनके द्वारा दी गई मुखपत्रिका
4. आलोक - राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला, पुणे (एन.सी.एल), राजभाषा पत्रिका, वर्ष 2015
5. इंद्रायणी - मंडल रेल प्रबंधक के कार्यालय से प्रकाशित राजभाषा पत्रिका छमाही, वर्ष 2015
6. इंद्रधनुष्य - भारतीय उष्णदेशीय मौसम अनुसंधान केंद्र, पुणे (आई.आई.टी.एम) की राजभाषा पत्रिका का वार्षिकांक वर्ष 2015
7. ऐक्यभारती - ऐक्यभारती प्रतिष्ठान की त्रैमासिक पत्रिका जुलाई, अगस्त 1999
8. जयभारती - सं. पंढरीनाथ मुकुंद डांगरे, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिती, पुणे, अगस्त, सितंबर 1951

9. जनसत्ता, बंबई, मंगलवार, 27 सितंबर, 1994
10. दै. नवभारत टाईम्स - डॉ दामोदर खड़से का स्तंभलेख, 17 जून 1995
11. दै लोकमत समाचार (पुणे) - डॉ. ओमप्रकाश शर्मा, (हिंदीरंग) शुक्रवार, 13 सितंबर 2013
12. प्रदेशों में हिंदी (हिंदी वार्षिकी,1970) - संपादक धीरेंद्र वर्मा, केंद्रीय हिंदी निदेशालय तथा समाज कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली-22
13. 'भाषा' - केंद्रीय हिंदी निदेशालय, नई दिल्ली, सितंबर-अक्टूबर 2011
14. भारतीय हिंदी परीषद - पुणे विश्वविद्यालय, पुणे (स्मारिका), वर्ष 1970
15. भारतीय भाषा न्यास पत्रिका के मुख पत्र से, वर्ष 2002
16. राष्ट्रवाणी - महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे (स्मारिका), 1980
17. 'राष्ट्रवाणी' -महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे द्वैमासिक मई, जून 2008.
18. राष्ट्रवाणी - महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे दिसंबर 1993-94,
19. राष्ट्रवाणी -महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे स्वर्ण जयंती अंक, वर्ष 1988,
20. 'लोकयज्ञ' त्रैमासिक अक्टूबर, नवंबर-दिसंबर 2012
21. वागर्थ - भारतीय भाषा परिषद, कोलकत्ता, जून 2004
22. समीचीन (साहित्यिक-सामाजिक चेतना की त्रैमासिकी) सं. देवेश ठाकुर, अ.सं. डॉ. त्रिभुवनराय, जुलाई अक्टूबर 1985 अंक 2
23. समग्र दृष्टि - संपादक डॉ. केशव प्रथमवीर, वर्ष 3, अंक 2
24. स्मृति सुगंध (स्मरणिका) - ज.ग.फगरे, हिंदी प्रचार संघ हीरक महोत्सव 1995
25. हम लोग - हिंदी आंदोलन, पुणे का वार्षिकांक, दिसंबर, 2011-2012

मराठी ग्रंथः

1. असा घडलो मी - मु. मा. जगताप, श्री. गिरीधर दौलतराव खैरनार कर्वेनगर पुणे, जानेवारी 2012
2. महाराष्ट्राचे शिल्पकार यदुनाथ थत्ते - डॉ. मु.ब.शहा, महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृति मंडळ, मुबई, प्रथम आवृत्ति 2004
3. श्रद्धेय शंकरराव देव - सेना महाजन, महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा सभा, पुणे, प्र. सं. 2 अक्टूबर, 1996

कोश

1. उर्दू-मराठी-हिंदी शब्दकोश - श्रीपाद जोशी, नितीन प्रकाशन, पुणे. षष्ठ सं नवंबर, 2015

2. नालंदा विशाल शब्दसागर - नवल जी, आदीश बुक डिपो, देहली, सं. 1984
3. वृहत् हिंदी कोश - कालिकाप्रसाद, ज्ञानमंडल लिमिटेड वाराणसी, पुनर्मुद्रित 2012
4. भारतीय पत्रकारिता कोश खंड-1-विजयदत्त श्रीधर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2010
5. भारतीय पत्रकारिता कोश खंड-2- विजयदत्त श्रीधर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 2010
6. हिंदी शब्दकोश - डॉ. हरदेव बाहरी, राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, संस्करण 2014
7. हिंदी साहित्य कोश भाग 1 और 2 - सं. धीरेंद्र वर्मा, ज्ञानमंडल प्रकाशन, वाराणसी, पुनर्मुद्रण 2013

This document was created with the Win2PDF “print to PDF” printer available at
http://www.win2pdf.com

This version of Win2PDF 10 is for evaluation and non-commercial use only.

This page will not be added after purchasing Win2PDF.

http://www.win2pdf.com/purchase/